शास्त्रीय गायकी के संवाहक
पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र–समग्र अध्ययन

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

पीएच.डी. (संगीत) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

कला संकाय

शोधार्थी

सदाशिव गौतम

शोध–पर्यवेक्षक

डॉ. निशि माथुर

संगीत विभाग

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा (राज.)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

2020

CERTIFICATE

I feel great pleasure in certifying that the thesis entitled "शास्त्रीय गायकी के संवाहक पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र–समग्र अध्ययन" by **Sadashiv Gautam** under my guidance.

He has completed the following requirements as per Ph.D. regulations of the University.

a) Course work as per the university rules.

b) Residential requirements of the university (200 days).

c) Regularly submitted annual progress report.

d) Presented his work in the departmental committee.

e) Published/accepted minimum of two research papers in a referred Research Journal.

I recommend the submission of thesis.

Date :

Place : Kota

Dr. Nishi Mathur

(Research Supervisor)

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that Ph.D. thesis titled **"शास्त्रीय गायकी के संवाहक पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र–समग्र अध्ययन"** by **Sadashiv Gautam** has been examined by us with the following anti-plagiarism tools. We undertake the follows :

a) Thesis has significant new work/knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

b) The work presented is original and own work of the author (i.e. there is no plagiarism). No ideas, processes, results or words of others have been presented as author's own work.

c) There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.

d) There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.

e) The thesis has been checked using plagiarism checker **"URKUND"** Software and found within limits as per HEC. Plagiarism policy and instructions issued from time to time.

Sadashiv Gautam
(Research Scholar)

Place :
Date :

Dr. Nishi Mathur
(Research Supervisor)

Place :
Date :

शोध–सार

सृष्टि में सतत् प्रवाहमान स्वर लहरियों को सुनकर ऐसी अनुभूति होती है मानो प्रकृति एक साज़ हो और उसमें स्वर एवं लय के रूप में गुंजायमान विविध ध्वनियाँ साज से प्रस्फुटित संगीत। प्राकृतिक घटनाक्रम अर्थात् प्रतिदिन का समय चक्र, मौसम एवं ऋतुओं के साथ मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का तादात्म्य राग रागिनियों से स्थापित करना हमारे ऋषियों मुनियों के वैज्ञानिक एवं भावात्मक चिन्तन को परिलक्षित करता है। प्राकृतिक, मानवीय एवं आध्यात्मिक घटनाक्रम की भावरूप व्यंजना का स्वरमय रूपान्तरण ही संगीत है।

कला में अन्तर्निहित सौन्दर्य को सतत् साधना एवं चिन्तन द्वारा खोजते हुए उसके उत्कृष्ट एवं दिव्य रूप को प्रकट करने की सामर्थ्य सच्चे कला उपासक के पास होती है। शास्त्रीय गायन शैलियों में वर्तमान में सर्वाधिक प्रचलित ख्याल गायकी को अनेकानेक सिद्ध कलाकारों ने घरानेदार शिक्षा के साथ अथक परिश्रम, साधना एवं चिन्तन से नवीन रूप में परिभाषित करते हुए परिष्कृत रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं सिद्ध कलाकारों में बीसवीं सदी में एक युगल गायक जोड़ी उभर कर आई वह हैं पं. राजन साजन मिश्र। देश के घरानेदार प्रतिनिधि कलाकारों में बनारस घराने के पं. राजन साजन मिश्र का नाम उनकी विलक्षण गायकी एवं व्यक्तित्व के कारण बहुत आदर से लिया जाता है। आपने शास्त्रीय गायकी को परंपरा, साधना, चिन्तन, अन्वेषण एवं सृजन के सम्मिश्रण से विकासोन्मुखी बनाते हुए अभिनव एवं आदर्श रूप में श्रोताओं एवं गुणीजनों के सम्मुख रखा है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, संगीत सम्मेलनों एवं विभिन्न कम्पनियों द्वारा जारी रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से आप संगीत रसिकों के हृदयतल पर विद्वतापूर्ण एवं भावपूर्ण गायकी की अमिट छाप छोड़ते हुए मूर्धन्य एवं लोकप्रिय गायकों के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आपकी पांडित्यपूर्ण गायन शैली का अनुसरण साधनारत विद्यार्थियों एवं कलाकारों द्वारा किए जाने के कारण यह कहना उचित होगा कि आपने चलती फिरती अकादमी का दर्जा प्राप्त कर लिया है।

पं. राजन साजन मिश्र जी का जन्म एवं लालन–पालन देश की प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी काशी के कबीर चौरा मोहल्ले के संगीतमय वातावरण में हुआ। आपके पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र और चाचा पं. गोपाल जी मिश्र देश के ख्यातनाम सारंगी वादक रहे हैं। आप अपने घराने की लगभग 300 वर्षों से चली आ रही आनुवांशिक सांगीतिक परंपरा का निर्वहन कर रहे हैं। आप दोनों भ्राताओं की संगीत शिक्षा विद्वान पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र की देखरेख में आरम्भ हुई। पिताजी एवं चाचाजी के निर्देशन में

आपने रूचि अनुसार सारंगी के स्थान पर गायन की विधिवत शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ किया। आपको दादा गुरु गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी का भी शिष्यत्व ग्रहण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बनारस में आपके पैतृक आवास के आसपास देश के लब्ध प्रतिष्ठित संगीतज्ञों का निवास स्थान होने के कारण आपकी परवरिश एवं शिक्षा दीक्षा उच्च कोटि के सांगीतिक वातावरण मे हुई। आपने संगीत शिक्षा के अन्तर्गत स्वयं के घराने की शैलीगत विशेषताओं को तो आत्मसात कर ही लिया साथ ही पं. बड़े रामदास मिश्र जी की गायन शैली को भी हृदयंगम कर लिया। उल्लेखनीय है कि आपके पिताजी प्रतिष्ठित एवं ख्यातनाम सारंगी वादक होने के कारण उनके पास उ. फैयाज खाँ, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, उ. बड़े गुलाम अली खाँ एवं पं. विनायक राव पटवर्धन जी जैसे दिग्गज कलाकारों की गायकी का निचोड़ भी था। पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र द्वारा जीवन पर्यन्त की गई साधना का लाभ विरासत में पं. राजन साजन मिश्र को मिला। अतः आपकी गायकी इस रूप में विकसित हुई मानो गुलदस्ते को भाँति भाँति के सुगन्धित पुष्पों से सुसज्जित कर दिया हो। बनारस में मंदिरों, मठों एवं संगीत गोष्ठियों में नित प्रति होने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से कला को परिष्कृत रूप प्रदान करते हुए आप संगीत प्रेमियों में चर्चित होते चले गए।

पं. राजन मिश्र जी द्वारा स्नातकोत्तर परीक्षा एवं पं. साजन मिश्र जी द्वारा स्नातक स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के उपरान्त आपके चाचा पं. गोपाल मिश्र जी ने आपको दिल्ली बुला लिया। दिल्ली में आकाशवाणी के स्वर परीक्षण में आपको प्रथम बार में 'ए ग्रेड' मिला। दिल्ली में पं. राजन मिश्र जी को चाचाजी के माध्यम से डी.सी.एम. में 'लेबर वेल्फेयर ऑफिसर ट्रेनी' के पद पर नियुक्ति मिल गई। इसी बीच एक कार्यक्रम में आपकी भेंट सतगुरु जगजीत सिंह जी से हुई। उन्होंने आपको नौकरी छोड़कर संगीत के क्षेत्र में ही आगे बढ़ने का सुझाव दिया जिसे आपने सहर्ष स्वीकार कर लिया। सतगुरुजी के आशीर्वाद ने आपके जीवन में नई चेतना एवं उर्जा का संचार कर दिया।

दिल्ली में रहते हुए कठिन परिश्रम एवं निरन्तर साधना के साथ देश के नामचीन कलाकारों को सुनने के असंख्य अवसर आपको मिले फलस्वरूप महान् कलाकारों से प्रेरणा पाकर आपकी गायकी निरन्तर निखरती चली गई। देश विदेश में आयोजित कार्यक्रमों एवं कम्पनियों की रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से आपने शीघ्र ही लोकप्रिय एवं दिग्गज कलाकारों में अपना स्थान बना लिया। भारतीय संगीत की कीर्ति पताका को सम्पूर्ण विश्व में फहराकर आपने देश का गौरव बढ़ाया है।

आप दोनों भ्राताओं में प्रगाढ़ प्रेम के साथ परिवार एवं कला के स्तर पर अद्भुत सामंजस्य के कारण संगीत रसिकों एवं विद्वतजनों द्वारा "Two Voices and On Soul" एवं बनारस के संगीत की महक को सम्पूर्ण विश्व में फैलाने के लिए 'बनारस के चंदा सूरज' जैसी उपाधियों से सुशोभित किया जाता है।

रससिद्ध युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र जी ने अपनी गायकी में मुख्यतः ख्याल, टप्पा, तराना और भजन इन चार विधाओं को सम्मिलित किया। बनारस घराने पर लगे ठुमरी के ठप्पे को मिटाने के लिए आपने उपशास्त्रीय शैलियों को गायन में प्रमुखता से सम्मिलित नहीं किया। यद्यपि आप ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती आदि उपशास्त्रीय विधाओं को गाने में भी समान रूप से पारंगत हैं और आपने यदा कदा रिकॉर्डिंग्स में गाया भी है। वर्ष 1985 में निर्मित फिल्म 'सुर संगम' में गाए गए गीतों के माध्यम से भी आपको पूरे विश्व में अपार ख्याति मिली।

विद्वान युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र जी की गायन शैली में सुरीली, दमदार एवं मधुर आवाज़, युगल गायन में अद्भुत सामंजस्य, प्रभावी उपज अंग, घरानेदार चमत्कारिक बंदिशें, तीनों सप्तकों में आकर्षक एवं भावपूर्ण स्वरसंगतियों द्वारा क्रमबद्ध बढ़त, ताल एवं लय का विद्वतापूर्ण प्रयोग, ख्याल के साथ टप्पा अंग की गायकी में सुदक्षता, प्रस्तुतीकरण में प्रार्थना भाव, स्पष्ट उच्चारण एवं भावानुरूप प्रस्तुतीकरण, वॉइस मोड्यूलेशन, ख्याल में ध्रुपद धमार, टप्पा, ठुमरी आदि की आंगिक विशेषताओं का समावेश आदि अनेकानेक विशेषताओं के कारण यह आपको उन महान् एवं दिग्गज गायकों की श्रेणी में खड़ा करती है जिन्होंने विलक्षण गायकी के माध्यम से अपनी स्वतंत्र पहचान कायम की है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए की गई समर्पित सेवा के लिए आपको पद्मभूषण, पं. कुमार गंधर्व सम्मान, राष्ट्रीय तानसेन सम्मान, संगीत नाटक अकादमी सम्मान आदि अनेक पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है।

पं. राजन साजन मिश्र ने बनारस घराने की परंपरा को जीवन्त रखने एवं भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार, हस्तांतरण एवं संवर्धन हेतु अपिरिमित योगदान देकर माँ शारदा द्वारा सौंपे गये सांगीतिक दायित्व का निर्वहन किया है। यह शोध कार्य भारतीय शास्त्रीय संगीत से जुड़ने वाली नवोदित एवं साधनारत प्रतिभाओं के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करेगा ऐसा मेरा विश्वास है। शोध कार्य में पं. राजन साजन मिश्र जी के विचारों एवं की गई चर्चा को उनकी मौलिक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध ग्रंथ को आठ अध्यायों में विभाजित करते हुए पं. राजन साजन मिश्र जी के संपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उजागर करने का प्रयास किया गया है। उपसंहार शीर्षक के अन्तर्गत मैंने सम्पूर्ण शोध का सारांश प्रस्तुत करते हुए सभी तथ्यों को सम्मिलित करने का प्रयास किया है। शोध प्रबंध में प्रयुक्त सामग्री के स्रोत पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं, चर्चा, साक्षात्कार, ऑडियो–विडियो, रिकॉर्डिंग्स आदि का विवरण संबंधित पृष्ठ के अंत में दिया गया है। साथ ही सहायक सामग्री के संबंध में विस्तृत जानकारी शोध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची में समाहित है।

साक्षात्कार एवं वार्ता– शोध कार्य की पुष्टि, प्रामाणिकता एवं उत्कृष्टता हेतु शोध कार्य से संबंधित कलाकारों, विद्वतजनों एवं परिवारजनों से व्यक्तिगत रूप से वार्ता एवं साक्षात्कार द्वारा सम्पूर्ण संबंधित जानकारी का संग्रहण कर शोध कार्य में सम्मिलित किया गया है।

बंदिशों का लिपिबद्ध रूप– पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा गाई गयी बंदिशों के संरचनात्मक अध्ययन हेतु विभिन्न रागों एवं तालों में निबद्ध बंदिशों को लिपिबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है।

CANDIDATE'S DECLARATION

I, hereby, certify that the work, which is being presented in the thesis, entitled "शास्त्रीय गायकी के संवाहक पद्मभूषण पं. राजन साजन मिश्र–समग्र अध्ययन" in partial fulfillment of the requirement for the award of the degree of Doctor of Philosophy, carried under the supervision of **Dr. Nishi Mathur** and submitted to the university of kota, Kota represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included, I have adequately cited and referenced the original sources. The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any other degree or diploma from any Institutions.

I also declared that I have adhered to all principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/data/fact/source in my submission. I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

Date :
(Signature)
Place :
Sadashiv Gautam

This is certify that the above statement made by Sadashiv Gautam (Registration No. RS/1363/13 dated 03-06-2013) is correct to the best of my knowledge.

Date :
Dr. Nishi Mathur
Place :
(Research Supervisor)

प्राक्कथन

संगीत परमात्मा द्वारा मनुष्य को दिया गया अनमोल एवं नैसर्गिक उपहार है। संगीत के रसास्वादन एवं दिव्य आनंद की अनुभूति हेतु कला उपासक सतत् चिन्तन एवं साधना द्वारा कला के सौन्दर्य भाव को हृदय में स्थापित करते हुए उसे आनन्द की चरम अवस्था तक पहुँचाने में लीन हो जाता है। कला की उच्चतम अवस्था को प्राप्त करते हुए जहाँ स्वर एवं ईश्वर के एकात्म भाव का प्रतिपादन हो जाता है वहाँ कला एवं कलाकार पूर्णता को प्राप्त हो जाते हैं।

हमारी सुदृढ़ एवं समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के अन्तर्गत संगीत का उत्तरोत्तर विकास हुआ है। सदियों से संगीत के मनीषियों, तपस्वियों व साधक कलाकारों ने इसका तात्विक, भावात्मक एवं अन्वेषणात्मक सिंचन कर इसे अद्भुत रूप प्रदान किया है। कला मनीषियों ने समय एवं काल अनुसार संगीत को प्रबन्ध गान, ध्रुपद–धमार तो कभी ख्याल के रूप में परिभाषित किया है। वर्तमान समय में ख्याल गायन शैली लोकप्रियता के शिखर पर आसीन है। यद्यपि सभी घरानों के प्रतिनिधि कलाकारों ने ख्याल गायकी को अपनाया लेकिन ध्रुवपद की पृष्ठभूमि को अपने से पृथक नहीं होने दिया। घरानेदार कलाकारों ने ख्याल में ही ध्रुपद धमार की आंगिक विशेषताओं को समाहित कर समृद्धि प्रदान करते हुए इसे स्वतंत्र रूप में स्थापित कर दिया।

वर्तमान समय में भारतीय संगीत को पोषित करने, सांगीतिक विकास की धारा प्रवाहित करने व जन–जन में शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में प्रतिनिधि कलाकारों ने अविस्मरणीय भूमिका निभाई है। महान् प्रतिनिधि कलाकारों ने अपनी साधना को इतने उच्च स्तर पर पहुँचा दिया कि उन्होंने समाज में अपनी विशिष्ट गायन शैली के माध्यम से एक चलती फिरती अकादमी का दर्जा प्राप्त कर लिया।

वर्तमान में पं. राजन साजन मिश्र जी की गायन शैली के गुण वैशिष्ट्य से प्रेरणा लेकर कई शिष्य व साधक साधनारत हैं अर्थात् वर्तमान में यह भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन कर रहे हैं। ऐसे आदर्श एवं महान् प्रतिनिधि कलाकारों का जीवन चरित्र भावी पीढ़ी व देश के लिए निधि है। आपकी गणना शीर्ष कलाकारों में होने के कारण आपको 'शास्त्रीय गायकी के संवाहक' संबोधन देना उचित होगा।

जब मैंने भारतीय शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत ख्याल गायन की परम्परा को पल्लवित एवं पुष्पित करते हुए परिष्कृत रूप प्रदान करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाने

वाले महान् प्रतिनिधि कलाकारों पर ध्यान केन्द्रित किया तो मेरी दृष्टि महान् युगल गायक पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र जी के सांगीतिक योगदान पर ठहर गई। इस युगल जोड़ी की विलक्षण गायन शैली एवं व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित होने के कारण मैंने पाया कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, संवर्धन, प्रचार–प्रसार एवं हस्तांतरण हेतु इनके कार्यों पर गहन अध्ययन एवं शोध नितांत आवश्यक है। बनारस घराने की पताका को सम्पूर्ण विश्व में फहराने वाले ऐसे महान् कलाकारों के कार्यों पर गहन शोध के माध्यम से छुपे हुए तथ्यों को प्रकट कर सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

सर्वाधिक लोकप्रिय ख्याल गायकी को विकासोन्मुखी बनाते हुए आदर्श रूप में स्थापित करने में पं. राजन साजन मिश्र जी का योगदान वन्दनीय है। आपने दृश्य श्रव्य उपकरणों के माध्यम से ख्याल गायकी को अभिनव रूप में जन–जन तक पहुँचाकर एक बहुत बड़ा प्रशंसक वर्ग तैयार कर लिया। आपके हृदयस्पर्शी गायन एवं आकर्षक व्यक्तित्व से जुड़े समस्त तथ्यों को ज्ञात करने की मन में जिज्ञासा जाग्रत हुई। मेरे मन में प्रश्न उठा कि कलाकार के चरित्र निर्माण में किन बातों का समावेश जरूरी है ? गायन शैली को उन्नत बनाने के लिए संगीत शिक्षा में किन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाए ? घरानेदार गायकी में कौनसी विशेषताओं के कारण श्रोता मंत्रमुग्ध हो आत्मिक आनन्द की अनुभूति करते हैं ?

वह कौनसे कारण हैं जिनसे आपकी बंदिशों का प्रस्तुतीकरण एवं गायन शैली अन्य कलाकारों से भिन्न एवं विलक्षण प्रतीत होती है ? भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार, संरक्षण एवं सांगीतिक विरासत के हस्तांतरण में आपकी क्या भूमिका रही हैं ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर मैंने शोध कार्य के माध्यम से खोजने का प्रयास किया। प्रस्तुत शोध को मूलतः आठ भागों में विभक्त किया गया है।

मैंने इस सदी के महान् शास्त्रीय युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी शोध कार्य को यथासम्भव पूर्ण प्रामाणिक बनाने हेतु भरसक प्रयत्न किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि संगीत के क्षेत्र में किया गया मौलिक अन्वेषणात्मक कार्य पं. राजन साजन मिश्र जी के विराट व्यक्तित्व से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करते हुए संगीत के प्रायोगिक पक्ष को गूढ़ अर्थों में जानने एवं समझने हेतु विद्यार्थियों, साधकों एवं कलाकारों का उचित मार्गदर्शन करेगा।

आभार

शोध को सम्पूर्णता प्रदान करना अत्यंत कठिन कार्य है। प्रभु कृपा, गुरुजनों के आशीर्वाद एवं प्रबुद्धजनों के वांछित सहयोग के बिना इसे संपन्न करना असम्भव है। सर्वप्रथम मैं मेरे आराध्य रसेश्वर भगवान श्रीकृष्णजी के श्री चरणों में नमन करता हूँ जिनकी कृपा एवं सत्प्रेरणा से संगीत विषय में शोध के माध्यम से मानव जीवन को सार्थक करने का सौभाग्य मिला। साथ ही मैं मेरे आध्यात्मिक गुरु वल्लभ कुल बालक पूज्यपाद गोस्वामी श्री गोपाल लाल जी महाराज श्री, पूज्य श्री विनय कुमार जी गोस्वामी और पूज्य श्री शरद कुमार जी गोस्वामी का भी अत्यंत आभारी हूँ कि उनकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद स्वरूप इस कार्य को पूर्ण कर सका।

मैं अत्यन्त आभारी हूँ मेरे पूज्य गुरु पद्म भूषण पं. राजन जी मिश्र और पं. साजन जी मिश्र का जिन्होंने मुझे स्नेहाशीष प्रदान करते हुए न केवल उनके स्वयं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध कार्य की अनुमति प्रदान की अपितु पूर्ण सहयोग प्रदान करते हुए मेरा निरन्तर मार्गदर्शन किया। मेरा सौभाग्य है कि आपका शिष्यत्व ग्रहण करने के कारण विगत लगभग तीस वर्षों से मुझे आपके दिव्य व्यक्तित्व को बहुत नज़दीक से देखने और समझने का अवसर मिला। आपके श्री चरणों में बैठकर सम्पूर्ण तथ्यों के संकलन का अवसर प्रदान कर आपने मुझ पर उपकार किया है। साथ ही पं. राजन साजन जी के पारिवारिक सदस्यों में गुरुआनी जी श्रीमती बीना मिश्र जी (धर्मपत्नी पं. राजन जी मिश्र), श्रीमती कविता मिश्र जी (धर्मपत्नी पं. साजन जी मिश्र), पं. राजन मिश्र जी के सुपुत्र पं. रितेश जी मिश्र एवं पं. रजनीश जी मिश्र, पं. साजन जी मिश्र के सुपुत्र पं. स्वरांश जी मिश्र और पं. राजेश जी मिश्र (पं. राजन साजन मिश्र जी के भान्जे) आदि सभी सदस्यों का भी हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने वांछित जानकारी उपलब्ध करवाते हुए शोध कार्य को समृद्ध बनाने में सहयोग प्रदान किया है।

मैं मेरे गुरु श्रद्धेय पं. महेशचन्द्र शर्मा जी (कोटा) का भी अत्यंत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे संगीत शिक्षा के साथ वैचारिक मंथन द्वारा वह दृष्टि प्रदान की जिससे मैं पं. राजन साजन मिश्र जी जैसे महान कलाकारों का शिष्यत्व ग्रहण करते हुए शोध हेतु प्रेरित हो सका।

मैं अत्यन्त आभारी हूँ शोध निर्देशिका संगीत विदुषी डॉ. निशि माथुर जी (संगीत विभाग, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा) का जिन्होंने मुझे ''शास्त्रीय गायकी के संवाहक पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र–समग्र अध्ययन'' जैसे अत्यंत उपयोगी विषय पर

अध्ययन हेतु प्रेरित कर सदैव मार्गदर्शन किया। आपके दीर्घकालीन अनुभव का लाभ प्राप्त करते हुए मैं शोधकार्य की गूढ़ता एवं मूर्तता को सिद्ध करने में सक्षम हो सका। आपके कुशल निर्देशन एवं आशीर्वाद के फलस्वरूप मैं शोधकार्य को पूर्णता प्रदान कर सका।

मेरे धर्मनिष्ठ माता–पिता ने शोधकार्य हेतु सदैव मुझे सम्बल प्रदान किया है। मेरे पिता श्री रामकल्याण शर्मा जी और माता श्रीमती गीता देवी जी के स्नेहाशीष और सत्प्रेरणा से मैं शोध कार्य को सम्पन्न करने में सफल हुआ। पूरे शोध कार्य के दौरान मेरी धर्मपत्नी श्रीमती रश्मि गौतम, पुत्र वेणुगोपाल गौतम और साक्षीगोपाल गौतम ने शोध संबंधी सामग्री के संकलन में भरपूर सहयोग प्रदान किया।

मैं मेरी शिष्या श्रीमती उपासना दीक्षित का ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने शोध कार्य संबंधी ग्रंथों के संकलन एवं अन्य कार्यों में मेरी मदद की। मैं अत्यंत आभारी हूँ तृषा कम्प्यूटर्स, उदयपुर के श्री नरेन्द्र लौहार का जिन्होंने सुदक्ष टंकण कौशल के माध्यम से शोधकार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया।

अतः मैं उन सभी महानुभावों का ह्रदय से आभारी हूँ जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस सांगीतिक प्रयोजन को पूर्णता प्रदान करने में मेरे सहयोगी बने हैं।

शोधार्थी
सदाशिव गौतम

अनुक्रमणिका
(Index)

अध्याय संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
	मुख्य पृष्ठ	
	प्रमाण–पत्र	i
	एन्टी–प्लेग्रिज्म प्रमाण–पत्र	ii
	शोध सार	iii
	घोषणा पत्र	vii
	प्राक्कथन	viii
	आभार	x
	अनुक्रमणिका	xii
	छायाचित्र सूची	xv
प्रथम अध्याय	**शास्त्रीय गायन की विधाएँ, शैलियाँ एवं गायक कलाकार**	**1–31**
1.1	उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन की परम्परा व शैलियों का परिचय	1
1.2	वर्तमान समय के प्रमुख प्रतिनिधि शास्त्रीय/ख्याल गायक कलाकार	18
1.3	शास्त्रीय गायकों का भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में योगदान	19
द्वितीय अध्याय	**पं. राजन साजन मिश्र का व्यक्तित्व**	**32–68**
2.1	प्रारम्भिक जीवन	32
2.2	पारिवारिक स्थिति	37
2.3	संगीतात्मक पर्यावरण/परिवेश	41
2.4	वंश परिचय	46
2.5	स्वभाव, रहन–सहन	49
2.6	संगीत शिक्षा	53
2.7	जीवन दर्शन	58
2.8	अन्य रूचियाँ	65

अध्याय संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
तृतीय अध्याय	**पं. राजन साजन मिश्र का कृतित्व**	**69–120**
3.1	आपके द्वारा गायी गई विभिन्न रागें एवं उनकी रिकॉर्डिंग्स	69
3.2	पं. राजन साजन मिश्र द्वारा प्रस्तुत बंदिशों पर विस्तृत विवेचन	93
3.3	उपशास्त्रीय गायन एवं भक्ति संगीत	109
3.4	फिल्म में पार्श्व गायन एवं संगीत निर्देशन	117
चतुर्थ अध्याय	**बनारस की सांगीतिक परम्परा**	**121–180**
4.1	बनारस की पृष्ठभूमि (ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ में)	122
4.2	बनारस की संगीत परम्परा एवं संगीत जगत् में योगदान	131
4.3	बनारस घराना पं. राजन साजन मिश्र के परिप्रेक्ष्य में	139
4.4	गायन शैली एवं विशेषताएँ	162
पंचम अध्याय	**गायन कार्यक्रम एवं सम्मान**	**181–206**
5.1	आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्रों पर कार्यक्रम	181
5.2	संगीत सम्मेलनों में कार्यक्रम	189
5.3	विदेशों में कार्यक्रम	191
5.4	प्रचार–प्रसार हेतु लक्षित कार्यक्रम	195
5.5	सम्मान एवं पुरस्कार	199
5.6	विश्व प्रसिद्ध कलाकारों के विचार	203
षष्टम अध्याय	**सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण**	**207–219**
6.1	विद्यार्थी	207
6.2	कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ (व्याख्यान एवं प्रदर्शन द्वारा) देश विदेश में	212
6.3	प्रचार एवं संरक्षण हेतु स्थापित संस्थाओं में भूमिका	215
6.4	अन्य माध्यम (वेबसाइट, सी.डी. विडियो, कैसेट्स एवं साहित्य)	218

अध्याय संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
सप्तम अध्याय	**शास्त्रीय गायन ृके क्षेत्र में नवीन प्रयोग**	**220–232**
7.1	मौलिक चिनतन एवं मान्यताएँ	220
7.2	गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग	229
अष्टम अध्याय	**कलाकारद्वय से जुड़े रोचक एवं प्रेरक प्रसंग**	**233–239**
8.1	संगीत संबंधी प्रसंग	233
8.2	यात्राओं से संबंधित रोचक प्रसंग	237
8.3	अन्य प्रेरक प्रसंग	238
	उपसंहार	**240–250**
	शोध सारांश	**251–256**
	संदर्भ ग्रंथ सूची	**257–260**
	प्रकाशित शोध–पत्र	

छायाचित्र

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	पं. राजन एंव साजन मिश्र बाल्य अवस्था में	33
2.	बनारस के कबीरचौरा स्थित आवास जीर्णोद्धार के उपरान्त एवं पूर्व	33
3.	पं. राजन साजन मिश्र अपनी माताजी गगन किशोरी जी के साथ	34
4.	पिताजी पं. हनुमान मिश्र के साथ माताजी गगन किशोरी जी तबले पर संगत करते हुए	34
5.	'अद्वैत संगीत' नामक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म में स्कूल एवं कॉलेज के अनुभव को साझा करते हुए	35
6.	पं. राजन साजन मिश्र जी के परिवार के सदस्यगण	37
7.	नई दिल्ली (रमेश नगर) स्थित आवास	41
8.	पं. राजन साजन मिश्र के परदादाजी पं. गणेश मिश्र	46
9.	पं. राजन साजन मिश्र के दादाजी पं. सुरसहाय मिश्र	46
10.	पं. राजन साजन मिश्र के पिताजी पं. हनुमान प्रसाद मिश्र	46
11.	पं. राजन साजन मिश्र के चाचाजी पं. गोपाल मिश्र	46
12.	पं. नानक प्रसाद जी मिश्र – पं. राजन साजन मिश्र जी के परनानाजी एवं नेपाल दरबार के राजगुरु	47
13.	पं. झूमक लाल जी मिश्र – पं. राजन साजन मिश्र जी के नानाजी (दरबारी गायक)	47
14.	पं. राजन साजन मिश्र महाराणा कुम्भा संगीत समारोह, उदयपुर में आकर्षक वेशभूषा में	51
15.	पं. राजन साजन मिश्र के गुरुजन पं. बड़े रामदास जी, पं. हनुमान प्रसाद जी एवं पं. गोपाल मिश्र जी	53
16.	पं. राजन साजन मिश्र के आध्यात्मिक गुरु आचार्य रजनीश 'ओशो'	59
17.	पं. राजन साजन मिश्र बनारस में क्रिकेट खेलते हुए	65
18.	पर्यटन स्थल के भ्रमण के दौरान पं. राजन साजन मिश्र पुत्र पं. रितेश रजनीश मिश्र को गायन शिक्षा प्रदान करते हुए	67
19.	वाराणसी में गंगा नदी का विहंगम दृश्य	121
20.	भगवान काशी विश्वनाथ का प्राचीन मंदिर	121

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
21.	पद्म विभूषण पं. किशन महाराज जी (तबला सम्राट) एवं पं. राजन साजन मिश्र	137
22.	पद्म विभूषण विदुषी गिरिजा देवी जी (शास्त्रीय गायिका) एवं पं. राजन साजन मिश्र	137
23.	भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ एवं पं. हनुमान प्रसाद मिश्र कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए	138
24.	बनारस घराने के विद्वतजन एवं कलाकार	139
25.	बनारस में नौका विहार के साथ संगीत का आनंद लेते हुए पं. राजन साजन मिश्र	141
26.	पिता एवं गुरु पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी से संगीत शिक्षा ग्रहण करते हुए पं. राजन साजन मिश्र	141
27.	बनारस घराने की संगीत परंपरा	158
28.	"Two Voices and One Soul" - Pt. Rajan Sajan Mishra	169
29.	पं. राजन मिश्र जी एवं पं. साजन मिश्र जी से शोध विषयक चर्चा करते हुए शोधार्थी	178
30.	प्रेरक एवं मार्गदर्शक सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए	182
31.	दूरदर्शन पर पं. राजन साजन मिश्र जी के कार्यक्रमों का प्रसारण	187
32.	सवाई गन्धर्व संगीत समारोह	190
33.	सप्तक संगीत समारोह	190
34.	पं. भीमसेन जोशी संगीत समारोह	191
35.	श्री संकटमोचन संगीत समारोह	191
36.	वृंदावन गुरुकुल 'बैठक'	191
37.	संगीत संकल्प अधिवेशन	191
38.	राव माधोसिंह म्यूज़ियम ट्रस्ट (कोटा) द्वारा आयोजित संगीत समारोह	191
39.	विदेशों में कार्यक्रमों की प्रस्तुति	193
40.	वर्ल्ड टूर 'भैरव से भैरवी तक' 2017–18	196
41.	वर्ल्ड टूर – सर्ब अकाल बैठक, केलगरी (कनाडा)	197
42.	बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से डी.लिट. की उपाधि प्राप्त करते हुए	202

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
43.	माननीय राष्ट्रपति डॉ. आ.प.जै. अब्दुल कलाम साहब से पद्म भूषण प्राप्त करते हुए	202
44.	माननीय राष्ट्रपति डॉ. प्रणब मुखर्जी से सम्मान प्राप्त करते हुए	202
45.	माननीय राष्ट्रपति डॉ. आर. वेंकटरमन से सम्मान प्राप्त करते हुए	202
46.	माननीय राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी से सम्मान प्राप्त करते हुए	202
47.	माननीय राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जेल सिंह से सम्मान प्राप्त करते हुए	202
48.	पं. राजन मिश्र की जीवन यात्रा के साठ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर पं. जसराज, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पं. शिव कुमार शर्मा एवं पं. साजन मिश्र सम्मान पत्रक प्रदान करते हुए	202
49.	तत्कालीन मुख्यमंत्री गुजरात एवं वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी से सम्मान प्राप्त करते हुए	202
50.	विश्व प्रसिद्ध कलाकारों के साथ मधुर स्मृतियाँ	206
51.	देहरादून में संचालित 'गुरुकुल'	209
52.	गुरुकुल में पं. रितेश रजनीश मिश्र प्रस्तुति देते हुए	209
53.	'रसिपा' द्वारा संचालित गतिविधियाँ	209
54.	पं. साजन मिश्र की जीवन यात्रा के साठ वर्ष पूर्ण होने पर रसिपा द्वारा आयोजित कार्यक्रम	209
55.	नई दिल्ली (रमेश नगर) स्थित आवास पर गुरुपूर्णिमा उत्सव का आयोजन	212
56.	पं. राजन साजन मिश्र को पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए शोधार्थी	212
57.	'स्पिक मैके' द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए	213
58.	भारतीय विद्यापीठ, पुणे द्वारा आयोजित व्याख्यान एवं प्रदर्शन कार्यक्रम में राग दरबारी की बंदिश सिखाते हुए	213
59.	श्री श्रीरविशंकर जी द्वारा आयोजित अन्तर्नाद कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए	219
60.	पद्म विभूषण पं. बिरजू महाराज कथक नृत्य एवं पं. राजन साजन मिश्र गायन प्रस्तुत करते हुए	235

प्रथम अध्याय

शास्त्रीय गायन की विधाएँ, शैलियाँ एवं गायक कलाकार

प्रथम अध्याय

शास्त्रीय गायन की विधाएँ, शैलियाँ एवं गायक कलाकार

प्रकृति के कण–कण में संगीत विद्यमान है। प्रकृति की गोद में बहते हुए झरनों एवं नदियों की कल–कल बहती धारा में, पेड़ पौधों एवं पत्तों की सरसराहट में, पक्षियों के कलरव में, लहलहाती फसलों में, जीव–जन्तुओं में, ऋतु अनुसार होने वाले प्राकृतिक घटनाक्रम में अर्थात सर्वत्र संगीत ही व्याप्त है। प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य में रचे बसे स्वर एवं लय रूपी मौलिक तत्वों से उद्भूत रसात्मकता एवं आनन्द बोध ने मनुष्य को ईश्वर एवं स्वर का एकात्म भाव खोजने हेतु प्रेरित किया है। अनंत काल से हमारे ऋषियों, मुनियों, योगियों एवं तपस्वियों ने प्रकृति से प्रेरणा पाकर सतत् साधना, तपस्या एवं चिन्तन से निरन्तर खोज द्वारा स्वर एवं लय को मूर्त रूप प्रदान किया। वैदिक काल में धर्म एवं अध्यात्म के सुन्दर एवं अलौकिक वातावरण में स्वरों के स्थापन एवं विकास की यात्रा का क्रम आरम्भ हुआ। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक हमारे संगीत का क्रमिक विकास राग रागिनियों के प्रवाह में विविध गायन विधाओं शैलियों के अन्तर्गत होता रहा है। समय के साथ होने वाले प्राकृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों के बावजूद संगीत मनीषियों, कलाकारों एवं साधकों ने संगीत की मूल भावना को अक्षुण्ण रखते हुए सदैव शास्त्रीय एवं प्रामाणिक मान्यताओं का अनुसरण किया है अर्थात् साधन चाहे भिन्न–भिन्न रहे हों लेकिन साध्य एक ही रहा है वह है स्वर एवं ईश्वर का एकात्म भाव। संगीत के गर्भ में जीव मात्र के कल्याण की अवधारणा छिपी हुई है और यही कारण है कि हर युग में परमात्मा की शरणागति एवं मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का आधार हमारा शास्त्रीय संगीत बना है।

1.1 उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन की परंपरा व शैलियों का परिचय

भारतीय शास्त्रीय संगीत उस पावन गंगा के समान है जिसकी अविरल धारा सहस्रों वर्षों से एक लम्बे इतिहास क्रम के साथ स्वच्छन्द, निर्मल व शान्त भाव से परब्रह्म का पर्याय बनकर निरन्तर प्रवाहित हो रही है। हमारा संगीत प्राग्वैदिक काल से वर्तमान काल तक विविध आयामों से गुज़रा है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो कालान्तर में हुए राजनैतिक, सामाजिक, भौगोलिक व सांस्कृतिक परिवर्तनों का प्रभाव हमारे संगीत पर भी पड़ा है लेकिन हमारे संगीत का मौलिक, शास्त्र सम्मत व आध्यात्मिक स्वरूप आज भी भारत भूमि ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को सिंचित, पल्लवित व पोषित कर रहा है।

''भारतीय संगीत का विकास आज या कल की बात नहीं है। भारतीय संगीत का विकास एक लम्बे इतिहास क्रम को प्रस्तुत करता है। यह अनेक संगीत शैलियों, युग–प्रवृत्तियों तथा रचयिताओं के एक क्रमिक एवं व्यापक फलक से जुड़ा हुआ है। भारतीय संगीत आज जिस रूप में उपलब्ध है वह अनेक युगों की गायन शैलियों पर आधारित है। विभिन्न काल की शैलियाँ हमारे भारतीय संगीत को विविध आयामी विकास प्रदान करती रही हैं। वैदिक काल से लेकर मध्यकाल एवं आधुनिक काल तक भारतीय संगीत न जाने कितनी गायन शैलियों, विविध प्रवृत्तियों एवं संस्कृतियों से अनुप्रेरित होता रहा है।''[1]

''प्राचीन काल में भारतीय संगीत दिव्य और अलौकिक माना जाता था और उसका सम्बन्ध ऋषियों और मुनियों से होता था। धर्म, अध्यात्म और साधन के वातावरण में ही उसका जन्म और विकास हुआ और मन्दिरों और आश्रमों में उसका पालन–पोषण हुआ। वैदिक संगीत और गन्धर्वों का संगीत, इन दोनों का करीब–करीब एक ही तरह के वातावरण में विकास हुआ। मार्ग संगीत ने भी एक विशेष वातावरण में उन्नति की।''[2]

यदि संगीत के विकास क्रम पर दृष्टि डालें तो हम पायेंगे कि हमारा संगीत समय, काल परिस्थितियों का साक्षी बनकर अपने मौलिक स्वरूप को कायम रखते हुए शैलीगत दृष्टि से परिवर्तनशील रहा है। संगीत के मौलिक तत्व स्वर, ताल, लय आदि में निहित सौंदर्य बोध सांगीतिक संरचना का एक पक्ष है जबकि दूसरा पक्ष है संगीत के मौलिक तत्त्वों के माध्यम से भावाभिव्यक्ति करने का सुन्दर एवं समन्वित दृष्टिकोण। संगीत के मौलिक तत्त्वों को ऐतिहासिक कारणों से प्रभावित करना संभव नहीं है हाँ लेकिन अभिव्यक्ति का माध्यम व तरीका बदल जाने से शैलीगत भिन्नता दृष्टिगत होती है। यही शैलीगत विशेषता हमारे संगीत के जनमानस में समय एवं काल अनुसार लोकप्रिय बनने व जनरूचि का कारण बनती है।

''कला और उसकी शैली नित नवीन साँचों से उभरती हुई नये–नये रूपों में घटित होती रहती है। भारतीय संगीत के संबंध में भी यही तथ्य सिद्धान्ततः उजागर होता है। भारतीय संगीत सामगान, स्तुतिगान, ध्रुवागान, गीतिगान, जातिगान, प्रबन्धगान, ध्रुपद–धमार गान से लेकर ख्याल गायन तक के विविध रूपों में विकसित हुआ है।''[3]

---

1 डॉ. सत्यवती शर्मा : ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. सं. 24

2 डॉ. सुशील कुमार चौबे : संगीत के घरानों की चर्चा, पृ. सं. 29

3 डॉ. सत्यवती शर्मा : ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. सं. 24

सामगान एवं स्तुतिगान

वैदिक काल

इतिहासकारों की मान्यता के अनुसार ईसा से लगभग 2000 से 1000 वर्ष पूर्व वेदों का रचनाकाल बताया जाता है। वेदों में हमारी प्राचीनतम समृद्ध संस्कृति का संकलन है। वेदों की संख्या चार है– ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद। ''आर्यों को संगीत से इतना प्रेम था कि उन्होंने सामवेद को केवल गान करने के लिए ही बनाया था साथ ही एक उपवेद 'गन्धर्ववेद' की रचना और कर ली इसमें संगीत का ज्ञान हमें संहिताओं, ब्राह्मण ग्रंथों, प्रतिसाख्यों, व्याकरण और पुराणादि के द्वारा प्राप्त होता है।''[1]

''सामान्यतः प्रत्येक वैदिक संहिता में सूक्तियाँ–प्रार्थनायें और यज्ञ–विधान संबंधी मंत्रों का शुद्धतापूर्वक उच्चारण करने हेतु उन्हें स्वर पूर्वक पढ़ने पर जोर दिया जाता है और ये स्वर तीन हैं– उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। भारतीय संगीत का आदिम रूप वेदों में मिलता है। ऋग्वेद में इस देश की अन्य विधाओं एवं कलाओं के साथ संगीत का भी प्राचीनतम रूप सुरक्षित है। इसकी ऋचायें गेय हैं जो संगीत की पृष्ठभूमि में निर्मित हुई हैं।''[2] ''ऋग्वेद के मंत्रों को ऋचा कहते हैं। जब ये मंत्र एक स्वर में गाये जाते हैं तो ऋचा कहलाते हैं, किन्तु जब यही मंत्र स्वर एवं आलाप सहित गाए जाते हैं तब वही 'साम' बन जाते हैं। 'साम' की व्युत्पत्ति है सा + अमः = सा का अर्थ है ऋचा और अमः का अर्थ है आलाप अर्थात् आलाप से युक्त ऋचाओं का गान।''[3]

वैदिक काल में स्तुतिगान का बहुत महत्त्व था। आर्यों पर प्राकृतिक सौंदर्य का बहुत अधिक प्रभाव था। वे प्राकृतिक तत्त्वों की महत्ता को समझकर ऋग्वेद के सूक्तकों में देवी–देवताओं का स्तुति गान करते थे। वैदिक सूक्तियों में ऋषियों एवं मुनियों द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सस्वर एवं भावपूर्ण आराधना के साथ–साथ प्राकृतिक तत्त्वों के रूप–रूपान्तर देवी–देवता जैसे इन्द्र, वरुण, अग्नि, वायु आदि की स्तुति एवं आह्वान किया जाता था।

भारतीय संगीत का आधार स्तम्भ सामवेद को माना जाता है। सामवेद पूर्णतया संगीतमय है। ऐसा माना जाता है कि भारतीय संगीत का विकास इसी ग्रंथ से हुआ।

---

1 भगवतशरण शर्मा : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. सं. 29

2 डॉ. सत्यवती शर्मा : ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. सं. 25

3 एस. एस. आयंगर : संगीत का उद्गम स्थान सामवेद, संगीत फरवरी 1969, पृ. सं. 4

सामवेद में संगीत

"सामवेद उपासनात्मक है। इसके मंत्र गानमय हैं। ये गाये जाते हैं और इन गानों को सामगान कहा जाता है। ईश्वर भक्ति के सुगन्धित पुष्प सामवेद के प्रत्येक मंत्र में विराजमान हैं, जो अपने प्राण की सुगन्ध से स्वाध्यायशील व्यक्तियों के ह्रदयों को सुवासित कर देते हैं। हमारे देश में संगीत का विकास आरंभ से ही धार्मिक धरातल पर हुआ है और सामगान ने इसमें पहल की है। धर्म से सम्बन्धित और धार्मिक व्यक्तियों से संरक्षित होने के कारण वैदिक काल में संगीत तथा भक्ति पर्याय बने हुए थे।"[1]

"गान्धर्व वेद को सामवेद का ही उपवेद माना गया है। संगीत का मूलस्रोत सामवेद है। सामवेद एक ऐसा वेद है जिसके मंत्र यज्ञों में देवताओं की स्तुति करने के लिये गाये जाते थे। ऋचाओं के ही संगीतमय परायण से सामगान का प्रथम विकास ऋषियों द्वारा किया गया। सामवेद के द्वारा संगीत को नियम और विधान से आबद्ध कर दिया गया। पहले सामगान में केवल तीन स्वर–उदात्त, अनुदात्त, स्वरित प्रयोग होते थे। आगे चलकर एक–एक करके अन्य स्वरों की स्थापना होती गई और वैदिक काल में ही सामगान सात स्वरों में होने लगा। पाणिनि के अनुसार इन तीन स्वरों से ही षड्जादि सात स्वर उत्पन्न हुए–

"उच्चौ निषाद् गान्धारौ नीचा ऋषम् चैवतो।
शेषास्तु स्वरिता क्षेय षड्ज मध्यम पंचमाः।
अर्थात् उदात्त नि, ग, अनुदात्त रे–ध, स्वरित स–म–प।" [2]

"अनुदात्त को उच्च, मंद्र अथवा खाद भी कहते हैं। उदात्त को तार भी कहते हैं और स्वरित समतारक्षक मध्यम स्वर है। मन्द्र, मध्य और तार इन तीन स्थानों से ही षड्जादि सात स्वरों की सृष्टि हुई थी।"[3]

"वैदिक संगीत ग्रंथ सामवेद को साधारणतया पूर्वाचिक और उत्तरार्चिक, इन दो भागों में विभक्त किया जाता है। पूर्वाचिक भी ग्रामगेय और अरण्यगेय, इन दो प्रकार के गानों में विभक्त किया जाता है। उत्तरार्चिक को ऊह और ऊह्य, इन दो भागों में विभक्त किया गया है। ऊह और ऊह्य रहस्य गान है, जो सब लोग न गा पाते थे। इनके अधिकारी उपनिषदों के रहस्य को समझ लेने वाले साधक ही समझे जाते थे। ग्रामगेय गान ग्रामांचलों

---

1 डॉ. सत्यवती शर्मा : ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. सं. 29
2 स्वतंत्र शर्मा : भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण, पृ. सं. 10
3 उमेश जोशी : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. सं. 78

में निवास करने वाले जनसाधारण के लिए था। इसे सभी गा सकते थे। अरण्यगेय गानों को निर्जन वन्य प्रदेश में गाया जाता था।"[1] "हर–एक वेद अलग तरह से गाया जाता है। हर एक में स्वर की संख्या भिन्न है। ऋग्वेद के गायन में तीन स्वर हैं जो कि उदात्त, अनुदात्त और स्वरित कहे जाते हैं। 'यजुर्वेद' में भी तीन स्वर हैं पर सामवेद में सात स्वर हैं जिनके नाम है प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, क्रुष्ट, मंद्र और अतिस्वर्य।"[2]

वैदिक ग्रंथों में आर्चिक, गाथिक एवं सामिक गान का उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद में एक स्वर युक्त गान को आर्चिक, यजुर्वेद में दो स्वर युक्त गान को गाथिक एवं सामवेद में तीन स्वरों से किए जाने वाले गान को सामिक की संज्ञा दी गई है। आर्चिक गान का स्वर वैदिक प्रथम (लौकिक मध्यम), गाथिक गान के स्वर क्रुष्ट और प्रथम (लौकिक पंचम और मध्यम) और सामिक गान के क्रुष्ट, प्रथम और चतुर्थ है। सामिक के उपरांत संगीत के विकास क्रम में चार और स्वर स्थापित हुए। इस प्रकार से सामगान सात स्वरों में होने लगा।

अतः यह कहा जा सकता है कि वेदों के रचनाकाल से भारतीय संगीत के विकास को निश्चित दिशा मिली। हमारे ऋषियों–मुनियों द्वारा धर्माश्रय में संगीत को नियमों में आबद्ध करते हुए उसे व्यवस्थित रूप दिया गया। इस काल में सामगान एवं स्तुतिगान की स्वरमयी ध्वनि ईश एवं देव स्तुति के रूप में सर्वत्र गुंजायमान होने लगी। धर्म में संगीत की महत्ता के फलस्वरूप इस युग में धर्म एवं संगीत एक–दूसरे के पर्याय बन गये। सामगान में पहले उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित स्वरों का प्रयोग एवं आगे चलकर सात स्वरों के प्रयोग ने स्वरों की स्थापना एवं विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैदिक काल में धर्म के आश्रय एवं संरक्षण में संगीत ईश उपासना एवं भावाभिव्यक्ति का सुन्दर एवं प्रभावशाली माध्यम बना। वैदिक ऋचाओं के गान के रूप में शास्त्रोक्त, स्वरमय एवं भावपूर्ण स्तुतियों ने स्वर में ईश्वर के भाव को प्रतिपादित एवं प्रमाणित किया। अतः वेद हमारे संगीत के उद्गम स्थल हैं एवं सामगान प्राचीनतम प्राप्य गायन शैली।

पौराणिक काल तथा महाकाव्य काल

वैदिक काल से आरम्भ हुई सांगीतिक धारा का प्रवाह इस काल में भी विद्यमान था। "इस युग में जीवन की अमरता का प्रतीक मोक्ष माना गया तथा मोक्ष प्राप्त करने का साधन संगीत माना गया। पुराण में प्राचीन आख्यानों का संकलन है। इन पुराण कथाओं का

---

1 संगीत निबंधावली (संगीत कार्यालय, हाथरस), पृ. सं. 13

2 वही, पृ. सं. 42

प्रवचन कभी–कभी संगीत से समन्वित रहता है। उस समय ''कुशीलव'' नामक वर्ग प्राचीन कथाओं को कण्ठस्थ कर स्थान–स्थान पर जाकर सुनाया करता था। महत्त्व की बात यह है कि धार्मिक तथ्यों का चित्रण इस साहित्य में पाया जाता है। छान्दोग्य उपनिषद् में इस पुराण वाङ्मय को पंचम वेद के नाम से अभिहित किया गया है। सभी पुराण वाङ्मय में ईशस्तुति गायन का उल्लेख मिलता है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भक्ति का जो प्रवाह वैदिक काल से प्रवाहित था वह इस युग में भी विद्यमान था।''[1]

''इस युग में तैत्तिरीय–उपनिषद्, ऐतरेय उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण आदि ग्रन्थों से संगीत का आभास मिलता है। याज्ञवल्क्य वर्ण, रत्न प्रदीपिका, प्रतिभाष्य प्रदीप और नारदीय प्रभृति ग्रन्थों में भी संगीत का परिचय मिलता है। इन सभी ग्रन्थों में वैदिक सात स्वरों का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है। अन्य पुराण जैसे मारकण्डेय पुराण, वायु पुराण, विष्णु पुराण आदि में भी संगीत का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इन पुराणों में ग्राम राग, रागिनियों, तीन स्थानों मन्द्र, मध्य और तार, मूर्च्छना, नृत्य, नाट्य, वाद्य आदि का वर्णन प्राप्त होता है।''[2]

महाकाव्य काल के अन्तर्गत रामायण और महाभारत ये दो महाकाव्य मिलते हैं, जिनमें वैदिक संस्कृति का प्रभाव पूर्ण रूप से दिखाई देता है। आदि कवि वाल्मीकि द्वारा रामायण की उद्भावना की गई है। इस काल में संगीत अपने उत्कृष्ट स्थान पर था। उन्होंने रामायण की रचना गेयकाव्य के रूप में की। इसे मूलतः लवकुश जैसे कुशल गायकों द्वारा गाया गया। इस ग्रंथ में साहित्य एवं संगीत का सुन्दर एवं भावपूर्ण समन्वय दिखाई देता है।

''वैदिक काल की तरह इस काल में भी हर गृह में प्रातःकाल होते ही ईश्वर आराधना की संगीतमय स्तुति प्रस्फुटित हो उठती थी। इस संगीतमय साधना में गृह के सब सदस्य शामिल होते थे। गरीब–अमीर सभी ईश्वर उपासना किया करते थे।''[3]

रामायण में सामगान तथा गान्धर्व गान दोनों प्रणालियों की उन्नति के प्रमाण मिलते हैं। यज्ञों के अन्तर्गत प्रयोग किया जाने वाला संगीत सामगान अर्थात् वैदिक संगीत था। गान्धर्व गान यज्ञ–यागों में यज्ञ विधि से बाहर प्रचलित लौकिक संगीत था।

---

1 डॉ. सत्यवती शर्मा : ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. सं. 30

2 स्वतंत्र शर्मा : भारतीय संगीत का ऐतिहासिक विश्लेषण पृ. सं. 14

3 उमेश जोशी : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. सं. 102

डॉ. सत्यवती शर्मा के अनुसार ''रामायण एक कवि कलाकार की मनोहर रचना है। रामचरित्र जैसे अलौकिक विषय को एक अनूठी, संगीतमय, छन्दोबद्ध संवेदनशील शैली में प्रस्तुत कर महर्षि वाल्मीकि ने एक अद्वितीय कार्य किया जो कि इतिहास में कभी नहीं भुलाया जा सकता।''[1]

अतः रामायण काल में जहाँ एक ओर वैदिक संस्कृति के दर्शन होते हैं वही दूसरी ओर महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण महाकाव्य की सांगीतिक अभिव्यक्ति का प्रमाण मिलता है। इस गेय काव्य में भगवान श्रीराम के आदर्श चरित्र एवं उनके द्वारा स्थापित सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का सुन्दर चित्रण किया गया है। इस काल में हमें उत्कृष्ट संगीत के दिग्दर्शन होते हैं।

महाभारत हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति के दर्शन कराने वाला महाकाव्य है। इसके रचयिता महर्षि वेदव्यास थे। इसके अन्तर्गत कौरवों एवं पाण्डवों की राजनैतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति के साथ उनके बीच हुए युद्ध का वर्णन है। महाभारत ग्रंथ में एक लाख श्लोक हैं जो संगीतमय हैं। इनकी विशेषता यह है कि सभी श्लोक गेय हैं। इस युग में भगवान श्री कृष्ण संगीत के महान पंडित थे उन्होंने सम्पूर्ण समाज को न केवल ज्ञान व योग का संदेश दिया अपितु संगीत को समाज में प्रचारित कर ईश आराधना का माध्यम बनाते हुए जनमानस में प्रतिष्ठित किया। वैदिक काल की भाँति इस काल में भी धर्म और संगीत एक–दूसरे के पर्याय हो गये।

संगीत के माध्यम से जहाँ ईश्वर प्राप्ति का भाव दृढ़ होता गया वहीं मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भी संगीत सुन्दर माध्यम बना। इस युग में भक्ति संगीत के माध्यम से मानव जीवन में उत्तम आचार–विचार, संयम, त्याग व नैतिक मूल्यों की स्थापना करते हुए आध्यात्मिक चिंतन का दृष्टिकोण प्रतिपादित हुआ। वैदिक संगीत की पावन परम्परा के रूप में सामगान एवं गान्धर्व गान का प्रचलन इस युग में विद्यमान था। सामगान की परंपरा इस काल में विशुद्ध एवं विकसित रूप में रही। सामगायक का कार्य स्तुतिगान करना था।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि महाभारत काल में भगवान श्रीकृष्ण के ज्ञानमय, भक्तिमय व रसमय स्वरूप रूपी विशाल वृक्ष की छाया में भारतीय संगीत पल्लवित व पुष्पित होते हुए न केवल उच्चता के शिखर पर पहुँचा अपितु श्रेष्ठता एवं पूर्णता को प्राप्त हुआ।

---

1 डॉ. सत्यवती शर्मा : ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. सं. 33

ध्रुवा गान (भरतकाल)

भारतीय संगीत के आधार ग्रंथों में शास्त्रीय विवेचना की दृष्टि से भरत के नाट्यशास्त्र का नाम सर्वप्रथम आता है। इस ग्रंथ से साहित्य एवं संगीत संबंधी प्रामाणिक सामग्री प्राप्त होती है। नाट्यशास्त्र के अध्याय 32 में ध्रुवागीतों के बारे में विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है। इसमें ध्रुवा के पाँच भेद, छन्द विधि तथा गायक–वादकों के गुण दिए गये हैं।

डॉ. सत्यवती शर्मा के अनुसार नाट्य के अन्तर्गत 'ध्रुवा' नामक गीतों का विशिष्ट स्थान है। नाटक में संगीत का प्रयोग कथावस्तु को अग्रसर करने के लिए किया जाता था। संगीत का प्रयोग पात्र की प्रकृति, चित्तवृत्ति तथा अवस्था का सूचक होने के अतिरिक्त अभिव्यंजना के लिए किया जाता था, अतः भरतकाल में ध्रुवागीतों का सर्वाधिक महत्त्व है। इन ध्रुवा गीतों में साहित्य विषयक छन्द, यति तथा अक्षर जैसे उपादानों के साथ संगीत विषयक वर्ण, अलंकार, स्थान, लय, उपपाणि जैसे अंगों का सामंजस्य रहता था।[1]

ध्रुवा गीत के पाँच भेद हैं– प्रावेशिकी, नैष्क्रामिकी, आक्षेपिकी, प्रासादिकी तथा अन्तरा। नाटक के आरम्भ में प्रवेश करते समय गाई जाने वाली ध्रुवा 'प्रावेशिकी', अंक की समाप्ति में अर्थात् निर्गम पर गाई जाने वाली ध्रुवा के लिए नैष्क्रमिकी, नाट्य क्रम का उल्लंघन करते हुए अर्थात् मध्य में नृत्य के साथ गाई जाने वाली ध्रुवा आक्षेपिकी चित्त की प्रसन्नता एवं आनन्द की अनुभूति हेतु गाई जाने वाली ध्रुवा प्रासादिकी थी और पात्र के दुःख से व्याकुल होने, क्रोधयुक्त तथा विश्रान्त आदि अर्थात असन्तुलन को व्यक्त करने के लिए गाई जाने वाली ध्रुवा अन्तरा कहलाती थी।

गीतिगान

संगीत के प्राचीन ग्रंथों संगीत रत्नाकर, वृहद्देशी आदि में गीतिगान, जातिगान तथा प्रबन्ध गान आदि का उल्लेख मिलता है। संगीत रत्नाकर के अनुसार वर्ण, पद तथा लय में समन्वित गान क्रिया गीति कहलाती है। प्राचीन गीतियाँ दो प्रकार की थीं– स्वराश्रिता तथा पदाश्रिता।

''स्वामी प्रज्ञानन्द के कथनानुसार ईसा की आरम्भिक शताब्दी में भी गान्धर्व या मार्ग संगीत प्रचलित था परन्तु साथ ही साथ लोगों की रुचि देशी संगीत की ओर अधिक रही। विभिन्न स्थानों के लोगों ने अपने–अपने मनपसन्द संगीत का निर्माण किया और उसी का

---

1 डॉ. सत्यवती शर्मा : ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. सं. 35, 36

प्रचलन अधिक होता रहा जिसके फलस्वरूप मागधी, अर्द्धमागधी, पृथुला व संभाविता गीतियाँ बनी। इसी प्रकार और भी कई तरह का संगीत उस समय में प्रचलित होता गया, जो लोगों के अपने मनपसन्द संगीत के निर्माण करने का परिणाम था। धीरे–धीरे शास्त्रीय संगीत तीन विभिन्न धाराओं में विभक्त हो गया– (1) मंदिर संगीत (2) दरबार संगीत (3) नाटक संगीत।''[1]

स्वराश्रित गीति

स्वराश्रित गीतियाँ वह हैं जिनमें स्वर प्रधान रहता है अर्थात् स्वरों को महत्त्व देते हुए गाया जाए। ये पाँच प्रकार की हैं– शुद्धा, भिन्ना, गौड़ी, बेसरा और साधारणी।

पदाश्रित गीति

यह स्थायी, आरोही, अवरोही और संचारी इन चारों वर्णों, पद तथा लय से की जाने वाली विशेष गायन क्रिया है। ये चार प्रकार की हैं– मागधी, अर्द्धमागधी, सम्भाविता तथा पृथुला।

प्रसिद्ध शास्त्रकार मतंग ने सात प्रकार की गीतियों का वर्णन किया है– शुद्धा, भिन्ना, गौड़ी, रागगीति, साधारणी, भाषा तथा विभाषा। इन गीतियों की अपनी–अपनी विशेषतायें थीं।

जातिगायन

''प्राचीनकाल में रागों के स्थान पर जातिगायन की प्रथा प्रचलित थी। रागों के पूर्व रूप को जाति कहते हैं। भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में जाति का लक्षण इस प्रकार किया है–

''स्वरा एवं विशिष्ट सन्निवेश भाजो रक्तिमदृष्टाभ्युदयं च जनयन्ती जातिरित्युक्ताः।''

अर्थात् स्वरों की वह विशिष्ट रचना जो अदृष्ट अर्थात् धर्म का अभ्युदय तथा चित्त का रंजन करती है, उसे जाति कहते हैं।''[2]

''गीति के साथ–साथ जाति गायन भी प्रचलित था जिसका समय नर्मदेश्वर चतुर्वेदी जी के अनुसार पहली से आठ सौ ई. तक माना जा सकता है। वैसे रामायण में भी (जो कि कुछ विद्वानों के अनुसार 400 ई. पू. में लिखी गई थी) जाति का उल्लेख मिलता है और

---

1 उमेश जोशी : भारतीय संगीत का इतिहास (1978), पृ. सं. 140

2 पं. जगदीश नारायण पाठक : संगीत शास्त्र प्रवीण, पृ. सं. 37

13वीं शताब्दी के संगीत रत्नाकर नामक ग्रंथ में भी जाति का वर्णन किया गया है।''[1] श्री रामअवतार वीर के अनुसार ''बौद्धकाल में गाँवों में धर्म का प्रचार सामान्यतः संगीत द्वारा होता था। ये धार्मिक भजन अथवा गीत लोक भाषाओं में ही होते थे। इन भजनों का विषय भी ईश्वर भक्ति पर होता था। गायक लोग काफी समय तक इसी प्रकार भक्ति गान करते रहे। उन्होंने इस आशय के लिए अठारह जातियों का चयन किया। इन जातियों की ध्वनि बड़ी प्रभावशाली और मनमोहक होती थी।''[2] डॉ. सुमति मुटाटकर ने जातियों की उत्पत्ति स्तुति गानों से बताई है। उनके अनुसार ''ऐसी प्रथा चली कि भगवान की दिनचर्या प्रातःकाल से रात तक के लिए निश्चित करके दिन के भिन्न–भिन्न प्रहरों के लिए भिन्न गीत तथा तर्ज निश्चित किए गए। इन्हीं में से जातियों की निर्मिति हुई। जिनकी संख्या कुल अठारह है।''[3]

अतः यह कहा जा सकता है कि स्तुति गान से जातिगान की निर्मिति एवं जातियों से राग का स्वरूप उद्भूत हुआ। सामगान की भाँति जातिगान भी एक पवित्र गान था। ''प्राचीन काल में 'राग' नाम की कोई वस्तु नहीं थी। 'राग' के स्थान पर उस समय ये जातियाँ वास्तव में 'मूल राग' थीं। इन जातियों में विकार होने से अनेक रागों का जन्म हुआ। भरत के नाट्यशास्त्र में जाति के दस लक्षण 'अंश, ग्रह, तार, मंद्र, न्यास, अपन्यास, अल्पत्व, बहुत्व, षाड़व और औडव' बताए गए हैं, यही प्राचीन रागों के दस लक्षण भी हैं।''[4]

प्रबन्ध गान

''प्रबन्ध का शाब्दिक अर्थ है 'प्र + बन्ध' या 'प्रकृष्ट रूपेण बन्धः' अर्थात् वह गेय रचना जिसमें अंगों को भली भाँति, सुन्दर रूप से बाँधा गया है। इस प्रकार 'प्रबन्ध' में अंगों का एक अंग में बंधा होना ही मुख्य अर्थ है। आजकल 'बंदिश' या चीज़ भी इसी के अन्तर्गत आती है। इस प्रकार स्वर, ताल व शब्द से युक्त रचना को प्रबन्ध कहते हैं।''[5]

''संगीत रत्नाकर तथा संगीतराज नामक ग्रंथों में प्रबन्ध का क्रम निम्नलिखित प्रकार से दिया गया है''[6] –

---

1 डॉ. मधुबाला सक्सेना : ख्याल शैली का विकास, पृ. सं. 33

2 श्री रामअवतार वीर : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. सं. 50

3 डॉ. सुमति मुटाटकर : लक्ष्य संगीत, दिसम्बर 1956 (लेख– ''संगीत के चार चरण''), पृ. सं. 56

4 प्रभुलाल गर्ग 'वसंत' : संगीत विशारद, पृ. सं. 185

5 वही, पृ. सं. 227

6 डॉ. सत्यवती शर्मा : ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. सं. 48

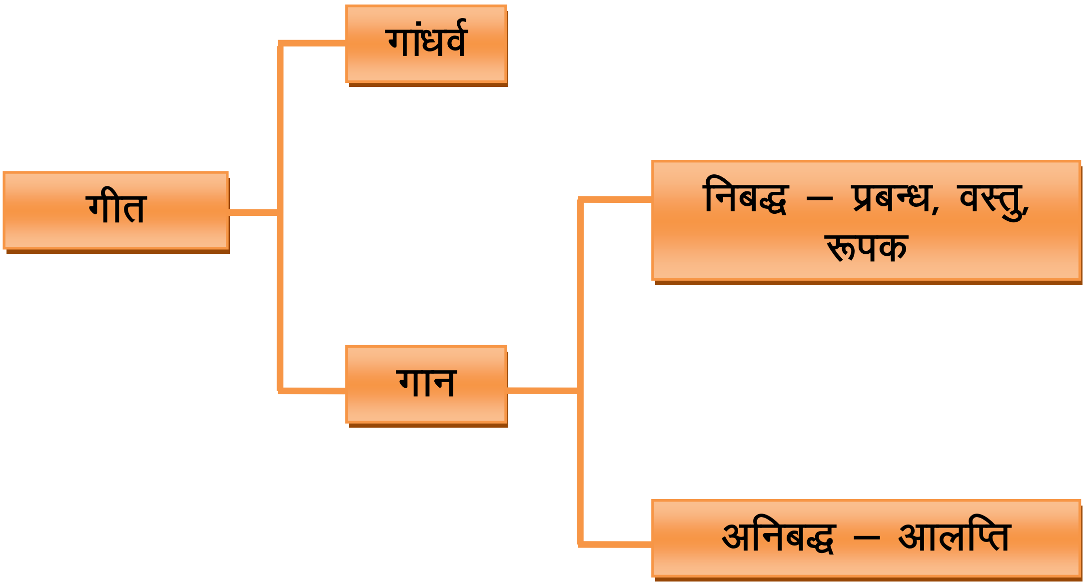

यहाँ गान के दो भेद निबद्ध व अनिबद्ध माने गये हैं। अनिबद्ध का अर्थ ऐसा गान जो ताल से मुक्त हो व जिसमें स्वतंत्र आलाप लिये जा सकें। जो रचनाएँ नियमानुसार स्वर व ताल में बद्ध हों निबद्ध गान के अन्तर्गत मानी गयी हैं। निबद्ध गान के भी तीन भेद हैं– प्रबन्ध, वस्तु तथा रूपक।

स्वर, ताल और पद इन तीनों का समावेशित रूप प्रबन्ध में मिलता है। आज की बंदिशों में भी स्वर, ताल व पद इन तीनों अवयवों की रचना का समावेश दृष्टिगत होता है। प्रबन्ध के अवयव धातु कहलाते थे। प्रबन्ध के चार धातु मान्य थे– उदग्राह, ध्रुव, मेलापक व आभोग।

1. उदग्राह – इससे गीत का प्रारम्भ किया जाता था।
2. ध्रुव – ध्रुव उस अंश को कहा जाता था जो गीत के अंत तक प्रत्येक कड़ी के बाद पुनरावृत्त होता रहता था। ध्रुव का शाब्दिक अर्थ है – 'अटल'।
3. मेलापक – उदग्राह और ध्रुव इन दो धातुओं को मिलाने वाले को मेलापक कहा जाता था।
4. आभोग – गीत के अन्तिम भाग को आभोग कहा जाता था।

ऐसी प्रबन्ध रचना जिसमें दो धातु हो द्विधातु, तीन धातु हो त्रिधातु, चार धातु हो चतुर्धातु प्रबन्ध रचना कहा जाता था। प्रबन्ध की रचना में कम से कम दो धातुओं का होना आवश्यक था। उदग्राह और ध्रुव किसी सांगीतिक रचना के अनिवार्य अंग थे। ध्रुव को

आधुनिक दृष्टि से स्थायी के समान समझा जा सकता है। ध्रुव के पहले एक बार उदग्राह गाया जाता था। प्रबन्ध के छह अंग मान्य थे– स्वर, विरुद, पद, तेनकं, पाटम् तथा ताल। प्रबन्ध की पाँच जातियाँ मानी गई हैं जिनमें अंगों के आधार पर वर्गीकरण किया गया है– (1) मेदिनी (छः अंग) (2) आनंदिनी (पाँच अंग) (3) दीपिनी (चार अंग) (4) भाषिनी (तीन अंग) (5) तारावली (दो अंग)।

अतः हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार प्राचीनकाल में प्रबन्ध रचना का आधार छः अंग थे उसी से अनुप्रेरित होकर आज की बंदिशों एवं विविध गायन शैलियों का निर्माण हुआ है।

ध्रुपद

प्रबन्ध गान के पश्चात् ध्रुपद गायन का युग प्रारंभ हुआ। ध्रुपद की रचना का आधार प्राचीन प्रबन्ध गान शैली ही है। इस गायकी में स्वर, लय एवं साहित्य का सुन्दर समन्वय परिलक्षित होता है। ध्रुपद की चार वाणियाँ प्रचलित हैं– गोबरहार वाणी, खंडहार वाणी, डागुर वाणी एवं नौहार वाणी। '' 'ध्रुव' का अर्थ होता है स्थिर और पद का बोध गीत के पद पंक्ति या चरण से होने के कारण ही इसे ध्रुपद कहा गया है। अर्थात् वह गीत जिसके पद व पंक्ति स्थिर व मन्द गति के हों, वही ध्रुवपद नाम से प्रख्यात है।''[1] ''प्राचीनकाल में हमारे ऋषि–मुनि संस्कृत ध्रुवपद में संस्कृत श्लोकों को गाकर भगवान् की आराधना करते थे।''[2] श्री रामअवतार वीर के अनुसार ''राजा मानसिंह को इस गायन का निर्माता बताया जाता है। यह गायन बौद्धकाल में भी गाया जाता था। अतः यह संभावना की जाती है कि राजा मानसिंह ने इसकी गायन पद्धति में सुधार किया हो और यह दरबारी गायनों में अधिक सर्वप्रियता प्राप्त कर गया हो।''[3]

ध्रुपद गायन कब से आरम्भ हुआ इस बारे में तो अनुमान लगाना कठिन है लेकिन विगत लगभग 500 वर्षों से अर्थात् मुगलकाल से आज तक यह प्रचार में है। राजा मानसिंह तोमर व अकबर का काल ध्रुपद – धमार के उत्कर्ष का काल था।

''ग्वालियर, वृन्दावन और अकबर का दरबार ध्रुवपदियों के गढ़ थे। स्वामी हरिदास, तानसेन, रामदास, बैजू, बख्शू, सूरदास, गोविंद स्वामी आदि ध्रुवपदों के विख्यात रचयिता थे। स्वामी वल्लभाचार्य, सूरदास तथा अष्टछाप के भक्त कवियों या वाग्गेयकारों की रचनाओं

---

1 डॉ. हरीश कुमार तिवारी : मंच प्रदर्शन में कलाकार एवं श्रोता, पृ. सं. 80

2 प्रभुलाल गर्ग ''वसंत'' : संगीत विशारद, पृ. सं. 232

3 राम अवतार वीर : भारतीय संगीत का इतिहास, पृ. सं. 181

को कीर्तन कहा जाता है, परंतु यह ठीक नहीं है। क्योंकि कीर्तन गायकों की कोई अलग शैली नहीं, उससे तो केवल यह बोध होता है कि उक्त गान हरि–भक्ति के हैं। राग, छंद, कविता, ताल और गायकी, सबको देखते हुए कीर्तन और ध्रुवपद एक ही हैं। केवल कीर्तनकार का भाव दरबारी गायकों के भाव से भिन्न होता है।"[1]

धमार

धमार गायन भी ध्रुपद गायन शैली का समकालीन है। दोनों शैलियाँ समानता लिए हुए हैं। धमार गीतों में प्रायः ब्रज की होली का वर्णन मिलता है। इसमें धमार ताल का ही प्रयोग होता है। ये गीत प्रायः शृंगारिक होते हैं क्योंकि इनमें राधा–कृष्ण के युगल स्वरूप, रंग, अबीर गुलाल, पिचकारी व गोपियों के साथ होली की लीलाओं का वर्णन प्राप्त होता है। इन रचनाओं में जहाँ फागुन मास की मस्ती प्रतिबिंबित होती है वहीं जीव एवं ब्रह्म के मिलन के आध्यात्मिक भाव का दर्शन होता है।

पुष्टीमार्गीय संगीत (हवेली संगीत)

श्रीमद् वल्लभाचार्य महाप्रभुजी ने प्रभु की सेवा द्वारा भगवत्प्राप्ति एवं भगवद् रसानुभूति का मार्ग प्रकट किया। उन्होंने भगवान् कृष्ण के रसमय स्वरूप को प्रकट करते हुए राग, भोग व शृंगार के माध्यम से अनुपम सेवा प्रणालिका स्थापित की। श्रीमद् वल्लभाचार्य जी व उनके सुपुत्र श्री विट्ठलनाथ जी (श्री गुसांई जी) ने प्रभु के सुख व स्वभाव का ध्यान रखते हुए अष्टयाम सेवा की सुन्दर सुव्यवस्थित सेवा प्रणाली का निर्धारण किया। इनके द्वारा भगवान श्रीकृष्ण के बालस्वरूप व बालभाव के अनुरूप भोग व शृंगार के साथ ऋतुओं एवं उत्सवों को ध्यान में रखते हुए राग–रागिनियों के रस, भाव व समय का साम्य श्री ठाकुर जी की लीलाओं से बिठाते हुए ध्रुपद–धमार शैली के आधार पर एक अद्भुत एवं अलौकिक कीर्तन गान की परंपरा विकसित हुई। रसेश्वर भगवान श्री कृष्ण के नित्य सेवाक्रम में कीर्तन क्रम को जोड़ते हुए अष्टयाम सेवा अर्थात् मंगला, शृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, संध्या भोग, संध्या आरती एवं शयन में समयानुकूल राग–रागिनियों का प्रयोग सुनिश्चित किया गया। इसके अतिरिक्त ऋतु, उत्सव, लीला भावना एवं भक्तों के हृदय में उद्धत भावों के अनुरूप राग–रागिनियों एवं तालों का प्रयोग कीर्तन गान परंपरा में किया जाने लगा।

---

1 डॉ. डी. जी. व्यास : संगीत निबंधावली (लेख – ध्रुवपद और उसकी गायन शैली), पृ. सं. 91

वल्लभ संप्रदाय के अंतर्गत कीर्तन गान की परंपरा को नित्य सेवा का अंग बनाकर अष्टछाप की स्थापना की गई। हवेली कीर्तन परंपरा में आचार्य श्रीमद् वल्लभाचार्य जी के चार सेवक कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास एवं परमानन्द दास और गुसाईं जी के चार सेवक गोविन्द स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास एवं नंददास थे। "ये अष्टछाप के रचनाकार संगीत के उच्च कोटि के ज्ञाता होने के साथ–साथ सुकवि व श्रेष्ठ गायक भी थे। गुरुकृपा से इन आठों संत कवियों ने भगवत् स्वरूप व लीलाओं के साक्षात् दर्शन किए एवं उन्हें अनुभूत किया। उन्होंने श्रीकृष्ण की लीलाओं को ब्रजभाषा में विविध राग–रागिनियों व तालों में ध्रुपद–धमार शैली में निबद्ध किया।"[1] आज भी इन पदों को उन्हीं राग–रागिनियों में गाने से प्रभु की लीलाओं की अवर्णनीय अनुभूति होती है। ये सभी कीर्तनकार अपने पदों की रचना कर उनके आराध्य देव प्रभु श्रीनाथ जी के समक्ष गाकर उन्हें रिझाते थे। अष्टछाप के अतिरिक्त और भी कीर्तनकारों ने कीर्तन की पद रचना की है।

रागों के प्राचीन व मौलिक स्वरूप के दर्शन आज भी पुष्टिमार्गीय कीर्तन परंपरा में होते हैं। इसके अलावा कई दुर्लभ राग जो आज लुप्त प्रायः हैं उन्हें भी हवेली संगीत के कीर्तनकारों द्वारा सुना जा सकता है। शास्त्रीय संगीत में निहित रागों के समय चक्र व रसोत्पत्ति का तारतम्य प्रभु लीलाओं से करना एक भावनात्मक, वैज्ञानिक व उच्च कोटि के सांगीतिक चिंतन की ओर इंगित करता है। संगीत के शास्त्र पक्ष से प्रभु का सुबह जगाने से शयन तक का सेवा प्रकार एवं लीलाओं का समग्र साम्य इस शैली के वैशिष्ट्य को उजागर करता है। इसमें कदाचित संदेह नहीं है कि जहाँ पुष्टिमार्गीय संगीत परंपरा में राग–रागिनियों के ऋतु व समयानुसार प्रयोग से जहाँ भारतीय संगीत को संरक्षण मिला वहीं दूसरी और संगीत भगवत् प्राप्ति व लीला माधुर्य की अनुभूति का प्रामाणिक एवं अद्वितीय माध्यम बना। इस गायन शैली में जहाँ ध्रुपद–धमार गायन की मूल परंपरा अक्षुण्ण रही वहीं संगीत की प्राचीनता व मौलिकता संरक्षित रही। पारंपरिक वाद्यों अर्थात् हारमोनियम, सारंगी, पखावज, झाँझ, डफ आदि के साथ आज भी पुष्टिमार्गीय मंदिरों में अष्टछाप के पद गाये जाते हैं। यह परंपरा आज भी अपने मूल स्वरूप में विद्यमान है।

ख़्याल

ख़्याल फ़ारसी भाषा का शब्द है, इसका अर्थ है– विचार या कल्पना। कल्पनाशीलता ख़्याल गायकी का प्रमुख गुण है। ख़्याल गायकी में निश्चित राग एवं ताल

[1] श्रद्धेय शरद कुमार गोस्वामी जी से वार्ता (वंशज–महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी)
स्थान– महाप्रभु जी का बड़ा मंदिर, पाटनपोल, कोटा, दिनांक 14.7.2014

में निबद्ध काव्य रचना अर्थात् बंदिश को, आलाप, बोल आलाप, बहलावा, बोलबाँट, सरगम, तान, बोलतान आदि के माध्यम से राग का स्वरूप स्थापित करते हुए गायक अपनी कल्पना से मनोभावों की सुन्दर अभिव्यक्ति करता है।

प्राचीन काल से उत्तर भारत में अनेक गायन शैलियाँ प्रचलन में रही हैं। वैदिक काल से शुरू हुआ गायन परंपराओं का यह सफर उत्तरोत्तर विकास के क्रम को तय करते हुए मध्यकाल तक पहुँचते–पहुँचते ध्रुपद धमार एवं उसके बाद ख़्याल के रूप में स्थापित हो गया। ख़्याल के उद्‌भव एवं विकास के बारे में विद्वानों के भिन्न–भिन्न मत हैं। ''कुछ विद्वानों के अनुसार 14वीं शताब्दी में अमीर खुसरों ने भारतीय संगीत में ईरानी संगीत का मिश्रण करके अपनी कल्पना से ख्याल शैली का आविष्कार किया।''[1] ''श्री उमेश जोशी 'उत्तर भारतीय संगीत का इतिहास' नामक पुस्तक में लिखते हैं– 15वीं शताब्दी में जौनपुर के बादशाह सुल्तान हुसैन शर्की संगीत कला के अत्यंत प्रेमी थे। इन्होंने ख़्याल गायकी का आविष्कार किया और नवीन रागों की रचना की। पं. विनय चंद्र मौदगल्य के अनुसार ''अमीर खुसरों एवं सुल्तान हुसैन शर्की को ख्याल का स्तर ऊँचा करने एवं लोकप्रिय बनाने का श्रेय दिया जा सकता है न कि उसका आविष्कार करने का। इसका क्रमशः विकास हुआ है। सदारंग और अदारंग ने हज़ारों ख़्याल रचे।''[2] नियामत खाँ (सदारंग) को इस गायकी का निर्माता मानते हुए गोस्वामी कहते है कि ''मुगल के अकबरी दरबार में तानसेन से पूर्व कव्वालों, कलावंतों को दरबार में तथा जनक्षेत्र में एक सा आदर एवं महत्त्व प्राप्त था। किन्तु जब ध्रुपद ने दरबार में अत्यधिक प्राथमिकता प्राप्त की तो कव्वाल व कलावंतों को क्षति पहुँची। परन्तु धीरे–धीरे ख़्याल विकसित होने लगा और सदारंग ने अपनी विलक्षण कल्पना शक्ति से उसे उज्ज्वल, पृथक एवं सुन्दर रूप दिया। उसकी कमियों को पूरा किया और विस्तृत क्षेत्र तथा सौंदर्य से परिपूर्ण कर दिया ताकि वह ध्रुपद का प्रतिद्वंद्वी बन उसे पछाड़ सके।'' अर्थात ख़्याल के आविष्कारकों की शृंखला में चाहे अमीर खुसरो हों या सुल्तान हुसैन शर्की और या चाहे मोहम्मद शाह रंगीले के प्रसिद्ध दरबारी गायक नियामत खाँ (सदारंग) हों लेकिन इतना तो निर्विवाद सत्य है कि ध्रुपद के साथ–साथ ख़्याल ने भी समाज में शास्त्रीय संगीत में निहित राग–रागिनियों की रसमयी धारा को सम्पूर्ण समाज में प्रवाहित कर हमारे संगीत के प्राचीन व आध्यात्मिक स्वरूप को पुष्ट करते हुए सांगीतिक वैभव व सांस्कृतिक चैतन्यता का आभास निरन्तर कराया है।

---

1 नंदराम चतुर्वेदी : भारत में संगीत शिक्षा, संगीत, जून–1962, पृ. सं. 28

2 डॉ. सत्यवती शर्मा : ख़्याल गायन शैली विकसित आयाम, पृ. सं. 80

वर्तमान में ख़्याल तीन प्रकार से गाये जाते हैं – विलम्बित ख़्याल, मध्यलय के ख़्याल एवं द्रुतलय के ख़्याल। विलम्बित ख़्याल को बड़े ख़्याल एवं मध्य या द्रुतलय के ख़्याल को छोटे ख़्याल की श्रेणी में रखा जाता है। बड़े ख़्याल एकताल, झूमरा, तिलवाड़ा, आड़ाचौताल आदि में विलम्बित लय में एवं छोटे ख़्याल एकताल, त्रिताल, झपताल, रूपक, सूलफ़ाक्ता आदि तालों में मध्य एवं द्रुतलय में गाये जाते हैं। सुधा श्रीवास्तव के अनुसार ''ख़्याल गायन शैली में बड़े और छोटे ख़्याल दोनों गीत प्रकारों का समावेश करने से श्रोता को राग के सम्पूर्ण दर्शन हो जाते हैं।''[1]

ख़्याल में बंदिश के प्रायः दो भाग स्थायी एवं अंतरा होते हैं। ख़्याल के गीतों में भक्ति, शृंगार एवं करुण रस प्रधान होता है। ख़्याल गायकी में राग के नियमों का पालन करते हुए गायक आलाप तान, लय, ताल, कण, मीड़, गमक आदि द्वारा ख़्याल को सजाते हुए काल्पनिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक भावों से अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि मुगलकाल से आरम्भ हुआ ख़्याल का यह सफर आज तक अनवरत जारी है। कभी इस गायकी को राजा–महाराजाओं का आश्रय प्राप्त हुआ तो कभी मुगल–शासकों के संरक्षण से इस शैली के सौंदर्य में अभिवृद्धि हुई। मुगल काल के पश्चात् मंदिर एवं मठों में प्रभु की स्तुति का आधार बन ख़्याल भारतीय संगीत को पल्लवित एवं पुष्पित करते हुए आधुनिक युग में प्रतिष्ठा के आसन पर विराजित है। यद्यपि समाज में आज भी ध्रुपद–धमार शैली को श्रद्धा भाव से देखा जाता है लेकिन इसके बावजूद भी ख़्याल ने समाज में अपने परंपरावादी शास्त्रोक्त स्वरूप के कारण लोकप्रिय एवं गौरवमयी स्थान बना लिया है। विभिन्न कालों में घरानों, अनेकानेक कलाकारों व संगीत मनीषियों के योगदान ने इसके उत्तरोत्तर विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ख़्याल के उद्‌भव के समय एवं उसके बाद ही कुछ अन्य गायन शैलियाँ जैसे– टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी आदि भी प्रचार में आयीं।

टप्पा

ऐसा कहा जाता है कि ख़्याल के बाद ही टप्पा गायकी प्रचार में आयी। ''टप्पे का गायन सभ्य समाज में शौरी मियाँ ने प्रचलित किया। टप्पे में प्रायः पंजाबी भाषा के शब्द होते हैं, इससे ऐसा समझा जाता है कि इस गीत का उद्‌गम स्थल पंजाब होगा।''[2]

1 सुधा श्रीवास्तव : भारतीय संगीत के मूलाधार, पृ. सं. 128

2 पं. विष्णु नारायण भातखण्डे : क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग–4, पृ. सं. 48

टप्पा प्रायः काफी, झिंझोटी, पीलू, बरवा, माँझ, भैरवी, खमाज इत्यादि रागों में गाया जाता है। इसकी गायकी का ढंग ख़्याल, ध्रुपद–धमार आदि से बिल्कुल अलग है। टप्पा शृंगार रस प्रधान गायकी है। इसकी गति चपल किन्तु स्वर सौंदर्य लिए हुए होती है। इसके गायन के लिए गले की विशेष तैयारी करनी पड़ती है। इस शैली के गायन हेतु गले में स्वाभाविक मीड़, खटके, मुर्की के साथ तैयार व दानेदार तानें गाने की क्षमता होना आवश्यक है।

तराना

यह ख़्याल की तरह की गायन शैली है परन्तु इसमें गीत रचना के स्थान पर शब्दांश जैसे तोम, ता, ना, दिर–दिर, तारे दानि, ओ दानी, तानोम, यलली, त दारे आदि के प्रयोग के साथ कहीं–कहीं मृदंग के बोल आदि भी सुनने को मिलते हैं। तराने की रचना भी ख़्याल की भाँति तीनताल, एकताल, झपताल तथा आड़ाचौताल आदि तालों में की जाती है। ''कुछ विद्वानों का मत है कि ''प्राचीनकाल में तराना को 'स्तोभ गान' के नाम से जाना जाता था। स्तोभाक्षरों को शुष्काक्षर कहा जाता था जिनका कोई अर्थ तो नहीं होता था। परन्तु वे ओंकार की ध्वनि के वाचक होते थे और गायन में वाद्ययंत्र का आनन्द भी देते थे।''[1]

तिरवट (त्रिवट)

यह भी तराने की तरह की गायन शैली है किन्तु तिरवट की गायकी तराने की अपेक्षा थोड़ी कठिन है। इसमें मृदंग के बोलों का भी प्रयोग होता है। इसमें कविता नहीं होती हैं। तराने के बोलों के साथ मृदंग अथवा पखावज के बोलों को छन्दबद्ध करने से इसका निर्माण हुआ है। त्रिवट को ध्रुपद एवं ख्याल दोनों शैलियों से गाया जाता है।

चतुरंग

चतुरंग की गीत रचना के चार भाग होते हैं। पहले भाग में ख़्याल के बोल, दूसरे भाग में तराने के बोल, तीसरे भाग में विशिष्ट राग की सरगम और चौथे भाग में मृदंग के बोलों की छोटी–सी परन रहती है। इसे भी ख्याल अंग से गाया जाता है किन्तु तानों का प्रयोग ख़्याल की तुलना में कम होता है।

---

1 प्रभुलाल गर्ग 'वसंत' : संगीत विशारद, पृ. सं. 237

ठुमरी

'ठुमरी' का जन्म स्थान लखनऊ को माना जाता है। लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह कलाओं के प्रोत्साहन एवं संरक्षण के लिए विख्यात थे। उनके दरबार के प्रसिद्ध संगीतज्ञ उस्ताद सादिक अली खाँ को ठुमरी का जन्मदाता माना जाता है। 'संगीतसार' नामक ग्रंथ में ठुमरी की उत्पत्ति शौरी मियाँ से बताई गई है।

ठुमरी की उत्पत्ति आंचलिक लोकगीतों एवं धुनों से होना अधिक प्रामाणिक प्रतीत होता है। ठुमरी गीतों की विषयवस्तु में ग्रामीण परिवेश की झलक, वन, उपवन, पनघट, ऋतु वर्णन, होली का वर्णन, शृंगार, वियोग, नायक–नायिका के प्रेम प्रसंगों का वर्णन आदि पाया जाता है।

ठुमरी गायन हेतु प्रायः भैरवी, खमाज, पीलू, तिलंग, धानी, झिंझोटी, पहाड़ी, गारा आदि रागों को उपयुक्त माना गया है। इन रागों में मधुरता, चंचलता व लालित्य का गुण विद्यमान है। ठुमरी में राग की शुद्धता कायम रखने पर जोर नहीं दिया जाता अपितु छोटी–छोटी मुर्कियाँ, खटके, मींड आदि की सहायता से बोलबनाव करते हुए स्वर सौंदर्य एवं मर्मस्पर्शी भाव प्रदर्शन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ठुमरी में शृंगार रस की प्रधानता होती है। ठुमरी के दो अंग प्रचलित हैं– पूर्व अंग एवं पंजाब अंग।

लखनऊ व बनारस की ठुमरी पूर्वी अंग के नाम से प्रचलित है। कजली, चैती, होरी, सावनी आदि भी ठुमरी के ही अंग हैं। ठुमरी का दूसरा अंग पंजाबी अंग के नाम से प्रसिद्ध है।

1.2 वर्तमान समय के प्रमुख प्रतिनिधि शास्त्रीय / ख्याल गायक कलाकार

यहाँ वर्तमान समय के प्रमुख प्रतिनिधि ख़्याल गायकों से तात्पर्य उन कलाकारों से है जिन्होंने प्राचीन परंपराओं का निर्वहन कर, नवाचारों का शास्त्रसम्मत प्रयोग कर नाद ब्रह्म की अनवरत साधना द्वारा भारतीय शास्त्रीय गायकी को नई ऊँचाईयाँ प्रदान की अर्थात् इस शृंखला में उन महान कलाकारों को सम्मिलित किया जा रहा है जिनका अनुसरण वर्तमान पीढ़ी घरानेदार संगीत शिक्षा व शैलीगत विशेषताओं को अपनाने हेतु कर रही है। ख्याल गायकी के क्षेत्र में ऐसे अनेक कलाकार हुए हैं जिन्हें श्रोता उनकी शैलीगत एवं घरानेदार विशेषताओं के कारण अपने पसंदीदा कलाकार के रूप में रेडियो, संगीत– सम्मेलनों एवं दृश्य श्रव्य उपकरणों के माध्यम से निरन्तर सुनना पसन्द करते हैं। प्रत्येक सुधी श्रोता, संगीत साधक एवं संगीत शिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के अपने–अपने आदर्श कलाकार

हैं। इन सभी कलाकारों ने संगीत जगत का प्रतिनिधित्व किया है। इनमें से अधिकांश का गायन एक निधि के रूप में ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड, कैसेट, सी. डी. एवं अन्य आधुनिक उपकरणों में संग्रहित है। किसी श्रोता को पं. भीमसेन जोशी जी का गायन अधिक पसंद है तो किसी को उस्ताद अमीर खाँ साहब का, किसी को विदुषी किशोरी अमोनकरजी का गाना ज्यादा पसंद है तो किसी को पं. राजन साजन मिश्रजी का, लेकिन इतना तो निर्विवाद सत्य है कि सभी ख्यातिप्राप्त कलाकारों ने अपनी गहन साधना, घरानेदार तालीम एवं अथक प्रयासों से ख़्याल गायन को न केवल आमजन में लोकप्रिय बनाया बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षण प्रदान करते हुए उसे और अधिक समृद्ध बनाने में भरपूर योगदान दिया।

इन प्रमुख लोकप्रिय प्रतिनिधि कलाकारों की शृंखला में शास्त्रीय गायकी के शिखर पुरुष पं. बड़े रामदास जी मिश्र, उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब से लेकर वर्तमान पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले पं. राजन साजन मिश्र जी तक के कलाकारों को सम्मिलित किया गया है। इनके जीवन परिचय द्वारा हम भारतीय संगीत के प्रचार प्रसार एवं संरक्षण में दिए गए उल्लेखनीय योगदान के बारे में जानेंगे।

1.3 शास्त्रीय गायकों का भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में योगदान

भारतीय शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में अनेकानेक कलाकारों ने घरानेदार उस्तादों, गुरुओं एवं सिद्ध कलाकारों के सानिध्य में संगीत का गहन प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वयं के रचनात्मक दृष्टिकोण को गायकी में समाहित करते हुए गायन शैली को इतना परिपक्व, सौंदर्यपूर्ण एवं आकर्षक रूप प्रदान किया कि सुधी श्रोताओं, साधकों के साथ–साथ संगीत आमजन में भी लोकप्रिय होने लगा। इन कलाकारों ने अपने घरानेदार शिष्यों, संगीत सम्मेलनों, आधुनिक ध्वनि यंत्रों एवं उपकरणों के माध्यम से भारतीय संगीत का प्रचार–प्रसार राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया है। वर्तमान समय में भी इनकी शैली व गायकी के वैशिष्ट्य से प्रेरणा लेकर अनेक शिष्य व साधक साधनारत हैं। प्रमुख प्रतिनिधि ख़्याल गायक कलाकारों के भारतीय संगीत में योगदान हेतु उनके जीवन से संबंधित विविध पहलुओं का अध्ययन एवं विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रमुख प्रतिनिधि कलाकार

उस्ताद अब्दुल करीम खाँ

आपका जन्म सन् 1872 ई. में किराना (जिला सहारनपुर) में हुआ। आपने संगीत की शिक्षा पिता काले खाँ व चाचा अब्दुल्ला खाँ से प्राप्त की। आपको 15 वर्ष की आयु में

बड़ौदा नरेश के यहाँ दरबारी गायक के रूप में नियुक्त कर दिया गया। खाँ साहब मधुर एवं सुरीली आवाज़ के धनी थे। मींड़ व कणयुक्त गायकी के प्रसार के साथ आलापों में निरन्तरता व प्रवाह आपकी गायकी की विशेषताएँ हैं। शास्त्रीय संगीत में ठुमरी को लोकप्रिय बनाने का श्रेय भी आपको दिया जाता है। खाँ साहब की शिष्य परंपरा में हीराबाई बड़ौदकर, सवाई गंधर्व, बहरेबुवा, रोशन आरा बेगम आदि प्रसिद्ध गायक–गायिकाएँ हैं। आपका स्वर्गवास 27 अक्टूबर, सन् 1937 को हो गया।

पं. बड़े रामदास मिश्र

काशी गौरव महान गायक एवं गुरु पं. बड़े रामदास जी का जन्म 23 जनवरी 1877 ई. को एक संगीतज्ञ परिवार में हुआ। काशी के संगीत इतिहास में आपका स्थान मूर्धन्य विभूतियों में अग्रणी हैं। संगीत की उत्कृष्ट शिक्षा के लिए आपके पिता आपको पियरी घराने के विद्वान गायक पं. शिवसहाय मिश्र जी के पास ले गए लेकिन उनकी शारीरिक अस्वस्थता के कारण असमर्थता व्यक्त करते हुए आपकी प्रतिभा को देखकर उन्होंने सिद्ध एवं प्रतिष्ठित गायक बनने का आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् आपने अपने श्वसुर बेतिया घराने के पं. जयकरण जी मिश्र जो ध्रुपद परम्परा के मूर्धन्य विद्वान गायक थे, उनसे विधिवत संगीत शिक्षा ग्रहण कर लगभग चार–पाँच सौ ध्रुपद–धमार की बंदिशें, ख्याल, टपख्याल, टप्पा, होरी एवं विभिन्न प्रचलित अप्रचलित रागों एवं तालों की अनूठी बंदिशों को कंठस्थ किया। आपने दस वर्ष से तीस वर्ष की आयु तक पहुँचते–पहुँचते नित्य साधना का क्रम 18 से 20 घण्टे प्रतिदिन कर लिया था।

निरन्तर कठोर साधना से आपको शीघ्र ही देश की प्रसिद्ध रियासतों, रजवाड़ों, नवाबों एवं जमींदारों द्वारा गायन हेतु आमंत्रित किया जाने लगा। आप चारों पट की गायकी में पूर्ण पटु एवं दक्ष विद्वान गायक थे। अपने आराध्य बाबा विश्वनाथ का स्मरण करते हुए आपने अनेक रागों एवं तालों में अनेक उत्कृष्ट, विद्वतापूर्ण एवं चमत्कारिक बंदिशों की रचना की जो संगीत जगत की अमूल्य निधि हैं। आपके द्वारा रचित पदों एवं बंदिशो में रामदास के मोहन प्यारे या रामदास के गोविंद स्वामी जुड़ा रहता है। आप ध्रुपद–धमार, ख्याल, टपख्याल, ग़ज़ल, चैती, भजन, होरी, कजरी, दादरा, विरहा आदि सभी विधाओं को गाने में पारंगत थे।

पं. कामेश्वर नाथ मिश्र के अनुसार ''आपकी अटूट शिष्य शृंखला में आपके उत्तराधिकारी भतीजे श्री हरिशंकर मिश्र, श्री गणेश प्रसाद मिश्र (भद्दू जी), श्री रामसेवक मिश्र 'सजीले जी', श्री महादेव प्रसाद मिश्र–बद्रीप्रसाद मिश्र, श्री प्रचण्ड देव चाँप, श्री रामू

मिश्र (गया), गणेशप्रसाद मिश्र, जालपा प्रसाद मिश्र, राजेश्वर प्रसाद मिश्र, धर्मनाथ मिश्र, रामेश्वर प्रसाद मिश्र, अमरनाथ–पशुपतिनाथ मिश्र, श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी, शहनाई वादक नन्दलाल जी, श्री हनुमान प्रसाद मिश्र, श्री गोपाल मिश्र, श्री गंगा प्रसाद मिश्र, प्रसिद्ध संतूर वादक श्री शिव कुमार शर्मा के पिता श्री उमादत्त शर्मा (जम्मू), श्री रामू शास्त्री, श्री राजन साजन मिश्र आदि देशव्यापी ख्यातिप्राप्त कलाकारों के अतिरिक्त सैंकड़ो शिष्य–प्रशिष्य देश के कोने–कोने में संगीत जगत की सेवा करते हुए अपने गुरू के नाम को अमिट बना रहे हैं।"[1] अनेक सम्मान एवं उपाधियों से सुशोधित इस महान् विलक्षण गायक का 83 वर्ष की अवस्था में 11 जनवरी 1960 ई. को काशी में स्वर्गवास हो गया।

पं. सवाई गंधर्व

पं. सवाई गंधर्व का पूरा नाम श्री रामभाऊ कुन्दगोलकर था। आपका जन्म सन् 1886 ई. में हुआ। आपकी संगीत की शिक्षा स्व. उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के सानिध्य में संपन्न हुई। खाँ साहब की विशिष्ट गायन शैली को सीखने के लिए आपने कठोर साधना की। महाराष्ट्र में नाटक कम्पनी आदि में विभिन्न पात्रों की भूमिका के साथ–साथ गायक की भूमिका में भी विशेष ख्याति अर्जित की। बंदिशों का प्रभावी प्रस्तुतीकरण, लयात्मकता, स्वर एवं बोलों को कहने का अंदाज़ व विलक्षण तानें उनकी गायकी के विशेष गुण थे। आपका सानिध्य पाकर संगीत जगत् को भारत रत्न पं. भीमसेन जोशी जी जैसे महान् गायक मिले। आपकी शिष्य परंपरा में विदुषी गंगूबाई हंगल, डॉ. देशपांडे, कागलकर बुआ, सौ. इंदराबाई खाडिलकर, पं. भीमसेन जोशी आदि प्रमुख कलाकार हैं। 12 सितम्बर 1952 ई. को पूना में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके कई ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड्स भी उपलब्ध हैं जिनके द्वारा आपकी गायकी सदैव अमर रहेगी।

उस्ताद फैयाज़ खाँ

आपका जन्म सन् 1886 ई. में आगरा के निकट सिकन्दरा में हुआ। खाँ साहब के जन्म से पहले ही उनके पिता का देहांत हो जाने के कारण नाना गुलाम अब्बास खाँ साहब ने इनका पालन–पोषण किया साथ ही 5 से 25 वर्ष की उम्र तक आपको संगीत की तालीम दी। आगरा में नानाजी के पास रहते हुए रिश्तेदार नत्थन खाँ साहब (उस्ताद विलायत खाँ साहब के पिता) का सानिध्य भी मिला। आपने फिदा हुसैन से भी संगीत शिक्षा प्राप्त की। खाँ साहब पहले मैसूर दरबार में और बाद में बड़ौदा दरबार में दरबारी गवैये नियुक्त हुए।

---

1 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र – काशी की संगीत परम्परा पृ. 105

बाद में आपके कार्यक्रम अनेक बड़े रेडियो स्टेशनों जैसे दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, लखनऊ तथा लाहौर आदि से प्रसारित हुए।

आप ध्रुवपद तथा ख्याल शैली की गायकी में तो निष्णात थे ही, इसके अतिरिक्त ठुमरी और ग़ज़ल आदि भी उतनी ही खूबी से सुनाते थे। प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी खाँ साहब को तोड़ी, जयजयवन्ती, पूरिया, खट, ललित, दरबारी, सुघराई, सिंदूरा, परज आदि राग अत्यन्त प्रिय थे। आपकी गायकी में सुंदर नोम् तोम् की आलापचारी, स्वरों पर ठहराव, भिन्न–भिन्न प्रकार की तिहाइयाँ, अलग–अलग तरीके से मुखड़े लेकर सम पर आना आदि विशेषताएँ आपके गायन को विशिष्टता प्रदान करती हैं। सुन्दर, भरावदार, सुरीली व बुलन्द आवाज़ के धनी खाँ साहब का गायन हिन्दुस्तान रिकॉर्ड कम्पनी में संग्रहित है जिससे संगीत रसिक व कलाकार निरन्तर लाभान्वित हो रहे हैं। आपने अपनी गायन परम्परा की अभिवृद्धि के साथ–साथ लगभग 250 बंदिशों की रचना 'प्रेमपिया' उपनाम से करके भारतीय संगीत को समृद्ध बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। आगरा घराने के इस महान यशस्वी गायक का देहावसान 64–65 साल की उम्र में बड़ौदा में 5 नवम्बर, 1950 ई. को हो गया।

विदुषी केसरबाई केरकर

आपका जन्म 1892 ई. में हुआ। आपकी संगीत शिक्षा 8 वर्ष की अल्प आयु में उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब से आरम्भ हुई। संगीत शिक्षा प्राप्त करने हेतु आपको पं. बझे बुआ, प्रसिद्ध सितार वादक उ. बरकतुल्ला खाँ, उस्ताद अल्लादिया खाँ, पं. भास्कर बुआ आदि गुरुजनों का सानिध्य मिला। आपके गायन में निर्दोष तथा खुली आवाज़ का लागव, मंद्र से तार सप्तक की आसान पहुँच, स्पष्ट गमकयुक्त व दानेदार तानें आदि विशेषताएँ प्रमुख हैं। आपके अनेक ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड भी तैयार हुए। आपको कलकत्ता से 'सुरश्री', सुरसिंगार संसद की ओर से शारंगदेव फैलोशिप, भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण एवं संगीत नाटक अकादमी पुरस्कारों से विभूषित किया गया। आपका देहावसान दिनांक 16 सितम्बर 1977 को हो गया।

पं. कृष्णराव शंकर पंडित

पंडित जी का जन्म ग्वालियर के दक्षिण ब्राह्मण परिवार में सन् 1894 ई. में हुआ। आपकी संगीत शिक्षा पिता पं. शंकरराव से आरम्भ हुई। तत्पश्चात् ग्वालियर के हद्दू खाँ, नत्थूखाँ एवं उ. निसार हुसैन की देखरेख में संगीत की कठोर साधना की। संगीत के शास्त्रज्ञान, स्वर, ताल, लय आदि पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लेने के कारण आपकी गिनती

सिद्ध व श्रेष्ठ संगीतज्ञों में होने लगी। आपकी गायन शैली में रागात्मक शुद्धता, लयात्मकता, आलापचारी, बोलबाट, बोलतान, फिरततान, छूटतान, गमक, जमजमा, खटके, झटके, मींड, लागडाँट एवं लडंत आदि सभी सांगीतिक विशेषताओं का समावेश है। आपको सन् 1945 ई. में ग्वालियर दरबार द्वारा संगीत–रत्नालंकार, भारत सरकार द्वारा सन् 1959 ई. में राष्ट्रपति पुरस्कार, सन् 1973 ई. में पद्म भूषण अलंकरण से विभूषित किया गया। सन् 1962 में खैरागढ़ विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से सुशोभित किया गया। आपकी शिष्य परंपरा में प्रो. नारायण राव पंडित (पुत्र), प्रो. लक्ष्मण राव पंडित (पुत्र) के अतिरिक्त अन्य अनेकानेक शिष्य हैं।

पं. ओम्कारनाथ ठाकुर

संगीत मार्तण्ड पं. ओम्कारनाथ ठाकुर का जन्म 24 जून, 1897 को बड़ौदा रियासत के जहाजगाँव नामक स्थान पर हुआ। आपको गायन की शिक्षा पं. विष्णुदिगम्बर जी पलुस्कर से प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। अनवरत् साधना व संगीत ज्ञान के आधार पर आपको सन् 1917 ई. में लाहौर के गांधर्व महाविद्यालय में प्राचार्य के पद पर नियुक्त किया गया। आपके गायन में प्रभावशाली व दमदार आवाज़ के साथ स्वर व भावों की प्रधानता थी। आप बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के कुल गुरु के रूप में सुशोभित हुए। आपके द्वारा लिखी गई पुस्तकों में प्रणव भारती तथा संगीतांजली ग्रंथ माला प्रमुख हैं। आपके द्वारा 'प्रणव अथवा 'प्रणवरंग' उपनाम से अनेक बंदिशों की रचना की गई। आपका गायन ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड्स एवं कैसेट्स में निधि के रूप में संग्रहित है। भारत सरकार द्वारा सन् 1955 में 'पद्म श्री' की उपाधि से सम्मानित किया गया। लंबी बीमारी के उपरान्त 29 दिसम्बर 1967 को इस महान् कलाकार का देहावसान हो गया।

पं. विनायक राव पटवर्धन

आपका जन्म मिरज के एक महाराष्ट्रीय परिवार में 22 जुलाई 1898 ई. को हुआ। सर्वप्रथम चाचा स्व. केशवराव से तत्पश्चात् सन् 1907 ई. में पं. वि. दि. पलुस्कर जी के सानिध्य में संगीत शिक्षा प्रारम्भ हुई। संगीत की विधिवत शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त आपने गांधर्व महाविद्यालय लाहौर, बम्बई, नागपुर आदि शाखाओं में अध्यापन कार्य किया। आपके द्वारा लिखी गई पुस्तकों में बाल संगीत (तीन भाग) व राग विज्ञान के सात भाग प्रमुख हैं। आप ख़्याल गायन के साथ–साथ तराने को भी बड़े आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करते थे। आपके गाये तराने में द्रुत लय, आड़–कुआड़ लय के साथ कलात्मक बंदिश श्रोताओं को रोमांचित कर देती थी। पटवर्धन जी को सन् 1972 ई. में भारत सरकार ने पद्म

भूषण से सुशोभित किया। इस विलक्षण गायक का 23 अगस्त सन् 1975 ई. को स्वर्गवास हो गया।

पं. नारायण राव व्यास

आपका जन्म कोल्हापुर में सन् 1902 ई. में एक संगीत परिवार में हुआ। सन् 1910 ई. में पं. वि. दि. पलुस्कर जी के किसी संगीत कार्यक्रम में कोल्हापुर आगमन के समय उनसे संगीत शिक्षा प्राप्त करना सुनिश्चित हुआ। आपने व भ्राता शंकरराव जी व्यास ने 9 वर्ष तक पंडित जी से गायन की शिक्षा प्राप्त की। दोनों भाइयों ने सन् 1923 में अहमदाबाद में संगीत विद्यालय की स्थापना की। सन् 1927 ई. में 'हिज़ मास्टर्स वायस' कम्पनी से सर्वप्रथम आपके दो रिकॉर्ड प्रसारित किये गये। बाद में भी आपके कई रिकॉर्ड निकाले गये। सर्वाधिक बिक्री के कारण कम्पनी ने आपको गोल्ड मेडल प्रदान किया। राष्ट्रीय स्तर पर विविध संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों द्वारा आपको उपाधियों से विभूषित किया गया। आप पलुस्कर जी की अन्त समय तक निरन्तर सेवा करते रहे। सन् 1937 ई. में बम्बई में आप दोनों भाइयों ने व्यास संगीत विद्यालय की स्थापना की।

उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ

खाँ साहब का जन्म सन् 1902 ई. में लाहौर में हुआ। आपके पिता का नाम अलीबख्श व चाचा का नाम काले खाँ था। आपने संगीत की शिक्षा बचपन से चाचा काले खाँ सा. से पाई। गायन के साथ–साथ आपने आजीविका हेतु सारंगी की शिक्षा भी प्राप्त की अतः आपको सारंगी का काम मिलने लगा। आपने मुम्बई में उस्ताद सिंधी खाँ से भी संगीत की तालीम प्राप्त की। खाँ साहब की प्रसिद्धि संगीत सम्मेलनों के माध्यम से धीरे–धीरे पंजाब के बाहर बड़े–बड़े शहरों में फैलने लगी। गायकी में आवाज़ लगाव व कण, मीड़, लगाने का विशेष ढ़ंग, चमत्कारिक व अलंकारिक तानों का प्रयोग आपके गायन को चित्ताकर्षक बना देता है। खाँ साहब की गायन शैली को लोग पटियाला घराने के नाम से जानते हैं। आपके गायन को रेडियो एवं रिकॉर्डिंग कम्पनियों के माध्यम से सुनने का सौभाग्य संगीत रसिकों को आज भी प्राप्त होता रहता है। रिकॉर्डिंग में ख़्याल के साथ–साथ ठुमरियाँ भी बहुत प्रसिद्ध हैं। भारत सरकार ने आपको संगीत नाटक अकादमी व पद्म भूषण पुरस्कार से विभूषित किया है। आपके पुत्र उ. मुनव्वर अली खाँ ने आपकी परंपरा को आगे बढ़ाया। 23 अप्रेल 1968 ई. में आपका हैदराबाद में स्वर्गवास हो गया।

पं. मल्लिकार्जुन मंसूर

आपने ख़्याल गायकी के क्षेत्र में जयपुर–अतरौली घराने का प्रतिनिधित्व किया। आपका जन्म सन् 1910 ई. में मंसूर में हुआ जो कि धारवाड़ (कर्नाटक) के निकट है। आपकी कर्नाटक संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा पं. अप्पा स्वामी के निर्देशन में हुई। आपने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा मिरज के श्री नीलकण्ठ बुआ (ग्वालियर घराना), उस्ताद मंजी खाँ व उस्ताद भुर्जी खाँ से प्राप्त की। कठिन से कठिन रागों का सुन्दर प्रस्तुतिकरण आपके गायन की विशेषता है। आपको भारत सरकार द्वारा संगीत की सेवा हेतु क्रमशः पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण अलंकरणों से विभूषित किया गया।

उस्ताद अमीर खाँ

उस्ताद अमीर खाँ का जन्म अकोला (महाराष्ट्र) में सन् 1912 ई. में हुआ। सन् 1914 ई. के लगभग डेढ़ वर्ष की आयु के बालक अमीर खाँ को लेकर पिता शाहमीर खाँ इंदौर आ गये। पिता जी से आपने संगीत की शिक्षा प्राप्त की। उस्ताद वहीद खाँ, उस्ताद रजब अली खाँ, उस्ताद अमान अली खाँ (भिंडी बाज़ार वाले) आदि की गायन शैली का प्रभाव भी आप पर था। ख़्याल गायन के क्षेत्र में सुमधुर आवाज़, स्वरों की स्पष्टता, गंभीरता, शुद्ध मुद्रा व वाणी, राग की क्रमबद्ध बढ़त, विशिष्ट शैली व सुन्दर भावाभिव्यक्ति से सुसज्जित गायन द्वारा उन्होंने संगीत जगत में विशेष स्थान बना लिया। आपको भारत सरकार द्वारा 1967 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार व 1971 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।[1]

आकाशवाणी से प्रसारित कार्यक्रमों के अतिरिक्त उपलब्ध रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से श्रोता एवं कलाकार आपको सुनकर संगीत की अनन्त गहराई में खो जाते हैं। संगीत के साधकों एवं कलाकारों का एक बड़ा वर्ग आपके गायन का प्रशंसक होने के साथ–साथ गायन शैली का अनुसरण करता आया है। किराना घराने के इस गायक ने ख्याल गायन को एक नई दिशा प्रदान की एवं जन–जन में प्रतिष्ठित किया। फिल्मों में भी पार्श्व गायन कर आपने अपनी अमिट पहचान बनायी हैं। संगीत के इस महान् नायक का 13 फरवरी सन् 1974 को एक मोटर दुर्घटना में देहावसान हो गया।

---

[1] इब्राहिम अली : भारतीय संगीतकार उस्ताद अमीर खाँ, पृ. सं. 1 व 3

पं. डी. वी. पलुस्कर

पं. डी. वी. पलुस्कर महान संगीतज्ञ पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी के सुपुत्र हैं। आपका जन्म 28 मई, 1921 ई. को कुरुन्दवाड़ में हुआ। पिताजी का जल्दी देहावसान हो जाने के कारण आपने चचेरे भाई श्री चिंतामणी पंत से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। आपके पिताजी के शिष्य पं. विनायक राव पटवर्धन से अनेक वर्षों तक संगीत का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। आप पं. नारायण राव व्यास, मिराशी बुआ आदि संगीतज्ञों से भी लाभान्वित हुए। आपका गायन मुद्रादोष रहित व पैतृक गुणों से परिपूर्ण था। मधुर कंठ, रस व भाव से परिपूर्ण गायन के कारण आपको आकाशवाणी एवं ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड्स के माध्यम से अपार सफलता मिली। मात्र 35 वर्ष की अल्प आयु में दिनांक 26 अक्टूबर, 1955 ई. को आपका स्वर्गवास हो गया।

पं. भीमसेन जोशी

महान् एवं अद्वितीय शास्त्रीय गायक भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी का जन्म 4 फरवरी 1922 को हुआ। आपने 10 वर्ष की आयु से हारमोनियम की शिक्षा अगसक चन्नप्पा जी से प्राप्त की। आपके गुरु पं. सवाई गंधर्व के सानिध्य में आपने संगीत की कठोर साधना की। आप की गिनती देश के शीर्षस्थ गायकों में होती है। आपके गायन की विशेषताओं में बुलंद आवाज़, राग का क्रमबद्ध विस्तार, अद्‌भुत स्वर सौंदर्य, अति तैयार तान आदि है। आपके कार्यक्रम आकाशवाणी व दूरदर्शन से निरन्तर प्रसारित होते रहे हैं। उत्तर एवं दक्षिण के संगीत के समन्वय के रूप में कर्नाटक संगीत के शास्त्रीय गायक पं. बालमुरलीकृष्ण के साथ जुगलबन्दी प्रस्तुत कर सांस्कृतिक एकता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। देश की लगभग सभी नामी कम्पनियों ने रिकॉर्ड जारी कर आपकी गायकी को संगीत रसिकों के बीच में पहुँचाया है। आपकी गायकी का अनुसरण वर्तमान में अनेक संगीत साधक एवं युवा शास्त्रीय गायक कर रहे हैं। किराना घराने के गायक पं. भीमसेन जोशी जी की गायन शैली भारतीय संगीत के लिए एक धरोहर है। आपको भारत सरकार ने पद्म श्री, पद्मविभूषण एवं देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से विभूषित कर सम्पूर्ण संगीत जगत् का गौरव बढ़ाया है।

पं. कुमार गंधर्व

पं. कुमार गंधर्व का मूल नाम शिवपुत्र है। आपका जन्म कर्नाटक के बेलगाँव जिले के सुलेभावी ग्राम में 8 अप्रेल 1924 को हुआ। आपके पिता श्री सिद्‌धारमय्या कोमकली भी एक अच्छे गायक थे। किसी मठ के गुरु द्वारा आपको 'कुमार गंधर्व' की उपाधि मिली।

आपको प्रो. देवधर द्वारा संचालित संगीत शाला में संगीत सीखने व सिखाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बाद में देवास में निवास करते हुए शास्त्रीय संगीत के साथ लोकसंगीत के सम्मिश्रण से अभिनव प्रयोग कर गायन को लोकोन्मुख करते हुए रागों का भाव एवं संवेदनाओं से अभिसिंचन किया। आपने नये रागों की रचना में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। आपके पुत्र श्री मुकुल शिवपुत्र भी एक प्रतिष्ठित गायक हैं। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा स्थापित 'कुमार गंधर्व सम्मान' शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। अनेक रिकॉर्ड्स, सी. डी., कैसेट्स के माध्यम से श्रोता आज भी आपके गायन से लाभान्वित होते रहते हैं। 12 जनवरी सन् 1992 ई. को इस महान् विभूति का देहावसान हो गया।

विदुषी गंगूबाई हंगल

आपका जन्म धारवाड़ (कर्नाटक) में सन् 1913 ई. में हुआ। आपकी माता श्रीमती अम्बा द्वारा आपकी कर्नाटक संगीत की शिक्षा आरम्भ हुई। कर्नाटक संगीत में रूचि कम होने के कारण आप हिन्दुस्तानी संगीत की ओर उन्मुख हुईं। एक वर्ष तक आपने हुबली के पं. कृष्णाचार्य के पास संगीत की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद पं. सवाई गंधर्व से गंडा बँधवाकर संगीत सीखना प्रारम्भ किया। इसी बीच आपके मामा श्री दत्तोपंत देसाई से भी आपने संगीत की शिक्षा ग्रहण की। धीरे–धीरे विभिन्न शहरों में आयोजित संगीत सम्मेलनों, रेडियो एवं ग्रमोफ़ोन कम्पनियों के रिकॉर्ड्स द्वारा आपकी ख्याति चहुँ ओर फैलने लगी। भारत सरकार द्वारा आपको संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्म भूषण अलंकरण से सुशोभित किया गया।

पं. जितेन्द्र अभिषेकी

आपका जन्म 21 सितम्बर 1929 को गोवा में हुआ। आप अपने पिता के साथ आरम्भ में मंदिर में कीर्तन गाते थे। उस समय कीर्तनकार के लिए ध्रुपद, ख्याल एवं ताल ज्ञान अनिवार्य था। आपने 15 वर्ष की आयु से पूना में एक वर्ष तक श्री नरहरि बुवा पाटणकर से संगीत शिक्षा ग्रहण की। आप 22 वर्ष की उम्र में उच्च शिक्षा हेतु मुम्बई आ गये। आपने बाद में उ. अजमत हुसैन खाँ (आगरा घराना), पं. जगन्नाथ बुवा पुरोहित एवं पं. निवृत्ति बुवा सरनाइक से शिक्षा प्राप्त की। इनके गायन में सभी घरानों का मिश्रण है। महाराष्ट्र नाट्य संगीत में आपका योगदान उल्लेखनीय है। आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से श्रोता आपको सुनकर आनन्द की अनुभूति करते हैं। आपको मिले सम्मान एवं पुरस्कारों में होमी भाभा फेलोशिप, महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार, लता मंगेशकर

पुरस्कार एवं भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला संगीत नाटक अकादमी एवं पद्म श्री सम्मान प्रमुख हैं। संगीत की सेवा करते हुए आप 7 नवम्बर 1998 को परलोक गमन कर गये।

विदुषी गिरिजा देवी

श्रीमती गिरिजा देवी का जन्म 8 मई सन् 1929 ई. में देश की सांस्कृतिक हृदय स्थली काशी में हुआ। आपके पिता रामदास जी से आपको बाल्यकाल से ही सांगीतिक मार्गदर्शन मिला। आपने 15 वर्ष की आयु तक पं. सरजूप्रसाद मिश्र से गायन सीखा तत्पश्चात् काशी के विद्वान गायक पं. श्रीचंद मिश्र का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया। बनारस सेनिया घराने की प्रतिष्ठित गायिका श्रीमती गिरिजा देवी ख़्याल के साथ–साथ पूरवी अंग की गायकी में ठुमरी, दादरा, कजरी, होली, चैती, भजन आदि भी उतनी ही कुशलता से गाती हैं। आपने प्रमुख संगीत सम्मेलनों, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं रिकॉर्ड्स–कैसेट्स आदि के माध्यम से देश–विदेश में अपनी अमिट पहचान बनायी है। आपने विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से संगीत के प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को बनारस घराने की उत्कृष्ट गायकी की शिक्षा प्रदान करने का भागीरथी कार्य किया है। आपको भारत सरकार द्वारा पद्म श्री, पद्म भूषण एवं पद्मविभूषण अलंकरणों से विभूषित किया गया है।

विदुषी किशोरी अमोनकर

आपका जन्म 10 अप्रेल सन् 1932 ई. को हुआ। आपने अपनी माता श्रीमती मोघूबाई कुर्डीकर से संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। आपकी माताजी उस्ताद अल्लादिया खाँ की शिष्या हैं। आपने श्री बालकृष्ण बुवा पर्वतकर और श्री मोहनराव पालेकर से भी संगीत शिक्षा ग्रहण की। वर्तमान समय के वरिष्ठ एवं प्रमुख प्रतिनिधि कलाकारों में आपका स्थान अग्रणी है। आप जयपुर घराने की गायकी को सर्वाधिक पसंद करती थी किन्तु किसी एक घराने तक सीमित रहना और अन्य घरानों की विशेषताओं को नहीं अपनाने को वह प्रगति में बाधक मानती थी। वह स्वयं प्रगतिशील विचारधारा व अभिनव प्रयोगों की समर्थक रही। कर्नाटक व हिन्दुस्तानी शैली को एक साथ एक मंच पर प्रस्तुत करने का अभिनव प्रयोग आपने किया है। आपको भारत सरकार द्वारा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पद्म भूषण एवं पद्मविभूषण पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित कार्यक्रमों के अतिरिक्त रिकॉर्ड्स, कैसेट्स एवं सी. डी. में संग्रहित आपकी मनमोहक गायकी भारतीय संगीत की धरोहर है।

पं. जसराज

आपका जन्म 28 जनवरी सन् 1930 ई. को हिसार में हुआ। आपके पिता स्व. मोतीराम जी कश्मीर राज्य के दरबारी गायक थे। आपने सर्वप्रथम तबले की शिक्षा भ्राता पं. प्रतापनारायण जी से प्राप्त की। बड़े भ्राता पं. मणिराम जी के साथ तबले की संगत करते हुए आपके मन में हीनता का भाव आने लगा। यद्यपि आपने अपने समय के प्रसिद्ध कलाकारों के साथ भी तबला संगत की लेकिन मन में हीनता के भाव के कारण हृदय में गायक बनने की लालसा जग उठी। आपने सन् 1945 से 1955 तक गायन का नियमानुसार व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त किया। मेवाती घराने के प्रतिभा सम्पन्न कलाकार पं. जसराज की विशेषता आकर्षक व सुरीली आवाज़, मधुर मुरकियाँ, छोटे–छोटे टुकड़ों से क्रमबद्ध बढ़त, वजनदार गमक, बोलतान व सरगम से सुसज्जित गायन है। देश–विदेश के सभी प्रमुख मंचों व संगीत सम्मेलनों में प्रस्तुति देकर आपने विशेष ख्याति अर्जित की है। ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड्स, कैसेट्स व सी. डी. आदि में संग्रहित प्रभावशाली गायन को सुनकर श्रोता भाव विभोर हो उठते हैं। आपको मिलने वाले पुरस्कारों में संगीत मार्तण्ड, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार, दीनानाथ मंगेशंकर पुरस्कार के अलावा भारत सरकार द्वारा प्रदत्त क्रमशः पद्म श्री, पद्म भूषण एवं पद्मविभूषण अलंकरण सम्मिलित हैं। भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में आपका योगदान अतुलनीय है।

पं. राजन साजन मिश्र

वर्तमान पीढ़ी के आदर्श और इस युग के प्रसिद्ध ख्याल गायक पं. राजन मिश्र का जन्म सन् 1951 ई. में व पं. साजन मिश्र का जन्म सन् 1956 ई. में बनारस के सांगीतिक वातावरण में हुआ। भारतीय शास्त्रीय संगीत की सर्वाधिक प्रचलित विधा ख्याल गायकी के सिद्धहस्त गायक पं. राजन साजन मिश्र जी की ख्याति सम्पूर्ण विश्व में है। आप अपने घराने की लगभग 300 वर्षों से चली आ रही परंपरा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आपको गायन की शिक्षा विद्वान पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र एवं चाचा पं. गोपाल जी मिश्र से मिली। आपको सौभाग्यवश गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी मिश्र का भी शिष्यत्व मिला। सारंगी के घराने में जन्म लेने के कारण घर में मिली सांगीतिक शिक्षा के साथ–साथ सदैव स्वर–लहरियों से गुंजायमान काशी के कबीर चौरा मुहल्ले के संगीतमय वातावरण के प्रभाव ने आप दोनों के महान् कलाकार बनने हेतु मज़बूत आधार तैयार कर दिया। दोनों भ्राताओं ने ख्याल के साथ–साथ टपख्याल, टप्पा, तराना आदि की दुर्लभ एवं प्राचीन बंदिशों का अपार संग्रह करते हुए निरन्तर अभ्यास, चिन्तन एवं सूझबूझ से गायन शैली को बेजोड़ एवं

प्रभावशाली बना लिया। संगीत शिक्षा के साथ ही विद्यालयीन शिक्षा का क्रम भी निरन्तर जारी रहा। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पं. राजन जी मिश्र ने समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर एवं पं. साजन जी मिश्र ने बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की। इसी समय आपके चाचा जी पं. गोपाल मिश्र काशी छोड़कर दिल्ली बस गये और उन्होंने आप दोनों भ्राताओं को भी दिल्ली ही बुला लिया। चाचाजी एवं सतगुरू जगजीत सिंह जी की प्रेरणा पाकर आप दोनों उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होते गये। आकाशवाणी, दूरदर्शन, देश–विदेश में आयोजित संगीत सम्मेलनों एवं विभिन्न नामी कम्पनियों द्वारा जारी रिकार्डिंग्स के माध्यम से आपकी गायकी के स्वर सर्वत्र गुंजायमान होने लगे। धीरे–धीरे आपकी गिनती देश के स्थापित एवं उच्च श्रेणी के ख्याल गायकों में होने लगी। युगल गायन के अन्तर्गत अपने घराने की मौलिक विशेषताओं के साथ मूर्धन्य कलाकारों के गुण वैशिष्ट्य को अपने गायन में समाहित करने के व्यापक दृष्टिकोण ने आपकी गायकी को अद्भुत, चित्ताकर्षक एवं प्रभावशाली रूप दे दिया।

दक्षिण भारतीय भाषा में निर्मित चलचित्र शंकराभरणम् को जब हिन्दी भाषा में सुरसंगम के नाम से बनाया गया तो उसमें आपके पार्श्वगायन ने देश–विदेश में अपार ख्याति अर्जित की। आपकी युगल जोड़ी ने भारतीय संगीत की पताका को देश के साथ–साथ विदेशों में भी बखूबी फहराया है। आपने श्रीलंका, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, स्विटजरलैण्ड़, इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रिया, नीदरलैण्ड, सिंगापुर, कतर और मस्कट आदि देशों में अपनी प्रभावशाली प्रस्तुतियों के द्वारा भारतीय संगीत का खूब प्रचार–प्रचार किया है। लोकप्रिय गायक पं. राजन साजन मिश्र को अमेरिका के वाल्टीमोर शहर के लिए सम्मान सूचक वहाँ की नागरिकता का सम्मान प्रदान किया गया। भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए आपके द्वारा की गई समर्पित सेवाओं एवं योगदान हेतु 1998 में संगीत नाटक अकादमी की और से राष्ट्रपति सम्मान, प्रधानमंत्री की और से संस्कृति सम्मान, प्राचीन कला केन्द्र चंड़ीगढ़ द्वारा संगीत नायक सम्मान, इलाहबाद से संगीत रत्न, वाराणसी से संगीत भूषण, काशी गौरव सम्मान, भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कुमार गंधर्व सम्मान एवं तानसेन सम्मान से अलंकृत किया गया है।

अपनी पीढ़ी के दिग्गज शास्त्रीय गायकों में शुमार पं. राजन साजन मिश्र जी वर्तमान पीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आपकी विद्वतापूर्ण गायकी का रसास्वादन जहाँ समस्त संगीत रसिक कर रहे हैं वही साधनारत एवं नवोदित कलाकार आपकी गायन तकनीक एवं शैली से प्रेरित होकर गायन शैली को समृद्ध बना रहे हैं। पं. राजन जी मिश्र

के सुपुत्र पं. रितेश मिश्र, पं. रजनीश मिश्र एवं पं. साजन जी मिश्र के पुत्र पं. स्वरांश मिश्र अपने घराने की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

अतः निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि बीसवीं सदी में ख्याल गायकी के विकास, संरक्षण, संवर्धन के साथ इसे जन–जन में प्रतिष्ठित करने में अनेकानेक कलाकारों एवं संगीत मनीषियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन कलाकारों ने गायकी का प्रयोगात्मक, रचनात्मक एवं अन्वेषणात्मक सिंचन कर भारतीय शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में महत्ती भूमिका निभाई है। ख्याल गायकी को समृद्ध बनाने एवं नये प्रतिमान स्थापित करने वाले कलाकारों का उल्लेख इस अध्याय में किया गया है। इनके अतिरिक्त अन्यानेक वरिष्ठ एवं कनिष्ठ कलाकार जैसे विदुषी हीराबाई बड़ौदकर, सिद्धेश्वरी देवी, उस्ताद नज़ाकत अली सलामत अली, गुलाम मुस्तफा खाँ, विदुषी निर्मला देवी, लक्ष्मीशंकर, प्रभा अत्रे, सविता देवी, परवीन सुल्ताना, अजय चक्रवर्ती, उल्लास कशालकर, अजय पोहंकर, गोकुलोत्सव जी महाराज, विदुषी वीणा सहस्रबुद्धे, पद्मा तलवलकर, अश्विनी भिड़े, शुभा मुदगल आदि ने ख्याल गायकी का रसास्वादन गुणी श्रोताओं के साथ आमजन में करवाकर भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

इन ख्यातिप्राप्त कलाकारों की शृंखला में कुछ कलाकार तो इतने उत्कृष्ट कोटि के हुए हैं जिन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा एवं सृजनात्मक कार्यों द्वारा पूरे संगीत जगत् को एक नई दिशा प्रदान है। पं. राजन साजन मिश्र जी के सांगीतिक योगदान को भी संगीत साधकों एवं गुणीजनों द्वारा इसी परिधि में रखकर देखा जाता है। आपने परंपरा के साथ प्रयोगात्मक एवं रचनात्मक मूल्यों को गायकी में समाहित कर ख्याल गायकी को सुन्दरतम एवं अभिनव रूप प्रदान किया है। आप न केवल संगीत जगत् का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं बल्कि आपकी गायकी से प्रेरणा पाकर देश में अनेक संगीत साधक एवं कलाकार लाभान्वित हो रहे हैं।

विलक्षण प्रतिभा के धनी, विद्वान युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र जी के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक विभिन्न कारकों के अध्ययन द्वारा हम उनके चारित्रिक गुणों एवं विशेषताओं को गहनता से समझ सकेंगे।

***

द्वितीय अध्याय

पण्डित राजन साजन मिश्र का व्यक्तित्व

द्वितीय अध्याय

पंडित राजन साजन मिश्र का व्यक्तित्व

विश्व प्रसिद्ध लोकप्रिय युगल शास्त्रीय गायक पं. राजन साजन मिश्र भारतीय संगीत की अनमोल धरोहर हैं। आप वर्तमान समय में बनारस घराने के प्रतिनिधि कलाकार के रूप में विश्व संगीत पटल पर संगीत रसिकों, सुरसाधकों एवं कलाकारों के मन मस्तिष्क पर विराजमान हैं। आपने परंपरागत भारतीय संगीत को संरक्षण प्रदान करते हुए विलक्षण प्रतिभा, कठोर परिश्रम एवं स्वचिन्तन द्वारा ख्याल गायकी को अद्भुत, मनमोहक एवं आकर्षक रूप में सुसज्जित कर नए प्रतिमान स्थापित किए। सांगीतिक विकास की धारा प्रवाहित करने एवं जनसाधारण में शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में आपने अविस्मरणीय भूमिका निभाई है।

श्री कामेश्वरनाथ मिश्र के अनुसार ''मिलनसार व्यक्तित्व, विनम्रता, शालीनता, आधुनिक परिवेश में जीने की कलाचतुरता, स्वविवेक आपसी सद्भाव आदि अनेक गुणों के मणिकांचन योग ने इनके व्यक्तित्व एवं गायकी को निखारने में विशेष योगदान दिया है।''[1]

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र ने भारतीय संगीत के पारंपरिक एवं मौलिक स्वरूप को कायम रखते हुए संगीत का सृजनात्मक अभिसिंचन कर रागों की रसानुभूति का सुन्दर एवं प्रामाणिक मार्ग प्रशस्त करने की परंपरा को विस्तार दिया है। भारतीय संगीत की शुचिता एवं उसकी उन्नति के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हुए कला की नई पौध तैयार करने में भी आप सदैव अग्रणी रहे हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी मिश्र बन्धु ख्यातनाम शास्त्रीय गायक होने के साथ–साथ चिन्तक, विश्लेषक एवं दार्शनिक भी हैं। आप जैसे दैदीप्यमान विलक्षण कलाकारों को पाकर सम्पूर्ण भारत भूमि धन्य हो गई है। आपके समग्र व्यक्तित्व के अध्ययन हेतु जीवन से जुड़े विविध पहलुओं का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है।

2.1 प्रारम्भिक जीवन

भारत की सांस्कृतिक नगरी काशी (बनारस) में महान् सारंगी नवाज़ पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र के यहाँ दो विलक्षण प्रतिभाओं का जन्म हुआ। आप दोनों संगीत जगत् में पं. राजन साजन मिश्र के नाम से विख्यात हैं। पं. राजन जी मिश्र का जन्म सन् 1951 ई.

---

[1] पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. 129

में व पं. साजन जी मिश्र का जन्म सन् 1956 ई. में हुआ। आपका जन्म स्थान बनारस एक पौराणिक नगर है जिसे काशी या वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है।

पं. राजन एंव साजन मिश्र बाल्य अवस्था में

पं. साजन जी मिश्र ने चर्चा के समय बताया कि "हमारा जन्म संगीत कुल परिवार में हुआ है जहाँ सातवीं पीढ़ी संगीत की सेवा में लगी हुई है और उस घर में हमारा जन्म हुआ तो हम बहुत भाग्यशाली हैं। हमारे पिता, चाचा, दादा, परदादा पं. हनुमानप्रसाद जी मिश्र, पं. गोपाल जी मिश्र, पं. सुरसहाय जी मिश्र, प. गणेश जी मिश्र, पं. रामबख्श जी मिश्र जैसे बड़े–बड़े विद्वान हमारे घर में हुए हैं, तो उस घर में जन्म लेने का बड़ा सौभाग्य मिला।"[1]

बनारस के कबीरचौरा स्थित आवास जीर्णोद्धार के उपरान्त एवं पूर्व

आपके प्रपितामह, पितामह, पिता, चाचा सभी अपने समय के कुशल विद्वान, लोकप्रिय संगीतज्ञ एवं सारंगीवादक के रूप में प्रसिद्धि पाते रहे हैं। बाल्यकाल से पं. राजन साजन मिश्र जी के घर में संगीत का उच्च कोटि का वातावरण विद्यमान था। आप बनारस के सारंगी के प्रसिद्ध घराने से संबद्ध हैं। आपके पिता स्व. पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र व चाचा स्व. पं. गोपाल जी मिश्र की गिनती देश के ख्यातनाम सारंगी वादकों में होती है।

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

आप दोनों भ्राताओं की संगीत शिक्षा अल्प आयु से आरम्भ हो गई थी। पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''1956 में मेरा जन्म हुआ और 4–5 साल की आयु से जब से थोड़ा श्रवण शुरू हुआ, तब से संगीत कानों में जाता रहा चूँकि घर में हर समय संगीत का माहौल रहता था। पिताजी ने हमारे बिठला के सिखाना शुरु किया, माताजी को भी सैंकड़ों बंदिशें याद थी।''[1]

पं. साजन जी मिश्र ने 'अद्वैत संगीत' में बताया कि ''हमारे यहाँ यह परम्परा नहीं रही कि लड़कियाँ, औरतें भी संगीत सीखें चूँकि घर में संगीत होता था तो उन लोगों के अन्दर में संगीत व्याप्त था, हमारी माँ बहुत अच्छा ठेका लगा लेती थी बाएँ तबले पर। ढोलक बहुत अच्छा बजाती थी और गाती भी बहुत अच्छा थी।''[2]

पं. राजन साजन मिश्र अपनी माताजी गगन किशोरी जी के साथ

पिताजी पं. हनुमान मिश्र के साथ माताजी गगन किशोरी जी तबले पर संगत करते हुए

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

2 पं. साजन जी मिश्र : अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

किसी भी महान् व्यक्ति के जीवन में संस्कारों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसी क्रम में कलाकार द्वय के जीवन में उनकी माताजी गगन किशोरी जी का योगदान उल्लेखनीय है।

पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''हमारे जीवन में माँ का बड़ा योगदान है। बचपन में उनके अगल–बगल हम दोनों भाई सोते थे। हमारे बगल में (बनारस में) कबीरदास जी का मंदिर है। वहाँ पर दो बेल बजता था एक चार बजे का व दूसरा पाँच बजे का। पाँच बजे वाले बेल में हम दोनों को उठा दिया जाता था और उठाने के बाद में वह (माँ) भैरव की एक बंदिश जो हमारे गुरुजी की है'' मोहन जागो भोर भइलवा, अब काहे को नैना अलसिलवा'' इस बंदिश से सुबह हम लोगों को उठाती थी कि अब सवेरा हो गया है उठ जाओ। उसके बाद हम लोग स्कूल जाते थे, स्पोर्ट्स में बहुत रूचि था, हम सुबह–सुबह मैदान में खेलने निकल जाते थे। एक डेढ़ घंटा खेलकर आते थे फिर स्नान करके स्कूल जाते थे तो ये दिनचर्या जो है चलती रही और उस बीच में शाम को पिताजी रोज़ बैठाते थे सिखलाने के लिए, बचपना था तो थोड़ा भागते भी थे, तो कान पकड़ के उठा लिए जाते थे। एक–आध थप्पड़ भी पड़ता था, गाते थे थोड़ा–थोड़ा तो उस पर हमारी दादी बोलती थी अभी इतना छोटा है, क्यों जबरदस्ती कर रहे हो?''[1]

पं. साजन जी मिश्र ने अपने बचपन के विद्यालयीन शिक्षा से संबंधित प्रसंगों को साझा करते हुए बताया कि ''पहले एक 'दीन बालिका विद्यालय' था वहाँ हमारी प्राइमरी शिक्षा हुई जिसे आजकल किंडर गार्डन बोलते हैं लोग, वहाँ पढ़ने के बाद में, मैं क्लास थर्ड में आया डीएवी इंटर कॉलेज में, वहाँ से इंटरमीडिएट के बाद फिर उसी के बगल में डीएवी डिग्री कॉलेज है उसमें आ गया तो वहाँ फिर बी.ए. में प्रवेश लिया।[2]

'अद्वैत संगीत' नामक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म में स्कूल एवं कॉलेज के अनुभव को साझा करते हुए

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

[2] वही

स्कूली शिक्षा के अनुभव के बारे में पं. साजन जी मिश्र बताते हैं ''प्रार्थना सभा की अन्य गतिविधियाँ जैसे कहानी, कविता, प्रेरक प्रसंग बोलना आदि में हम ज़रा पिछड़े हुए थे। प्रार्थना सभा तो सामान्यतः होता ही था। सरस्वती वंदना भी हमारे यहाँ होता था क्योंकि दयानन्द विद्यालय था, वो सब तो होता था उसमें सामूहिक रूप से हम लोग गाते थे लेकिन स्कूल की प्रतियोगिता वगैरह मे जाते थे तो फीस इसलिए माफ़ था कि हर बार ट्रॉफी जीतकर ले आते थे। वहाँ पर फीस हमारा माफ था, भैया का भी माफ़ था क्योंकि दोनों जने गाते थे तो उस समय मिलता था छोटा–छोटा ट्रॉफी, फर्स्ट पर इतना बड़ा कप मिल गया, कभी किताब मिल गया, तो हम लोग जुटाते थे स्कूल के लिए। वह सब हमारे संगीत कक्ष में रखा जाता था। उस ज़माने में संगीत विषय के रूप में भी था। मतलब 6^{th} स्टैण्डर्ड तक तो अनिवार्य था कि आपको संगीत की कक्षा में जाना ही है जो कि विगत 20–25 साल से हम सुन रहे हैं बंद हो गया है।''[1]

विद्यालयीन शिक्षा के दौरान अपने अध्यापकों के संस्मरण याद करते हुए पं. साजन जी मिश्र कहते हैं ''हमारे यहाँ दो चार अध्यापक ऐसे थे जिन्होने बड़ा हेल्प किया हमारे जीवन में। एक देवदत्त लाल जी करके थे, उन्होंने एडमिशन करवाया था, हमारे पड़ौसी भी थे। वो हमेशा समझाते थे कि किस परिवार से हो इसका ज़रूर ध्यान रखना। तुम स्कूल में आये हो यहाँ नाना प्रकार के परिवारों के बच्चे आते हैं लेकिन यह ध्यान रखना है कि तुम किस परिवार से आये हो? तो रोज का एक वो होता था, जब मिलें याद है ना मिश्रा? हम कहते जी सर, तो उनकी बात अभी तक याद है। एक अध्यापक राम जी उपाध्याय करके थे। एक बंदोपाध्याय जी थे, गिरीश चंद्र बंदोपाध्याय शायद नाम था। वह हमारे म्यूज़िक टीचर थे, तो वह बोलते थे कि भई तुम लोगों को क्या सिखायें, तुम लोग तो खुद खानदानी परिवार से हो लेकिन मैं तुमको संगीत के लिए प्रार्थना भाव सिखाने का प्रयत्न करूँगा कि प्रार्थना भाव से गाया करो तो छोटी–छोटी बातें, ये सूत्र हैं।''[2]

''हमारे कॉलेज में एक तोहा जी थे, मोहम्मद तोहा। वह बड़े अच्छे टीचर थे, प्रोफेसर थे और उनसे हम लोग पैसा भी माँग लेते थे। कभी बच्चों का मन हो जाये कि चलो आज घूमने–फिरने चलते हैं, पैसा नहीं है तो अपने प्रोफेसर साहब से ही माँग लेते थे तो बेचारे अपना अलमारी से खोल के कुछ रूपये दे देते थे फिर हम लोग दे देते थे उनको वापस लेकिन इतना प्यार करते थे वो। एक कृष्णानन्द राय करके थे हमारे स्पोर्ट्स टीचर, वो भी हम लोगों को इतना प्यार करते थे कि जो भी उनसे हम लोग डिमान्ड करते थे,

---

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

[2] वही

किस स्टेन्डर्ड का बेट चाहिए, किस स्टेन्डर्ड का पेड चाहिए, तो वो उपलब्ध करवाते थे।'' उन लोगों की स्मृतियाँ मानस में हैं, उन लोगों का अभी तक आशीर्वाद है, जहाँ भी मिलते हैं वो इतने गद्–गद् हो जाते हैं कि हमारे विद्यार्थी आज इस स्तर पर हैं और हम लोग भी उसी श्रद्धा से उनके पाँव छूते हैं, रो देते हैं। ये जो गुरु–शिष्य का संवाद है, कभी खत्म न होने वाला संवाद है। जीवन में नैतिक ज्ञान, संस्कार, ये सब आना बहुत ज़रूरी है।''[1]

बाल्यकाल से किशोर अवस्था तक घर से मिलने वाले उच्च संस्कारों के साथ विद्यालयीन एवं सांगीतिक शिक्षा के दौरान गुरुजनों एवं बुजुर्गों से मिले मार्गदर्शन ने पं. राजन साजन मिश्र के जीवन को श्रेष्ठ आचार–विचार, अनुशासन एवं कर्मठता आदि गुणों से पूरित कर चरित्र निर्माण करने एवं आदर्श कलाकार बनने की दिशा में मज़बूत आधार तैयार कर दिया।

2.2 पारिवारिक स्थिति

युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र जी का सम्बन्ध बनारस घराने के सुप्रतिष्ठित सारंगी कुल से होने के कारण आपके परिवार को संगीत जगत में विशेष स्नेह एवं आदर प्राप्त है। आपका मूल निवास स्थान विशिष्ट संगीत गढ़ कबीर चौरा मोहल्ला रहा है।

पं. राजन साजन मिश्र जी के परिवार के सदस्यगण

श्रद्धेय पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''हम लोग मिडिल क्लास में थे और बहुत अच्छे जीवन को जीये। हमारे पिताजी, चाचाजी अपने ज़माने के टॉप आर्टिस्ट थे। मतलब चाचाजी पं. गोपाल मिश्रा जी तो इतने टॉप के आर्टिस्ट थे कि उस जमाने में तो रेल्वे में

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

थ्री टायर ए सी वगैरह नहीं था तो अपना हॉलडॉल लेके चलते थे। चाचा यदि पाँच दिन के बाद आ रहे हैं कपड़ा रखने के लिए, तो नये कपड़ा लिए बेडिंग उनका बदला और फिर शाम को ट्रेन से चले गये, इतने व्यस्त कलाकार थे। आर्थिक स्थिति हम लोगों की अच्छी थी और बहुत सुकून था क्योंकि उस समय ज़रूरत इतनी थी नहीं। घर में इतना अनाज भर देते थे लाके, आम के सीजन में ढ़ाई से तीन हजार आम भर देते थे खुवाल में दबा के, जितना मरज़ी आम खाओ, जितना मरज़ी तुम चावल दाल खाओ। गुड़ भरा हुआ है, देशी घी टिन का टिन रखा हुआ है तो अब इससे बड़ा सुख क्या हो सकता है? और हमारी दादी मतलब उनको खिलाने का इतना शौक, और हम लोगों का उन्होंने बहुत केयर किया।''[1]

अतः यह स्पष्ट है कि आपकी पारिवारिक स्थिति आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सुदृढ़ थी। आपके परिवार में घर के बड़े–बुजुर्गों का नियोजित तरीके से मेहनत करते हुए आगे बढना व सम्मिलित परिवार की अवधारणा को अपनाने से घर में प्रेम एवं आनंद का संचार होता रहा फलस्वरूप उस वातावरण ने दोनों भ्राताओं में स्फूर्ति, उत्साह एवं कर्मठता का संचार कर भावी जीवन में आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार कर दिया।

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार 'हमारी दादी तो नहीं थी संगीत से जुड़ी हुई पर म्यूजिशियन परिवार से थी– खुबरा देवी जी। वह बहुत संत प्रकृति की महिला थी। उन्होंने ही हमारे घर को खड़ा किया है, मतलब बनाया है।''[2]

आप दोनों भ्राताओं को प्रेमपूर्वक मिलजुलकर परिवार में रहने के संस्कार अपने पूर्वजों से मिले। परिवार में सम्मिलित रूप से रहने की परंपरा दादाजी–परदादाजी, पिताजी–चाचाजी के समय से देखते आये हैं। उसी परंपरा का अनुसरण आप दोनों भ्राताओं ने किया है। वर्तमान समय में, भौतिकवादी युग में सम्मिलित परिवार की अवधारणा समाप्ति की ओर अग्रसर है ऐसे समय में भी पूरे परिवार का एक सूत्र में बंधे रहना सम्पूर्ण समाज के लिए अनुकरणीय है। संयुक्त परिवार की अवधारणा पर पं. साजन जी मिश्र ने कहा ''यह ईश्वर की बहुत बड़ी कृपा है हम तो ये चाहते हैं कि अनवरत ये परंपरा रहे। हमारे दोनों भाइयों का तो ये निभ जायेगा ऐसा पूर्ण विश्वास है। हम एक दूसरे से इतने बंधन में बंध गये हैं, इतने क्लोज़ हो गये हैं कि उनको खाँसी आता है तो मुझे खाँसी आता है, उनको

---

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

2 वही

बुखार होता है तो मुझे भी बुखार होता है, उनको शुगर हुआ तो मुझे भी हो गया मतलब हम दोनों एक दूसरे के पर्याय हो गये हैं।''[1]

पं. साजन मिश्र जी के अनुसार ''शुरु से बचपन से जैसे एक परछाई होती है तो उस तरीके से मैं हूँ। इनके पीछे–पीछे मैं शुरु से चलता आ रहा हूँ तो ये भी बड़ा सौभाग्य का बात रहा कि वो सांगीतिक यात्रा हम लोगों की एक साथ की बनी''[2]

पं. राजन मिश्र जी के अनुसार ''हम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे भाई मिले जो कि हमारा इतना ख्याल रखते हैं। अपने गुरु की तरह हमें मानते हैं और हम भी उनको दिल से बड़के प्यार करते हैं तो ये प्रेम का ही सम्बन्ध है जो गाने में प्रदर्शित होता है।[3]

आप दोनों भ्राताओं में परिवार व कला के स्तर पर सामन्जस्य आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि की समृद्ध परंपरा को दर्शाता हैं। पं. साजन जी मिश्र आगे कहते हैं कि ''अब ऐसे ही इन तीनों भाइयों में भी परंपरा रहे क्योंकि इसमें बड़ी ताकत होती है। हाँ तक़लीफ़ होगा काफी देर मुट्ठी बाँध के रखोगे तो तकलीफ होगा, दर्द होगा, लेकिन उसमें ताक़त जो है उसका कोई अंदाज़ा नहीं लगा सकता। आज कोई भी मुसीबत हो तो पाँच लोग खड़े हैं। अकेले आज लोग रहना चाहते हैं, उनका जीवन देखो। आज पड़ौसी भी वैसे नहीं रह रहे हैं। आज साउथ दिल्ली में रहने वाले लोगों के कोई पड़ौसी हैं ? यहाँ कॉर्नर स्वीट्स से पूछोगे कि पं. राजन साजन मिश्रा जी का घर कौनसा है तो लोग बता देंगे एक उदाहरण मैं दे रहा हूँ तो आने वाले समय में तो ऐसा हो जायेगा कि कोई किसी को जानेगा ही नहीं। बॉम्बे में बगल वाले फ्लेट में कौन रहता है किसी को पता नहीं है। वैसे ही हालात यहाँ हो रहे हैं अगर आप किसी एक शहर में रह रहे हैं, आपका भाई किसी दूसरे शहर में रह रहा है लेकिन अगर प्रेम बना हुआ है तो तुम समझ लो तुम्हारे साथ ही रह रहा है तो कोशिश यही करना चाहिए कि प्रेम का जो बंधन है वो परिवार में रहे और हम लोग बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे दादा–परदादा, पिताजी–चाचाजी ने ये परंपरा बनाई।''[4]

घर को समृद्ध बनाने के बारे में घर की महिलाओं के योगदान के बारे में उन्होने कहा ''औरत ही घर को बनाती है और औरत ही घर को बिगाड़ती है। अगर ज़रा सा त्याग

---

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली
2 पं. साजन जी मिश्र : अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)
3 पं. राजन जी मिश्र : अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)
4 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

करके, थोड़ा सा कष्ट सहकर आदमी इन बातों पर ध्यान दे तो, समृद्धि जो है ना ज़्यादा जल्दी आती है, यह सब आप सामने देख रहे हैं।''[1]

पं. साजन मिश्रा जी ने चर्चा में बताया कि ''हम लोग तो बिल्कुल ओपन हैं। जैसे रहते हैं उसी मिज़ाज में रहते हैं चाहे अमेरिका में भी तुम देखोगे तो इसी वेशभूषा में ही देखोगे, घर में अपनी मस्ती में ही रहते हैं। अभी कल ही हम लोग पटना गये। वहाँ मारग्रेट अल्वा गवर्नर राजस्थान और बड़े सारे लोग मिले, मिनिस्टर्स वगैरह। निखिल कुमार जी मिले केरल के गवर्नर, उन्होने कहा अभी तक पंडित जी आप लोग वहीं रहते हैं? मतलब कई लोगों के दिमाग में यह है कि जो लोग साउथ दिल्ली में हैं वहीं बड़े लोग रहते हैं। भैया (पं. राजन जी मिश्र) ने कहा हम तो अपनी जगह पर हैं, बड़े सुकून में हैं, शांति में हैं, हमें ज्यादा हाय–हाय चिक–चिक है नहीं। बहुत सारे ऑफर आये उस समय, लोगों ने ऑफर किया कि आप लोग भी अपार्टमेंट के लिए एप्लाई कीजिये, भैया ने कहा हम सरकारी संरक्षण में नहीं रहना चाहते, हम एक कमरे में रहेंगे मगर अपना रहेंगे, जहाँ हैं अपनी मस्ती में हैं और प्रभु ने बहुत कुछ दिया है।''[2]

एक विश्व प्रसिद्ध कलाकार के लिए अपने कार्यक्रमों की व्यस्तता के बीच परिवार के लिए समय निकालना एक कठिन कार्य होता है। इस बारे में पं. साजन जी मिश्र कहते है ''परिवार को समय बीच–बीच में देते हैं। जैसे दो चार दिन के लिए आते हैं तो फिर कभी उनको घुमाने ले जाते हैं, उनको शॉपिंग करवाते हैं, फिर कभी उनको बाहर भी घुमाने ले जाते हैं। वो लोग भी जानती हैं भई ऐसी जगह शादी हुआ है तो ये सब तो सहना पड़ेगा। शिकायत रहता है लेकिन उसको हम किसी तरह से टेकल करते हैं।''[3]

पं. साजन मिश्र के अनुसार ''बहुत अच्छा लगता है क्योंकि जो स्ट्रगल करके जीवन को हम लोगों ने प्राप्त किया है उसका सुख का अनुभव तो होता ही है। बहुत ही स्ट्रगल किए हम लोग दोनों भाई। कोई हम लोगों के ऊपर गॉड फादर जैसा कोई नहीं था। चूँकि पिताजी चाचाजी यह कहते थे कि बेटा इंडिपेंडेंट रहो। कोई तुम्हारे लिए कल को ऐसा नहीं कहे कि इनकी वजह से, तो अपना प्रयत्न जो है वो रखे रहो और अपनी मेहनत पर विश्वास रखो। जिस दिन तुम्हारे मेहनत में वो खुशबू आ जायेगा उस दिन स्वतः लोग तुमको बुलाएंगे। बाबा विश्वनाथ और गुरुओं के वचन के भरोसे हम लोग यात्रा अपनी शुरु

---

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

[2] वही

[3] वही

किए। दिल्ली में नये–नये आए थे और आज हम लोगों को 40 साल तो दिल्ली में रहते हुए हो गया। ईश्वर की दया से हम लोग यात्रा में ही हैं।''[1]

आप वर्तमान में नई दिल्ली स्थित निवास पर पारिवारिक सुख का आनन्द लेते हुए समाज को प्रेम, भाईचारे व आनन्द का पाठ पढाते हुए परमात्मा द्वारा सौंपे गये सांगीतिक दायित्व का निर्वहन कर मानव जीवन की सार्थकता सिद्ध कर रहे हैं।

नई दिल्ली (रमेश नगर) स्थित आवास

2.3 संगीतात्मक पर्यावरण/परिवेश

बनारस घराने के गौरव पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र जी के शिखर पर पहुँचने में बनारस के प्राकृतिक, सांगीतिक एवं सामाजिक वातावरण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आपका मूल निवास स्थान कबीर चौरा मोहल्ला है जो कि संगीत का गढ़ है। ''इस मुहल्ले की संकरी, तंग गलियों में पग पग पर गायन, बीन, सितार, सारंगी, तबला, नृत्य आदि सभी विधाओं के अनेक घरानों के सिद्ध संगीत साधकों के छोटे बड़े आवासों से स्वर लय सम्पृक्त स्वरावलियों की गूंज निरन्तर कर्णकुहरों में प्रवेश कर संगीत प्रेमियों के जीवन को संगीतमय बनाकर धन्य करती रहती थी। इस मुहल्ले में काशी में मूर्धन्य, लब्ध प्रतिष्ठ, विश्व प्रसिद्ध, गुणी गन्धर्वों का लगभग दो तिहाई से अधिक समुदाय निवास करता था और आज भी अनेक घरानों के वंशज विद्यमान हैं।''[2]

बनारस में रहते हुए भ्राताद्वय का घर, विद्यालय एवं मोहल्ले का सांगीतिक परिवेश उच्च कोटि का था। विद्यालय में विद्यार्जन के समय गुरुजनों द्वारा प्रदत्त संस्कार, घरानेदार

---

1 पं. साजन जी मिश्र : अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

2 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की विशिष्ट संगीत परंपरा, काशी स्वर गंगा सम्मान पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेख

संगीत शिक्षा एवं परिवारजनों से प्राप्त संस्कारों ने आपके जीवन में उच्च आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। घर के साथ–साथ आसपास अर्थात् मुहल्ले एवं शहर में विद्यमान सांगीतिक वातावरण ने आपके रोम–रोम में संगीत की अविरल धारा को प्रवाहित कर दिया।

काशी के संगीतमय पर्यावरण में कबीर चौरा मुहल्ले में घर में मौजूद प्रख्यात कलाकारों के अतिरिक्त संगीत के घरानेदार ख्यातनाम, मूर्धन्य कलाकारों एवं साधकों के घरों से गूँजती स्वर लहरियाँ, विद्वान एवं गुणी कलाकारों को प्रत्यक्ष गाते बजाते सुनना, गायकी की सूक्ष्मताओं को समझना, प्रतिष्ठित घरानेदार संगीतज्ञों के संस्मरण एवं अनुभवों को सुनना उनके बीच उठना बैठना, मंदिर एवं देवालयों में होने वाले रात्रि पर्यन्त संगीत के कार्यक्रम, वाराणसी में होने वाली संगीत की बैठकें एवं प्रतिष्ठित कार्यक्रमों में निरन्तर भागीदारी ने आपको नादब्रह्म की अनवरत् साधना हेतु प्रेरित कर आपकी गायकी को परिष्कृत कर दिया। इसी साधना एवं तपस्या के फलीभूत पं. राजन साजन मिश्र जी ने गायन शैली रूपी खुशबू को कालान्तर में बनारस से दिल्ली और दिल्ली से संपूर्ण भारत एवं विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित किया।

पं. राजन मिश्र जी बनारस के संगीत के उत्कृष्ट वातावरण एवं श्रोताओं का ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि ''यहाँ की जो परम्परा थी वह संगीत को सुनने की नहीं थी, संगीत को पीने की थी। संगीत पीया जा सकता है यह बनारस में ही देखने को मिला। हम लोगों के बचपन में रात–रातभर एक से एक बड़े बुजुर्गों का गाना बजाना होता रहा है और यहाँ के श्रोता, जैसे फूल का रस मधुमक्खी लेती है वैसे यहाँ के श्रोता थे, वो संगीत का रस लेते थे। हम लोग जब बनारस आते हैं तो पूरे दुनियां का दुःख दर्द सब मिट जाता है, यहाँ की मस्ती में खो जाते हैं।''[1]

पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''बनारस मंदिरों का शहर है तो वहाँ हर दिन कभी सोमवार को शंकर भगवान के मंदिर में कार्यक्रम हो रहा है, मंगलवार को कहीं हनुमानजी के मंदिर में हो रहा है। वृहस्पतिवार को वृहस्पति देवता के मंदिर में कुछ संगीत चलता रहता था। तो हम छोटे–छोटे होते थे, उस समय में मेरी आयु होगी 6 साल की, भैया मेरे से पाँच साल बड़े थे 11 के आसपास, तो हम लोगों की हाजरी होती थी। वहाँ पर नियम था कि पहले छोटे बच्चे जो हैं वो हाजरी लगा लें, फिर उनसे सीनियर, फिर उनसे सीनियर, तो वो पूरी रात का कार्यक्रम होता था। उसमें हम उस लालच में और जाते थे

---

[1] पं. राजन जी मिश्र : अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

कि एक तो देशी घी का प्रसाद मिलता था और ऊपर से गाने के बाद पाँच–पाँच रुपया मिलता था तो पाँच रुपया उस ज़माने में बहुत बड़ी पूँजी होती थी, तो बहुत सारा प्लान कर लेते थे। इतने का ये पतंग खरीदेंगे, इतने का ये बिस्किट, इतने का नमकीन मतलब दुनियाँ भर का कचौड़ी–पकौड़ी जो भी, तो उसके लिए हम लोग लालायित रहते थे कि हम लोगों को भी ले चला जाये लेकिन वो बहुत बड़ा एक तालीम था क्योंकि नींद में भी हैं तो पिताजी जगा के बोलते थे, देखो, सुनो ध्यान से, सुनो, देखो कैसे गा रहे हैं बजा रहे हैं हमारे बुजुर्ग, तो जो एक रुचि जो है वो वहाँ से डवलप करना शुरु किया।

उसके बाद मेरी आयु थी 9 साल तो एक बड़ा कार्यक्रम था। गोपाल मंदिर करके है बनारस में, ये नाथद्वारा की गद्दी है, पुष्टिमार्गीय मंदिर है तो 9 साल का मैं था 13–14 साल के बड़े भैया थे तो वहाँ पर थोड़ा वृहद यानि मंदिर से बड़े मंदिर में हमारी हाजिरी हुई। हमारा सौभाग्य था कि पिताजी साथ में सारंगी बजाये तो हम लोग तो गाये जैसा गाये। पिछले दो साल पहले स्वरांश को वह रिकार्ड मिली, जो वहाँ के महंत थे उनसे। अपने को सुनके बड़ा ताज्जुब हुआ कि उस उम्र में भी मतलब कुछ था, बसंत राग हम लोग गाये हैं। हाँ कभी ऐसा तुम लोगों को सौभाग्य मिलेगा तो वो रिकार्ड सुनना, सुनने लायक है।''[1]

पं. राजन जी मिश्र ने टाइम्स म्यूजिक द्वारा जारी सी.डी. ''भैरव से भैरवी तक'' Vol. 2 में बनारस के मूर्धन्य एवं सिद्ध कलाकारों के संस्मरणों का उल्लेख किया है। यह संस्मरण बनारस में पंड़ितजी के घर के आसपास के समृद्ध एवं उच्च कोटि के सांगीतिक वातावरण का प्रमाण देते है। पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''पं. विश्वनाथ जी एक बहुत बड़े तबला वादक थे और संत संगीतज्ञ थे। सुबह पाँच बजे उठकर वह स्नान करते थे। उन्होंने एक हाथ गहरा ओर एक हाथ चौड़ा गड्ढ़ा बना रखा था, और उसमें शिव की पिंडुक्की अर्थात् शिवलिंग स्थापित था। ग्वाले को आर्डर था कि इसको सवेरे लाके भर दे दूध से और नहा धोके वह बैठ जाते थे तबले पर तो जब तक दूध सूख के ज़मीन सूख नहीं जाता था तब तक तबला बजता रहता था। अब वो 10 घंटा लगेगा कि 12 घण्टा लगेगा कि 15 घण्टा लगेगा इसका कोई पता नहीं है, जब पूरा दूध सूख जायेगा तब वो उठेंगे।''[2]

---

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

[2] पं. राजन जी मिश्र : 'भैरव से भैरवी तक', सीडी वॉल्यूम 2, टाइम्स म्यूज़िक

पं. कंठे महाराज जी का संस्मरण सुनाते हुए पं. राजन मिश्र जी ने बताया कि ''पं. कंठे महाराज जी ऐसे रियाज़ करते थे कि लोग बुला रहे हैं कि खाने का समय हो गया है आप छोड़िये तबला। कई बार तो लोगों ने जब उनको उठाने की कोशिश की तो वह तबला (बायाँ) लिए–लिए उठ गए, ये रियाज़ था। उनका एक ज़िक्र मुझे याद है कि जब बचपन में मैंने उनको दो आना इनाम दिया था, यह भी सुनने लायक बात है, हमारे तो दादा के समान थे, हमारे दादाजी के मित्र थे। हमारे नानाजी और कंठे महाराज जी का घर आमने–सामने था। हमारे नानाजी नेपाल दरबार में बहुत बड़े संगीतकार थे, गुरु थे दरबार के। जब वह बनारस आते थे तो मेरी माँ हमें लेके छोटेपन में वहाँ जाती थी। एक दिन सुबह–सुबह कंठे बब्बा बजा रहे थे तो मुझे इतना अच्छा लगा कि हमने जाके माँ से कहा कि एक दो–अन्नी दीजिए, उस समय पीतल की दो–अन्नी चलती थी। उन्होंने कहा क्या करोगे, हमने कहा कि दीजिए मुझे कुछ खाना है, खरीदना है और ज़िद करके उनसे दो अन्नी लिया हमने और ले जाकर महाराज जी के चरणों में ऐसे रख दिया। अब वो इतने अभीभूत हो गये कि अपनी पत्नी को उन्होंने आवाज़ दिया और बोले अरे जल्दी आओ, जल्दी आओ अन्दर से। मैं उस समय 6–7 साल का था। वह आयीं अन्दर से तो हमारे पर–दादाजी का नाम लेकर बोल रहे हैं कि ये देखो गणेश जी (पं. राजन मिश्र जी के परदादा) इनाम दे रहे हैं और क्या Ethics था उन लोगों में, क्या प्रेम था, क्या आस्था थी और क्या श्रद्धा थी। उसी समय वह तबला छोड़कर उठे और अपने जनेऊ में चाबी रखते थे अलमारी की। उस समय जो अलमारियाँ होती थी वह दीवाल के भीतर ही होती थी, उसमें वह अपना सब कुछ रखते थे तो उसी चाबी से उन्होंने ताला खोला और दो अन्नी को ऐसे माथे लगाकर वहाँ ऊपर रख दिया। ऐसे लोगों का आशीर्वाद हमें मिला है और उनको देखने का सौभाग्य मिला है।''[1]

पं. राजन मिश्र जी के अनुसार ''पं. छोटे रामदास जी ऐसे संगीतकार थे कि जैसे चार दिन बाद उनका कोई कंसर्ट है तो आज से ही वह तानपुरा दो घंटा मिलाना शुरु करते थे अर्थात् दो–दो घंटा रोज़ सिर्फ तानपुरा मिलेगा और प्रोग्राम चार दिन बाद है तो हमने अपने पिताजी से पूछा कि ऐसा क्यूँ है, इतना समर्पण तानपुरे के साथ क्यूँ कि चार दिन पहले से उसको देख रहे हैं जवारी और तार और वो सटीक मिल रहा है या नहीं मिल रहा है फिर कोशिश कर रहे हैं। पिताजी ने बोला कि बेटा वह ऐसा तानपुरा मिलाते थे कि तानपुरा मिलाके एक तानपुरा वहाँ रखा हुआ है और दूसरा उनके हाथ में है, उस वाले (पहले) तानपुरे पर रुमाल ओढ़ा देते थे औ जब ये (दूसरा) तानपूरा छेड़ते थे तो वह

[1] पं. राजन जी मिश्र : 'भैरव से भैरवी तक', सीडी वॉल्यूम 2, टाइम्स म्यूज़िक

रुमाल सरक के नीचे गिर जाता था, यह एक्यूरेसी थी। इसी बीच पं. साजन मिश्र जी ने पं. राजन मिश्र जी से परनाना जी द्वारा तानपुरे पर लिखी दो पंक्तियाँ सुनाने का आग्रह किया तो पं. राजन मिश्र जी ने सुनाई–

मिल्लत का मज़ा पूछा हज़ार से,
लेकिन जबाव आया तानपूरे के चार तार से।

पं. राजन जी आगे कहते हैं कि जब तानपुरा मिल जाता है तो ब्रह्माण्ड मिल जाता है। पूरी कॉस्मेटिक एनर्जी एक जगह इकट्ठी हो जाती है, यह ऐसा साज़ है।''[1]

टाइम्स म्यूज़िक द्वारा जारी इसी सी.डी. में बनारस के मूर्धन्य कलाकारों के संस्मरणों को साझा करते हुए पं. राजन मिश्र जी ने बताया ''हम बचपन में इन लोगों को देखे हैं पं. किशन महाराज जी, पं. सामता प्रसाद जी, पं. अनोखे लाल जी, इन सभी को देखने का सौभाग्य मिला है हमको! उनके गोद में रिक्शे पे बैठके में गया हूँ। पं. सामता प्रसाद जी जब रियाज़ करते थे तो अड़ौसी–पड़ौसी लोग बहुत नाराज़ होते थे कि रात को दो–दो बजे तक पीटता रहता है तो उन्होंने क्या किया कि एक पूरा सोलिड लकड़ी का तबला बनवा लिया। सोलिड लकड़ी के तबले पर जो चमड़े का आवाज़ रेजोनेन्स होता है वह नहीं हुआ, उसपे वह रियाज़ करते थे। रियाज़ कैसा उनका, बताया जाता है कि उनके गली में दीवान साहब रहते थे जो कि कोर्ट में बार एट लॉ थे। वह सुबह 9 बजे निकलते थे अपने घर से और शाम को 6 बजे आते थे। जब निकलते थे वह तब सामता प्रसाद जी क्या साधते थे ''धा धा तिट् टे धा धा तू ना, ता ता तिट् टे धा धा धी ना'' (विलम्बित लय में)। जब वह दीवान जी शाम को 6 बजे आवें तो ये यहाँ पहुँचे हुए हैं– ''धा धा तिट् टे धा धा तू ना, ता ता तिट् टे धा धा धी ना'' (मध्य लय में) इस जगह पे, फिर दो घंटे बाद भी वही द्रुत लय में अर्थात् दिनभर यही चल रहा है, पहले के लोग इस तरह के थे।

पं. अनोखे लाल जी का भी एक ज़िक्र है। दिल्ली में बजा रहे थे पं. अनोखे लाल जी मिश्रा तबला सोलो, हमारे चाचाजी पं. गोपाल मिश्रा जी उनके साथ सारंगी पर थे और बड़े–बड़े तबला वादक, उस्ताद लोग उ. अहमद जान थिरकवा खाँ साहब, उस्ताद हबीबबुद्दीन खाँ साहब और तबले के बड़े–बड़े विद्वान खलीफ़ा लोग सब बैठे हुए थे। जब तबला सोलो उनका बज गया एक–सवा घंटा तो बड़ी लोगों ने तारीफ़ की और कई लोग बोलने लगे कि वाह ''ना धिं धिं ना'' का जवाब नहीं है तो उनको थोड़ा सा पिन्च हुआ क्योंकि इन्सान ऐसा होता है किसी की अच्छाई को स्वीकार नहीं कर पाता है। उ. बड़े

---

[1] पं. राजन जी मिश्र : *'भैरव से भैरवी तक'*, सीडी वॉल्यूम 2, टाइम्स म्यूज़िक

गुलाम अली खाँ साहब जैसा ख्याल गाने वाला अब नहीं पैदा होगा लेकिन उनको ठुमरी का ही गायक माना गया। देखिए यह ह्यूमन फितरत है, लोग कहते हैं ठुमरी अच्छी गा लेते हैं जबकि ख्याल ऐसा–ऐसा गाया है बड़े गुलाम अली खाँ साहब ने कि उस दर्जे का ख्याल गाना और सोचना भी मुश्किल है। लेकिन लोगों ने यह अफवाह फैला दी ख्याल गाते हैं लेकिन ठुमरी बहुत अच्छी गाते हैं। उसी प्रकार से अनोखे लाल जी के साथ भी यह घटना हुई कि ''ना धिं धिं ना'' बहुत अच्छा बजाते हैं, और क्या बजाते हैं इससे मतलब नहीं बस ''ना धिं धिं ना'' अच्छा बजाते हैं। पं. अनोखे लाल जी को भी उस दिन थोड़ा सा लगा तो उन्होंने कहा कि हमारे सब बड़े भाई और बड़े लोग बैठे हुए हैं, 15 मिनट मैं और चाहता हूँ बजाना, तो लोगों ने कहा हाँ–हाँ बजाइये तो चाचाजी (पं. गोपाल मिश्रा जी) को इशारा किया कि अब शुरू हो जाओ झपताल तो जिस जगह पर (अति द्रुत लय में) ''ना धिं धिं ना'' खत्म हुआ था उसी जगह पर, लय पर, लहरा झपताल का ''धी ना धी धी ना, ती ना धी धी ना'' यह जगह पे चल गया, लहरा शुरू हो गया और वहीं पर ठेका और एक एक बोल ''धी ना धी धी ना, ती ना धी धी ना'' एक एक बोल मोती की तरह गिन लो। 10 मिनट उस जगह पर झपताल का ठेका, 10 मिनट उस जगह पर एकताल का ठेका, 10 मिनट उस जगह पर रूपक का ठेका, तीन चार ठेका बजाके बोले कि सिर्फ 'ना धिं धिं ना' ही नहीं बजाता हूँ और भी कुछ बजाता हूँ, ऐसे रियाज़ी लोग थे।''[1]

2.4 वंश परिचय

किसी भी महान कलाकार के जीवन में पैतृक एवं आनुवांशिक गुणों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। पं. राजन साजन जी मिश्र के परिवार में पूर्वजों से ही संगीत की वंशानुगत समृद्ध परंपरा रही है।

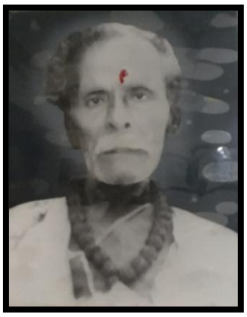

पं. राजन साजन मिश्र के परदादाजी पं. गणेश मिश्र

दादाजी पं. सुरसहाय मिश्र

पिताजी पं. हनुमान प्रसाद मिश्र

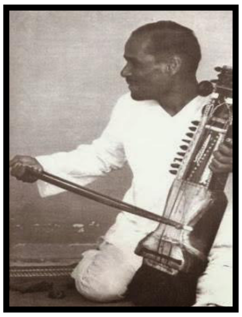

चाचाजी पं. गोपाल मिश्र

1 पं. राजन जी मिश्र : 'भैरव से भैरवी तक', सीडी वॉल्यूम 2, टाइम्स म्यूज़िक

पं. साजन जी मिश्र के अनुसार "हमारा जन्म संगीत कुल परिवार में हुआ है जहाँ सेवन्थ जनरेशन संगीत की सेवा में लगा हुआ है।" "जहाँ तक मुझे याद है हमारे परम् पितामह थे पं. रामबख्श मिश्र जी जो कि बहुत बड़े धुरंधर सारंगी वादक थे। उनके बेटे हुए पं. गणेश मिश्र जी, पं. शीतल मिश्र जी दो भाई, और दोनों भाई बहुत ही बिरले सारंगी वादक थे। बहुत नाम था उस ज़माने में, मम्मन खाँ साहब के ज़माने में, उसके बाद हमारे दादा हुए पं. सुरसहाय मिश्र जी और उनके दो पुत्र हुए पिताजी पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी और चाचाजी पं. गोपाल मिश्र जी। पिताजी के हमारे बड़ी बहन इन्दुजी और हम दो पुत्र हुए। चाचा जी के कोई पुत्र नहीं था तो हम ही लोग उनके पुत्र हैं और उन्होंने हमें पुत्रवत ही रखा। पं. हनुमान मिश्रा जी और पं. गोपाल मिश्रा जी दो भाई थे, एक बहन थी उनका नाम था हीरामनी और हीरामनी नाम था तो उनका हीरा ही जैसा मन था। हमारे चाचाजी हमारी हर फरमाइश पूरी किया करते थे। पिताजी इतने स्ट्रिक्ट थे कि वो फरमाइश कोई भी पूरी नहीं करते थे और हमेशा टाल जाते थे लेकिन चाचाजी जो हैं सारी फरमाइशें हमारी पूरी किया करते थे।"[1]

पं. साजन जी मिश्र दोनों भाइयों के परिवार के बारे में बताते हैं "हमारे बेटे हैं स्वरांश, राजन भैया के बेटे हैं रितेश और रजनीश, और अंजू बिटिया है। हम दोनों भाइयों के बीच में एक ही बिटिया है तो उनका लाड–प्यार, सम्मान हम लोग ज़रा ज्यादा रखते हैं।"[2]

पं. राजन जी मिश्र पारिवारिक सदस्यों की सांगीतिक पृष्ठभूमि बताते हुए कहते हैं कि "दादी तो संगीत से सीधे जुड़ी हुई नहीं थी पर म्यूजिशियन परिवार से थी– खुबरा देवी जी। वह बहुत संत प्रकृति की महिला थी। हमारी माता जी का नाम गगन किशोरी जी था। नाना जी का नाम पं. झूमक मिश्र एवं परनाना का नाम पं. नानक मिश्र था। नानी का नाम शायद कुसुम देवी था।"[3]

पं. नानक प्रसाद जी मिश्र
पं. राजन साजन मिश्र जी के परनानाजी महान संगीत विभूति एवं नेपाल दरबार के राजगुरु

पं. झूमक लाल जी मिश्र
पं. राजन साजन मिश्र जी के नानाजी दरबारी कलाकार

---

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली
[2] वही
[3] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

पं. राजन साजन मिश्र जी की वंशानुगत संगीत परम्परा

पं. रामबख्श जी मिश्र (सारंगी वादक)

- **पं. बड़े गणेश मिश्र (ज्येष्ठ पुत्र) सारंगी वादक**
  - पं. सुरसहाय मिश्र (गायक एवं सारंगी वादक)
    - पं. हनुमान प्रसाद मिश्र (ज्येष्ठ) गायक एवं सारंगी वादक
      - पं. राजन मिश्र (ज्येष्ठ) गायक
        - पं. रितेश मिश्र (ज्येष्ठ) गायक
        - पं. रजनीश मिश्र (कनिष्ठ) गायक
      - पं. साजन मिश्र (कनिष्ठ) गायक
        - पं. स्वरांश मिश्र (गायक)
    - पं. गोपाल प्रसाद मिश्र (कनिष्ठ) सारंगी वादक
- **पं. शीतल मिश्र (कनिष्ठ पुत्र) सारंगी वादक**
  - पं. काशी मिश्र (प्रथम पत्नी से उत्पन्न)
  - पं. गौरीशंकर मिश्र (ज्येष्ठ) (द्वितीय पत्नी से उत्पन्न) (सारंगी वादक)
  - पं. हरिशंकर मिश्र (कनिष्ठ) गायक एवं सारंगी वादक
    - पं. मनमन मिश्र (पं. कृष्ण कुमार मिश्र)

पं. साजन मिश्र जी की धर्मपत्नी श्रीमती कविता मिश्र हैं जो कि विश्वप्रसिद्ध कत्थक नृत्यकार पं. बिरजू महाराज जी की पुत्री हैं। पं. राजन मिश्र जी की धर्मपत्नी श्रीमती बीना मिश्र हैं। आपके पिताजी पं. दामोदर मिश्रा जी बहुत गुणी कलाकार थे।

रससिद्ध गायक पं. राजन साजन मिश्र को पीढ़ियों से परिवार में चली आ रही समृद्ध संगीत परंपरा रूपी खजाना मिला इसके अन्तर्गत जहाँ एक ओर वंशानुगत प्रतिभा, परंपराओं, मान्यताओं के रूप में समृद्ध गायन शैली व बंदिशों का विशाल भंडार मिला वहीं दूसरी और आपके पिताजी पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र से आपको गायकी के प्राचीन के साथ नवीन दृष्टिकोण को अपनाने अर्थात् अन्य घरानों के सुन्दर अंगों को गायकी में समाविष्ट करने हेतु प्रेरणा मिली।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आज से लगभग 300 वर्षों से अर्थात् आपके परम पितामह पं. रामबख्श जी मिश्र के भी कई वर्षों पहले से आरम्भ हुई यह संगीत रूपी सरिता आज तक निरन्तर गतिमान एवं प्रवाहमान है। इस संगीत की रसगंगा में अनेक कलाकारों एवं मनीषियों ने स्नान कर अपने आपको धन्य किया है।

2.5 स्वभाव

कला के क्षेत्र में कलाकार का स्वभाव जहाँ एक ओर श्रोताओं से संवाद स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है वहीं इसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से कला की अभिव्यक्ति के स्तर पर भी पड़ता है।

श्रद्धेय मिश्र बन्धुओं का स्वभाव सरल, शांत, गंभीर, मृदुभाषी, मिलनसार विनम्र एवं शालीन होने के साथ मनोविनोद से परिपूर्ण है। उच्च कोटि के कलाकार होने के साथ आप सरल एवं सहज स्वभाव के धनी होने के कारण श्रोता आपको अपने अत्यंत करीब पाते हैं। आप दोनों की इन स्वभावगत विशेषताओं के कारण कला अभिव्यक्ति के समय श्रोतागण राग की गहराई में उतरते हुए सुगमता से राग रूपी अनन्त सागर में गोते लगाते हुए परम आनन्द की अनुभूति करते हैं।

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''देखो स्वभाव मतलब स्व का भाव और ये स्वभाव जो है वो धीरे–धीरे डवलप होता है। इसमें संस्कार का बड़ा कंट्रीब्यूशन है। मेरा मतलब अब मुझे जो समझ में आने लगा है कि तुम्हारे जो विचार हैं वही तुम्हारे भाग्य निर्माता हैं क्योंकि जैसा तुम्हारा विचार होगा वैसा ही तुम्हारा कर्म होगा अर्थात् मौलिक विचार। अगर तुम ईर्ष्यालु हो, तुम्हारे मन में द्वेषपूर्ण भाव है तो तुम्हारे कर्म भी वैसे होंगे तुम कुछ काम

करोगे तो प्रिटेन्ड होके करोगे। प्रिटेन्शन जो है, ये जीवन का सबसे खतरनाक रोग है अर्थात् जैसे तुम अभी मेरे पैर छू रहे हो और भाव मन में कुछ और है। झुके हुए हैं, पूरे संसार में हमारे सामने, पैर छू रहे हैं, सब कुछ कर रहे हैं लेकिन अंदर से पिघले नहीं हैं तो आप देखिए, कैसा गायेंगे? क्या हो रहा है?''[1]

आप दोनों के स्वभाव का प्रभाव आपके गायन पर भी दृष्टिगत होता है। आप परंपराओं, मान्यताओं एवं नैतिक मूल्यों के पक्षधर हैं। सिद्धांतों से समझौता आप जल्दी नहीं करते वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं के प्रति भावुक एवं सहृदयी हैं। आपके स्वभाव से संगीत जगत से जुड़े कलाकार व श्रोतागण बहुत आकर्षित रहते हैं।

पं. राजन जी मिश्र अपने संगीत सीखने के दिनों की याद करते हुए कहते हैं ''बचपन से हमें अदब कायदा सिखाया गया। देखो हमारे पिताजी जब हम लोगों को संगीत की शिक्षा देते थे तो पूरे जीवन भर शायद दस हजार बार एक वाक्य जरूर बोलते थे ''बाअदब–बानसीब, बेअदब–बेनसीब'' तो अपने बड़ों के प्रति जो हमारी श्रद्धा थी, जो हमारी विनम्रता थी वो हमेशा ही कायम रही। उसकी वजह से अहंकार को डवलप होने का अवसर नहीं मिला, लेकिन अहंकार तो डवलप होता है सबका। जब आदमी शिखर पर होता है, आदमी का जब इतना नाम होने लगता है, कद जब ऊँचा होता है तो हर आदमी को अहंकार आता है, और इस लाइन में अहंकार जल्दी आता है। इतने लोग तुम्हारे प्रशंसक हैं, तुमसे ऑटोग्राफ ले रहे हैं, फोटो खिंचवा रहे हैं, पेपर में तुम्हारा इंटरव्यू छप रहा है, रिपोर्ट छप रहा है, फोटो छप रहा है तो उससे एक अहंकार आने लगता है, उस समय हमको ओशो मिल गये। मतलब जब ये डवलपमेंट हो रहा था तो वो हमारे जीवन में आ गये, तो वो आकर जो एक–एक करके अहंकार को काटना शुरू किये तो उसका नतीजा यह है कि अब इतना काट दिये हैं कि अब बिल्कुल शांति हो गया है। अब अहंकार उठने का कोई सवाल ही नहीं उठता है। चाहे पद्म भूषण मिल जाये, चाहे भारत रत्न मिल जाये, चाहे कुछ भी मिल जाये। उससे ऐसी क्रिया नहीं होती है कि मैं बड़ा महान् हो गया।''[2]

पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''मेरा मानना है कि अच्छा स्वभाव है तो थोड़ा और अच्छा गाना हो जायेगा, बात देखो जो है, व्यक्ति को अहंकारवादी नहीं होना चाहिए। बेसिक फर्क है अहंकार और स्वाभिमान में। सिद्धान्त की जहाँ बात है तो फिर वहाँ तो

---

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

2 वही

सैद्धान्तिक बात होनी ही चाहिए, जो लॉजिक है उससे अगर हट के आप बात करते हैं तो वो सैद्धान्तिक बात नहीं होगी।''[1]

आप दोनों भ्राताओं में आपसी मेलजोल की भावना एवं पारिवारिक सामन्जस्य ने आपकी युगल गायकी को संपूर्णता प्रदान की है। पं. साजन मिश्र जी हमेशा अपने गुरु एवं भ्राता पं. राजन जी मिश्र के प्रति आदर भाव से नतमस्तक रहते हैं। वहीं पं. राजन जी मिश्र का अपने लघु भ्राता के प्रति अगाध प्रेम एवं आशीष का भाव उनके व्यवहार में स्पष्टतः दिखाई देता है।

रहन–सहन

पं. राजन साजन जी मिश्र का रहन–सहन का एक खास अंदाज है, सादगीपूर्ण लेकिन बनारस की संस्कृति से ओतप्रोत उनकी जीवनशैली उन्हें संपूर्ण विश्व में एक अलग पहचान दिलाती है। मंच पर आसीन गौरवर्ण भ्राताद्वय बनारसी धोती व कुर्ता धारण किए हुए, आभामय मुखमण्डल के साथ संगीत साधना व अध्यात्म का तेज, हिन्दी में बनारसीशैली के पुट के साथ आत्मीयता से लोगों से बतियाना, पान पेटी से मंच पर पान जमाना, श्रोताओं के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ने वाला ओजस्वी गायन, उन्हें विश्व के महान् गायकों एवं संगीतज्ञों की श्रेणी में खड़ा करता है। पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''हम लोग तो शुरू से ही बहुत सादगी पसंद रहे हैं, देखो कढ़ाई–वढ़ाई का कुर्ता भी नहीं पहनते हैं।''[2]

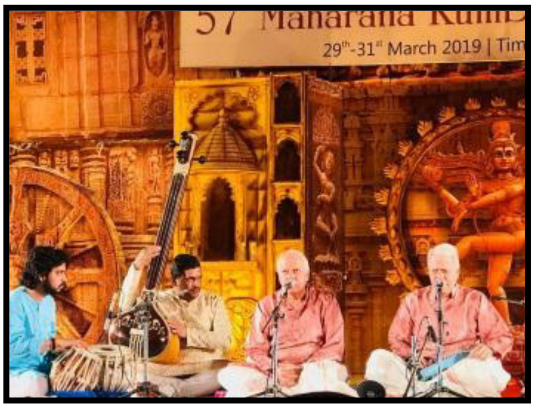

पं. राजन साजन मिश्र महाराणा कुम्भा संगीत समारोह,
उदयपुर में आकर्षक वेशभूषा में

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली
[2] वही

'क्या है न कि शुरू से कुछ ऐसा स्वभाव बन गया, घर का संस्कार कह सकते हो कि सादगी ही जीवन बन गया है, मतलब अब हम इसमें बहुत खुश रहते हैं, बहुत दिखावे में नहीं जाते हैं। हम लोग भले ही एक्सचेंज पहन रहे हैं पर कभी तुम हमको कुर्ता के बाहर नहीं देखे होंगे। आज तुम भी बीसों सालों से जुड़े हो, ये लोग (शिष्याओं को इंगित करते हुए) देखी हैं। कितने लोग हैं बाहर चैन निकाल के बैठ रहे हैं गाने के लिए, लॉकिट दिखा रहे हैं। नहीं अपना–अपना स्वभाव है, हो सकता है उनको बहुत अच्छा लगता हो। कोई बहुत जगमग कुर्ता पहन रहा है। अब वो सब अपने को पसंद नहीं है, एक स्वभाव का बात है।''[1]

आप दोनों के रहन–सहन की शैली में एक विशेष आकर्षण है जो कि आपकी पारंपरिक मूल्यों में मान्यता व विद्वता का परिचायक है। कलाकार का चिन्तन उसकी कला के साथ–साथ जीवन के हर पहलू पर उसका प्रभाव छोड़ता है।

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''हमारा रहन सहन आकर्षित इसलिए करता है क्योंकि हम सहज हैं, हमारे में बनावटीपन नहीं है। जैसा हमारा स्वभाव है वैसे ही हम चलते हैं, वैसे ही हम रहते हैं। बड़े–बड़े मंत्री लोग यहाँ आते हैं मिलने के लिए कभी–कभी, बड़े अधिकारी आते हैं तो हम जाकर कुर्ता नहीं बदल देते। हम इसी भाव में उनसे मिलते हैं जैसे हम तुमसे मिलते हैं लूंगी कुर्ता पहने हुए, वैसे ही हम उनसे भी मिलते हैं क्योंकि वह हमसे मिलने आये हैं, हमारे कपड़े से मिलने नहीं आये हैं। जो यहाँ आ रहा है, वो हमसे मिलने आ रहा है, हमारे मकान से मिलने नहीं आ रहा है। जिस व्यवस्था में, मैं रह रहा हूँ उस व्यवस्था में आप आना चाहो तो आपका बहुत स्वागत हैं और आप ऐसा सोचते हो कि बहुत बड़ा कलाकार है, बड़ा भारी मकान है, ये सजावट है वो सजावट है, तो ऐसा कहीं दिख रहा है? कहीं नहीं है, जो कुछ है सहज रूप में है, जैसा है वैसा है। साफ सुथरा है, सफाई तुमको सब जगह नज़र आना चाहिए, कपड़े साफ होने चाहिए, शरीर साफ होना चाहिए, मन साफ होना चाहिए, तो उस अंदाज़ में जो भी रहेगा तो उसका एक प्रतिबिंब जो निकलता है न वह दूसरे को प्रभावित करता है। तुम बनावटीपन में रहोगे तो तुम्हारा जो एक्सप्रेशन है दूसरे को भी पता लगता है क्योंकि दूसरा भी उतनी ही प्रखर बुद्धि वाला है जितने कि तुम, तो जितना सहज रहोगे उतना ही आनंद में रहोगे।''[2]

---

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

2 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

श्रेष्ठ आचार विचार के धनी, शालीन, सरल एवं सहज जीवन को जीने वाले, संस्कारों, मूल्यों एवं मान्यताओं में दृढ विश्वास रखने वाले एवं संगीत में ईश्वर के दर्शन का भाव रखने वाले पं. राजन साजन मिश्र, आदर्श व्यक्तित्व के धनी हैं। आपका नाम संगीत जगत में विनम्रता एवं आदर से लिया जाता है।

2.6 संगीत शिक्षा

काशी की पावन भूमि में पले–बढ़े पं. राजन साजन जी मिश्र को जन्म से मिले सांगीतिक संस्कार अर्थात् घर में निरन्तर गाने बजाने के माहौल के साथ–साथ आसपास के परिवेश में विद्यमान संगीत ने दोनो भ्राताओं के लिए संगीत शिक्षा प्राप्ति हेतु सुदृढ़ आधार तैयार कर दिया।

''बचपन से ही सारंगी के बजाय दोनों भाइयों की विशेष रूचि गायन की ओर उन्मुख होने के कारण पिता पं. हनुमान मिश्र जी ने अपने मार्गनिर्देशन में गायन की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया, कुछ वर्षों के अनन्तर इस युगल भ्राता ने गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी मिश्र का शिष्यत्व ग्रहण किया।''[1]

पं. राजन जी मिश्र ने चर्चा में बताया कि ''हमारी शिक्षा में सबसे बड़ा योगदान हमारे पिताजी का है, जिन्होंने हमें शिक्षा दी। पं. बड़े रामदास जी हमारे औपचारिक गुरु तो थे लेकिन हमारी 9 साल की उम्र हुई तो वह चल बसे। तो उनसे उतनी शिक्षा तो हो नहीं पायी लेकिन उनका आशीर्वाद पूरा मिला। वो माला घुमाना, उनको देखना और उनके चरण छूना, ये इतना बड़ा आशीर्वाद है कि सौभाग्य वालों को ही मिलता है, लेकिन सांगीतिक शिक्षा जो है वह हमारे पिताजी से हुई।''[2]

पं. राजन साजन मिश्र के गुरुजन पं. बड़े रामदास जी, पं. हनुमान प्रसाद जी एवं पं. गोपाल मिश्र जी

---

1 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परम्परा, पृ. 128

2 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिम, 12.07.2014, नई दिल्ली

प. राजन जी मिश्र ने टाइम्स म्यूज़िक द्वारा जारी सी डी ''भैरव से भैरवी तक'' में स्पेशल फीचर्स के अंतर्गत संगीत शिक्षा से संबंधित संस्मरणों को साझा करते हुए कहा कि ''हमारी तालीम ऐसे भी हुई कि बहुत छोटे–छोटे हम लोग थे। 5 साल छोटे थे साजन जी हमसे, मैं 5 साल बड़ा हूँ तो 9–10 साल की उमर में पिताजी कहते चलो तुमको कुछ चीज़ दिलवा के भेज देता हूँ, मैं उधर से चला जाऊँगा तुम झोला लेके सब्जी का आ जाना। घर से वो जो दूरी थी मुश्किल से शायद आधा किलोमीटर भी नहीं थी। उस दूरी में वो बोलते थे कि अच्छा एक टप्पा याद करलो तो चार आना मिल जायेगा तुम्हें, तो वह रास्ते में चलते–चलते एक टप्पा याद करवा देते थे और चवन्नी का उस समय बहुत महत्त्व होता था। चार आना में तुरन्त मैथमेटिक्स यहाँ शुरू होता था कि एक आने का जलेबी खायेंगे, एक आने का पतंग खरीदेंगे, छबीर का छोला खायेंगे और ये जब केलकुलेशन करके, चवन्नी का बड़ा महत्त्व होता था तो फटाफट याद हो जाता था टप्पा। याद करके हम झोला लेके अपना चार आना लेके आ जाते थे तो इस तरह तालीम हुई।''[1]

श्री कामेश्वर नाथ मिश्र के अनुसार ''बाल्यकाल से ही कुशल संगीत शिक्षा, पारिवारिक संगीतमय वातावरण, विद्यालयीन प्रशिक्षण तथा ख्याल एवं टप्पा अंग की गायकी की नियमित साधना ने आप दोनों भाइयों का सांगीतिक मार्ग प्रशस्त किया और क्रमशः प्रगति पथ पर अग्रसर होते हुए आप लोग काशी के संगीत प्रेमियों के बीच चर्चित होते चले गये।''[2]

बचपन के अविस्मरणीय अनुभव को याद करते हुए पं. राजन मिश्र जी कहते हैं ''उस ज़माने में जब छोटे हम लोग थे तो जो बंदिश हमको पिताजी बताते थे या गुरुजी के यहाँ से सीखकर आये, तो अब कल सुनाना है, उसका अंतरा भूल गये, तो माताजी की गोद में सोते थे उनके साथ, तो कहते माँ ये भैरव का अंतरा याद है? तो वह बता देती थी क्योंकि उन लोगों को सुन सुनके याद हो जाता था। हमारी बड़ी बहन को हज़ारों बंदिशें याद हो गई थी। नीचे (भूतल पर) हम लोगों को गवाते थे पिताजी, ऊपर (प्रथम तल पर) वह खाना बना रही हैं या कुछ कर रही हैं तो स्वतः याद हो जाता था।''[3]

पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''प्रथम गुरु पं. बड़े रामदास जी थे, पर सिर्फ आरोह–अवरोह और ''सुमिरन कर मन'' शुरू करवाये थे राग पूरियाधनाश्री की बंदिश और उसके 1 साल बाद उनका इंतकाल हो गया, लेकिन उनके ये (पं. राजन मिश्र जी) आखिरी

[1] पं. राजन जी मिश्र : 'भैरव से भैरवी तक', सीडी वॉल्यूम 2, टाइम्स म्यूज़िक
[2] पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परम्परा, पृ. 128
[3] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

शिष्य हैं। वे गायनाचार्य थे, बहुत बड़े प्रकाण्ड विद्वान थे। उनका संपूर्ण आशीर्वाद भैया (पं. राजन जी मिश्र) को मिला। वे गाने में तुम लोगों को दिखाई देता है, मुझे अनुभूति होती है और पिताजी–चाचाजी का तो आशीर्वाद है ही।''[1]

''हम लोग बहुत भाग्यशाली हैं कि ऐसे पिता गुरु रूप में मिले। पिता कम थे गुरु ज़्यादा थे और ऐसे गुरु दर्शन करवाते थे। फैयाज़ खाँ साहब के बारे में बता रहे हैं, हम देखे नहीं हैं उनको लेकिन साक्षात्कार खड़ा करवा दिए हैं। लग रहा है फैयाज़ खाँ साहब को देख रहे हैं। इस तरह की मूँछें, यहाँ से यहाँ तक मैडल, तिरछी टोपी और खाँ साहब आके 'सा' लगा रहे हैं तो लग रहा है रोशनी हो जा रही है। ऐसा गुरु कहाँ मिलेगा?''[2]

''जितने गुरु लोग हैं जितने बड़े कलाकार हैं उन सबका आशीर्वाद है। भीमसेन जी का आशीर्वाद है, अप्पा जी (गिरिजा देवी जी) का आशीर्वाद है, किशोरी जी का आशीर्वाद है, जसराज जी का आशीर्वाद है। सब प्यार करते हैं, सब स्नेह करते हैं, सबका आशीर्वाद है। बहुत बड़े भाग्यशाली हैं हम लोग, सभी प्यार करते हैं।''[3]

गायकी की तालीम शुरू करने के बारे में आपने बताया कि ''सर्वप्रथम तो भैरव और उसके बाद पूरियाधनाश्री में रगड़ घिस होता रहा। राग पूरियाधनाश्री में 'सुमिरन करो मन राम नाम को'' इसी में तान, सरगम और सब कुछ।' ''[4]

डॉ. वनमाला पर्वतकर आपके गुरु पं. बड़े रामदास जी के संगीत शिक्षण के बारे में लिखती हैं कि ''संगीत शिक्षण देने में आप कठोर अनुशासन रखते थे। भौर में साढ़े तीन चार बजे इनके सभी शिष्य रियाज़ शुरू कर देते थे। सूर्योदय होने के बाद चबूतरे के दरवाजे पर तकिया लगाकर यह बैठे रहें और पास पड़ौस के छोटे बच्चों की फौज को नित्य भैरव का पल्टा आधे घंटे, पोने घंटे गवाते थे। उसी समय, कचौड़ी हलवा बेचने के लिए आ गया और सब छोटे बच्चों को एक पैसे की कचौड़ी और हलवा खिलाकर बच्चों का सुबह अभ्यास समाप्त होता था। सायंकाल पुनः सूर्यास्त के समय उसी स्थान पर बैठते, यह वानरसेना को पूरियाधनाश्री में ''सुमिरन कर मन राम नाम'' के ख्याल का रियाज़ करवाते थे।[5]

---

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली
2 वही
3 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली
4 वही
5 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 205–206

संगीत अभ्यास के बारे में पं. राजन जी मिश्र कहते हैं कि ''शुरू–शुरू में तो काफी रियाज़ होता था, तीन चार घंटे सवेरे, फिर शाम को भी बैठ जाते थे दो से ढाई घंटे मुल्तानी, भीमपलासी ये सब लेकर और शाम के बाद भी तीन चार घंटे। कुल मिलाकर 8 घंटे रियाज़ हो जाता था। अभ्यास के दौरान ध्यान रखने योग्य बातों के बारे में आपका कहना है कि ''रियाज़ में सबसे पहला ध्यान यह रखना चाहिये कि तुम भले ही एक ही घंटा रियाज़ करो लेकिन उस एक घंटे में तुम्हारा रोम–रोम वहाँ प्रजेन्ट होना चाहिए अर्थात् इनवॉल्वमेन्ट। मतलब उस दौरान दूसरे विचार डिस्ट्रक्शन में न हों। अब होता क्या है हमारे जितने शिष्य हैं वो रियाज़ करते हैं घड़ी देखकर चार घंटा, लेकिन उसका आउटकम आता नहीं है। वह इसलिए नहीं आता है कि दुनियाँ बडी डिस्ट्रेक्ट हो गई है। दिमाग बहुत जगह बँट गया है मोबाइल फोन है ये सबसे बड़ा डिस्ट्रेक्टर है। चार तान मारकर सोचने लगे अरे यूनिवर्सिटी में ऐसा हुआ था, वैसा हुआ था। फिर दो चार तान मार दिए, तो उससे क्या होता है ना बेटा, स्टेमिना नहीं बन पाता।''[1]

''हम लोगों को रियाज़ ऐसे करवाया गया कि डेढ़ घंटे दो घंटे का रियाज़ छह घंटे के बराबर होता था अर्थात् दूसरी बात उस वक्त ध्यान में आनी ही नहीं हैं यानी कन्ट्यूनिटी (निरन्तरता), इतनी कन्ट्यूनिटी होती थी कि एक–एक तान को सौ–सौ बार गिन के मार रहे हैं। तबला चला जा रहा है ना धिं धिं ना, ना धिं धिं ना। एक–एक पल्टा पकड़ लिए अपना, पचास बार–सौ बार ऐसे मार रहे हैं। अब वो खत्म हुआ तो निरन्तर दूसरा पल्टा उसी समय, रूकना नहीं है। दूसरा पल्टा पकड़ लिए एक सपाट मार रहे हैं, पचास ठो मार दिये उसमें। पचास सपाट मारने में समय तो लगता है ना और एनर्जी भी लगती होगी, तो वो एनर्जी जो है, शरीर को एक बार मालूम होनी चाहिए कि तुमको कितनी एनर्जी चाहिए? उस समय का खानपान भी था, चना खाते थे हम लोग, किसमिस खाते थे, बदाम खाते थे, मक्खन खाते थे।''[2]

गायन के अभ्यास के समय रियाज़ की तकनीक के बारे में पं. साजन जी मिश्र का कहना है कि ''वो बड़ा डिटेल की बात है, उसको लिखा नहीं जा सकता है। उसको प्रेक्टिकली जब बैठके सीखोगे उतना समय दोगे और उतना डेडीकेशन होगा तब हम बता पायेंगे। रियाज़ का टेकनिक जो है तुमको गुरु के सन्मुख बैठकर ही सीखना पड़ेगा।''[3] ''षड्ज साधना तो आम साधना है ही, कि सुबह उठकर खरज, षड्ज साधना, सुबह गला

---

[1] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

[2] वही

[3] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

भारी होता है और उस समय आप षड्ज की साधना करें तो बहुत अच्छी बात है। स्वरों को पूरा ठहरकर एक–एक स्वर को लगाइये। ये सब कुछ तो जनरल चीजें हैं, लेकिन गाने में जो है, जिसको कहते हैं ''निकसना'' वो जो है गुरु बैठा के सिखाता है, उसके लिए दृष्टि होनी चाहिए। अपनी दृष्टि ऐसी होनी चाहिए कि तुरंत ले ले क्योंकि एक बार होगा वो, दुबारा वापस नहीं होगा। जो बात है उसको तुम पिक कर लो तो तुम्हारा होगा, नहीं तो दुबारा नहीं होगा, तो इतना तुमको चैतन्य रहना पड़ेगा।''[1]

पं. साजन जी मिश्र ने उनके अपने आदर्श संगीतज्ञों एवं संगीत शिक्षण के बारे में चर्चा में बताया कि ''हमारे तो सभी आदर्श संगीतज्ञ थे, जिनको भी हम सुनते थे। हमने फैयाज़ खाँ साहब, बड़े गुलाम अली खाँ साहब, अमीर खाँ साहब, भीमसेन जी इन सबको सुना। पं. ओंकार नाथ जी ठाकुर और नज़ाकत सलामत खाँ साहब को भी सुना, सभी लोगों से प्रभावित थे लेकिन मेरा मार्ग जो है अर्थात् मैं स्वयं की बात कर रहा हूँ, वह एक तो पिताजी और चाचाजी का दृष्टिकोण और दूसरा मुझे पका–पकाया खीर बगल में ही मिल गया अर्थात् भैया (पं. राजन जी)। इनसे मैं सीखता रहता हूँ, सीख रहा हूँ और सीखता रहूँगा लेकिन सीखने के लिए बहुत चैतन्य रहना पड़ता है। कंसन्ट्रेशन (एकाग्रता) इतना हाई करना पड़ता है तब जाके वो आता है। विगत 45 साल से हम लोग कंसर्ट गा रहे हैं, केवल 10 राग पिताजी के सामने इनके (भैया के) साथ सीखे हैं।

आज हम कुल सौ–डेढ़ सौ राग गाते हैं लेकिन सारे राग की तालीम मेरी स्टेज पर हुई है। आप विश्वास नहीं करोगे कि घर में भी बैठकर उनको भैया के साथ नहीं गाये हैं अर्थात् उस स्तर का कंसन्ट्रेशन लेवल बनाना पड़ता है। कभी–कभी तो बंदिश भी याद नहीं है, राग का आरोह–अवरोह भी याद नहीं है। आज जो राग गायेंगे निर्णय उनका, मुझे कभी–कभी तो मालूम नहीं होता राग कौनसा गायेंगे? राग का आरोह–अवरोह क्या है? वादी–संवादी क्या है और बंदिश कौनसी है? ईश्वर की ऐसी कृपा है, गुरुओं की ऐसी कृपा है, वहीं स्टेज पर मुझे सब कुछ ज्ञान हो जाता है। बंदिश भी उसी समय याद हो जाती है।''[2]

पं. राजन जी मिश्र ने राग के अंतर्गत बंदिशों को सीखने व उनके प्रस्तुतिकरण की शैली को प्रभावी बनाने के क्रम में अपने अनुभव साझा किये। ''यदि बुद्धि तुम्हारी तीव्र है तो तुम एक–दो ही बार में बंदिश याद कर गा लोगे। 'वेरिएशन' के लिहाज से तो तुम्हारे

---

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

2 वही

तालीम पर है कि कितना तुमको तालीम है, कितने 'डाइमेंशन्स' जानते हो। इसी वजह से पहले एक राग में पाँच–सात, आठ–दस ऐसे बंदिश सिखाया जाता था और सीखते थे लोग। अगर मालकौंस में 10 बंदिश याद है तुमको तो 10 जगह मालूम है मालकौंस में। कोई बंदिश पाँचवें से उठ रहा है, कोई बंदिश छठवें से उठ रहा है, कोई बंदिश तेरहवीं से उठ रहा है, कोई दो मात्रा से उठ रहा है, कोई सम से उठ रहा है, कोई खाली से उठ रहा है तो वो सारे जगह तुम्हारे दिमाग में आ गये। किसी का सम सा पर है, किसी का म पर है, किसी का नि पर है, किसी का ध पर है, किसी का ऊपर के सा पर है, तो कितने डाइमेंशन्स तुमको मालकौंस में समझ में आ गये। तो हर राग में 5–6 बंदिश अगर कम से कम याद होता है तो उतना ही डाइमेंशन्स तुम्हारा बढ़ जायेगा। इस वजह से बंदिश याद किया जाता है।''[1]

अतः यह कहा जा सकता है कि संगीत परिवार में जन्म लेने का सौभाग्य मिलने के कारण आपको गुरु के रूप में पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र (महान् सारंगी वादक एवं गायक) व चाचा पं. गोपाल जी मिश्र (महान् सांरगी वादक) का परम सानिध्य प्राप्त होने के साथ–साथ सौभाग्यवश गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी का शिष्यत्व मिला। महान् गुरुजनों का सानिध्य व आशीर्वाद पाकर आपकी गायकी निरन्तर निखरती चली गयी।

राग धर्म निभाते हुए उच्च कोटि की गायन शैली द्वारा राग–रागिनियों का सुन्दर, अलौकिक एवं अद्भुत शृंगार कर, स्वर में ईश्वर का भाव उदीप्त करने की विलक्षण क्षमता आपके गायन में विद्यमान है। गुरुजनों से प्राप्त घरानेदार तालीम, सच्ची लगन, कठोर साधना व स्वयं के दृष्टिकोण के सम्मिश्रण से सृजित आपकी चित्ताकर्षक ख्याल गायकी को सुनकर श्रोतागण, संगीत रसिक, व विद्वतजन अभीभूत हो उठते हैं।

2.7 जीवन दर्शन

पं. राजन साजन जी मिश्र केवल विश्वविख्यात शास्त्रीय युगल गायक ही नहीं अपितु आप दोनों भ्राताद्वय दार्शनिक, चिन्तक एवं विश्लेषक भी हैं। आध्यात्मिक गुरु आचार्य रजनीश 'ओशो' के विचारों का प्रभाव आपके जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं पर्यावरण आदि विषयों से जुड़े मसलों पर आपकी एक अलग सोच एवं चिंतन है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के निराकरण हेतु गहन अध्ययन एवं गंभीर चिंतन आपकी व्यापक सोच एवं विद्वता को दर्शाता है।

[1] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

पं. राजन साजन मिश्र के आध्यात्मिक गुरु आचार्य रजनीश 'ओशो'

अध्यात्म में विशेष रूचि के बारे में पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''अध्यात्म तो क्या है, जीवन का चिंतन है। अगर आप थोड़ा चिंतनशील हैं तो वही अध्यात्म है और बाहर से खरीदा हुआ अध्यात्म लेके आदमी जी नहीं सकता। आपके अंदर वो घटना घटनी चाहिए तब तो आप अध्यात्म में चले गये। उसको नाम एक लोगों ने दे दिया अध्यात्म। मतलब अंदर उतरने की क्रिया इसे मेडीटेशन कह सकते हो, ये अपनी जरूरतों को धीरे धीरे छोड़ देना। हाय–हाय किच–किच से दूर होते रहोगे तो धीरे–धीरे शांति होती जायेगी।''[1]

पं. राजन जी मिश्र द्वारा देश–विदेश में आयोजित कार्यक्रमों एवं पत्रकार वार्ता के दौरान पूरे विश्व में मौन रखने का एक कन्सेप्ट दिया जाता रहा है। इस विषय में आपकी राय है कि ''अब सवाल ये है कि मैं तो एक संगीतकार हूँ, ये जो देश के नेतागण हैं, सारे देश के, पूरे विश्व के नेता, विश्वबंधुत्व, मानव शांति, ह्यूमन राइट्स, नेचर, हर चीज़ पर बात कर रहे हैं लेकिन सिर्फ बात ही कर रहे हैं। उसके मौलिक जड़ में नहीं जा रहे हैं। मौलिक यह है कि उसको तो अपने आप से शुरू करना पड़ेगा ना भैया। तुम यह सोचो कि एक दिन अगर ऐसा निश्चित किया जाये कि पूरे विश्व में, यू एन ओ का एक रिवोल्यूशन पास हो कि 15 दिसम्बर, 15 जनवरी या 15 फरवरी कोई भी दिन 8 बजे से 9 बजे सब लोग मौन हो जाये, कोई गाड़ी वाड़ी नहीं, चलेगी। सड़क खाली रहेगा, घर में बैठे रहेंगे लोग, लाइट ऑफ, स्विच ऑफ ये सब। तो पहले तो कितना एनर्जी कंजर्वेशन होगा, दूसरी बात जो इतना शोर मचा हुआ है पूरे विश्व में, वो शोर सब कम हो जायेगा। उस निरंतर एक घंटे में जितनी गाड़ियाँ नहीं चलेगी उतना कार्बनडाइआक्साइड का फैलना बंद हो जाएगा। एक दिन निश्चित कर लो कि आज ए. सी. नहीं चलायेगें पूरे विश्व में, तापमान जो है घट जायेगा। जो आज 40 पर है 35 पर आ जायेगा, एक दिन की बात है।''[2]

---

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

[2] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

''हम कितना हानि पहुँचा रहे हैं पूरे वायुमंडल को इसका हमें ख़्याल ही नहीं हैं, हम केवल बात ही कर रहे हैं। यहाँ से ये नदी काट दो, वो जंगल बना दो, ये कर दो वो कर दो, अरे बेसिक बात पे आओ ना। इस समय सबसे बड़ा नुकसान है, जनसंख्या का विस्फोट भारत के लिए। जनसंख्या पे कोई नेता बात नहीं कर रहा है, कितना बड़ा दुर्भाग्य का बात है। इसी रफ़्तार में भारत की आबादी बढ़ती रही तो क्या होगा आज से 50 साल बाद, ये सोचने वाली बात है। इस पर कोई चर्चा ही नहीं है। गंगा को सुधार देंगे, यमुना में ऐसा कर देंगे, अरे कैसे सुधार दोगे? सड़क जो तुम बना रहे हो दो साल में वह सड़क छोटा हो जा रहा है। अमेरिका में जो सड़क बने हैं वो 100 साल आगे सोचकर बनाया गया है।''[1]

जीवन के विविध पहलुओं जैसे सुख–दुख, सौंदर्य–कुरूपता, भाग्य–दुर्भाग्य, अच्छाई–बुराई आदि के बारे में आप अपना दृष्टिकोण बहुत ही कुशलता एवं मजबूती से रखते हैं। ''जीवन में जो पोजिटिविटी है तो हम पोजिटिविटी का तारीफ करते हें क्योंकि हमें सुख मिला, हमें सुख क्यों मिला क्योंकि दुखः मिटा तो सुख मिला। यदि दुख होता ही नहीं तो सुख को हम पहचानते कैसे?''[2]

''अगर तुम्हारा कोई दुश्मन है मान लो, बड़ी दुश्मनी है, तुम रोज़ प्रार्थना कर रहे हो कि वह मर जाए, नेस्तनाबूत हो जाए लेकिन कभी ये ख्याल में नहीं आता कि दुश्मन के मर जाने पर हमारे अंदर भी कुछ मरेगा। दुश्मन से दुश्मनी निभाने की जो तीव्रता थी, जो एनर्जी हम यूज़ करते थे दुश्मन के लिए, वो एनर्जी हमारी भी गई। हमारी जो त्वरा थी, जो एनर्जी पावर था, तो उसमें घटोती हुई ना, कम हुआ ना इसलिए ये सोचना नहीं चाहिए। नेगेटिव–नेगेटिव है, पोजिटिव–पोजिटिव है, दोनों एक दूसरे के पूरक है। बिजली जो जल रहा है ये भी नेगेटिव पोजिटिव एनर्जी से जल रहा है। एक तार हटा लो बंद हो जायेगा। इसका मतलब है कि जीवन में सुख और दुख दोनो चाहिए। सिर्फ सुख ही सुख नहीं चाहिए।''[3]

''सौंदर्य भी है कुरूपता भी है, हर चीज दोनों तरफ बँटा हुआ है लेकिन हम अच्छे वाले पक्ष को ज्यादा चाहते हैं इसलिए बुरा वाला पक्ष पहले आता है। जो चाहते हैं कि हमको सुख ही सुख मिलता रहे, उनको दुख ही दुख मिलता है। लोग कोसते रहते हैं अपने तकदीर को, पता नहीं मेरे तकदीर में यही लिखा था, मेरा तो तकदीर ही खराब है

---

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली
2 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 19.07.2016, नई दिल्ली
3 वही

इसलिए बुरा हो गया तो उसका और अधिक बुरा होता जाता है। फिर तरक्की नहीं करता, फ्रस्ट्रेशन होता जाता है और फिर बुराई करता जाता है। बहुत से लोग हैं जो अपने तकदीर को, अपने भगवान को, अपने पेरेन्ट्स को कोसते हैं, हमको इसमें नहीं डाला, हमको ये नहीं किया, हमको वो नहीं किया तो और भी नेगेटिविटी बढ़ती जाती है। तुम स्वीकार कर लो कभी दुख है तो कभी सुख भी आयेगा।''[1]

''ये जीवन की प्रक्रिया जो है, बड़ी उल्टी है। जिस चीज को हम लोग यहाँ पे बड़ा मानते हैं, अच्छा मानते हैं वो चीज वहाँ पर (ईश्वर के यहाँ) उल्टी हो जाती है। यहाँ पर तो ये है कि रेस चल रहा है नम्बर वन बनने का। नम्बर वन बनना है चाहे पोलिटिक्स हो, चाहे फिल्म लाइन हो, चाहे म्यूज़िक का लाइन हो, चाहे बिजनेस का लाइन हो हमे नम्बर वन बनना है लेकिन नम्बर वन वहाँ पहुँचता है तो उसका नम्बर आखिरी में आ जाता है। जिसने नम्बर वन बनने की कभी कल्पना ही नहीं की उसको पहले ही बुलाया जाता है, आइये आप पहले आइये। वहाँ का नम्बर वन वह होता है। यहाँ का नम्बर वन तुमको दिख रहा है कि मर्सिड़ीज से उतर रहा है, तो अंबानी है, टाटा है या ऐश्वर्या राय है।''[2]

''एक कहानी बुद्ध का है कि एक वैश्या थी, उसके लिए लोग लाइन लगाते थे, अप्वाइंटमेंट लेते थे, उसका गाना नाच वगैरह सुनने—देखने के लिए। एक बौद्ध भिक्षु उधर से गुजर रहा था। उसके चेहरे पर ऐसी रोशनी थी, ऐसा सुंदर शरीर था और तेज निकल रहा था कि उसे देख वैश्या कोठे से भागती हुई उसके पास पहुँची। जाकर उसका हाथ पकड़ लिया, उसने कहा कि आज रात हमारे साथ ही बिताओ, तो उसने हाथ छुड़ा दिया। बौद्ध भिक्षु ने कहा कि अभी तुझे चाहने वाले बहुत सारे लोग हैं, अभी हमारा जरूरत नहीं है। कभी ऐसा दिन आयेगा कि जब तुझे चाहने वाले नहीं होंगे, तब मुझे याद करना मैं आऊँगा। वो ऐसा कहके अपने रास्ते पर चला गया। वैश्या को बड़ा क्षोभ हुआ दुख भी हुआ, आक्रोश भी हुआ कि मैंने खुद प्रस्ताव रखा और इतना घमण्ड है, इतना मिज़ाजी है कि हमको छोड़ के, इतना बड़ा रूप रंग ठुकरा के चला गया।

साठ—सत्तर साल के बाद वह बुढ़िया हो गई और इतनी जर्जर अवस्था में हो गई कि शरीर में कोढ़ हो गया। उसके ही घर वाले उठा के रख दिये सड़क पर जो उसकी संपत्ति पर पलते थे। उन्होंने ही उसे उठाकर ले जाकर बाहर रख दिया कि घर में रहने लायक नहीं है, छुआछूत है, हमें भी कोढ़ हो जायेगा। अब वह वहाँ बैठकर पानी—पानी चिल्ला रही है, कोई पानी पिला दे, कोई कुछ खिला दे, आह—आह करके कराह रही है वो,

---

[1] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 19.07.2016, नई दिल्ली

[2] वही

तो एक आदमी उधर से आया, उसको पानी पिलाया तो उसने बड़ा धन्यवाद दिया। उसने कहा कि मुझे पहचानने की कोशिश करो मैं वही भीक्षु हूँ जो लगभग 50 साल पहले तुमसे मिला था, तो अब मैं तुम्हारी जो सहायता कर सकता हूँ करूँगा। उसको गोद में उठा के ले जाकर कुटिया में रखा और उसकी सेवा की मरते दम तक।''[1]

आपके द्वारा कही गई कहानी का सार आप इस प्रकार बताते हैं'' जो एनालाइटन्ड होते हैं उनको भूत, वर्तमान व भविष्य सब कुछ दिखाई देता है। वो तो स्थिति प्रज्ञ हो जाते हैं उनको आज की घटना है वह प्रभावित नहीं करती है। है शरीर, शरीर में होते हुए भी उनको तुम गाली दे दो, उनकी प्रशंसा कर दो, उनकी निंदा कर दो उनको कोई फर्क नहीं पड़ता, मुस्कुराते रहते हैं, तो उस जगह पर तो जाने में बहुत ही मुश्किल वाला मामला है। जो हाइट है उस पर तो बिरले ही पहुँचते हैं लाखों में एक। उनके प्रवचन सुनने के बाद एक प्रतिशत भी तुम कदम बढ़ा दो तो बस ठीक है।''[2]

परमात्मा की सर्वव्यापकता, अस्तित्व एवं सृष्टि के बारे में चिन्तन के साथ प्रभु की अनन्त शक्ति को अनुभूत करने हेतु विचारों को समृद्ध बनाने का श्रेय आप अपने संस्कारों के साथ महान् संत व दार्शनिक आचार्य रजनीश ''ओशो'' को देते हैं। ''अब ओशो को पढ़ने के बाद मेरा ऐसा कुछ मन बन गया है कि जब तक गवा रहा है गा रहे हैं, जिस दिन नहीं गवाएगा तो नहीं गायेंगे। अब स्थिति यह है कि तुम अगर मेरी प्रशंसा भी करो तो मैं उतना खुश? मैं खुश तो होऊँगा ही क्योंकि प्रशंसा मिलने से आदमी को खुशी मिलती है और आदमी दुखी भी होता है लेकिन पहले जितना मैं खुश होता था अब उतनी खुशी नहीं होती है। अब मैं निंदा सुनता हूँ तो उतना दुख नहीं होता जो पहले होता था। 2 प्रतिशत, 1 प्रतिशत समझ लो कि उस मिजाज़ में आ गया मैं। चलो ठीक है आयेगा प्रोग्राम तो आयेगा नहीं आयेगा तो नहीं आयेगा, और ज्यादा ही प्रोग्राम आ रहे हैं। यही बताना चाह रहा हूँ कि जब से ये विचार आया है कि तुम ही कर रहे हो तुम ही गा रहे हो, तुम ही ये सब कुछ देख रहे हो, तब क्या है कि और बढ़ रहा है मामला, और गाने में भी पहले से बढ़ोतरी हो गया। गाना भी पहले से चेंज हो गया है, 20 साल पहले का रिकार्ड मैं अपना ही सुनता हूँ, तो उस समय का गाना और अभी का गाना, बड़ा ज़मीन आसमान का फर्क पड़ गया है।''[3]

---

[1] पं राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 19.07.2016, नई दिल्ली

[2] वही

[3] वही

''अब मैं अपने लिए गा रहा हूँ। वहाँ एक जोश था और अन्य लोगों के लिए गा रहा था, अब अपने लिए गाना हैं। अपने गाने के लिए खुद ही ऑडियन्स बन जाओ। जिस दिन ये स्थिति आयेगी उस दिन तुम देखोगे कि तुम्हारे प्रशंसक बढ़ने लगे।''[1]

''मैं एक छोटा सा उदाहरण दे रहा हूँ। अभी मैं वाक करने जाता हूँ तो अभी एक महीना पहले अमलतास का वह पीला वाला फूल होता है ना, बड़ा खूबसूरत होता है, उसका भीना–भीना खुशबू भी होता है। तो मैं जब चक्कर मारता था तो एक जगह पर तीन पेड़ हैं, वहाँ से जब गुज़रता था तो खुशबू ऐसी प्यारी आती थी कि मन अन्दर से खुश हो जाता था। एक चक्कर मारा बड़ा जोरदार खुशबू आया। दूसरे चक्कर में मैंने सोचा कि अब मैं वहाँ पहुँच रहा हूँ तो जोरदार खुशबू आयेगी तो खुशबू ही नहीं आयी। मैं तीनों पेड़ के नीचे से गुज़र गया खुशबू ही नहीं आयी और फिर मैं भूल ही गया। आ गये चक्कर मारकर तो फिर ऐसा हुआ कि खूशबू नहीं आया तो नहीं आया फिर जब घूमकर उसके पास आया तो फिर खुशबू आया। जब तुम उम्मीद करके कुछ प्राप्त करना चाहते हो तो वो नहीं होगा, अपने आप हो जायेगा यह मैंने अनुभव किया उस दिन पार्क में।''[2]

''मैं शिमला गया था आज से बीस साल पहले तो हमारे साथ जो लोग गये थे नन्दन भैया (प्रसिद्ध तबला वादक) ये सब लोग। वो 12 बजे दोपहर तक उठते हैं मैं जल्दी उठ जाता था। अपना जूता वूता पहनकर ऊपर पहाड़ पर ऐसे ही निकल जाता था। वहाँ एक छोटा सा चबूतरा था दो देवदार के पेड़ के बीच में, मैं वहाँ पैर लटकाकर वेली को फेस करते हुए बैठता था। चुपचाप पेड़ों को देखता था, जब वह हवा से हिलते थे। दूसरे तीसरे दिन मुझे ऐसा लगा कि ये मुझसे बात कर रहे हैं। कुछ कह रहे हैं। अच्छा उनका वो कहना और मेरा गुनगुनाना शुरू हो जाता था। मैं कभी ललित कभी कोई दूसरा राग गाने लगता। सात दिन थे हम वहाँ, आठवें दिन जब हम आने लगे तो मैं सवेरे ही उठ गया। मुझे फील हो रहा था। वो मेरा परसेप्शन भी होगा कि मैं इतनी सुन्दर जगह छोड़कर जा रहा हूँ लेकिन मुझे ऐसा महसूस होता था कि वो हमसे कह रहे हैं कि अब कौन गुनगुनाएगा ?''[3]

''मेरा एक पेड़ यहाँ दोस्त है, मैं क्या बताऊँ उसका अनुभव। यहाँ मैं जाता हूँ पार्क में, एक पेड़ है, ऊपर से बड़ी दो शाखाएँ निकली हुई हैं। साल भर से मैंने उसको दोस्त बना रखा है। पाँच छह चक्कर मारकर जब बहुत पसीना–पसीना हो जाता हूँ, मैं जाकर

[1] पं राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 19.07.2016, नई दिल्ली
[2] वही
[3] वही

उसके पास खड़ा हो जाता हूँ। ये सिलसिला चलता रहा। 15–20 दिन के बाद जैसे ही मैंने उसको हर्ट किया वैसे ही मेरे सारे विचार गये। मतलब दिमाग में जो विचार चल रहे थे वैसे ही वो विचार शून्य हो गये और मुझे ऐसा लगा कि कोई मुझे नीचे ले जा रहा है जड़ की तरफ। अब मैंने आँख बंद कर कहा कि तुम मुझे ले जा रहे हो तो यहाँ जितने मित्र हैं तुम्हारे, सबको मेरा प्रणाम कहना। अब वो स्थिति ऐसी जल्दी बनती है कि मैं जैसे ही घूमकर आकर उससे लिपटता हूँ ना वैसे ही विचार शून्य। एकदम शान्त हो जाता है दिमाग और एकदम बस उसको जकड़ा हुआ हूँ, लपेटा हुआ हूँ और उसी समय 5 मिनट में एकदम शान्त। अब जब उससे नहीं मिलता तो मुझे तकलीफ होती है। 10 दिन–15 दिन गेप करके जाता हूँ तो सबसे पहले उसके पास जाता हूँ उसको नमस्कार बोलता हूँ आ गया मैं, आता हूँ घूम के। वहाँ जो लोग वाक करते है उनको अजीब लगता है कि जाके चिपक के खड़ा हो जाता है पेड़ के। मुझे भी थोड़ा अजीब लगता था कि लोग क्या सोच रहे होंगे? पहले मुझे भी ये ख्याल आता था अब नहीं आता। चुपचाप आँख बंद करके लिपट जाता हूँ और वो अपना एक छोटा सा जर्नी मेरा करवाता है पेड़। मुझे ऐसे अँधेरे में ले जाता है, मतलब मैं उससे लिपटा नहीं कि वो 2–5 सैकण्ड में मुझे ले जाता है। कहाँ ले जाता है, मुझे पता ही नहीं। एक आध बार तो आँखों में से आँसू आ गया था। मतलब ऐसे वातावरण में मुझे ले गया कि मुझे रोना आ गया, इतनी शांति, इतना प्रेम।

हमें मालूम ही नहीं है पेड़ प्राणवान हैं और वो इतने सेन्सिटिव हैं कि जब उसको कोई काटने के लिए आता है ना, काँपने लगते हैं। उस प्राणवान पेड़ को हम भगवान नहीं मान रहे और मान रहे हैं पत्थर को। सिर पटक–पटक के कि ये करवा दो वो करवा दो। वो क्या करवा देगा, उसको चैन तो लेने दो।''[1]

अतः यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि विविध विषयों पर आपके चिन्तन–मनन व सकारात्मक सोच के साथ परमपिता परमात्मा के प्रति समर्पण के भाव ने आपके व्यक्तित्व को असाधारण बना दिया।

पं. राजन जी मिश्र का यह प्रबल मत है कि सभी महान व्यक्तियों ने ईश्वर को स्वयं के भीतर ही खोजा है। आपने वार्ता में बताया कि ''हर आदमी के भीतर ईश्वर है और वह बाहर खोज रहा है। दुनिया भर का मंत्र, जाप और भजन कीर्तन सब चल रहा है। वह अंदर बैठा है और मनुष्य उसको नहीं देख रहा है। ऐसे जगह पर छिपा है कि तुमको पता ही नहीं हैं हर कदम तुम्हारे साथ चल रहा है, हर साँस तुम्हारे साथ ले रहा है लेकिन

---

[1] पं राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 19.07.2016, नई दिल्ली

अंदर देखने की फुर्सत कहाँ हैं, सब बाहर ही देखना है, बस उसको स्थान मिल गया और वह छिप गया। जिसको यह पता लग गया कि ईश्वर अंदर है वह अंदर की यात्रा शुरू कर देता है। बुद्ध, नानक, महावीर, कबीर, गौरख जिसने भी ईश्वर को पाया है, ये अंदर की यात्रा से पाया है। इनको समझ में आ गया कि बाहर कुछ नहीं गड़बड़ी है, बाहर उपद्रव है तभी तो बुद्ध इतना बड़ा साम्राज्य छोड़कर चले गये।''[1]

2.8 अन्य रूचियाँ

जीवन शैली से जुड़ी हुई विविध रूचियाँ हमारे जीवन को कार्यशील, प्रगतिशील एवं बहुआयामी बनाती हैं। पं. राजन साजन जी मिश्र के जीवन के विविध पहलुओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि बनारसी मिज़ाज के अनुरूप आपकी रूचि संगीत के साथ–साथ विज्ञान, खेल, कसरत, अखाड़ेबाजी, परिष्कृत खानपान, श्रेष्ठ साहित्य पठन, सैर–सपाटा, किस्से–कहानी व मनोविनोद आदि में भी है। आपके स्वभाव में बनारस की मौजमस्ती स्पष्ट दिखाई देती है।

पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''खेल में हम लोगों की बड़ी रूचि थी और दोनों भाई अपने कॉलेज क्रिकेट टीम के केप्टेन थे। हमने फुटबॉल भी खेला, हॉकी भी खेला, बेडमिंटन भी खेला यहाँ तक कि एथलेटिक्स में भी थे। रन भी करते थे, 400 मीटर रन करते थे, डिसकस थ्रो भी करते थे, तो रूचि बहुत थी खेल में क्योंकि घर के बगल में स्कूल था और उसका बड़ा भारी मैदान था। उस जमाने में टी. वी., सिनेमा और ये सब तो एन्टरटेनमेंट था नहीं, तो ले देके आपको खेलना है और खेलने में तो बहुत ही मज़ा आता है बचपन में। किसी समय तक हम लोगों ने खेला क्रिकेट वगैरह, यहाँ तक कि अभी भी जाते हैं तो गली क्रिकेट ही खेल लेता हूँ दो हाथ।''[2]

पं. राजन साजन मिश्र बनारस में क्रिकेट खेलते हुए

1 पं राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 19.07.2016, नई दिल्ली
2 पं साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

''बचपन के जो मित्र थे उसमें कन्हैया लाल जी हैं, जो कि हमारे शागिर्द भी हैं और मित्र भी हैं। बाद में राजन भैया के साले बने कांता प्रसाद जी, वह भी मेरे मित्र हैं और एक भैयालाल करके हैं, वो हैं तो बेसिकली दूध वाले, लेकिन उनके साथ मेरी मित्रता इतनी घनिष्ठ थी कि उनकी वजह से मुझे थोड़ा एक्सरसाइज़ का शौक हुआ, अखाड़े जाने का शौक हुआ। बाद में एहसास हुआ कि स्पोर्ट्समेन होना बहुत जरूरी है। अगर आदमी को गाना बजाना करना है, अच्छे जीवन को जीना है तो थोड़ा स्पोर्ट्स में रूचि होना बहुत जरूरी है। मतलब अपना अनुभव बता रहे हैं हम लोग। दोनो भाईयों का स्पोर्ट्स की तरफ बहुत झुकाव रहा है।''[1]

''मुझे शौक हुआ तो दो साल मैंने थोड़ी अखाड़ेबाजी भी की लेकिन अपने लेवल पर, वैसा नहीं कि प्रोफेशनल कुश्ती लड़ रहा हूँ, लेकिन एक शौक था मेहनत का। मैं अखाड़ेबाजी में जाता था और बड़ा सुकून मिलता था उस समय। अपने आप को मिट्टी में लपेट के पूरा गर्मी मैं वहाँ काटता था पिताजी के पास और उसी हालत में आके मैं रियाज़ करता था ढाई घंटा। स्नान करता था शाम को, शाम को पिताजी को रोज़ बादाम पीने का बहुत आदत था। बादाम की ठंडाई वो बँटते थे मैं पीसता था और उसको छान के उनको एक गिलास और एक गिलास अपने पीता था। एक–आध दो कोई और आ गये तो उनको पिला देता था। उसके बाद मैं स्नान करके एक–दो घंटा ज़रा बाहर निकलता था मित्रों में फिर आठ बजे आ जाता था। इसके बाद 8 से 10–10:30, 11 बजे तक पिताजी के सामने थोड़ा रियाज़ हो जाता था, बस यही था रूटीन।''[2]

खानपान से जुड़ी आदतों एवं पसंदीदा व्यंजनों के बारे में पं. साजन जी मिश्र का कहना है कि ''पसंदीदा व्यंजन तो मेरा दाल चावल रोटी सब्जी है और खासकर के मुझे तीन स्टेट का खाना बहुत पंसद है एक तो उत्तरप्रदेश (बनारस) का, दूसरा पंजाब और तीसरा राजस्थान। इन तीन स्टेट्स का खाना मुझे बड़ा रूचिकर लगता है।''[3]

आप दोनों भ्राता जहाँ एक ओर संगीत जैसे गंभीर विषय से जुडे हैं वहीं दूसरी ओर किस्से, कहानियों एवं चुटकुलों के माध्यम से हास्य–विनोद द्वारा वातावरण को खुशनुमा बनाये रखते हैं। पं. साजन मिश्र के अनुसार ''हम लोगों का प्रयत्न होता है कि अपने आप में प्रसन्न रहे। जोक्स बहुत करते हैं, हँसी मजाक बहुत करते हैं। जोक्स मतलब सवेरे–शाम रोजाना। हमारे मित्र वर्ग भी ऐसे हैं कि आजकल वाट्सएप के द्वारा सुबह से शुरू हो जाता है। सुबह से हँसना शुरू हो जाता है और रात के 11–12 बजे तक हम

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली
2 वही
3 वही

लोग पढ़ते हैं, हँसते हैं। पहले सुनते थे, सुनाते थे, रूबरू ज्यादा हुआ करते थे तो जोक्स भी ज्यादा याद रहते थे। अभी भी कुछ जोक्स अच्छे आते हैं तो उस समय (याद करके) हँसी आ जाती है। अकेले ही बैठे–बैठे मुस्कुरा देते हैं तो एक आनन्द है और दूसरा ये है कि प्रयत्न ये करते हैं कि जहाँ हम रहें वह वातावरण खुशहाल रहे, वहाँ कोई तनाव न रहे।''[1]

''अपने भरे पूरे परिवार के साथ पं. राजन साजन मिश्र अपनी दैनिक दिनचर्या की शुरूआत थोड़ी बहुत वर्जिश, संगीत रियाज़ से करते हैं। फिल्में देखना, गाने सुनना, नेशनल पार्क घूमना और पहाड़ों पर सैर सपाटा उनके पसंदीदा शौक हैं, इसके अलावा दोनों भाई क्रिकेट भी खूब खेलते हैं।''[2]

पर्यटन स्थल के भ्रमण के दौरान पं. राजन साजन मिश्र पुत्र पं. रितेश रजनीश मिश्र को गायन शिक्षा प्रदान करते हुए

पं. साजन जी मिश्र अपनी रूचियों के बारे में बताते हैं ''स्पोर्टस का बहुत शौक रहा हम लोगों को। कॉलेज टीम में भैया केप्टेन भी थे फिर उनके जाने के बाद मैं हुआ कैप्टेन। स्पोर्ट्स में बहुत रूचि रही, खासकर के क्रिकेट, फुटबाल और टेनिस में, लॉन टेनिस में, और फ़िल्म का भी शौक है लेकिन अच्छी फ़िल्में देखने का शौक है तो जब भी अच्छी फिल्म आती है तो हम लोग देखने जाते हैं। खासकर के जंगल और पहाड़ों में जाने का बहुत शौक है। हर साल जंगल हम लोग दो तीन बार जाते हैं, पहाड़ों में जाते हैं, जहाँ शांति है, जहाँ मोबाइल नहीं चलता है, जहाँ न्यूज़ पेपर नहीं है, ऐसी एकदम इंटीरियर जगह पर जाते हैं। कई जगह तो लाइट भी नहीं होती है, मोमबत्ती में जीना पड़ता है।''[3]

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली
2 फिर तेरी कहानी याद आई, (पं. राजन साजन मिश्र), ड्रीम ट्रेडर्स फिल्मस् (www.youtube.com)
3 वही

बनारस की सुन्दर संस्कृति में रचा बसा आपका जीवन, वर्तमान में विश्व प्रसिद्ध कलाकार होने के साथ जुड़ी व्यस्ततम दिनचर्या, नित्यप्रति देश विदेश में होने वाली संगीत सभाएँ व कार्यक्रमों के बीच समय निकालकर परिवारजनों के साथ अपने सभी शौक मौजमस्ती से पूरे करते हैं। वर्तमान में महानगरीय जीवन को जीते हुए बुद्धिमत्ता से सांगीतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्वों में संतुलन व समन्वय बिठाना आपकी परिपक्व सोच एवं जीवन्तता की अनूठी मिसाल है।

महान युगल गायक पद्म भूषण पंडित राजन साजन मिश्र जी के जीवन चरित्र एवं संपूर्ण व्यक्तित्व पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि आपको बाल्यकाल से निरन्तर मिलने वाले संस्कार, शिक्षा, सांगीतिक परिवेश एवं आप में निहित सच्ची लगन, परिश्रम, कठोर साधना, मौलिक चिंतन के साथ–साथ गुरुकृपा एवं ईश्वर के प्रति समर्पण भाव ने आपके व्यक्तित्व को विराट बना दिया है।

पं. राजन साजन मिश्र जी ने आत्मविश्वास, दृढसंकल्प, कठोर साधना एवं चिन्तन द्वारा कला के मूल स्वरूप को जीवंत रखते हुए उसे शिल्पी की भाँति तराशकर नवीन साँचे में ढालकर ख्यालगायकी का परिष्कृत एवं मनमोहक रूप श्रोताओं के सम्मुख रखा। आपके द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों का प्रमाण आपकी अनगिनत यादगार रिकॉर्डिंग्स हैं। इन रिकॉर्डिंग्स एवं संगीत सम्मेलनों आदि के माध्यम से गुणी एवं रसिक श्रोता सृजनशील एवं प्रतिनिधि कलाकार के रूप में आपके योगदान का स्मरण करते हैं। आपकी सर्वांग गायकी को समाहित करने वाली गायन शैली ने श्रोताओं के दिलों पर अमिट छाप छोडी है। आपने विद्वतापूर्ण, भावपूर्ण एवं मनमोहक शास्त्रीय गायकी के बल पर देश–विदेश में अपार ख्याति अर्जित की है।

***

तृतीय अध्याय

पं. राजन साजन मिश्र का कृतित्व

तृतीय अध्याय

पं. राजन साजन मिश्र का कृतित्व

3.1 पं. राजन साजन मिश्र द्वारा गाई गई विभिन्न रागें एवं उनकी रिकॉर्डिंग्स

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से आज तक आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के साथ–साथ देश एवं विदेश की प्रतिष्ठित व नामी रिकॉर्डिंग कम्पनियों द्वारा पं. राजन साजन मिश्र जी के गायन को संग्रहित एवं प्रसारित किया गया। इससे जहाँ भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा मिला वहीं पंडित जी की युगल गायकी के स्वर संगीत रसिक श्रोताओं एवं सुर–साधकों के घरों में गुंजायनमान होने लगे।

पं. राजन मिश्र जी के अनुसार ''आकाशवाणी में पहली ही बार में 'ए' ग्रेड मिल गया था, यह सौभाग्य की बात है। एक 'स्वर श्री' संस्था होती थी, उसने पहला ऑडियो कैसेट हमारा निकाला था। जिसमें मालकौंस और केदार राग के अलावा एक भजन है। उसके बाद तो कम्पनी बदलती रही प्रोडक्ट वही था। बाद में प्रभा अत्रे जी ने कम्पनी का अधिकार ले लिया फिर वह उनकी कम्पनी से भी निकला। पहला एल पी निकला एच एम वी से, वहाँ से फिर से रिकॉर्डिंग शुरू हुआ। जितनी भी कम्पनियाँ भारत में हैं सभी के साथ कुछ न कुछ एलबम हैं।''[1]

पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''एक रिकॉर्डिंग हम लोगों की हॉलेण्ड से निकली महर्षि महेश योगी जी के लिए, 24 सी डी का वह पैक था। आज वह बहुत पॉपुलर है यूरोप में और खासकर अमेरिका में, हर घर में वह मिल जाता है लेकिन बड़ा बुरा लगता है कहते हुए कि वह इंडिया में नहीं आ पाया। वह एक बहुत बड़ा धरोहर उन्होंने रिकॉर्ड किया है, 24 घंटे की 24 सी डी उन्होंने निकाली है।''[2]

विश्व प्रसिद्ध युगल ख्याल गायक पं. राजन साजन मिश्र के व्यवसायिक रूप से जारी किए गये कैसेट्स, सी डी एवं डी वी डी का विवरण उपलब्ध जानकारी एवं व्यक्तिगत संग्रह के अनुसार निम्नलिखित हैं–

---

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

2 पं. साजन जी मिश्र (Story of renowned classical singer Pt. Rajan Mishra Pt. Sajan Mishra, https://www.youtube.com)

(1) **सी.बी.एस. (स्वर श्री स्टीरिओ)–** RS001 "Jugalbandi Recital by Pt. Rajan and Sajan Mishra"

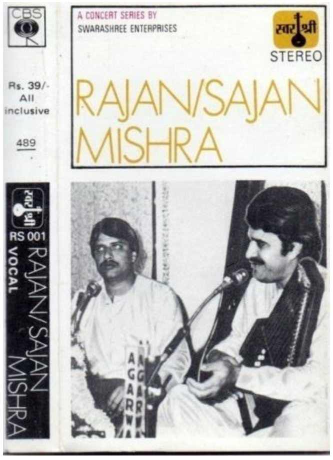

साइड ए – राग मालकौंस
ख्याल विलम्बित एकताल,
''जिनके मन राम बिराजे''
ख्याल द्रुत एकताल, ''आँगन आये बलमा''
साइड बी– राग केदार
ख्याल विलम्बित झपताल
''जोगिया मन भावे'', ख्याल द्रुत एकताल
''चतुर सुघर बलमा''
भजन–''जगत में झूँठी देखी प्रीत'' (गुरुनानक)
तबला–श्री पूरन महाराज,
हारमोनियम–श्री एम. एन. मिश्रा

Recording Date : 12-03-1984
Recorded by : CBS Gramophone Records & Tapes (India) Ltd. Dalamal Towers Nariman Point, Bombay.

(2) **एच.एम.वी. (STCS-850722 STEREO) Year 1985**

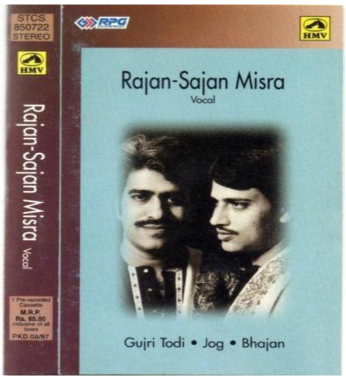

साइड ए– राग गुजरी तोड़ी
ख्याल विलम्बित एकताल, तराना–द्रुत एकताल
साइड बी– राग जोग
ख्याल मध्यलय झपताल
''कहियो रे भँवरा'', ख्याल द्रुत तीनताल
''सुरन के साधे'', भजन– ''जगत में झूँठी देखी प्रीत'' (गुरुनानक)
तबला– उ. रमज़ान खाँ,
हारमोनियम– श्री जयराम पोद्दार

(3) **एच. एम. वी. (HTC 01B 2095 STEREO)**

Pandit Rajan & Pandit Sajan Mishra Present "Marwa"
(The Sunset Raga)

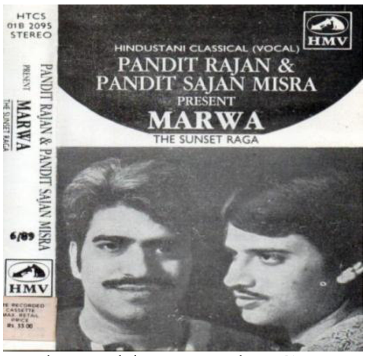

साइड ए–
''पिया मोरे अनत देस गइलवा''
ख्याल विलम्बित एकताल

साइड बी–
''सांझ भई अब तो'', ख्याल द्रुत एकताल
तबला– उ. रमज़ान खाँ, हारमोनियम–
उ. महमूद धौलपुरी

Released by : The Gramophone Co. of India Ltd.
2, Ripon Street, Calcutta - 700 016
Recorded on : 6 / 1989

(4) **एच. एम. वी. (STCS 048 / 7712 / STEREO)**
Jugalbandi / - Classical Vocal

साइड ए–

विदुषी परवीन सुल्ताना और उ. मोहम्मद दिलशाद खाँ

साइड बी–

पं. राजन साजन मिश्रा, राग गुजरी तोड़ी (विलम्बित ख्याल एवं तराना)

इस कैसेट में सन् 1985 में जारी कैसेट के भाग–ए को पुनः जारी किया गया।

Released (12/1992)

(5) **म्यूज़िक टुडे (A 92030 STEREO)**

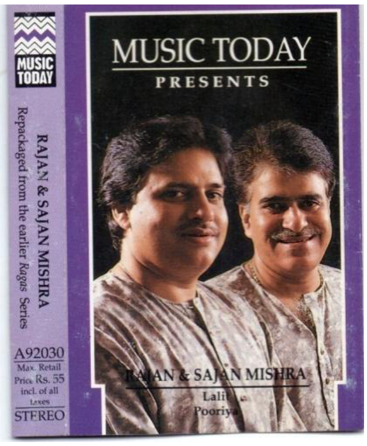

साइड ए– राग ललित

ख्याल विलम्बित एकताल, ख़्याल द्रुत तीनताल ''जोगिया मोरे घर आये''

साइड बी– राग पूरिया

ख़्याल विलम्बित एकताल, ख्याल द्रुत तीनताल ''मैं तो कर आयी पिया संग''

तबला– उ. रमज़ान खाँ, हारमोनियम–उ. महमूद धौलपुरी रिकॉर्डिंग वर्ष– जनवरी, 1993

(6) **टी – सीरीज़ (SHNC 01/107) – एवरग्रीन सीरीज़**
JUGAL GAYAKI (VOCAL CLASSICAL)

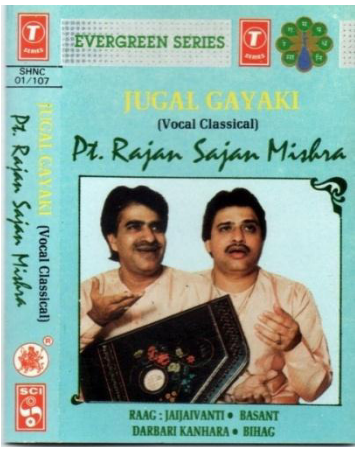

साइड ए–

राग जयजयवन्ती विलम्बित एकताल–
''ऐ पिया हम जानी'', द्रुत तीनताल–
''ऐसो नवल लाडली राधा'' राग बसन्त–
तीनताल : फुलवा सब फूल रहे बन में।

साइड बी–

राग दरबारी कान्हड़ा
विलम्बित एकताल ''नाद अपार''
द्रुत तीनताल ''हार गुंद लाई मलनियाँ''
राग बिहाग– तराना – त्रिताल
तबला–श्री नंदन मेहता,
हारमोनियम– श्री अप्पा जलगांवकर,
जारी करने का वर्ष–5 / 1990

(7) एच. एम. वी. (STCS 048 / 7521)

"A Marvel in Musical Partnership"

साइड ए–

राग मियाँमल्हार, ख़्याल विलम्बित एकताल–
''आली बूँदरिया बरसाई'', ख़्याल द्रुत तीनताल
''आली उमड़ घन घुमड़ बरसे रे''

साइड बी–

राग सूरदासी मल्हार, ख़्याल तीनताल मध्यलय
''बिजुरी चमकन लागे''
राग मेघ– ख़्याल मध्यलय झपताल
''प्रथम दल सजके आये नन्द नन्दन'',
ख़्याल द्रुत एकताल ''कजरा कारे कारे,
लागे अति प्यारे'', जारी करने का वर्ष–1991

(8) एच. एम. वी. (STCS 048 / 7522)

"A MARVEL IN MUSICAL PARTNERSHIP"

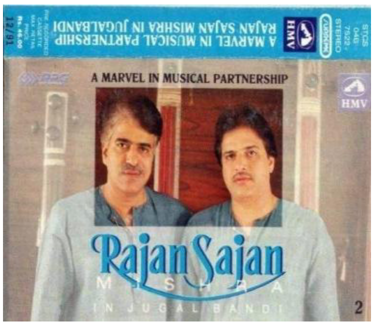

साइड ए–

राग मालकौंस, ख़्याल विलम्बित झपताल
''प्रथम ध्यान ओंकार'', तराना अद्धा एवं एकताल

साइड बी–

तराना (काफी) टप्पा अंग, ठुमरी– माँझ खमाज
''जाग परी में तो पिया के जगाये''
चैती– ''सेजिया से सैयां उठ जागे हो रामा''
तबला संगत– श्री ओंकार गुलाडी,
हारमोनियम– श्री तुलसीदास बोरकर।
जारी करने का वर्ष–1991

(9) मेगनासाउण्ड (C4HV0616)

"Ahead of Time - Rajan Sajan Mishra" (रिकॉर्डिंग वर्ष–1992)

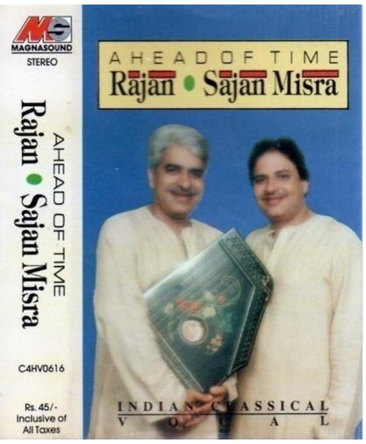

साइड ए–

राग तिलक कामोद, ख्याल झपताल विलम्बित,
ख्याल द्रुत–तीनताल
''नीर भरन कैसे जाऊँ सखी री अब''

साइड बी–   राग नन्द

ख्याल विलम्बित रूपक ताल
''ऐ भँवरा जा रे तू'', ख़्याल द्रुत तीन ताल
''बहुत दिन बीते रे''
राग–कामोद–ख़्याल दीपचन्दी मध्यलय,
ख़्याल द्रुत तीनताल
''ऋतु बसंत सखी मो मन भावत'',
तबला–पं. सोहनलाल मिश्रा,
हारमोनियम– उ. महमूद धौलपुरी,

(10) म्यूज़िक टुडे (A 92031 STEREO)

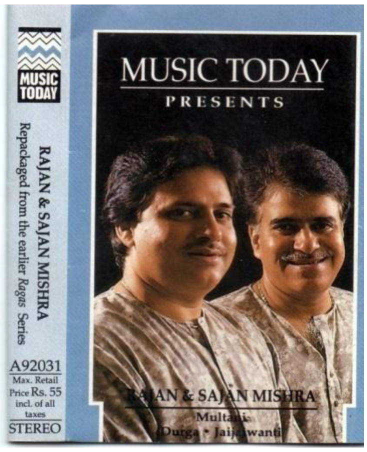

साइड ए– राग मुल्तानी
ख्याल विलम्बित एकताल, ''ए गोकुल गाँव के छोरा'', द्रुत ख्याल एकताल, ''आँगन में नंदलाल''

साइड बी– राग दुर्गा
ख्याल मध्य एवं द्रुत एकताल
''जय जय जय दुर्गे माँ''

राग जयजयवन्ती
ख्याल मध्यलय त्रिताल
तबला–रमज़ान खान, हारमोनियम–महमूद धौलपुरी, रिकॉर्डिंग वर्ष – मार्च, 1993

(11) एच. एम. वी. (STCS 850653 STEREO)

"Gharana Banaras"

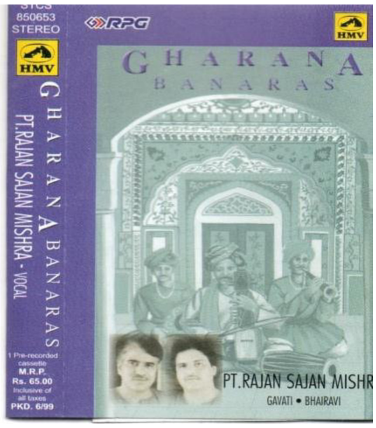

साइड ए– राग गावती
ख़्याल विलम्बित तीनताल,
''अब सुध मोरे श्याम'' ख़्याल द्रुत तीनताल,
''परम सुख अति आनंद भयो रे''

साइड बी– राग गावती
ख़्याल द्रुत तीनताल–''लाओ री लाओ मालनियाँ''
भजन– राग भैरवी मध्यलय झपताल ''भवानी दयानी''
तबला– ओंकार गुलवाड़ी, हारमोनियम–तुलसीदास बोरकर

(12) सोनी नाद (NR 00574)

"Live at The Kufa Gallery, London" (July, 1995)

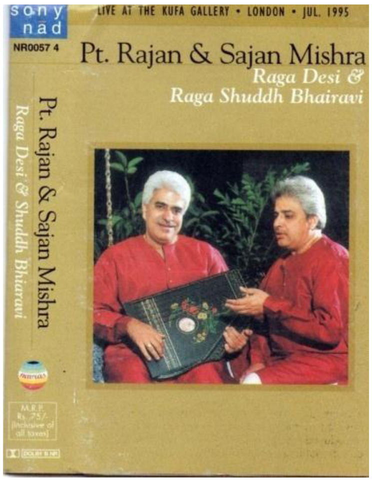

साइड ए– राग देसी
ख्याल विलम्बित एकताल–
''नैया मोरी भई पुरानी'', ख्याल द्रुत तीनताल–
''साँची कहत है अदारंग यह''

साइड बी– राग देसी (जारी....)
राग शुद्ध भैरवी (एकताल)–
''नाद को न भेद पायो'', तबला– संजू सहाय,
हारमोनियम– फिदा हुसैन खाँ
तानपुरा– उमा मेहता एवं कृष्णा जोशी

(13) म्यूज़िक टुडे (A 94023) (वर्ष–1994)
Tarana "Flights of Melody"

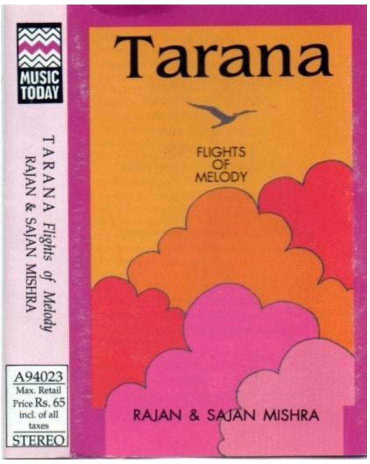

साइड ए– राग भैरव

तराना– ताल सूलफाक्ता,

''तानूम तदियन रे तानूम''

राग गुजरी तोड़ी

तराना– एकताल

''ना दिर दिर दीम तनन तन देरे ना''

राग जौनपुरी

तराना– त्रिताल

''उदताना दिरनाता दीम दीम तनन''

साइड बी– राग हंसध्वनि

तराना– तीनताल

''दीम तनन देरे ना देरे ना''

राग जयजयवन्ती, तराना– एकताल

''ता दीम ना दीम ना दीम।''

तबला– राजेश मिश्रा,

हारमोनियम – कांता प्रसाद मिश्र

तानपूरा– रितेश मिश्र एवं जितेन्द्र मोदगल

(14) VENUS

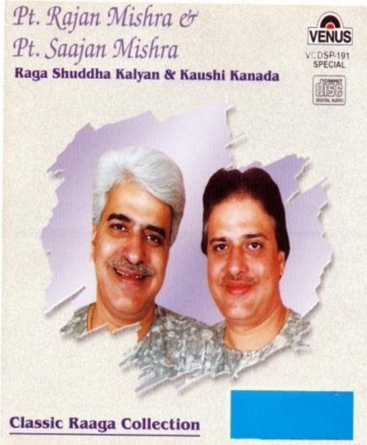

साइड ए– राग शुद्ध कल्याण

विलम्बित ख्याल एकताल ''दयानी दया कर दे''

द्रुत ख्याल तीनताल ''बाजो रे बाजो मंदलरा''

साइड बी– राग कौंसी कान्हड़ा

विलम्बित ख्याल, ''राजन के राजा श्री रामचंद्र''

द्रुत ख्याल तीनताल, ''दामोदर हरिनाम बोल''

तबला– मदन मिश्रा,

हारमोनियम – तुलसीदास बोरकर

तानपूरा– मदन बोगले एवं पेडनेकर,

वर्ष – 1993

(15) MUSIC TODAY :

The Best of Pt. Rajan and Sajan Mishra (Year 2002)

(1) Raga Durga

(2) Raga Multani

(3) Raga Gujari Todi

(4) Raga Lalit

(5) Raga Bhairvi

(6) Raga Hansdhwani.

(16) Classical Vocal - Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra

(Released by Hindustan Records) Jan. 01, 1999

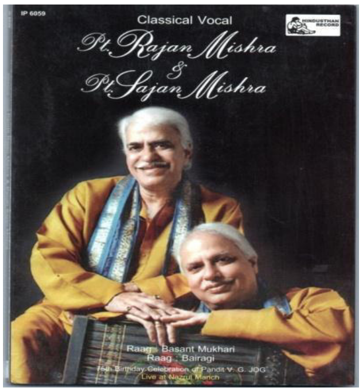

(1) Raag Basant Mukhari

(2) Raag Bairagi

(75th Birthday Celebration of Pt. V.G. Jog Live at Nazrul Manch)

(17) Swar Shikhar - The Taj Heritage Series

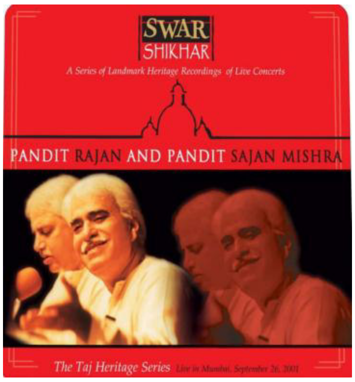

(Released by EMI on Oct. 3, 2005)

Live in Mumbai September 26, 2001

(1) Raag Chhayanat - Vilambit & Drut Khayal

(2) Raag Adana Bahar - Tapp Khayal[1]

---

1 www.amazon.com>swarshikhar

(18) SANGEET SARTAJ (VOL. 1 & 2)
(Released by Music Today on 21 Nov. 2006)

Volume 1

(1) Raga Lalit- Khayal in Vilambit Ektaal & Drut Teental

(2) Raga Pooriya- Khayal in Vilambit Ektaal & Drut Teental.

Volume 2

(1) Raaga Multani

(2) Raga Durga

(3) Raga Jaijaiwanti

(19) ORCHESTRAL VOICES (Pt. Rajan Sajan Mishra)
(Released by Rhyme Records on Sept. 15, 2008)

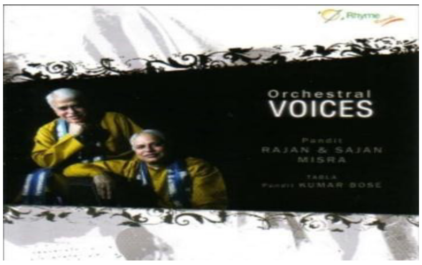

(1) Raga Bilaskhani Todi

(2) Raga Chandrakauns

(3) Bhajan

(20) Sadhana (Ragas Hansadhwani, Jhinjhoti, Shahana, Suha, Sugharai, Suha)
(Released by Times Music (Dec. 04, 2015- 9 Tracks)

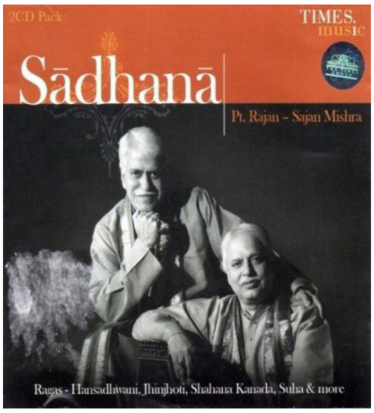

CD - 1 Raag Hansadhwani

(1) Alap & Bada Khayal in Vilambit Teentaal

(2) Bandish in Madhyalaya Ektaal

(3) Bandish in Drut Teentaal

(4) Tarana in Drut Teentaal

CD - 2

(1) Raag Jhinjhoti

(2) Raag Shahana Kanada

(3) Raag Suha Sugharai

(4) Raag Sugharai

(5) Raag Suha

(21) KULA SAMPADA (CLASSICAL)

(Released by Mystics Music on 6 Aug. 2009)

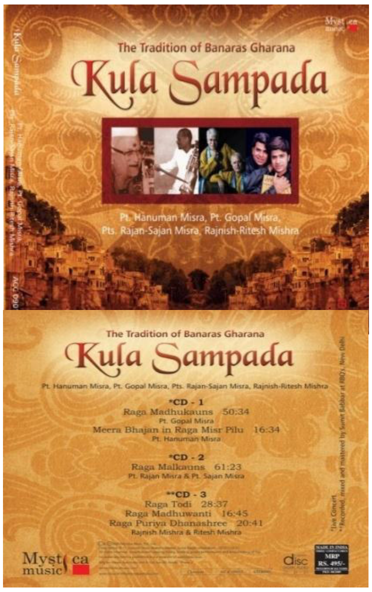

Album by Pt. Gopal Mishra, Pt. Hanuman Mishra and Pt. Rajan Sajan Mishra

(1) Raag Madhukauns- Pt. Gopal Mishra

(2) Meera Bhajan in Raag Mishra Pilu.

(3) Raag Malkauns- Pt. Rajan Sajan Mishra

(4) Raag Todi (Rajnish Mishra & Ritesh Mishra)

(5) Raag Madhuvanti (Ritesh & Rajnish Mishra)

(6) Raag Puriyadhanashree (Rajnish Mishra)

(22) MAANGALYA - (Pt. Rajan & Sajan Mishra)

(Released by Times Music Jun. 30, 2008 -5 tracks)

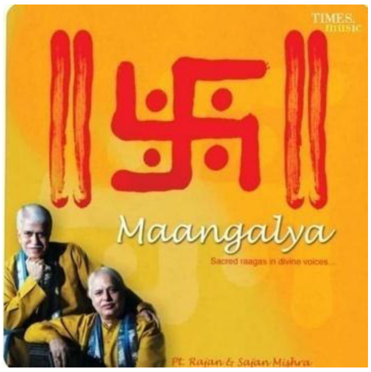

(1) Paar Karo Mori Naav- Raag Saraswati

(2) Kartar Sab Jagat Ko- Raag Saraswati.

(3) Maa Saraswati Bhagawati- Raag Saraswati

(4) Radhe Tumhare Nainan- Raag Shivranjani

(5) Man Mohana Karo Shyam- Raag Shivranjani

(23) Resonance (Goonj) Part - I

(Released by Indian Music 4U on 15 Dec. 2014)

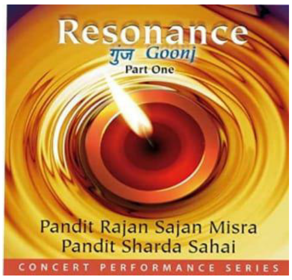

(1) Raag Tilak Kamod - Madhyalaya Jhaptaal

(2) Raag Tilak Kamod - Drut Teental

(3) Raag Tilak Kamod Tarana - Ektaal

(4) Raag Kamod Madhyalaya

(5) Raag Kamod Drut Teental.[1]

[1] https://open.spotify.com

(24) Resonance (Goonj) Part - II

(Release by Indian Music 4U)

(1) Raag Hansdhwani - Madhyalaya Teen Taal

(2) Raag Hansdhwani - Drut Teentaal

(3) Raag Kirwani : Bhajan (Dhumali)[1]

(25) Classical (Fountain - Raag Rang) FMRCD - 42

Classical Vocal by Pt. Rajan Sajan Mishra

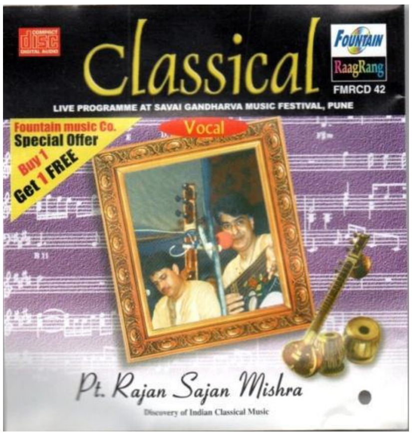

(Released by Fountain Music Co. in 1999)

*Recording of Live Programme at Sawai Gandharva Music Festival, Pune.

Raga- Jaijaiwanti

(Vilambit & Drut Khayal)

(26) Voices from the Heart

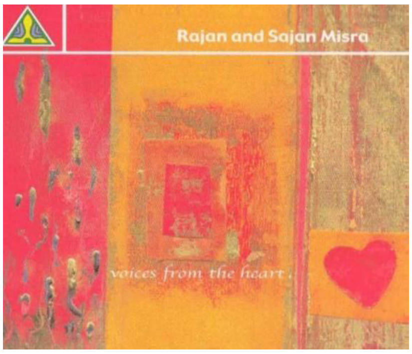

(Released by sense world music)

(1) Raga Saraswati

(2) Raga Shivranjani [2]

---

[1] https://open.spotify.com

[2] https://www.discogs.com

(27) RITU SHISHIR BASANT

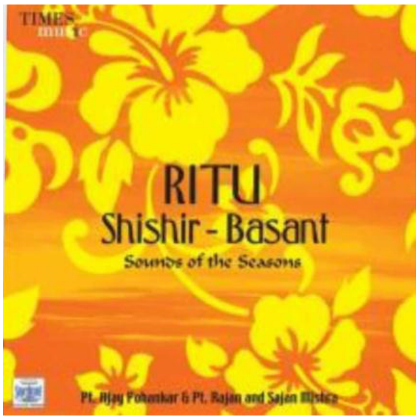

(Released by Times music on oct 17, 2007)

Singers- Pt. Rajan Sajan mishira & Pt Ajay Pohankar

Ritu Basant- Pt. Rajan Sajan Mishra

(28) Golden Raaga Collection-III (Pt. Rajan Sajan Mishra)

(Released by Times music on May 20, 2009), Tracks - 02

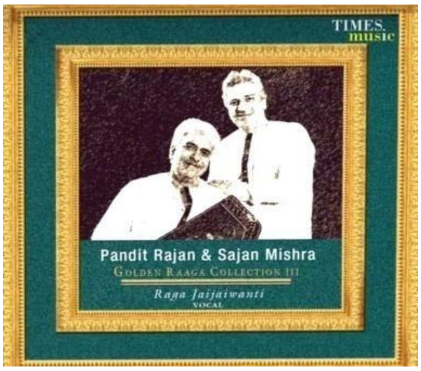

(1) Raag Jaijaiwanti- Khayal in Vilambit Ektaal & Drut Teentaal

(2) Bhajan

(29) Banaras Gharana- Vol. 1

(Released by saregama on April 4, 2000)

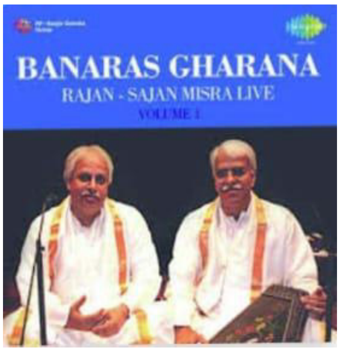

(1) Raag Maru Bihag - Khayal in Vilambit Ektaal Payyan Torelaagi Rahoon

Khayal in Teentaal - Raat KeAlsane Piharva [1]

[1] https://gaana.com

(30) Live in New Delhi : Raga Yaman (1995)

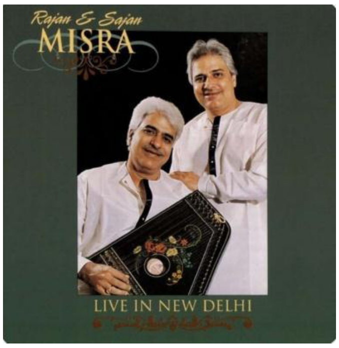

(1) Raga Yaman : Khayal in Slow Ek Taal "Palakan So Mag Jharoon"

(2) Raga Yaman : Khayal in Medium Teentaal
"Sakhi Airi Aale Piya Bin"

(3) Raga Yaman : Tarana in Fast Teentaal[1]

(31) Classical Wonders of India - Pt. Rajan Sajan Mishra

Unheard Ragas/Hindustani Classical Vocal (ASIN B0077B33YK)

Raag Gaud Malhar (Label - Universal Music India)

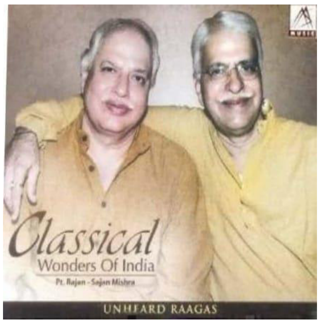

- Vilambit Khayal "Kahe ho"
- Madhya and Drut Khayal "Balma Bahar Aayee"
- Drut Teentaal "Jaani Jaani Tumhare Man Ki Sab Jani'.

(32) Raagon Ke Raja Bandhishon Ke Badshaah (Mysticamusic)

- Raag Champakali
- Rare Banarasi Tappa
- Raag Shahana
- Raag Suha Kanada
- Raag nand
- Khamaj Ki Thumari
- Banaras Ki Kajari
- Babul Mora in Bhairvi

1 https//music.apple.com

(33) Raag Darbari Kanhara

(Album Music Today : Swar Utsav - 2000)

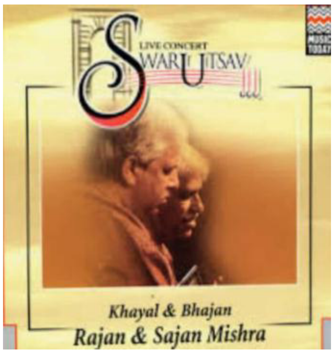

- Vilambit Khayal in Ektaal "Aur Nahin Kachhu Kaam"
- Drut Khayal in Ektaal "Pratham Jyoti Jwala"[1]

(34) Dawn Harmony - Rajan & Sajan Mishra - Vocal - Live

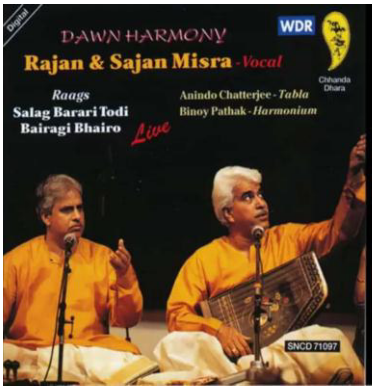

Raag Salagbarari Todi

- Vilambit Khayal in Ektaal "Tero hi Naam"
- Khayal (Madhya Laya) in Teentaal "Pathikva Jare"

Raag Bairagi Bhairav

- Khayal in Ektaal (Madhya Laya & Drut) "Maa Sharde Jagat Janani[2]

(35) Bhairav Se Bhairvi Tak - A Journey through Ragas

Pandit Rajan Sajan Mishra live in concert (Released by Times music on Dec. 29, 2014) The "Bhairav se Bhairvi Tak" series presents the recording of the thematic concert held on 2nd & 3rd october 2010 at Bal shikshan Auditorium, Pune. This journey through Ragas was presented live by the musical greats. Padmabhushan Pt. Rajan and Pt. Sajan Mishra in four sessions from morning till night.

---

1 https://www.youtube.com

2 https://www.amazon.com

Vol. 1 : Early Morning Ragas- Bhairav Ke Prakaar

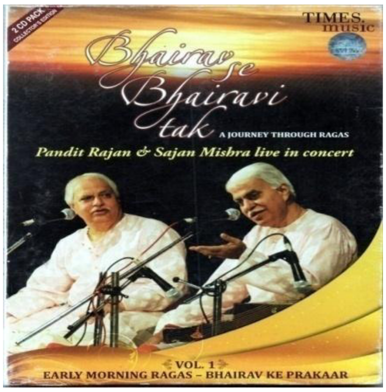

CD1 :

1. Introduction
2. Raga Nat Bhairav-Bada Khayal
3. Raga Nat Bhairav-Chhota Khayal

CD2 :

1. Raga Bairagi Bhairav
2. Panditji speaks about Bhairav
3. Raga Ahir Bhairav
4. Raga Bhairav

Vol. 2 : Late Morning Ragas

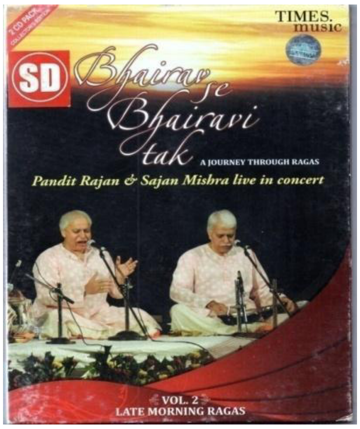

CD1 :

1. Raga Gujari Todi
2. Raga Jaunpuri

CD2. :

1. Raga Vrindavani Sarang
2. Special feature : The maestros speak about their "two voices and one soul".
3. Special feature : Bandish in Raag Malkauns
4. Special feature : Bandish in Raag Puriya .

Vol. 3 : Late Afternoon Ragas

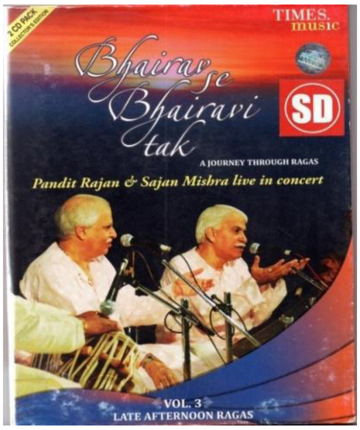

CD 1 :

1. Raga Bhimpalasi- Bada khayal
2. Bhimgalasi- Chhota khayal

CD 2 :

1. Raga Dhani- Chhota khayal
2. Raga Marwa - Bada khayal & Chhota khayal

Vol. 4 : Thumari & Other Semi Classical Renditions.

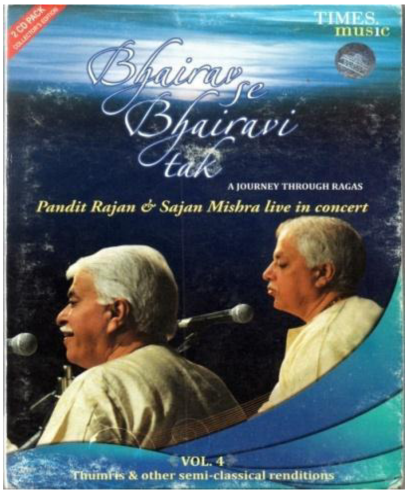

CD1 :

1. Introduction
2. Tappa
   - Tappa in Raga Kafi
   - Tap Tarana in Raga Kafi
   - Tap khayal in Raga Adana-Bahaar
   - Tap khayal in Raga Bahar
3. Bandish ki Thumari based on Raga Khamaj
4. Bandish ki Thumari based on Raga Mishra Kafi

CD. 2

1. Thumari based on Raga Mishra Pahadi
2. Kajari based on Mishra Pilu
3. Dadra based on Raga Mishra Maand
4. Raga Bhairavi
   - Bandish in Ektaal (shuddh Bhairavi)
   - Dadra (Mishra Bhairavi)

Vocal : Padmabhushan Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra

Tabla : Shri Arvind Kumar Azad, Harmonium : Pt. Dharamnath Mishra, Compere : Shri Rahul Solapurkar, Photography by Shrirang Godbole, Produced by Creative Media & Management, Services : Makarand & Vasanti Brahme.[1]

---

1 www.timesmusic.com (Bhairav se Bhairvi Tak vol. 1 to 4)

(36) DVD / VIDEO TIMES MUSIC

Creative media presents

"ADWAIT SANGEET" (Two voices-one soul)

A Docu- Feature on Pt. Rajan & Sajan Mishra (A Film by Makarand Brahme)

DVD 1 : Adwait Sangeet-

"A Docu feature on the life and work of Pt. Rajan & Sajan Mishra

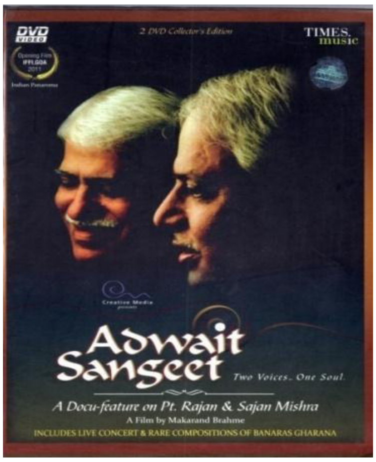

DVD 2 : Additional Feature

- Master class with Pt. Rajan & Sajan Mishra
- Musical Treasure of Banaras Gharana

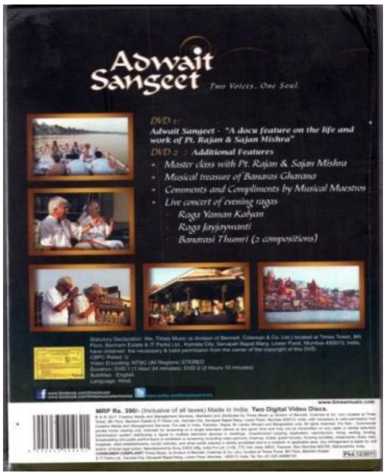

- Comments and Compliments by Musical Maestros
- Live Concert of Evening Ragas
  - Raga Yaman Kalyan
  - Raga Jaijaywanti
  - Banarasi Thumri (2 Compositions)

Duration :

DVD 1 (1 hr. 24 Minutes)

DVD 2 (2 hrs. 15 Minutes)

(37) Michael Nyman, U. Shrinivas, Rajan & Sajan Mishra

SANGAM (Michael Nyman Meets Indian Masters)

(CD, Album), Label : Warner Classics

Cat. # : 0927 4955/-2, Year - 2002, Released in 2003[1]

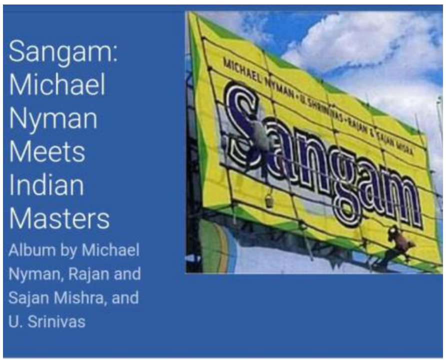

(1) Three ways of Describing Rain, 1 Sawan : First Rain Part I
(2) Three ways of Describing Rain, II Rang, Colour of nature.
(3) Three ways of Describing Rain : III Dhyan : Meditation.
(4) Compiling the colours, Samhitha

Michael Nyman - Conductor, Rajan & Sajan Mishra - Voice
U.Shrinivas - Electric Mandolin, Sanju Sahai - Tabla

RECORDINGS AVAILABLE ON VARIOUS INTERNET SITES

(1) Raag Jaunpuri- Live at Saptak Festival-2008, Ahmedabad, Gujarat)

- Vilambit Khayal in Ektaal "Baje Zananan"
- Madhyalay & Drut Khayal in Teentaal "Jiyara Larje"

Tabla- Sh. Arvind Azad, Harmonium-Sh-Mehmood Dhaulpuri[2]

(2) Raag Brindavani Sarang

- Vilambit Khayal in Jhaptal - "Tum Rab Tum Saheb"
- Khayal in Teentaal - "Langaraiyan Hum Sang Na Karo" [3]

---

1 https://www.discogs & https://www.paroles-musique.com>eng.
2 https://www.youtube.com
3 https://www.youtube.com

(3) Raag Kalavati (Saptak Annual Music Festival, 2015)

- Khayal in Teental Madhyalay "Maika Piya Bulave"

Tabla-Pt. Kumar Bose, Harmonium-Pt.Dharamnath Mishra[1]

(4) Raage Jansammohini (Part 1 &2)

- Khayal in Ektaal Madhyalaya & Drut Laya "Piya Manat Naahin" [2]

(5) Raag Bihag

Pt. Bhimsen Joshi National Festival of Music and Dance -March 2015)

- Khayal in Vilambit Teental "Baje Mori Payal Jhanan"
- Khayal in Teentaal Madhyalay "Ab Sudh Na Rahi Mohe Aaj Shyam"
- Tarana in Drut Teental "Tana Na Dir Dir Deem Ta Na Na Dere Na"
- Bhajan "Sri Ram Chandra Kripalu Bhajman" [3]

(6) Raag Nand and Raag Hameer

(SUR FESTIVAL 2015 at Calcutta)

Raag Nand

- Vilambit Khayal in Ektaal "Ae Vaare Sainyan Tohe Sakal Ban Dhoondun
- Khayal in Madhya Laya Teental "Bahut Din Beete"
- Khayan in Raag Hameer in Jhaptaal Madhyalaya
- "Brahma Ko Sangeet Roop Maan Gunijan"
  Lyrics- Pt. Kishan Maharaj Ji [4]

---

1 https://www.youtube.com

2 https://www.youtube.com

3 https://www.youtube.com

4 https://www.youtube.com

(7) **Raag Nand**

- Khayal in Drut Ektaal "Ae Salone Sanvare Tu"
- Khayal in Drut Teentaal "Bahut Din Beete Re" [1]

(8) **Raag Bhatiyar (Pt. Rajguru Smruti Presents - Sur Prabhat)**

- Khayal in Drut Teentaal "Aayo Prabhat Sab Mil Gao"
- Tarana in Drut Ektaal "Tadim Dim Ta Derana"[2]

(9) **Raag Bhatiyar (Jawahar Kal Kendra Jaipur - 2016)**

- Vilambit Khayal in Ektaal "Uchat Gai Mori"
- Khayal in Drut Teentaal "Aayo Prabhat Sab Mil Gao"[3]

(10) **Raag Hamir**

- Khayal in Teental (Madhya & Drut Laya) "Langarwa Kaise Ghar Jaoon"[4]

(11) **Raag Tilak Kamod**

- Khayal in Jhaptaal Madhyalaya "Ae Sapt Suran Ko Dhyan Dhariye"
- Khayal in Teentaal "Neer Bharan Kaise Jaaoon Sakhi"
- Tarana in Teentaal "Deem Tan Derana Tan"

Raag - Kamaod

- Khayal in Teentaal "Kare Jane Na Dungi"[5]

---

1 https://www.youtube.com
2 https://www.youtube.com
3 https://www.youtube.com
4 https://www.youtube.com
5 https://www.youtube.com

(12) Raag Chhayanat, Tilak Kamod & Tappa in Khamaj

(Akashvani Sangeet Sammelan, 2012)

- Vilambit Khayal in Chhayanat "Nevar Ki Jhankar"
- Khayal Madhyalaya Teentaal "Nazar Nahin"
- Drut Khayal in Teentaal "Bhari Gagari Mori"
- Madhyalaya Khayal (Jhaptaal) in Tilak Kamod.
- Tarana in Drut Ektaal in Tilak Kamod.
- Tappa in Khamaj. [1]

(13) Raag Gaud Sarang

- Vilambit Khayal in Ektaal "Neend Na Aaye"
- Khayal in Punjabi Taal "Radhe Tumre Naina"
- Drut Khayal in Teentaal "Lagan Laagi Mohan So"[2]

(14) Raag Champakali

(Uttarpara Sangeet Chakra, 58th Annual Classical Music Conference 23-01-2014)

- Khayal in Teentaal Madhya Laya "Laaj Na Aaye"
- Khayal in Drut Ektaal "Sagari Rain Jagat Biti"

Raag Madhukauns

- Khayal in Teentaal "Sab Jagat Ke Antaryami.

Raag Jogkauns

- Vilambit Khayal in Ektaal "Ae Kahe Guman"
- Drut Khayal in Ektaal "Jagat He Samajh Sapna"[3]

(15) Raag Bairagi Bhairav

(The Programme held in Laha Bari Organized by Sutanuti Parishad Chorabagan Organisation on Jan 15th 2006)

- Vilambit Khayal in Ektaal "Ae Man Bairagi Bhayo"[4]

---

1 https://www.youtube.com
2 https://www.youtube.com
3 https://www.youtube.com
4 https://www.youtube.com

(16) Raag Bhinnashadaj

- Khayal in Teentaal "Mori Chunari Rang Dari Re"

  (Vasantotsava Fest 2015 at Kamani Auditorium on the occasion of Pandit Birju Maharaj Birthday Celebration)[1]

(17) Raag Megh (Darbari Festival)

- Khayal in Rupak Taal "Baddar Karat Nav Shor"[2]

(18) Raag Tilak Shyam (Performed in Pune in 2013)

- Khayal in Jhaptaal Madhyalaya "Tilak Lagaye Pyare"
- Khayal in Teentaal "Ab to Shyam Naam Lau Laagi"

Raag Kamod

- Khayal in Teentaal "Aeri Janena Dungi"[3]

(19) Raag Komal Rishabh Asawari

(Sankat Mochan Sangeet Samaroh, 2013)

- Vilambit Khayal "Peharwa Jago Re Jago"
- Drut Khayal in Teentaal "Main to Tumhro Daas"[4]

(20) Raag Darbari Kanhara

(Guru Sangeet Festival 2016 at Kamani Auditorium, New Delhi 27.12.2016)

- Khayal in Teentaal Madhya Laya "Naad Apaar Udadhi Gambhir.
- Drut Khayal in Teentaal "Jin Bairan Kaan Bhari"[5]

---

1 https://www.youtube.com

2 https://www.youtube.com

3 https://www.youtube.com

4 https://www.youtube.com

5 https://www.youtube.com

(21) Vrindavan Gurukul Baithak Presents "Anubhav"

Guests - Pt. Rajan Sajan Mishra (Nov. 14, 2014, Mumbai)

(Lecture & Demonstration Programme in the presence of Pt. Hari Prasad Chaurasiya, Pt. Shiv Kumar Sharma and many renowned artists)

(1) Raag Shree

- Khayal in Teentaal VIlambit "Dhenu Charawat Aavat Kanha"
- Khayal in Drut Ektaal "Ab Mori Baheen Gaho"
- Khayal in Drut Teentaal "Maliniyan Gund Laao"

(2) Raag Hemavati

- Khayal in Ektaal "Hari Har Lino Hiy Ko"
  (Lyricist - Pt. Rajan Mishra)

(3) Raag Jhinjhoti "Langar Langarayee"

(4) Bhajan "Chalo Man Vrindavan Ki Aur"[1]

(22) Vrindavan Gurukul Dharohar (Lecture & Demonstration)

Raag Jog :

- Vilambit Khayal in Ektaal "Baalam Na Aaye Sagari Rain"
- Drut Khayal in Teentaal "Sajan More Ghar Aaye"[2]

(23) Raag Jaijaivanti (A Live Performance Live Part 1 at Spicmacay 2013 held at 11m Kolkota on May 21)

- Vilambit Khayal in Ektaal "Piya ham Jaani"[3]

---

1 https://www.youtube.com
2 https://www.youtube.com
3 https://www.youtube.com

(24) Pt. Rajan Sajan Mishra Part 2 Spicmacay

Raag Shyam Kalyan

- Khayal Ektaal Madhyalaya "Aiso Tumko Na Janat Hain"
- Khayal in Drut Teentaal "Un Sang Laagi Lagan"[1]

(25) Raag Gavati (1997)

Khayal in Teental "Param Sukh Ati Aanand Bhayo Hai"

(As part of India & Pakistan's Golden Jubilee Celebrations, Pt. Rajan Mishra and Pt. Sajan Mishra Perform Live for the BBC at the Symphony Hall, Birmingham.) [2]

(26) Raag Gorakh Kalyan

(A Basant Bahar Concert on 19-3-1995 in Fremont California)

- Vilambit Khayal in Ektaal "Baje Mori Payal"
- Drut Khayal in Teental "Ban Than Aaye"
- Tarana in Teentaal "Tana Udare Dare Dani Dim"[3]

(27) Raag Hansdhwani

(A Basant Bahar Concert on 19-01-1988 in Fremont California)

- Khayal in Teentaal Vilambit "Vighan Haran Gaj Badan"
- Tarana in Teental Dim Tanan Derana Derana
- Tappa in Raag Kafi - Tum Na aa Tan.
- Bhajan - "Jagat Mein Jhooti Dekhi Preet"[4]

---

1 https://www.youtube.com
2 https://www.youtube.com
3 https://www.youtube.com
4 https://www.youtube.com

(28) Raag Durga

(A Basant Bahar Concert on 19-03-1995 in Fremont California)

- Khayal in Jhaptal "Jin bolo aho hum so aaj"
- Khayal in Drut Ektaal "Jai Jai Jai Durge Maa"

Raag Nand

- Khayal in Roopak Madhyalaya "Ae Bhanwara Ja"
- Khayal in Drut Ektaal "Ae Salone Sanware Tu"[1]

(29) Raga : Marwa, Dhani & Tappa

(A Basant Bahar Concert on 11-04-1993 in Fremont California)[2]

(30) Raga : Jhinjhoti, Jaijaiwanti & Bhairavi

(A Basant Bahar Concert on 11-04-1993 in Fremont California)[3]

(31) Raga : Miya Ki Malahar

(A Basant Bahar Concert on 19-01-1988 in Fremont California)[4]

(32) Raag Nat Bhairav (Sankat Mochan Sangeet Samaroh)

- Khayal in Ektaal (Madhya & Drut Laya) "Bhor Bhayee Panchhi Jaage"[5]

(33) Raag Bihag

(Satguru Jagjeet Singh Sangeet Sammelan 16-17 Nov. 2013)

- Vilambit Khayal in Ektaal "Jag Jeevan Thora"
- Khayal in Teentaal "Jasumati Jhulave Lalna Palna"[6]

---

1 https://www.youtube.com
2 https://www.youtube.com
3 https://www.youtube.com
4 https://www.youtube.com
5 https://www.youtube.com
6 https://www.youtube.com

(34) Raag Gavati

- Khayal in Teentaal Madhya Laya "Laao Ri Laao Maliniyan"
- Khayal in Drut Teentaal "Param Sukh Ati Anand Bhayo Hai"[1]

(35) Feature Film - "Rajan Sajan Mishra in Varanasi"

(The Superb Duo appeared in this British TV Programme)[2]

(36) Shakhsiyat with Pt. Rajan and Sajan Mishra

(An Interview on Rajya Sabha TV) [3]

(37) Khas Mulakat - Pt. Rajan Sajan Mishra - Bansal News[4]

(38) Story of Renowned Classical Singer Pt. Rajan Sajan Mishra by Dream Treaders Films.

(Title - "Phir Teri Kahani Yaad Aayee")[5]

पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा गाई गई रागों का विशाल संग्रह आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं देश–विदेश की नामी कम्पनियों द्वारा जारी कैसेटस, सी डी, डी वी डी के अतिरिक्त इंटरनेट पर भी उपलब्ध है। भ्राताद्वय द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और प्रचार प्रसार के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किया गया जो कि एक मिसाल है। बहुत बड़ी संख्या में गाई गई प्रचलित–अप्रचलित रागें भारतीय संगीत की निधि हैं। ध्वन्यांकन के अन्तर्गत ख्याल, टपख्याल, तराना, ठुमरी, दादरा, चैती, टप्पा एवं भजन आदि के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को लोकप्रियता की दृष्टि से चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने में पं. राजन साजन जी मिश्र का बहुत बड़ा योगदान है।

3.2 पं. राजन साजन मिश्र द्वारा प्रस्तुत बंदिशों पर विस्तृत विवेचन

ख्याल गायन के अन्तर्गत रागों के प्रस्तुतीकरण में बंदिश की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। किसी राग में प्रस्तुत उत्कृष्ट बंदिश राग के सौन्दर्यात्मक एवं भावात्मक

---

[1] https://www.youtube.com
[2] https://www.youtube.com
[3] https://www.youtube.com
[4] https://www.youtube.com
[5] https://www.youtube.com

स्वरूप का सुन्दर दिग्दर्शन करवाते हुए श्रोताओं के हृदयतल पर अमिट छाप छोड़ती है। ''राग की अभिव्यक्ति की सम्पूर्णता के विषय में बंदिश के बारे में स्व. कुमार गंधर्व जी का विचार है– ''मूलतः अरूप रहने वाला राग बंदिश के कारण साकार हो जाता है। राग आत्मा है तो बंदिश शरीर। शरीर का आकार तो सर्वत्र एक नहीं हो सकता। इसी तरह बंदिशें भी एक ही प्रकार की नहीं हो सकती। वे विभिन्न प्रकार की होती हैं। इसीलिए विभिन्न बंदिशों के आधार पर विभिन्न स्वरूपों में राग प्रस्तुत किए जाते हैं।''[1]

सुप्रसिद्ध ख्याल गायिका डॉ. प्रभा अत्रे जी के अनुसार ''शास्त्रीय संगीत के लगभग सभी घरानेदार कलाकारों ने अपनी शैली के अनुरूप बंदिशों की रचनाएँ की हैं। इतना ही नहीं, घरानों की ज़ंजीरें तोड़कर निकल पड़े प्रतिष्ठित कलाकारों ने भी स्वरचित् बंदिशों के माध्यम से अपनी विशिष्ट गायन शैली को प्रस्तुत किया है।''[2]

''बंदिश राग की आकृति का दर्पण है, जिसके माध्यम से राग के स्वरूप और चलन को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बंदिश के द्वारा राग को निश्चित स्वरूप मिलता है। अनेक बंदिशों द्वारा एक ही राग के विविध चलनों का ज्ञान प्राप्त होता है।''[3]

अतः बंदिश वह धुरी है जिसके माध्यम से कलाकार संपूर्ण राग का सुन्दरतम् चित्र खींचते हुए अन्तर्निहित भावों का प्रकटीकरण कर कल्पनात्मक अभिव्यक्ति द्वारा आध्यात्मिक वातावरण के निर्माण के साथ परमानन्द की अनुभूति कराता है।

महान् युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र जी के गायन की रिकॉर्डिंग्स बहुत बड़ी संख्या में देश–विदेश की प्रमुख कम्पनियों आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं इंटरनेट आदि माध्यमों द्वारा प्रसारित की गई है जिनका विस्तृत विवरण पूर्व में प्रस्तुत किया जा चुका है। आपके द्वारा गायी गई बंदिशों का प्रस्तुतीकरण इतना प्रभावशाली रहता है कि वे गुणीजनों एवं रसिक श्रोताओं के साथ–साथ संगीत का साधारण एवं अल्प ज्ञान रखने वाले श्रोताओं को भी भावविभोर कर देती हैं। आप दोनों भ्राताओं को बंदिशों के प्रस्तुतीकरण एवं संरचना हेतु अपने गुरुजनों से उच्च स्तर की शिक्षा मिली। विरासत में प्राप्त घरानेदार शिक्षा के साथ स्वयं के चिन्तन, रचनात्मक एवं प्रयोगात्मक क्षमता द्वारा आपने बंदिशों को अत्यंत रोचक, आकर्षक एवं हृदयस्पर्शी रूप प्रदान कर संगीत जगत् में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली। आपके द्वारा गायी गई बंदिशों को यहाँ दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है–

1. विविध घरानों के ख्याल रचनाकारों द्वारा रचित परंपरागत एवं प्राचीन बंदिशें।
2. स्वयं के घराने के मूर्धन्य कलाकारों एवं स्वयं द्वारा रचित बंदिशें।

---
[1] डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू – आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय संगीत की भूमिका, पृ. 57
[2] डॉ. प्रभा अत्रे – स्वरांगिनी, पृ. 4–5
[3] डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू – आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय संगीत की भूमिका, पृ. 58

परंपरागत एवं प्राचीन बंदिशें

परंपरागत बंदिशें भारतीय संगीत के मौलिक एवं प्राचीन स्वरूप को अपने में समेटे हुए है। यहाँ तक की कुछ अप्रचलित रागों के स्वरूप को तो बंदिशों के माध्यम से ही समझ पाना संभव हो सका है। यद्यपि एक ही बंदिश को विभिन्न कलाकारों द्वारा अलग–अलग रूप में प्रस्तुत किए जाने के कारण उनमें संरचनात्मक एकरूपता तो दृष्टिगत नहीं होती लेकिन बंदिशों को विविध कलाकारों द्वारा स्वयं की गायकी का रंग चढ़ाकर अलग–अलग रूप में प्रस्तुत किया जाना ही तो भारतीय संगीत की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है।

पं. राजन साजन मिश्र जी ने परंपरागत बंदिशों को मौलिक स्वरूप के साथ उन्हें अपने घराने की शैली एवं अन्य बड़े कलाकारों के गुण वैशिष्ट्य की प्रेरणा से सुगठित करते हुए छंद, स्वर, ताल, लय, रस, भाषा, साहित्य एवं राग अनुरूप गमक, कण, खटका, मुर्की, मीड आदि सांगीतिक अवयवों के उचित समन्वय द्वारा मनमोहक रूप प्रदान किया है।

विविध घरानों के महान् कलाकारों एवं रचनाकारों द्वारा रचित पारंपरिक बंदिशों को आप बहुत ही खूबसूरत ढंग से प्रस्तुत करते हैं। यह हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विशेषता है कि वह परंपरागत गाई जाने वाली प्राचीन बंदिशों में भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करते हुए उसे कलात्मक क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन का अवसर प्रदान करता है। अतः पं. राजन साजन मिश्र जब बंदिश को अपनी घरानेदार शैलीगत विशेषताओं से आबद्ध करके गाते हैं तो वह स्मृति एवं कल्पना के सहयोग से नवीनता के साँचे में ढलकर प्रस्फुटित होती है। 18वीं सदी के महान् ख्याल रचनाकार सदारंग अदारंग जी की बंदिशों से लेकर 20वीं सदी तक के प्रमुख ख्याल रचनाकारों की बंदिशों के बारे में पं. राजन साजन मिश्र जी का मानना है कि रागों की प्राचीन एवं पारंपरिक बंदिशें रागों के मौलिक स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हुए हमें दिशा प्रदान करती है। आप दोनों भ्राता सदैव हमारे पूर्वजों एवं महान् कलाकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सदैव उनके समर्पण एवं योगदान का स्मरण करते हैं।

पं. राजन साजन मिश्र द्वारा प्रयुक्त स्वयं के घराने की एवं स्वरचित बंदिशें

पं. राजन साजन जी मिश्र का जन्म बनारस घराने की वंश परम्परा में हुआ। आपका संबंध बनारस घराने के सुप्रतिष्ठित पं. रामबख्श मिश्र जी के घराने से है जो कि मूलतः सारंगी का घराना रहा है। लगभग तीन सौ वर्षों से चली आ रही संगीत परम्परा में आपके पूर्वज ख्यातनाम एवं धुरंधर सारंगी वादक होने के साथ उत्कृष्ट कोटि के गायक भी हुए हैं। आपके पिताजी, चाचाजी की संगीत शिक्षा दादाजी पं. सुरसहाय जी मिश्र के

साथ–साथ महान संत गायक गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी से भी हुई। पं. राजन जी मिश्र स्वयं गायनाचार्य जी के गंडाबंध शागिर्द है। आपके पास स्वयं के घराने के अंतर्गत पिताजी एवं चाचाजी से प्राप्त बंदिशों के साथ–साथ दादा गुरुजी पं. बड़े रामदास जी की बंदिशों का विशाल एवं दुर्लभ संग्रह है। आपके पिताजी ने स्वयं के घराने के अतिरिक्त दूसरे घराने की अच्छी बंदिशों को सीखने हेतु प्रेरित किया। आप पं. बड़े रामदास जी की बंदिशों को बहुत ही सुन्दर एवं भावपूर्ण ढ़ंग से प्रस्तुत करते हैं। पं. राजन साजन मिश्र जी महान संगीतज्ञ होने के साथ–साथ उत्तम कवि भी है। आपने सैंकड़ों बंदिशें प्रचलित–अप्रचलित रागों में तैयार कर भारतीय शास्त्रीय संगीत को समृद्ध बनाने में योगदान दिया है। गुरु के प्रति समर्पण की पराकाष्ठा यह है कि बंदिशों में आप कभी भी स्वयं का उपनाम नहीं जोड़ते अपितु अपने गुरु पं. बड़े रामदास जी का उपनाम जोड़ते हैं यह रहस्य आपने चर्चा के दौरान उजागर किया। पं. राजन मिश्र जी के अनुसार ''मैंने कभी अपना उपनाम नहीं बनाया। हमारे पूज्य मामाजी पं. किशन महाराज जी बहुत अच्छे साहित्यकार थे तबले के तो सम्राट थे ही। वह हमसे बहुत समय तक यह कहते रहे कि तुम अपना एक उपनाम बनाओ क्योंकि मैं अपने गुरुजी का नाम डालता हूँ पं. बड़े रामदास जी का। मैं उनसे इस बात पर सहमत नहीं होता था। मैं ऐसा समझता हूँ कि जो बंदिश बनती है मेरे से वह उन्हीं लोगों की कृपा से बनती है और उन लोगों का नाम रखने से बंदिश का महत्त्व भी बढ़ जाता है। उनकी ही कृपा से हम गा रहे हैं, उन्हीं की सीखी हुए बातों को हम आगे बढ़ा रहे हैं तो उसमें अपना नाम क्यों डालें ?''[1]

पं. राजन मिश्र जी ने वर्ल्ड टूर 'भैरव से भैरवी तक' में बंदिशों के साहित्य से संबंधित एक प्रश्न के उत्तर में सर्ब अकाल बैठक में बताया कि ''जैसे मुख मोर मोर मुस्कात जात'' अब ये श्रृंगार रस की बंदिश है। अब इस बंदिश को लेकर अगर आपके दिमाग में राधा रानी है तो ये अध्यात्म हो जाता है और कोई सस्ता विचार है तो ये सस्ता बंदिश हो जाता है, यह आपके विचार पर निर्भर करता है। यह अपना–अपना परसेप्शन है कि आप इसे कैसे लेते हैं। लोग कहते हैं कि भजन गाओ, हम तो कहते हैं कि हम जो ख्याल गा रहे हैं वह भी भजन ही है। जैसे कल के कार्यक्रम में हमने जो गाया ''पिया मोरे अनत देस गइलवा''। इसको अगर आध्यात्मिक रूप से देखें तो 'मेरा पिया ऊपर रहता है कहाँ चला गया है कब घर आएगा' उसका यह भी भाव हो सकता है और अगर दूसरे तरीके से सोचें तो एक नायिका अपने पति के लिए या अपने प्रेमी के लिए तड़प रही है यह भी भाव हो सकता है। हर जगह ईश्वर को देखो और है ईश्वर।''[2]

---

1 पं. राजन जी मिश्र – चर्चा, दिनांक 10.07.2017, नई दिल्ली

2 सर्ब अकाल बैठक, कैलगेरी, (www.youtube)

पं. शिवकुमार जी शर्मा (विश्वविख्यात संतूर वादक) ने पं. राजन साजन मिश्र जी की गायकी के संदर्भ में वृंदावन गुरुकुल के 'अनुभव बैठक' व्याख्यान प्रदर्शन कार्यक्रम में कहा कि ''आपकी गायकी में शब्दों का जो इतना सही प्रयोग होता है, वो मैं समझता हूँ कि आपकी सोच का एक बहुत बड़ा अंग है। संगीत में जो गायक होता है उसके पास यह एक विधा ऐसी है जो वाद्ययंत्र वादक के पास नहीं है अर्थात् शब्द नहीं है और कई पुराने जो गायक हैं और आजकल के भी, उनकी सोच ऐसी थी कि शब्द की कोई अहमियत नहीं है। गायकी है, रागदारी है ये सब चीज़ें हैं आखिर का मुखड़ा दो शब्द बोल दिया और क्या बोल रहे हैं नहीं मालूम। उसका (साहित्य का) तो इतना बड़ा प्लस प्वाइंट गायक के लिए है। मैं समझता हूँ उसको उन्होंने छोड़ दिया था तो आपने उस पर बहुत ध्यान दिया है और उसकी वजह से जो एक आम श्रोता होता है जो शायद रागदारी को नहीं समझता तैयारी को नहीं समझता लेकिन आप अपने शब्दों से और भाव जो है राग का, उसका जो इस्तेमाल करते हैं वह बहुत खूबसूरती से करते हैं यह एक बहुत खासीयत आपके गाने में है।''[1]

इसी संदर्भ में पं. राजन मिश्र जी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''पहले वे लोग ऐसा सोचते थे कि इस राग को इसी रस में गाया जाये लेकिन हमारा ख्याल दूसरा है। मैं यह समझता हूँ कि राग का साहित्य जो है वह उसका रस निर्धारित करता है, राग साहित्य को निर्धारित नहीं करता। जिन लोगों ने पहले से दिमाग बनाया हुआ है कि ये श्रृंगार रस का राग है, उस श्रृंगार रस के राग में वीर रस की भी बंदिशें हैं। जो वीर रस की बंदिश गाई जाती है तो वीर रस के हिसाब से गाई जाती है। राग वही है उसमें श्रृंगार रस की भी बंदिश है, वीर रस की भी बंदिश है, करुण रस की भी बंदिश है, भक्ति रस की भी बंदिश है तो मेरा व्यक्तिगत ख्याल यह है कि साहित्य जो है वह राग दर्शन करवाता है।''[2] पं. साजन मिश्र जी के अनुसार ''पिताजी (पं. हनुमान प्रसाद जी) जब भैया (पं. राजन जी) को जब तालीम देते थे, मैं छोटा था तब बहुत ही ज़्यादा इनको समझाने का प्रयास करते थे कि देखो शब्द को जीना सीखो और फिर बाद में इन्होंने ईश्वर की कृपा से आप लोगों के आशीर्वाद से इतना गंभीरता से विचार किया कि आज सभी लोग यह कहते है कि राजन भाई जिस तरीके से शब्दों का प्रयोग करते है बंदिशों में वैसा बहुत कम लोग कर पाते हैं।''[3]

आपके स्वयं द्वारा रचित बंदिशों में कुछ बंदिशों में पं. बड़े रामदास जी का नाम है और अनेक बंदिशें ऐसी भी है जिनमें उपनाम नहीं है। आपकी बंदिशों में उच्च कोटि का साहित्य, रागात्मकता, ताल एवं लय का अनूठा प्रयोग, शब्दों की भावपूर्ण अभिव्यक्ति, तालों

---

1 वृंदावन गुरुकुल ''अनुभव बैठक'' (Youtube)
2 वही
3 वही

में मुश्किल जगह से बंदिश शुरु करके सम दर्शाना, सभी सांगीतिक अवयवों का संतुलित प्रयोग आदि ऐसी विशेषताएँ हैं जो आपको महान ख्याल रचनाकारों की श्रेणी में रखती है।

पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा प्रयुक्त बंदिशों में निहित रचनात्मक विशेषताएँ

- राग के समय एवं ऋतु के अनुरूप उत्कृष्ट काव्य रचना का चयन।
- बंदिश की शब्द रचना में निहित भाव एवं राग भाव का उचित साम्य।
- बंदिशों में राग के प्राचीन एवं मौलिक स्वरूप को अक्षुण्ण रखते हुए प्रमुख स्वर संयोजनों द्वारा राग स्वरूप की स्पष्ट अभिव्यक्ति।
- बंदिशों में प्रयुक्त शब्दों का रसानुरूप एवं भावानुरूप शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण के साथ प्रस्तुतीकरण।
- राग में निहित आध्यात्मिक भाव का बंदिशों में प्रकटीकरण।
- बनारस की शैली के अनुरूप ख्याल की बंदिशों की स्वर रचना में ध्रुपद से लेकर ठुमरी तक की अन्य सभी गायन शैलियों के विविध अंगों–उपांगों का समावेश।
- राग नियमों का पूर्णतः निर्वहन करते हुए वादी–संवादी को प्रभावशाली ढंग से दर्शाना।
- सुन्दर एवं आकर्षक मुखड़े की बंदिशें एवं मुखड़े में ही संपूर्ण राग का छायाचित्र दर्शाना।
- बंदिशों को मुश्किल जगह से आरंभ कर सम पर आने की अद्भुत एवं विलक्षण क्षमता।
- विविध अप्रचलित रागों एवं तालों में भी चमत्कारिक एवं भावपूर्ण बंदिशों की रचना।
- बनारस घराने के अतिरिक्त अन्य घरानों की पारंपरिक बंदिशों के मूल स्वरूप को कायम रखते हुए स्वयं के घराने की विशेषताओं से आबद्ध कर नवीन एवं अत्यंत आकर्षक रूप में प्रस्तुतीकरण।
- बंदिशों में लयात्मक गुंथाव। लय के विविध प्रकार जैसे आड़, कुआड़, बिआड़ आदि का बंदिशों में कुशल प्रयोग।
- बंदिश हेतु प्रयुक्त ताल में ही दूसरी तालों की चाल व लय दर्शाने की क्षमता।
- छंद, स्वर, ताल, लय, रस, भाषा, साहित्य, गमक, कण, खटका, मुर्की, मींड एवं जमजमा आदि सांगीतिक अवयवों के संतुलित प्रयोग से बंदिश को मनमोहक रूप प्रदान करना।

राग जोग (त्रिताल–मध्यलय)

स्थायी– सुरन के साधे, होत ज्ञान सब रागन को।

अंतरा– सुर ही तान, सुर ही सरगम,
सुर बिन कोउ न जानत मानत।

स्थायी

															गसा
															सुऽ
नि	प	नि	सा	ग	–	–	–	ग	–	ग	म	ग	–	सा	ग
र	न	के	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धे	ऽ	ऽ	हो
3				**X**				**2**				**0**			
–	म	प	–	प	नि	प	म	ग	म	ग	म	ग	–	सा	गसा
ऽ	त	ज्ञा	ऽ	न	स	ऽ	ब	रा	ऽ	ग	ऽ	न	ऽ	को	सुऽ
3				**X**				**2**				**0**			

अंतरा

–	गम	प	नि	सां	–	सां	–	नि	नि	सां	–	निसां	निप	म	ग
	सुर	ही	ऽ	ता	ऽ	ऽ	न	सु	र	ही	ऽ	सऽ	रऽ	ग	म
0				**3**				**X**				**2**			
–	गम	प	नि	सांगं	गंमं	गं	सां	नि	–	प	–	प	–	ग	म
	सुर	बि	न	कोऽ	ऽऽ	उ	न	जा	ऽ	न	त	ऽ	ऽ	मा	ऽ
0				**3**				**X**				**2**			
ग	–	सा	गसा	नि	प	नि	सा								
न	त	ऽ	सुऽ	र	न	के	ऽ								
0				**3**											

राग दुर्गा (एकताल – मध्य/द्रुत)

स्थायी– जै जै जै दुरगे माता भवानी,
सब जगत को दुःख हरणी।

अंतरा– पाप निवारिणी, महिषासुर मर्दिनी,
'रामदास' शरण गये भवानी दयानी शिवानी।

स्थायी

सारे	मप	ध	म	–	म	रे	–	रे	म	सा	रे
जैऽ	ऽऽ	ऽ	जै	ऽ	ऽ	जै	ऽ	ऽ	दु	र	गे
X		0		2		0		3		4	
प	–	–	प	–	–	म	–	म	प	ध	–
मा	ऽ	ऽ	ता	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ता	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	
(सां)ध	–	–	म	–	–	रे	–	–	म	सा	रे
जै	ऽ	ऽ	जै	ऽ	ऽ	जै	ऽ	ऽ	दु	र	गे
X		0		2		0		3		4	
प	–	–	मप	ध	प	ध	–	सांध	पम	रेसा	ध़सा
मा	ऽ	ऽ	ताऽ	ऽ	भ	वा	ऽ	नीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
X		0		2		0		3		4	
ध	ऽ	सां	–	सां	सां	सां	धरें	सांसां	धप	मरे	सासा
स	ब	ज	ग	त	को	ऽ	दुऽ	खऽ	हऽ	रऽ	णीऽ
X		0		2		0		3		4	

अंतरा

ध	ऽ	म	प	–	ध	सां	–	–	सां	–	–
पा	ऽ	ऽ	प	ऽ	नि	वा	ऽ	रि	णी	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	
ध	ध	सां	सां	रें	रें	सांरें	सांध	पप	म	–	–
म	हि	षा	ऽ	सु	र	मऽ	रऽ	दऽ	नी	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	
सा	–	रे	प	–	प	ध	–	ध	ध	ध	–
रा	ऽ	म	दा	ऽ	स	श	र	ण	ग	ये	ऽ
X		0		2		0		3		4	
रेंसां	ध	–	ध	ध	म	–	म	म	सा	–	रे
भऽ	वा	ऽ	नी	द	या	ऽ	नी	शि	वा	ऽ	नी
X		0		2		0		3		4	

राग वृंदावनी सारंग (त्रिताल–द्रुत लय)

स्थायी– लंगरइयाँ हम संग ना करो,
मनमोहन प्यारे नंद के छयल।

अंतरा– 'रामदास' के मोहन प्यारे
अब तुम हमरो रोको न गयल।

स्थायी

														म	प
														लं	ग
नि	नि	प	म	रे	सा	नि़	सा	रे	–	म	म	प	–	म	प
र	इ	याँ	ऽ	ह	म	सं	ग	ना	ऽ	ऽ	क	रो	ऽ	म	न
0				**3**				**X**				**2**			
नि	–	नि	नि	सां	नि	सां	–	सां	रेंसां	नि	नि	नि	नि	म	प
मो	ऽ	ह	न	प्या	ऽ	रे	ऽ	नं	दऽ	के	छ	य	ल	लं	ग
0				**3**				**X**				**2**			

अंतरा

म	–	प	नि	–	नि	नि	नि	नि	–	सां	नि	सां	–	सां	–
रा	ऽ	म	दा	ऽ	स	के	ऽ	मो	ऽ	ह	न	प्या	ऽ	रे	ऽ
0				**3**				**X**				**2**			
प	प	रें	रें	रें	रें	सां	–	नि	–	नि	नि	नि	–	म	प
अ	ब	तु	म	ह	म	रो	ऽ	रो	को	न	ग	य	ल	लं	ग
0				**3**				**X**				**2**			

राग दरबारी कान्हड़ा (त्रिताल–मध्य लय)

स्थायी– सजन बिन मैं तो भई री बावरी,
कैसे कटे रतियाँ कारी रे।

अंतरा– तनमन धन सब उन पर वारूँ, निसदिन ध्यान धरूँ,
ऐसी सूरत उनकी साँवरी।

स्थायी

												–	नि़	सा	रे
												ऽ	स	ज	न
ग	म	रे	सा	सा	ध़	नि़	प़	सा	–	–	रेसा	ध़	नि़	सा	रे
बि	न	मैं	ऽ	तो	भ	ई	री	बा	ऽ	ऽ	वऽ	री	स	ज	न
0				3				X				2			
ग	म	रे	सा	सा	ध़	नि़	प़	सा	–	–	रेसा	ध़	–	–	–
बि	न	मैं	ऽ	तो	भ	ई	री	बा	ऽ	ऽ	वऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				X				2			
–	म	म	म	प	–	निनि	पम	प	ग	म	रेसा	ध़	नि़	सा	रे
ऽ	कै	से	क	टे	ऽ	रऽ	तिऽ	याँ	का	ऽ	रीऽ	रे	स	ज	न
0				3				X				2			

अंतरा

म	म	प	प	ध	ध	नि	नि	सां	–	सां	सां	रें	नि	सां	–
त	न	म	न	ध	न	स	ब	उ	न	प	र	वा	ऽ	रूँ	ऽ
0				3				X				2			
प	रें	–	रें	रें	रें	सां	–	नि	–	सांरें	सां	ध	–	नि	प
नि	स	दि	न	ध्या	ऽ	न	ध	रूँ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
0				3				X				2			
–	म	म	म	प	प	निनि	पम	प	ग	म	रेसा	ध़	नि़	सा	रे
ऽ	ऐ	सी	सू	र	त	उऽ	नऽ	की	साँ	ऽ	वऽ	रीं	सं	ज	न
0				3				X				2			

राग पूरिया (एकताल–मध्यलय)

स्थायी– पिया संग लागी, लगन मोरी आली
अब कैसे घर जाऊँ।

अंतरा– नहीं भावे भवन, एक दिन परै ना चैन,
सास ननद देगी गारी, अब कैसे घर जाऊँ।

स्थायी

म॑	ग	ग	रे॒	सा	सा	सा	—	सा	सा	—	सा
पि	या	ऽ	सं	ऽ	ग	ला	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ल
X		0		2		0		3		4	
नि़	रे॒	नि़	म़॑	—	ध़	नि़	रे॒	ग	—	ग	ग
ग	ऽ	न	मो	ऽ	री	आ	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	
नि़	रे॒	ग	ग	ग	—	गम॑	धग	म॑—	ग—	रे॒	सा
अ	ब	कै	ऽ	से	ऽ	घऽ	ऽऽ	ऽऽ	रऽ	जा	उं
X		0		2		0		3		4	

अंतरा

म॑	—	म॑	म॑	नि	ध	सां	नि	रें॒	सां	सां	सां
न	ही	भा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भ	व	न
X		0		2		0		3		4	
सां	—	सां	सां	नि	नि	रें॒	नि	—	म॑	—	म॑
ए	क	छि	न	प	रे	ऽ	ना	ऽ	चै	ऽ	न
X		0		2		0		3		4	
नि	ध	नि	म॑	—	म॑	म॑	ग	रे॒	सा	—	सा
सा	ऽ	स	न	न	द	दे	ऽ	गी	गा	ऽ	री
X		0		2		0		3		4	
नि	ध	नि	म॑	—	म॑	म॑	ग	रे॒	सा	नि़	रे॒
सा	ऽ	स	न	न	द	दे	गी	गा	री	अ	ब
X		0		2		0		3		4	
ग	—	ग	—	निरे॒	गम॑	धनि	निरें॒	निध	म॑ग	रे॒	सा
कै	ऽ	से	ऽ	घऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रऽ	जा	ऊं
X		0		2		0		3		4	

राग नंद (त्रिताल–मध्यलय)

स्थायी– बहुत दिन बीते बीते रे, अजहूँ न आये श्याम।

अंतरा– पलकन डगर बुहारुं, अब मग झारुं,
जो आवे धाम।

स्थायी

											ग	ग	म	प	ध
											ब	हु	त	दि	न
												3			
नि	–	–	प	ध	–	–	म॑	प	–	गम	ध	प	रे	–	सा
बी	ऽ	ऽ	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽऽ	अ	ज	हूँ	ऽ	न
X				**2**				**0**				**3**			
ग	–	–	ग	म	–	–	मग	प	–	प	ग	ग	म	प	ध
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽऽ	श्या	ऽ	म	ब	हु	त	दि	न
X				**2**				**0**				**3**			

अंतरा

प	प	सां	सां	सां	सां	रें	नि	नि	नि	प	–	ग	म	ध	प
प	ल	क	न	ड	ग	र	बु	हा	ऽ	रुं	ऽ	अ	ब	म	ग
0				**3**				**X**				**2**			
रे	–	सा	सा	ग	म	प	ध	नि	–	–	प	ध	–	–	म॑
झा	ऽ	रुं	जो	आ	ऽ	वे	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
0				**3**				**X**				**2**			
प	ग	–म	ध	प	रे	–	सा	ग	–	–	ग	म	–	–	मग
ऽ	ऽ	ऽम	अ	ज	हूँ	ऽ	न	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽऽ
0				**3**				**X**				**2**			
प	–	प	ग												
श्या	ऽ	म	ब												
0															

राग झिंझोटी (त्रिताल मध्यलय)

स्थायी– रोको न गैल मोहन मोहे जाने दो,
जाने दो जाने दो पैयां परूं तोरी।

अंतरा– मुरली बजा के मेरो मन हर लीनो,
अब करत मोसो बरजोरी।

स्थायी

–	ध़सा	साग	रे	नि	–	ध़	नि	प़	ध़	सा	रे	ग	म	ग	–
ऽ	रोऽ	कोऽ	न	गै	ऽ	ल	मो	ह	न	मो	हे	जा	ने	दो	ऽ
2				0				3				X			
सारे	म	प	ध	सां	–	सां	नि	ध	म़	म	म	मप	ग	साग	रेग
जाने	दो	जा	ने	दो	ऽ	ऽ	पै	ऽ	यां	ऽ	प	रुंऽ	ऽ	तोऽ	ऽ
2				**0**				**3**				**X**			
सानि	ध़सा	साग	रे	नि	–	ध़	नि	प़	ध़	सा	रे	ग	म	ग	–
रीऽ	रोऽ	कोऽ	न	गै	ऽ	ल	मो	ह	न	मो	हे	जा	ने	दो	ऽ
2				**0**				**3**				**X**			

अंतरा

निध	पम	प	ध	सां	–	सां	–	ध	सां	रें	गं	नि	नि	ध	प
मुऽ	रऽ	ली	ब	जा	ऽ	के	ऽ	मे	रो	म	न	ह	र	ली	नो
0				**3**				**X**				**2**			
–	सां	नि	ध	म	म	म	म	पग	ग	रे	ग	सा	ध़सा	साग	रे
ऽ	अ	ब	क	र	त	हो	मो	सोऽ	ब	र	जो	री	रोऽ	कोऽ	न
0				**3**				**X**				**2**			
नि	–	ध़	नि	प	ध़	सा	रे	ग	म	ग	–				
गै	ऽ	ल	मो	ह	न	मो	हे	जा	ने	दो	ऽ				
0				**3**				**X**				**2**			

राग–बैरागी भैरव (एकताल–द्रुत)

स्थायी– माँ शारदे जगत जननी,
सुरन की कृपा मोपे करदे वर दे।

अंतरा– निस दिन ध्यान धरत हूँ,
नाद ब्रह्म से झोली मेरी भर दे।

स्थायी

								सा	नि	नि	रे
								माँ	शा	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	
सा	सा	नि	प	नि	नि	सा	सा	सा	–	–	–
दे	ऽ	ज	ग	त	ज	न	नी	माँ	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	
सा	सा	सा	रे	म	–	रे	–	रे	सा	–	सा
सु	र	न	की	ऽ	कृ	पा	ऽ	ऽ	मो	ऽ	पे
X		0		2		0		3		4	
प	प	प	–	नि	रे	सा	सा	सा	नि	नि	रे
क	र	दे	ऽ	व	र	दे	ऽ	माँ	शा	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	

अंतरा

म	प	नि	नि	सां	–	सां	सां	नि	रें	सां	सां
नि	स	दि	न	ध्या	ऽ	न	ध	र	त	हूँ	ऽ
X		0		2		0		3		4	
रें	–	रें	रें	रे	रे	रे	रे	म	म	पनि	पम
ना	ऽ	द	ब्र	ऽ	ह्म	से	ऽ	झो	ऽ	लीऽ	ऽऽ
X		0		2		0		3		4	
रे	–	सा	सा	नि	रे	सा	सा				
मे	ऽ	री	ऽ	भ	र	दे	ऽ				
X		0		2		0		3		4	

राग भटियार (त्रिताल—मध्यलय)

स्थायी— आयो प्रभात सब मिल गाओ
बजाओ नाचो हरि को रिझाओ।

अंतरा— पंछी पखेरुवा करत किलोरी,
डरियन डरियन डरियन पर,
'रामदास' निरखत बगिया,
मन अतही सुख पायो, सब मिल गाओ।

स्थायी

											सा	–	ध	ध	म
											आ	ऽ	यो	ऽ	प्र
												3			
प	प	प	ग	ग	प	ध	प	गरे̱	रे̱	सा	सा	रे̱	रे̱	सा	सा
भा	ऽ	ऽ	त	स	ब	मि	ल	गाऽ	ऽ	ओ	ब	जा	ऽ	ओ	ऽ
X				**2**				**0**				**3**			
म	–	म	मग	प	ध	नि	ध	प	म	म	सा	–	ध	ध	म
ना	ऽ	चो	ऽऽ	ह	रि	को	रि	झा	ऽ	ओ	आ	ऽ	यो	ऽ	प्र
X				**2**				**0**				**3**			

अंतरा

											म॑	म॑	ध	–	ध
											पं	ऽ	छी	ऽ	प
X				**2**				**0**				**3**			
सां	–	सां	सां	सां	सां	सां	नि	रें̱	–	सां	नि	निरें̱	नि	ध	प
खे	रु	वा	ऽ	क	र	त	कि	लो	ऽ	री	ड	रिऽ	य	न	ड
X				**2**				**0**				**3**			
धनि	ध	प	म	पध	प	म	म	प	–	सा	–	सा	ध	–	ध
रिऽ	य	न	ड	रिऽ	य	न	ऽ	प	र	रा	ऽ	म	दा	ऽ	स
X				**2**				**0**				**3**			
ध	ध	ध	ध	म	म	प	–	म॑	म॑	ध	नि	रें̱	रें̱	नि	ध
नि	र	ख	त	ब	गि	या	ऽ	म	न	अ	त	ही	ऽ	सु	ख
X				**2**				**0**				**3**			
प	धनि	ध	प	ग	प	ध	प	गरे̱	रे̱	सा	सा	–	ध	ध	म
पा	ऽऽ	ऽ	यो	स	ब	मि	ल	गाऽ	ऽ	ओ	आ	ऽ	यो	ऽ	प्र
X				**2**				**0**				**3**			

राग हमीर (झपताल–मध्यलय)

स्थायी– ब्रह्म को संगीत रूप मान गुनीजन
स्वर रूप लय भक्ति ज्ञान गुनीजन।

अंतरा– शारद नारद शिव समेत, ब्रह्मादिक
करत नित गान, धर ध्यान गुनिजन।

स्थायी

							प	ग	म
							ब्र	ऽ	ह्म
							3		
ध	ध	नि	नि	नि	–	निध	धनि	सां	–
को	ऽ	सं	ऽ	गी	ऽ	तऽ	रूऽ	ऽ	प
X		2			0		3		
नि	नि	प	म॑	प	ध	प	ग	ग	म
मा	ऽ	न	गु	नी	ज	न	ब्र	ऽ	ह्म
X		2			0		3		
ग	ग	ग	म	रे	ग	म	ध	–	प
स्व	र	रू	ऽ	प	ल	य	भ	ऽ	क्ति
X		2			0		3		
ग	म	रे	सा	सा	ध	प	ग	–	म
ज्ञा	ऽ	न	गु	नि	ज	न	ब्र	ऽ	ह्म
X		2			0		3		

अंतरा

प	प	निध	नि	सां	–	सां	सां	–	सां
शा	ऽ	रऽ	द	ना	ऽ	र	द	ऽ	ऽ
X		2			0		3		
प	प	निध	नि	सां	–	सां	सां	सां	गं
शा	ऽ	रऽ	द	ना	ऽ	र	द	शि	व
X		2			0		3		
गं	मं	रें	–	सां	सां	–	नि	–	प
स	मे	ऽ	त	ऽ	ब्र	ऽ	ह्मा	दि	क
X		2			0		3		
नि	नि	निध	नि	नि	सां	–	सां	रेंसां	नि
क	र	तऽ	नि	त	गा	ऽ	न	धऽ	र
X		2			0		3		
नि	नि	प	म॑	प	ध	प	ग	–	म
ध्या	ऽ	न	गु	नी	ज	न	ब्र	ऽ	ह्म
X		2			0		3		

शब्द रचना – पं. किशन महाराज जी
स्वर रचना– पं. राजन साजन मिश्र जी

3.3 उपशास्त्रीय गायन एवं भक्ति संगीत

बनारस की आबोहवा में संगीत की शास्त्रीय के साथ–साथ सभी उपशास्त्रीय विधाओं का भरपूर विकास हुआ है। यहाँ के कलाकारों ने ठुमरी को अभिनव रूप में पुष्पित, पल्लवित कर उसकी महक को संपूर्ण विश्व में फैला दिया और साथ ही लोकसंगीत से जुड़ी अन्य गायन शैलियाँ जैसे दादरा, कजरी, चैती, बारहमासा आदि को भी उपशास्त्रीय संगीत की परिधि में लाकर प्रतिष्ठित कर दिया। बनारस एवं आसपास के क्षेत्रों में गायी जाने वाली ठुमरी वहाँ की शैलीगत विशेषतओं से आबद्ध होकर पूरब अंग की ठुमरी कहलायी। बनारस का नाम आते ही वहाँ की संस्कृति एवं लोकजीवन से जुड़ी सभी सांगीतिक विधाओं का संपूर्ण चित्र मन मस्तिष्क पर अंकित हो जाता है। यद्यपि प्राचीनकाल से गायन की सभी विधाओं का यहाँ पर समान रूप से विकास हुआ है किन्तु संयोगवश यहाँ का उपशास्त्रीय संगीत अधिक प्रचारित होने के कारण शास्त्रीय गायन की मूल विधाओं के प्रति काशी के योगदान को संगीत जगत द्वारा विस्मृत किया जाने लगा और बनारस घराने पर ठुमरी–दादरा की छाप लग गई। जनमानस में धीरे–धीरे यह धारणा बनने लगी कि बनारस में उपशास्त्रीय संगीत ही मुख्यतः गाया बजाया जाता है जबकि इतिहास गवाह है कि बनारस में छन्द गान, निबद्ध गान, प्रबन्ध गान से लेकर सभी शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय विधाओं के गायन वादन की परंपरा रही है।

पं. राजन साजन मिश्र जी के संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि आपने गायन के अंतर्गत मुख्यतः ख्याल, टप्पा, तराना एवं भजन इन चार शैलियों को सम्मिलित किया है। उपशास्त्रीय संगीत को प्रमुखता से सम्मिलित न किए जाने के पक्ष में पं. राजन मिश्र जी का मत है कि ''हम लोग ठुमरी इसलिए नहीं गाते हैं कि हम बनारस के हैं। बनारस घराने पर ठुमरी का ठप्पा लगा दिया लोगों ने कि वहाँ सिर्फ ठुमरी ही गाया जाता है। उस ठप्पे को ज़रा मिटाने के लिए हम लोगों ने सिर्फ ख्याल, तराना, टप्पा और भजन सिर्फ चार चीज़ों को रखा। वैसे कभी–कभी मन बहलाने के लिए ठुमरी भी गा लेते हैं।[1]

आपके द्वारा सामान्यतः ठुमरी न गाये जाने हेतु उठाया गया कदम बनारस घराने को प्रमुख शास्त्रीय संगीत के घराने के रूप में पुनः स्थापित एवं मान्य करने की दिशा में किया गया सराहनीय एवं समर्पित प्रयास है। आपने सम्पूर्ण विश्व में इस बात को प्रमाणित किया है कि बनारस घराना सिर्फ ठुमरी–दादरा का ही घराना नहीं है यहाँ ख्याल गायन की परंपरा भी उतनी ही प्राचीन एवं सुदृढ़ है।

आप दोनों भ्राता प्रायः उपशास्त्रीय संगीत नहीं गाते हैं लेकिन उसे गाने से परहेज भी नहीं है। आप उपशास्त्रीय संगीत भी उतने ही है कुशलतापूर्वक, भावपूर्ण एवं हृदयस्पर्शी

[1] पं. राजन मिश्र – वृंदावन गुरुकुल, ''अनुभव बैठक'' (you.tube)

ढ़ंग से प्रस्तुत करते हैं। वर्ष 1991 में एच.एम.वी. द्वारा जारी कैसेट "A MARVEL IN MUSICAL PARTNERSHIP" के अंतर्गत आपके द्वारा एक ठुमरी एवं एक चैती प्रस्तुत की गई है। इस रिकॉर्ड में ख्याल, तराना, टप्पा, ठुमरी, चैती आदि सभी शैलियों के गायन के कारण यह आपके चारों पट की गायकी में दक्षता का प्रमाण देती है। इस रिकॉर्ड में आपके द्वारा गाई ठुमरी ''जाग परी मैं तो पिया के जगाये'', (राग–माँझ खमाज) एवं चैती ''सैजिया से सैयां उठ जागे हो रामा'' के साथ–साथ टप्पा एवं तराने के बेजोड़ प्रस्तुतीकरण ने आपकी बनारसी शैली से ओत प्रोत मधुकरी गायकी को संपूर्ण संगीत जगत में अपार प्रशंसा दिलायी। आपने इस रिकॉर्ड में यह प्रमाणित किया कि शास्त्रीय गायन के साथ–साथ उपशास्त्रीय गायन भी आप उतने ही प्रभावशाली, मनमोहक एवं हृदयग्राही स्वरूप में प्रस्तुत करते हैं। बाद में भी यदा कदा कुछ सी डी एवं इन्टरनेट पर उपलब्ध रिकॉर्डिंग्स में आपने उपशास्त्रीय संगीत गाया है। टाइम्स म्यूज़िक द्वारा जारी सी डी संग्रह ''भैरव से भैरवी तक'' के वोल्यूम–4 की पहली सी डी में आपने बंदिश की ठुमरी राग खमाज एवं मिश्र काफी पर आधारित प्रस्तुत की है। वोल्यूम–4 की दूसरी सी डी में आपने उपशास्त्रीय संगीत के अंतर्गत राग मिश्र पहाड़ी पर आधारित ठुमरी, राग मिश्र पीलू पर आधारित कजरी, राग मिश्र मांड पर आधारित दादरा एवं राग मिश्र भैरवी पर आधारित दादरा की मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी है।

इन्टरनेट पर उपलब्ध उपशास्त्रीय संगीत की वीडियो रिकॉर्डिंग्स में लंदन में गाई गई मिश्र खमाज में ठुमरी '' अरे जाओ मोरी बैयां ना मरोड़ो गिरधारी'' पुणे के एक कार्यक्रम में राग मिश्र भैरवी में गाई ठुमरी ''नाहक लागे गवनवा'' स्व. गिरिजा देवी जी की स्मृति में इंदौर में आयोजित कार्यक्रम में तिलंग में गाई ठुमरी ''दीज्यो मोहे नई चुनरी मँगाय बलमवा'' के अतिरिक्त बनारस के एक कार्यक्रम में प्रस्तुत किया गया दादरा ''जिया में लागे आन बान'' को सुनकर आपके चारों पट की गायकी में निष्णात होने एवं बनारस घराने के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में प्रमाण मिलता है।

आप दोनों भ्राताओं ने युगल गायकी का बनारस की समृद्ध परंपराओं से सिंचन कर उसे चरमोत्कर्ष पर पहुँचाकर देश के महान् गायकों में अपना स्थान बना लिया है। बनारस ही नहीं संपूर्ण भारत भूमि को आप जैसे विद्वान एवं महान् कलाकारों पर गर्व है।

भक्ति संगीत

शास्त्रों में लिखा है कि ''भजनस्य लक्षणं रसनम्'' अर्थात् अन्तरात्मा का रस जिसमें उभरे, उसका नाम है भजन यानि हृदय में जो आनन्द, वस्तु, व्यक्ति या भोग सामग्री के बिना भी आता है, वही भजन का रस है।[1]

---

1 https://m.khaskhabar.com (May 16, 2019)

वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक संगीत हमारी उपासना पद्धति का प्रमुख अंग रहा है। भक्ति संगीत परमात्मा की दिव्य शक्ति की अनुभूति का श्रेष्ठतम् माध्यम है। मनुष्य प्राचीनकाल से भक्ति संगीत के विविध प्रकार कीर्तन, संकीर्तन, भजन एवं हरिकथा आदि द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आराधना करता आया है। भारतीय संगीत में ईश्वर एवं प्रकृति के स्वरूप का दिग्दर्शन होता है। भजन आत्मा से परमात्मा की ओर उन्मुख होने एवं सर्वशक्तिमान की अनुभूति का श्रेष्ठतम् माध्यम है। मंदिरों एवं मठों में भक्ति संगीत के माध्यम से हमारे संगीत को संरक्षण मिलता रहा है। इस दिशा में भक्तिकाल के संत कवि एवं गायक सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, नानक, एवं रसखान आदि का योगदान उल्लेखनीय एवं वन्दनीय है।

वर्तमान युग में शास्त्रीय गायकों द्वारा भजन गायन की विस्तृत परंपरा रही है। इस परंपरा में पं. डी.वी. पलुस्कर, पं. ओंकार नाथ ठाकुर जैसे गायकों से लेकर पं. भीमसेन जोशी, पं. कुमार गंधर्व, पं. जसराज, विदुषी किशोरी अमोनकर एवं पं. राजन साजन मिश्र जैसे अनेक प्रतिष्ठित एवं स्थापित ख्याल गायकों ने भजन गायन के क्षेत्र में संगीतानुरागियों एवं धर्मप्रेमियों का आत्मानुरंजन कर अपार ख्याति अर्जित की। शास्त्रीय शैली में गाए गए भजन व्यवसायिक मानसिकता से परे होने के कारण इनमें आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है।

पं. राजन साजन मिश्र ने ख्याल के साथ–साथ भजन में भी विशेष लोकप्रियता अर्जित की। भजन गायन के क्षेत्र में भी पं. राजन साजन मिश्र के एलबम अनेक नामी कम्पनियों द्वारा जारी किए गए। इनमें म्यूज़िक टुडे, बी.एम.जी, ई.एम.आई, म्यूज़िक इण्डिया, टाइम्स म्यूज़िक आदि के द्वारा जारी एलबम प्रमुख हैं। म्यूज़िक टुडे द्वारा जारी किए गए भजन संग्रह भक्तिमाला के अंतर्गत भगवान शिव, भगवान राम एवं हनुमानजी पर आधारित भजनों ने आपको भजन गायकी के क्षेत्र में शिखर पर स्थापित कर दिया। भगवान शिव की राग शंकरा में निबद्ध स्तुति ''जय शिवशंकर जय करूणाकर'', राग बैरागी भैरव में ''शीश गंग अर्धंग पावर्ती एवं राग गुणकली में ''डमरु हर कर बाजे'' जैसे उत्कृष्ट कोटि के भजनों ने संगीत के प्रबुद्ध श्रोताओं को रस विभोर कर दिया। आपने म्यूज़िक टुडे के एक अन्य एलबम में श्रीराम स्तुति के अंतर्गत तुलसीदास जी द्वारा रचित पद ''जागीये रघुनाथ कुँवर'' को राग ललित में संगीतबद्ध कर अनुपम प्रस्तुति द्वारा भगवान श्री राम के अलौकिक स्वरूप के दर्शन करवाए। इसी एलबम में तुलसीदास जी रचित पद ''जननी मैं न जिऊँ बिन राम'' एवं श्रीराम स्तुति ''श्रीरामचन्द्र कृपालु भजमन'' को आपने अत्यंत हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक ढ़ंग से प्रस्तुत कर गुणीजनों से खूब दाद पायी।

पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र की भजन गायकी का यह सिलसिला निरन्तर जारी रहा। विभिन्न कम्पनियों द्वारा उनके जारी किए गए एलबम का विवरण यहाँ प्रस्तुत है:–

CDS & ALBUMS OF BHAJANS

(1) म्यूज़िक टुडे (D9 2003 STEREO)

"Bhaktimala" Shiva - Vol. I

Rajan & Sajan Mishra / Shruti Sadolikar

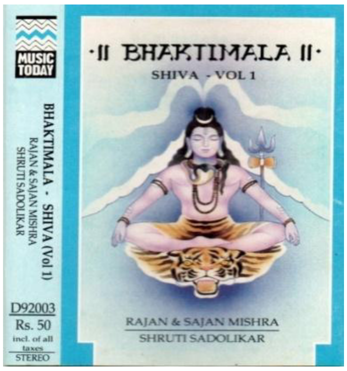

साइड ए–

1. जय शिवशंकर जय गंगाधर (पारंपरिक स्तुति)
2. कर्पूर गौरम् करुणावतारम् एवं शीश गंग अर्धंग पार्वती (पारंपरिक भजन)
3. डमरू हर कर बाजे (पारंपरिक भजन)

संगीत – पं. राजन मिश्र

साइड बी–

स्तुतियाँ एवं स्तोत्र (श्रुति साडोलिकर)

(2) Sankat Mochan Hanuman

Sacred Morning Mantras

(Label: Music Today, Released on Jan. 10, 2006)

(Album by Pt. Jasraj, Pt. Rajan Sajan Mishra and Sh. Suresh Wadekar)

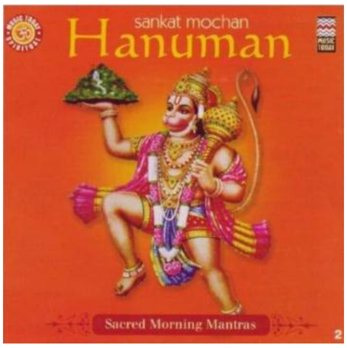

(1) Hanuman Gayatri

(2) Shri Hanuman Chalisa

(3) Sankatmochan Hanumanashtak

(4) Stuti- Nath Pavansut

(5) Mangal Murat Marut Nandan

(6) Aarti Kijai Hanuman Lala Ki[1]

(3) Bhaktimala - Ganesh (Vol. 1) : Pt. Rajan Sajan Mishra

Lable- Music Today, Released-1991

B1- Gayeeye Ganpati Jag Vandan

B2- Vighna Haran Gajvadan

---

1 https://www.google.co.in

(4) BMG (SOPRANO / 40109)

"Kripa Karo Shri Krishna Shri Ram" Bhajan

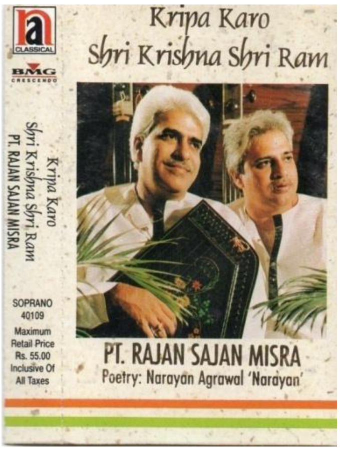

साइड ए–
1. अब कृपा करो श्रीराम
2. चलो मन वृन्दावन की ओर

साइड बी–
1. कृष्ण कृष्ण काहे ना बोले
2. श्रीराम हैं सब वेद उद्‌गम

बाँसुरी– पं. रोनू मजूमदार,
तबला – ओंकार गुलवाड़ी
पखावज– सदानन्द नैमपल्ली,
हारमोनियम – विनय पाठक
तानपूरा– विलास पेंढारकर
संगीत– पं. राजन साजन मिश्र,
भजन रचनाकार– नारायण अग्रवाल 'नारायण'
रिकॉर्डिंग वर्ष–1996

(5) Tirth - Kashi

Label : Music Today Cat. D96001 / Format- Cassettee, Album

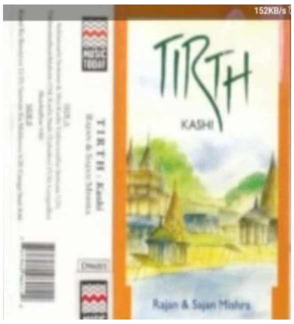

A1. Excerpts from Ashtamurti Stotram & Shri Kashi Vishwanath Stotram
A2. Excerpts from Vishwanathaashtakam
A3. Kashi Stuti
B1. Kashi Ke Basaiyiya
B2. Saawan Ka Mahinwa
B3. Ganga Stuti[1]

(6) Tan Man Aatma Pavitrikaran

(Released by Times Music Jan. 01, 2013)

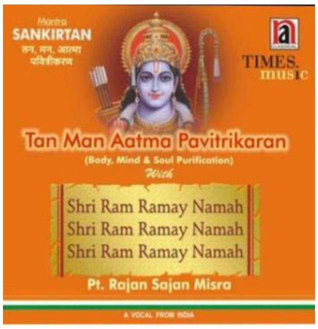

(1) Shri Ram Ramay Namah

(2) Om Namah shivay [2]

---

[1] https://www.discogs

[2] http: //gaana. com

(7) BHOR KI BELA

(Released by Times Music on May 10, 2014 - 4 Tracks)

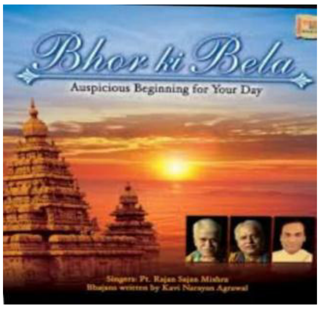

(1) Bhor Ki Bela
(2) Nandlal Brijpaal Lal Ki
(3) Maila Tan Hai Maila Man Hai
(4) Ram Se Anurag Kariye[1]

(8) Album : Rajan & Sajan Mishra, Veena Sahasrabuddhe

Bhaktimala-Rama (Vol. 2)

Label : Music Today, Cat : D92008, D92008, Year : 1991

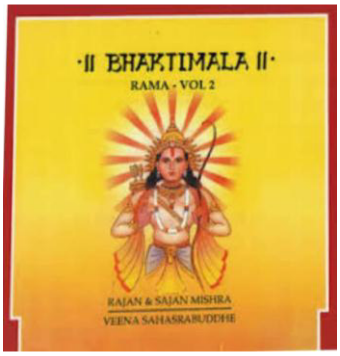

Pt. Rajan Sajan Mishra

(1) Aadi Deva Namastubhyam
(2) Jaagiye Raghunath Kunwar
(3) Janani Main Na Jeeyun Bin Rama
(4) Nilambhuj Shyamal Komalagam.
(5) Shri Ramchandra Kripalu Bhajman[2]

(9) MANGAL DEEP

(Label: Music Today, Released in 2006)

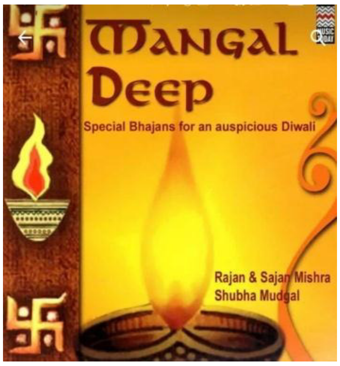

(1) Shri Ganapati Gajanan
(2) Ghar Ghar Aangan Hot Badhayi
(3) Dhanteras Din Aayi Sukhdai
(4) Maanat Parv Diwari Kau Sukh
(5) Aaj Diwari Mangalchaar
(6) Deepmaan Shobhit Bhavanan Par
(7) Aaj Dipat Divya Deepmalika [3]

---

1 https://gaana. com/album/bhor ki bela
2 https : //www. discogs. com
3 https://www.google.co.in

(10) Great Saints of India by Pt. Rajan Sajan Mishra

(Released by EMI Music India on Jan 08, 2012-6 Tracks,

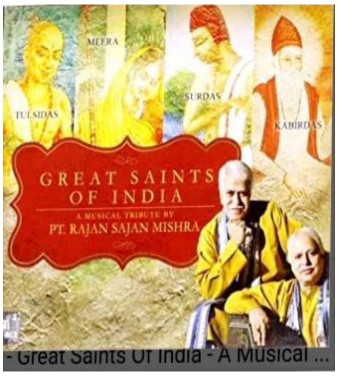

(1) Bhajo Re Man

(2) Chalo Man Ganga Jamuna Teer

(3) Re Man Moorakh

(4) Tu Dayal Deen Ho

(5) Rana ji Main Toh

(6) Prabhu More

Lyricists-Tulsidas, Meera, Surdas, Kabir[1]

(11) KABIR

(Released by Times Music on Nov 11, 2016 - 4 Tracks)

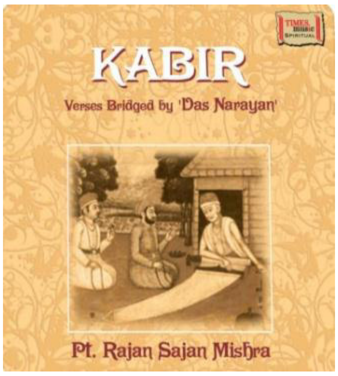

(1) Jab Me Tha Tab Hari Nahin

(2) Are Man Dheeraj Kahe Na Dhare

(3) Bura Jo khojan Mei Gaya

(4) Mala Pheri Tilak Lagaye [2]

(13) Shree Ram- Meditation & Chanting

(Released by Times music on Jan. 01, 2013)

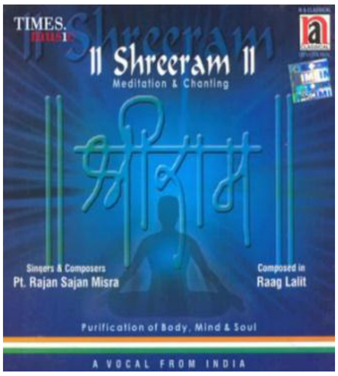

(1) Raag Lalit 1

(2) Raag Lalit 2 [3]

---

1 https: // gaana. com/album/great samts of India

2 https://gaana. com

3 https:// gaana. com

(14) Chants of Moksha

(Release by Free Spirit on Jan 8, 2016 - 3 Tracks)

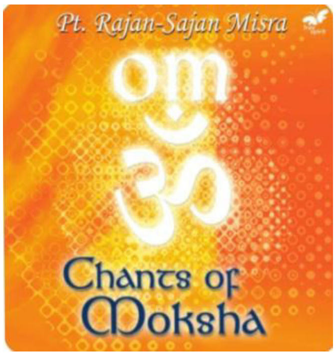

(1) Om Evolution (A- Swar)

(2) Om Existence (U - Laya)

(3) Om Celebration (Ma -Taal) [1]

(15) Chants of Shiva

(Om Namah Shivay Chanting of Shiva Mool Mantra)

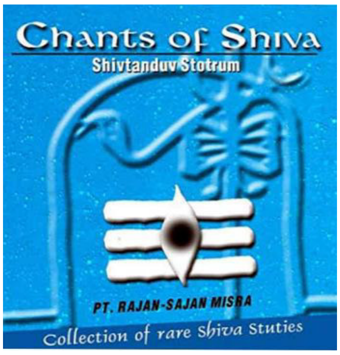

Label : Free Spirit (MP3)

Release date ; July 30, 2013[2]

(16) Krishnaseva (Music Today) Vol. - I & II

(Shri Nath Ji ke Ashtchhap Kirtan - Haveli Sangeet)

Pt. Rajan Sajan Mishra

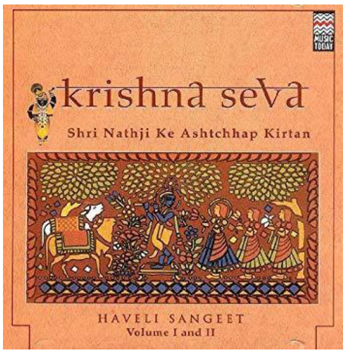

(1) Mangal Aarti

(2) Biri Naval

(3) Sir Dhare Pakhauva

(4) Birajata Banmaalaju

(5) Mohanlal Biyaru[3]

---

1 https:// gaana.com

2 http://www.google.co.in

3 https://www.youtube.com/channel/UCx2u...

(16) Chants of Surya - Surya Upnishad

(Pt. Rajan Sajan Mishra)

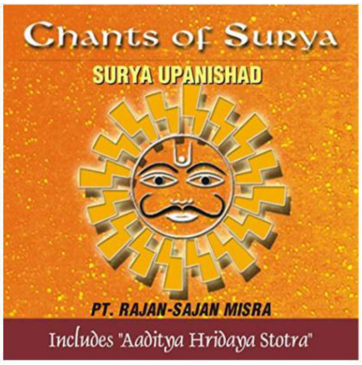

(1) Suryashtkam

(2) Surya Mahima

(3) Aditya Hridaya Stotra

(4) Shri Surya Kirtan[1]

3.4 फ़िल्म में पार्श्वगायन एवं संगीत निर्देशन

भारतीय शास्त्रीय संगीत से जुड़े ख्यातनाम कलाकारों ने फ़िल्म संगीत को समृद्ध बनाने की दिशा में अहम भूमिका निभाई है। देश के वरिष्ठ एवं शीर्षस्थ शास्त्रीय गायक उस्ताद अमीर खाँ, उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ, पं. भीमसेन जोशी जैसे बड़े कलाकारों ने फ़िल्म संगीत के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को जनसामान्य में लोकप्रिय बनाने की दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। इसी शृंखला में पं. राजन साजन जी मिश्र को युवावस्था में वर्ष 1985 में निर्मित चलचित्र 'सुर संगम' में पार्श्वगायन का दायित्व मिला। उल्लेखनीय है कि 'सुर संगम' फ़िल्म को दक्षिण भारतीय भाषा में निर्मित चलचित्र 'शंकराभरणम्' की पटकथा के आधार पर तैयार किया गया था। पार्श्वगायन के क्षेत्र में 'सुर संगम' से मिली अपार सफलता ने आपको सम्पूर्ण विश्व में लोकप्रिय बना दिया। फ़िल्म संगीत के क्षेत्र में आपके योगदान के विषय में आपने चर्चा में बताया कि ''हमने दो फ़िल्मों में गाया था। एक तो 'सुर संगम' जिसमें हमने लगभग पूरा फ़िल्म गाया था। वह सभी गाने काफी लोकप्रिय हुए। फ़िल्म उतनी ज़्यादा रिलीज़ नहीं हो पाई क्योंकि फ़िल्म के निर्माता, निर्देशक और वितरक में कुछ विवाद हो गया था, लेकिन गाने पूरे विश्व में काफी पॉपुलर हुए। दूसरी फ़िल्म थी 'वो तेरा नाम था' इसमें भी 6–7 साल पहले अमरीशपुरी जी के लिए गाना गाया था।''[2]

सुर संगम संगीत की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट कोटि की फ़िल्म थी। संगीत निर्देशक लक्ष्मीकांत प्यारेलाल जी के कुशल निर्देशन में निर्मित इस फ़िल्म के सभी गीतों ने श्रोताओं के हृदयतल पर अमिट छाप छोड़ी। इस फ़िल्म में विविध राग–रागिनियाँ जैसे भूपाली, सोहनी, मालकौंस, भटियार, कलावती, कीरवानी, भैरवी आदि का सुंदर, प्रसंगानुरूप एवं

---

[1] http://www.google.co.in

[2] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

भावपूर्ण प्रयोग किया गया। मनमोहक एवं हृदयस्पर्शी धुनों के साथ पं. राजन साजन मिश्र की गायकी को न्याय संगत रूप में प्रस्तुत करना इस फिल्म की बहुत बड़ी विशेषता रही है।

वर्ष 2004 में रिलीज़ हुई फिल्म "वो तेरा नाम था" में गायी गयी राग भैरवी में निबद्ध ठुमरी 'बाजूबंद खुल खुल जाए' और इसी के साथ 'अब मौसे रार क्यूँ मचाई' की भावपूर्ण प्रस्तुति ने भी गुणी श्रोताओं से खूब दाद पायी।

फिल्मों के अतिरिक्त आपके स्वयं के भक्ति संगीत के अधिकांश एलबम में संगीत निर्देशक की भूमिका आपके स्वयं के द्वारा निभाई गई है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि फिल्म संगीत के माध्यम से पं. राजन साजन मिश्र ने भारतीय संगीत को अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान की हैं।

Sur Sangam (1985) Songs Lyrics

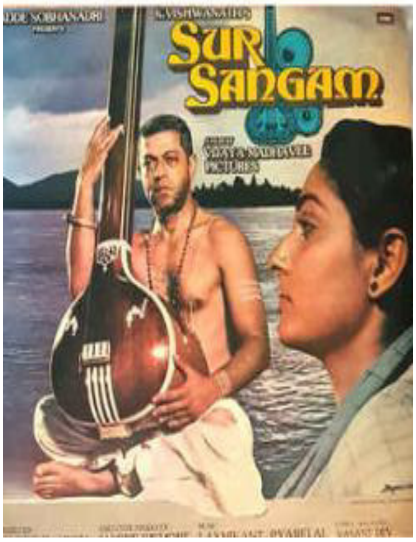

Starring : Girish Karnad, Jayapradha, Sachin

Director : K. Vishwanath

Producer : Vadde Ramesh

Music Director : Laxmikant Shantaram Kudalkar

(Laxmikant Pyarelal)

Pyarelal Ramprasad Sharma

(Laxmikant Pyarelal)

Lyricists : Vasant Dev

Composer : Laxmikant Pyarelal

Released on : 11 September, 1985

1 Sur Ka Hai Sopaan Surila

by Rajan Mishra, Sajan Mishra, Kavita Krishnamurthy

2 Saadhre Man Sur Ko Saadhre

by Rajan Mishra, Sajan Mishra

3 Aaye Sur Ke Panchhi aaye

by Rajan Mishra, Sajan Mishra

4 Aayo Prabhat Sab Mil Gao

by Rajan Mishra, Sajan Mishra, S. Janki

5 Sadho Aisa Hi Guru Bhaave

by Rajan Mishra, Sajan Mishra, Anuradha Paudwal

6 Hey Shiv Shankar Hey Karunakar

by Rajan Mishra, Sajan Mishra

7 Maika Piya Bulave

by Lata Mangeshkar, Suresh Wadkar

8 Prabhu More Avagun

by S. Janki

9 Jau Tore Charan Kamal

by Lata Mangeshkar, Rajan Mishra, Sajan Mishra

10 Dhanya Bhag Seva Ka Avsar Paya

by Rajan Mishra, Sajan Mishr, Kavita Krishanmurthy[1]

विगत 40—50 वर्षों से पं. राजन साजन जी मिश्र शास्त्रीय गायकी के क्षेत्र में लोकप्रियता के शिखर पर आसीन हैं। राग रागिनियों के प्रस्तुतीकरण एवं अभिनव दृष्टिकोण द्वारा आपने संगीत रसिको एवं मर्मज्ञों का आत्मानुरंजन किया है। आपकी गायकी में जहाँ बनारस घराने की आत्मा बसती है वहीं सभी दिग्गज एंव मूर्धन्य कलाकारों की गायकी की विशेषताओं के दिग्दर्शन होते हैं। अतः आपकी गायकी में सभी घरानों की विशेषताओं का समावेश होने के कारण इसे आदर्श गायकी कहना उचित होगा।

आपके द्वारा विभिन्न रिकॉर्डिंग कंपनियों के माध्यम से संग्रहित एवं संरक्षित भारतीय शास्त्रीय संगीत की ख्याल, तराना, टप्पा, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत का संकलन भारतीय संगीत की अनमोल धरोहर हैं। पं. राजन साजन जी मिश्र के व्यक्तित्व निर्माण में बनारस (काशी) के योगदान का स्मरण करना अत्यंत आवश्यक है।

पं. राजन साजन जी मिश्र की जन्मभूमि बनारस है और यहीं आपका लालन—पालन और शिक्षा—दीक्षा हुई है। बनारस प्राचीन काल से धर्म एवं संगीत का प्रमुख केन्द्र रहा है

---

[1] http://www.discogs.com & https://www.lyricsbogie.com>movies

अतः यहाँ के कण–कण में संगीत व्याप्त है। किसी क्षेत्र की प्राकृतिक, भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, कला एवं कलाकारों के विकास में प्रमुख भूमिका निभाती है। बनारस का वातावरण संगीत के अनुकूल होने के कारण यहाँ सदैव संगीत पल्लवित एवं पुष्पित हुआ है। कहते हैं बनारस की आबोहवा में संगीत घुला हुआ है। गंगा की लहरें और काशी विश्वनाथ के आश्रय में फले–फूले यहाँ के मधुर संगीत ने इसे भारत की सांस्कृतिक राजधानी होने का गौरव प्रदान किया है। यूनेस्को द्वारा वाराणसी को **"Cities of Music"** की श्रेणी में स्थान दिया गया है।

अतः बनारस की पृष्ठभूमि का विविध संदर्भों में अध्ययन अवश्यम्भावी है। यहाँ की संगीत परम्पराओं और बनारस घराने का पं. राजन साजन जी मिश्र के परिप्रेक्ष्य में विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण द्वारा संपूर्ण तथ्यों का विवेचन संभव है।

***

चतुर्थ अध्याय

बनारस की सांगीतिक परंपरा

चतुर्थ अध्याय

बनारस की सांगीतिक परंपरा

युगों–युगों से काशी की पावन भूमि सांस्कृतिक वैभव एवं समृद्धि का प्रतीक रही है। प्राचीनकाल से स्थापित एवं प्रवाहित सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं के अभिसिंचन, निर्वहन एवं उनकी अभिवृद्धि के साथ उन्हें शीर्ष पर प्रतिष्ठित करने में अनेकानेक ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों, संतों, राजा–महाराजाओं, साधक कलाकारों एवं प्रबुद्धजनों का पुष्ट योगदान रहा है। माँ गंगा के पावन तट पर स्थित बाबा विश्वनाथ की कृपापात्र काशी की गणना विश्व के महान नगरों में की जाती है। काशी को यह गौरव उसकी प्राचीन, मौलिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अस्मिता के कारण प्राप्त हैं। धर्म एवं संगीत का प्रगाढ़ संबंध रहा है अर्थात धर्म के आश्रय में यहाँ संगीत सदैव पल्लवित एवं पुष्पित होते हुए समाज में प्रतिष्ठित हुआ है। इतिहास साक्षी है कि भारतीय संगीत का श्रेष्ठतम् विकास प्रकृति, धर्म एवं संस्कृति के समन्वय से निर्मित अलौकिक वातावरण में हुआ है।

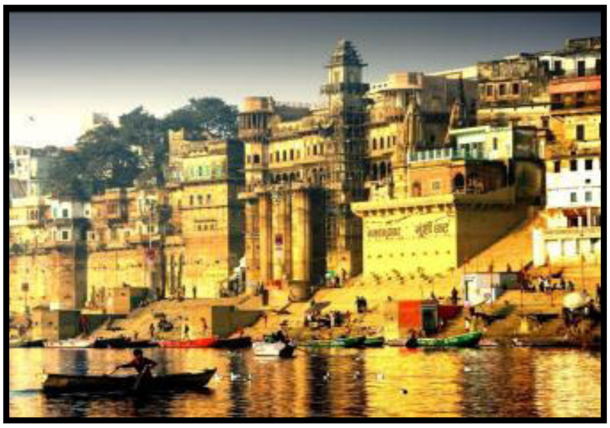

वाराणसी में गंगा नदी का विहंगम दृश्य

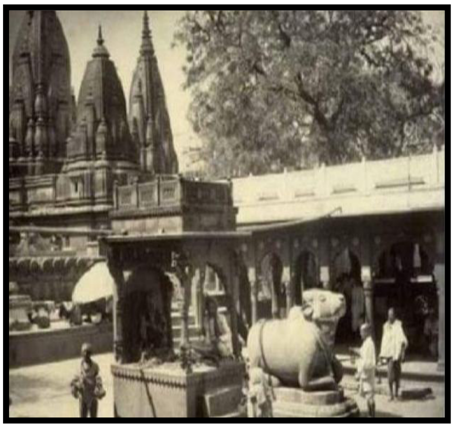

भगवान काशी विश्वनाथ का प्राचीन मंदिर

काशी वह स्थान है जहाँ प्रकृति प्रेरित करती है माँ गंगा के तट पर लहरों के साथ राग–रागिनी गाने को, जहाँ का धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण प्रेरित करता है मंदिरों में बजते घंटों एवं शंखों की ध्वनि के बीच वैदिक मंत्रोच्चारण करने को, सस्वर भगवत् गुणानुवाद करने को या कहें जहाँ के परिवेश में समाहित लोक संस्कृति प्रेरित करती है कजरी–चैती गुनगुनाने को। यहाँ पग–पग पर नगर के प्रमुख मंदिरों, देवालयों एवं आश्रमों में वर्ष पर्यन्त होने वाले विभिन्न उत्सवों एवं अन्य विशेष अवसरों पर गाने, बजाने एवं नाचने के कार्यक्रमों से यहाँ का श्रोता स्वयं को आनन्द से सराबोर करता रहा है। बनारस की

संस्कृति में रची बसी संगीत कला की विविध शास्त्रीय शैलियों में प्रबन्ध गान, ध्रुपद, धमार, ख्याल, टपख्याल, सादरा, चतुरंग, त्रिवट, तराना, टप्पा से लेकर ठुमरी, कजरी, चैती, दादरा, विरहा, होरी, भजन, ग़ज़ल आदि तक के गायन वादन की परंपरा रही है। यहाँ की आबोहवा में संगीत घुला है जो प्रेरित करता है सदियों से चली आ रही सांस्कृतिक परंपराओं को सदैव जीवित रखने एवं स्वर में ईश्वर को खोजने हेतु। किसी भी नगर विशेष की सांगीतिक परंपरा के अध्ययन से पूर्व वहाँ की ऐतिहासिक, भौगोलिक, राजनैतिक एवं सामाजिक स्थितियों का अवलोकन करना अत्यंत आवश्यक है।

4.1 बनारस की पृष्ठभूमि

''काशी और उसकी राजधानी वाराणसी का महत्त्व विशेष रूप से उसकी व्यापारिक और भौगोलिक स्थिति के कारण था। जब सरस्वती के किनारे से आर्यों का काफिला विदेध माधव के नेतृत्व में आधुनिक उत्तरप्रदेश के घने जंगलों को चीरता हुआ सदानीरा और गंडकी के किनारे जा पहुँचा और कोसल जनपद की नींव पड़ी, उसी समय संभवतः काश्यों ने बनारस में अपना अड्डा जमाया। अगर ध्यान देकर देखा जाय तो उनके यहाँ भू स्थापन का कारण वाराणसी की भौगोलिक स्थिति है। बनारस शहर अर्धचन्द्राकार में गंगा के बायें किनारे पर अवस्थित है।[1]

''इस नगर की रचना गंगा के किनारे है, जिसका विस्तार लगभग 5 मील में है। ऊँचाई पर बसे होने के कारण अधिकतर यह नगर बाढ़ की विभीषिका से सुरक्षित रहता है, परंतु नगर के मध्य तथा दक्षिणी भाग के निचले इलाके प्रभावित होते हैं। वाराणसी के धरातल की संरचना ठोस कंकड़ों से हुई है। आधुनिक राजघाट का चौरस मैदान जहाँ नदी नालों के कटाव नहीं मिलते, शहर बसाने के लिए उपयुक्त था। उत्तर में वरुणा और दक्षिण में अस्सी नाला है, उत्तर–पश्चिम की ओर यद्यपि ऐसा कोई प्राकृतिक साधन (पहाड़ियाँ, झील, नदी इत्यादि) नहीं है जिससे नगर की सुरक्षा हो सके, तथापि यह निश्चित है कि काशी के समीपवर्ती गहन वन, जिनका उल्लेख जातकों, जैन एवं पौराणिक ग्रंथों में आया है, काशी की सुरक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते रहे होंगे।''[2]

''आधुनिक मिर्जापुर जिले की विन्ध्याचल की पहाड़ियाँ भी बनारस के बचाव में महत्त्वपूर्ण थी। इतिहास में अनेक ऐसे प्रकरण हैं जिनसे पता लगता है कि शत्रुओं के धावों से त्रस्त होकर बनारस के शासक विंध्याचल की पहाड़ियों में जा छिपते और मौका मिलते

---

1 डॉ. मोतीचन्द्र : काशी का इतिहास पृ. सं. 1

2 डॉ. अशोक कुमार सिंह : उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर पृ. सं. 45

ही पुनः शत्रुओं को मार भगाते थे।[1] सुविदित है कि 'वाराणसी' शब्द 'वरुणा' और 'असी' दो नदीवाचक शब्दों के योग से बना है। पौराणिक अनुश्रुतियों के अनुसार वरुणा और असी नाम की नदियों के बीच में बसने के कारण ही इस नगर का नाम वाराणसी पड़ा। पद्मपुराण के एक उल्लेख के अनुसार दक्षिणोत्तर में वरना और पूर्व में असि की सीमा से घिरे होने के कारण इस नगर का नाम वाराणसी पड़ा। अथर्ववेद में वरणवती नदी का उल्लेख है। संभवतः यह आधुनिक वरुणा का ही समानार्थक है। अग्निपुराण में नासी नदी का उल्लेख मिलता है।[2]

मत्स्य पुराण में भगवान शिव वाराणसी का वर्णन करते हुए कहते हैं –

वाराणस्यां नदी पुण्या सिद्धगन्धर्वसेविता।
प्रविष्टा त्रिपथा गंगा तस्मिन् क्षेत्रे मम प्रिये।।

अर्थात– "हे प्रिये सिद्ध गंधर्वों से सेवित वाराणसी में जहाँ पुण्य नदी त्रिपथगा गंगा आती है, वह क्षेत्र मुझे प्रिय है।" यहाँ अस्सी का उल्लेख नहीं है।[3]

उक्त उद्धरणों की जाँच पड़ताल से यह पता चलता है कि वास्तव में नगर का नामकरण वरणासी पर बसने से हुआ। अस्सी और बरना के बीच में वाराणसी के बसने की कल्पना उस समय से उदय हुई जब नगर की धार्मिक महिमा बढ़ी और उसके साथ–साथ नगर के दक्षिण में आबादी बढ़ने से दक्षिण का भाग भी उसकी सीमा में आ गया।[4]

वरणा शब्द एक वृक्ष का भी द्योतक है। प्राचीन काल में वृक्षों के नाम पर भी नगरों के नाम पड़ते थे जैसे कोशंब से कोशांबी, रोहीत से रोहीतक इत्यादि। यह संभव है कि वाराणसी और वरणावती दोनों का ही नाम इस वृक्ष विशेष को लेकर ही पड़ा हो।[5]

वैदिक संहिता, ब्राह्मण एवं उपनिषदों में काशी का विवरण मिलता है। काशी धर्म और विद्या का केन्द्र है। ऋग्वेद में उल्लेख है–वशिष्ट ने कहा, हे! इन्द्र मैं सबके साथ पवित्र मन से व्यवहार करता हूँ। फिर भी मुझे झूठा दोष लगता है, वह झूठा दोष लगाने वाला दुष्ट वक्ता उसी तरह संपूर्ण समाप्त हो जाय, जैसे काशी प्राप्त जीवों के पाप कर्म समूल नष्ट हो जाते हैं। अथर्ववेद संहिता में भी यही उल्लेख मिलता है।[6]

---

1 डॉ. मोतीचन्द्र : काशी का इतिहास पृ. सं. 1
2 डॉ. अशोक कुमार सिंह : उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर पृ. सं. 45
3 डॉ. मोती चन्द्र : काशी का इतिहास पृ. सं. 3
4 वही, पृ. सं. 4
5 वही
6 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस पृ. सं. 34

''काशी देश की केवल प्राचीनतम सांस्कृतिक नगरी ही नहीं, अपितु धार्मिक एवं विद्यानगरी के रूप में भी आस्था का केन्द्र रही है। वैदिक साहित्य मे भी इस नगरी की प्राचीनता के इतिहास के सबल प्रमाण हैं। पैप्लाद शाखान्तर्गत अथर्ववेद के एक मंत्र (05–22–14) में काशी के बहुवचनान्त रूप (काशयः) का प्रयोग मिलता है, जिसका अभिप्राय काशी जनपद के निवासियों से है। इस मंत्र में 'तकमा' (ज्वर) को सम्बोधित करते हुए कोशल, काशि और विदेह जनपदों में जाने का निर्देश है, जिससे उस काल में इन तीनों जनपदों के पार्श्ववर्ती होने की सम्भावना को बल मिलता है। बाह्मण साहित्य में गोपथ ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण में एवं बृहदारण्यक उपनिषद् में काशिराज का स्पष्ट उल्लेख है। गोपथ ब्राह्मण में काशिकोशलाः का समस्तरूप में उल्लेख है। शतपथ ब्राह्मण में एक गाथा का वर्णन है– ''जिस प्रकार भरत ने सात्वत लोगों के साथ व्यवहार किया था, उसी प्रकार सत्राजित के पुत्र शतानीक ने काशि लोगों के यज्ञ के पवित्र अश्व को पकड़कर रख लिया था। इसी में धृतराष्ट्र एवं विचित्रवीर्य को एक वर्णन में काश्य (काशी का रहने वाला) कहा गया है। वृहदारण्यकोपनिषत् तथा कौषितकी उपनिषद् में काशिराज अजातशत्रु को ब्रह्मज्ञान देने के लिए गए अहंकारी बालाकि गार्ग्थ का वर्णन है। शतपथ ब्राह्मण में उद्धत शब्द काशिराज तथा काशयः काशिवासियों के लिए है।[1]

''अनेक ठोस प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि शतपथ ब्राह्मण के निर्माण काल से बहुत पूर्व ही काशी एक देश या जनपद का नाम था, जो इसी अर्थ में ई. पू. द्वितीय शताब्दी (पतंजलि के समय) तक उसी अर्थ में प्रयुक्त होता चला आया था। सुप्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान (399 ई. से 413 ई.) काशी राज्य के वाराणसी नगर में आया था, लगभग चौथी शताब्दी में काशी जनपद और वाराणसी राजधानी थी।''[2]

''पुराणों में काशी वंश के दो उद्गम दिए गए हैं। सात पुराणों (ब्रह्माण्ड, वायु इत्यादि) के अनुसार यह वंश अयु के पुत्र से आरम्भ हुआ, इस अनुश्रुति के अनुसार इस वंश के पहले चार राजा क्षत्रवृद्ध, सुनहोत्र, काश और दीर्घतपस्, हुए। ब्रह्म और हरिवंश पुराण इस वंश की भिन्न उत्पत्ति बतलाते हैं, जिसमें सुनहोत्र और पौरव वंश के सुहोत्र को एक ही बताया गया है। इस अनुश्रुति के अनुसार सुहोत्र वितथ का पुत्र था और इस प्रकार से काशी वंश की उत्पत्ति सुहोत्र पौरव से हुई। इस दूसरी अनुश्रुति के अनुसार इस वंश के प्रथम चार राजगण क्रमशः वितथ, सुहोत्र, काशिक और दीर्घतपस् हुए।''[3]

---

1 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 4

2 वही, पृ. सं. 5

3 पार्जिटर, इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशन 5.10.1, लंदन 1922

''वैदिक वाङ्मय के बाद पुराणों का स्थान आता है। इन्हें आगम धार भी कहते हैं। युगधर्म के अनुसार निगमागम में संचित ज्ञान को भगवान वेद व्यास ने सरल, सुबोध शैली में सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश मन्वन्तर और वंशानुचरित इन पंचलक्षणात्मक अष्टादश पुराण, उपपुराणों की रचना की। वास्तव में पुराण भारतीय ज्ञान के विश्वकोश हैं। भगवान वेदव्यास ने पुराणों की रचना की। रोमहर्षण नामक अपने शिष्य को पढ़ाया। आगे चलकर रोमहर्षण के पुत्र लोमहर्षण सूत ने नैमिषारण्य में शौनकादि चौरासी हजार शिष्यों को हजारों वर्षो तक पुराणों की कथा सुनाई। इसी नैमिषारण्य से पूरे संसार में पुराण वाड.मय का विस्तार हुआ। भगवान कृष्णद्वैपायन जिन्हें हम वेदव्यास के नाम से जानते हैं महाभारत और पुराण के रचयिता माने जाते हैं। ऐसी कथा है कि उत्तराखण्ड में सरस्वती नदी के तटवर्ती अपने आश्रम को छोड़कर वेदव्यास अपने सहस्रों शिष्यों के साथ काशी आये।''[1]

''पुराणों में वाराणसी की धार्मिक समृद्धि की चर्चा है। इस नगर को शिवपुरी के नाम से संबोधित किया गया है तथा इसकी गणना भारत की सात मोक्षदायिनी पुरियों में की गई है। शिवपुराण में वाराणसी को भारतवर्ष में स्थित प्रमुख बारह स्थानों में एक बताया गया है। मान्यता थी कि जो व्यक्ति प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर इन बारह नामों का पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है, और संपूर्ण सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है। ब्रह्मपुराण में शिव पार्वती से कहते हैं 'हे सुखवल्लभे, वरुणा और असी इन दोनों नदियों के बीच में ही वाराणसी क्षेत्र है और उससे बाहर किसी को नहीं बसना चाहिए। लोगों का ऐसा विश्वास था कि शिव भक्तों के वाराणसी में रहने के कारण लौकिक एवं पारलौकिक आनंद की प्राप्ति होती है। उल्लेखनीय है कि हेनसांग ने भी यहाँ निवास करने वाले शैव समर्थकों का उल्लेख किया है, जो लंबे केशों को धारण करते थे तथा शरीर पर भस्म लगाते थे। पुराणों में अनेक स्थलों पर ऐसा वर्णन मिलता है कि वाराणसी में जो निवास करता है उसके सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। पद्मपुराण, कर्मपुराण तथा लिंगपुराण में इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख है। चूँकि वाराणसी में गंगा नदी पश्चिम वाहिनी हो जाती है, संभवतः इसीलिए इस नगर की धार्मिक महत्ता बढ़ जाती है।''[2]

वाल्मीकि रामायण में काशी से संबंधित अनेक दृष्टांत प्राप्त होते हैं। चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के अश्वमेघ यज्ञ में काशिराज को भी आमंत्रित किया गया था। अयोध्याकाण्ड में कैकयी के कोप को शांत करने के लिए काशी में उत्पन्न वस्तुओं को प्रस्तुत करने का राजा

---

1 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 37

2 डॉ. अशोक कुमार सिंह : उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर, पृ. सं. 48, 49

दशरथ ने आदेश दिया था। किष्किन्धा काण्ड के वर्णन में सुग्रीव ने अपने दूत विनत को सीता की खोज के लिए काशी राज्य में भेजा था।[1]

''महाभारत में भी काशी–सम्बन्धी कुछ फुटकर बातें मिलती हैं। एक जगह कहा गया है कि काशिराज की पुत्री सार्वसेनी का विवाह भरत दौष्यन्त से हुआ था। भीष्म ने काशिराज की तीन पुत्रियों यथा अंबा, अंबिका और अंबालिका को स्वयंवर में अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए जीता (उद्योग पर्व, 172/94)। एक जगह काशिराज सुबाहु का भीष्म द्वारा जीते जाने का उल्लेख है (सभापर्व, अ. 30)। कहा गया है कि काशिराज युधिष्ठिर के मित्र थे और उन्होंने कुरूक्षेत्र के युद्ध में पांडवों की मदद की (उद्योग पर्व, अ. 72)।[2]

''व्यास की सतसाहस्त्री संहिता में काशी का उल्लेख दो प्रसंगों में हुआ है – (1) तीर्थ के रूप में, और (2) महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की ओर से लड़ने के प्रसंग में। रोचक है कि काशी का तीर्थरूप में वर्णन सबसे पहले महाभारत में ही हुआ है। वनपर्व में पाण्डवों के अज्ञातवास के अवसर पर उनके काशी आने का उल्लेख मिलता है। इसी पर्व में उल्लिखित है कि उस समय काशी में 'कपिलाहद' नामक तीर्थ बड़ा प्रसिद्ध था। यही तीर्थ आजकल कपिलधारा के नाम से विख्यात है और नगर के भीतर न होकर पंचकोशी के प्रदक्षिणा मार्ग में अवस्थित है।''[3]

जैन साहित्य में वाराणसी संबंधी विवरण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। ''जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र के रूप में काशी में ही चैत्र कृष्ण चतुर्थी को हुआ था। श्री पार्श्वनाथ जी जैनधर्म के अंतिम तीर्थंकर महावीर से 250 वर्ष पूर्व लगभग 777 ईसा पूर्व में पैदा हुए थे। जैन आगम ग्रन्थों में वर्तमान सारनाथ सिंहपुर के नाम से प्रसिद्ध है, जहाँ जैनधर्म के 11वें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ ने जन्म लेकर यहीं से अपने अहिंसाधर्म का प्रचार पूरे भारत में किया था। काशी के समीप प्राचीन इसिपत्तन ही वर्तमान सारनाथ के नाम से जैन–धर्मावलम्बियों के पवित्र तीर्थस्थल के रूप में विख्यात है।''[4]

''बौद्ध ग्रंथों में वाराणसी का उल्लेख काशी जनपद की राजधानी के रूप में हुआ है। बुद्ध पूर्व काल में काशी एक समृद्ध एवं स्वतंत्र राज्य था। इसका साक्ष्य देते हुए स्वयं बुद्ध ने इसकी प्रशंसा की है। वाराणसी को वरुणा नदी पर स्थित बतलाया गया है। यह

---

[1] पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परम्परा, पृ. सं. 6

[2] डॉ. मोतीचन्द्र : काशी का इतिहास, पृ. सं. 19–20

[3] डॉ. अशोक कुमार सिंह : उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर, पृ. सं. 47–48

[4] पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 7

नगर विस्तृत, समृद्ध और जनाकीर्ण था। महापरिनिब्बानसुत्त में तत्कालीन छः प्रसिद्ध नगरों में वाराणसी का उल्लेख किया गया है। बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि बुद्ध इस नगर में कई बार ठहरे थे। ऋषिपतन मृगदाव (इसिपतन मिगदाव) आधुनिक सारनाथ का भी उल्लेख बौद्ध साहित्य में आया है। बोध गया में ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात बुद्ध ने अपना पहला उपदेश इसिपतन मिगदाय (मृगदाव) में ही दिया था। बुद्ध के काल में बनारस उत्तरी भारत में शिक्षा के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में विख्यात था। बनारस की कुछ शिक्षा संस्थाएँ तक्षशिला से भी पुरानी थीं।''[1] ''अनेक बौद्ध जातक कथाओं में काशीराज ब्रह्मदत्त का उल्लेख मिलता है। कतिपय जातक कथाओं का आरम्भ ही 'अतीते वारणसियं ब्रह्मदत्ते रज्जं कारेन्ते' से होता है। जातक कथाओं का काल ई. पू. तृतीय शताब्दी है। इससे प्रकट होता है कि ईसा के जन्म के कई शताब्दी पूर्व ही वाराणसी ब्रह्मदत्त राजाओं की राजधानी बन चुकी थी।''[2]

''जातकों में वाराणसी नगर के संदर्भ में विशद विवरण मिलता है। इस नगर को सुदर्शन, सुरुद्धन, ब्रह्मवर्द्धन, रम्मनगर (रम्यनगर) तथा मोलिनी जैसे अन्य उपनामों से समीकृत किया गया है। वाराणसी के विभिन्न नामों के संबंध में यह कहना कठिन है कि ये इस नगर के अलग–अलग उपनगरों के नाम थे अथवा पूरे वाराणसी नगर के भिन्न–भिन्न नाम थे। संभव है कि लोग नगरों की सुंदरता तथा आर्थिक समृद्धि से आकर्षित होकर उसे भिन्न–भिन्न नामों से पुकारते रहे होंगे। बुद्ध पूर्व महाजनपद युग में वाराणसी काशी की राजधानी थी। काशी जनपद के विस्तार के संदर्भ में जातकों में अनेक स्थलों पर अतिश्योक्तिपूर्ण विवरण मिलते हैं। तंडुनालि जातक के अनुसार वाराणसी का परकोटा 12 योजन लंबा था और उसका आंतरिक और बाह्य विस्तार तीन सौ योजन था। काशी जनपद के उत्तर में कोशल, पूर्व में मगध और पश्चिम में वत्स जनपद था। जातकों के आधार पर अल्तेकर ने काशी जनपद का विस्तार बलिया से कानपुर तक माना है। पर ऐसी संभावना है कि आधुनिक गोरखपुर कमिश्नरी तक ही प्राचीन काशी जनपद सीमित रहा होगा। संभवतः आधुनिक गोरखपुर कमिश्नरी का भी कुछ भाग काशी जनपद में सम्मिलित था।''[3]

जातकों से ज्ञात होता है कि महाजनपद युग में बनारस की ख्याति शिक्षा एवं व्यापारिक केन्द्र के रूप में थी। उस समय बनारस में उत्तम न्याय एवं शासन व्यवस्था, उत्सवप्रियता, कला, शिल्प, धर्मशास्त्रों का अध्ययन अध्यापन, शिक्षा के अलावा व्यापार में

---

1 डॉ. अशोक कुमार सिंह : उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर, पृ. सं. 50

2 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परम्परा, पृ. सं. 7

3 डॉ. अशोक कुमार सिंह : उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर, पृ. 51–52

वस्त्र काष्ठ, हाथी दांत, सुगंधित द्रव्य एवं समुद्री व्यापार आदि का विवरण प्राप्त होता है। बनारस की ख्याति प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र के रूप में रही है।

''काश्यों और विदेहों का बड़ा घनिष्ठ संबंध था और इसका कारण दोनों का भौगोलिक सान्निध्य था। काशि–विदेह द्वंद्व का प्रयोग कौशीतकी उपनिषद (4/1) में सबसे पहले आता है। वृहदारण्यक (3/8/2) में गार्गी अजातशत्रु को काशी अथवा विदेह का राजा कहती है। शांखायन श्रौतसूत्र में (16/19/5)जलजातुकर्णी को काशी, कोसल और विदेह के राजाओं का पुरोहित कहा गया है। बौधायन श्रोतसूत्र (21/13) में भी काशी और विदेह का पास–पास में उल्लेख हुआ है। काशि–कौशल का सर्वप्रथम उल्लेख गोपथ ब्राह्मण (1/2/9) में हुआ है। काशी की स्वतंत्र राज्यसत्ता नष्ट हो जाने पर और उसके कोसल में मिल जाने पर काशि–कोसल साथ–साथ आने लगे। महाभाष्य के काशि–कोसलीया (काशी–कोसल सम्बन्धी) उदाहरण में काशी और कोसल जनपदवाची शब्दों का जोड़ा बनाया गया है।''[1]

''चाणक्य और चन्द्रगुप्त भारतीय इतिहास के अविस्मरणीय विद्वान और सम्राट हैं। 317 ई. पू. में चन्द्रगुप्त का राज्याभिषेक हुआ जिसने 24 वर्ष शासन किया। उसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र बिन्दुसार राजा हुए जिनका एक संस्कृत नाम अमित्रघातक है। इस काल में भी काशी का व्यापारिक और सांस्कृतिक महत्त्व जैन, बौद्ध ग्रंथ और पुराणों में पर्याप्त रूप में उल्लिखित है।''[2] महाकवि अश्वघोषकृत 'बुद्धचरित' में काशी तथा वाराणसी एक है। बुद्ध के जन्म 563 ईसा पूर्व के पहले ही काशी धर्म एवं अध्यात्म का केन्द्र बन चुकी थी। बौद्धकाल के पश्चात् स्थापित मौर्यवंश सम्राट अशोक ने सारनाथ में धमेक स्तूप की स्थापना एवं एक शिलालेख उत्कीर्ण कराया। उस काल के बौद्ध विहार–खण्डहर आज भी सारनाथ में उपलब्ध हैं। सम्राट स्कन्दगुप्त ने हूणों को पराजित करने के लिए काशी की यात्रा की थी। गाजीपुर के भितरी नामक स्थान पर उसका एक शिलालेख प्राप्त हुआ है, जिससे यह पता लगता है, किस प्रकार स्कन्दगुप्त ने तीन रात जमीन पर सोकर अपने अपराजित शौर्य एवं पराक्रम से हूणों को पराजित कर विजयश्री प्राप्त की। गुप्तकालीन राजाओं ने संस्कृत को राजभाषा घोषित कर अनेक शिलालेख, ताम्रलेख संस्कृत में उत्कीर्ण कराये।[3] हमें पुराणों से पता चलता है कि अंतिम मौर्य शासक के सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने

---

1 डॉ. मोतीचन्द्र : काशी का इतिहास, पृ. सं. 16

2 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 55

3 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 8

अपने राजा को मारकर ई. पू. 184 के करीब मगध पर अपना शासन कायम किया और 148 ई. पू. तक उन्होने मगध पर राज्य किया। इनके राज्य में विदिशा और विदर्भ में युद्ध हुआ जिसमें शुंगों की विजय हुई लेकिन पुष्यमित्र शुंग के राज्यकाल की सबसे मुख्य घटना वाल्हीक के यवनराज डिमिट्रियस की भारत पर चढाई थी।''[1]

''सात वाहन युग में बनारस के इतिहास का कुछ पता नहीं चलता पर सारनाथ से मिले वैदिक स्तंभों और स्तंभ–शीर्षपट्टों के टुकड़ों पर के लेखों से, जिनमें उज्जैन का नाम आया है, यह पता चलता है कि साँची की आंध्रकालीन कला का सारनाथ की कला पर काफी प्रभाव था। ऐसा जान पड़ता है कि इस युग में भी बनारस कौशांबी के अधिकार में रहा। प्रथम शताब्दी ईस्वी में बनारस कौशांबी के राजनीतिक प्रभाव में था। सारनाथ में अशोक स्तंभ पर उत्कीर्ण एक परवर्ती लेख से इस बात का पता चलता है कि राजा अश्वघोष के चालीसवें राज्य संवत् तक बनारस उनके अधिकार में रहा।''[2]

''दूसरी शती में कुषाण राजा वासुदेव प्रथम की मृत्यु के बाद काशी प्रसाद जायसवाल के अनुसार काशी भारशिव नरेशों के अधीन थी। 325–535 ई. तक निश्चित रूप से काशी गुप्त साम्राज्य के अधीन थी। 6ठी शती में काशी पर कनौज के मौखरी वंश का शासन हो गया। 7वीं शताब्दी मे काशी हर्ष के शासन में थी।''[3] 7वीं शताब्दी में कन्नौज के राजा यशोवर्मन काशी, मगध और अंग, बंग जीतकर बंगाल की खाड़ी तक अपने साम्राज्य का विस्तार कर चुके थे। परन्तु 8वीं शताब्दी में कश्मीर के राजा ललितादित्य ने यशोवर्मन को पराजित करके इलाहाबाद के निकट बांदा तक अपना राज्य बना लिया। कुछ समय बाद बंगाल के राजा धर्मपाल ने काशी पर अपना राज्य स्थापित कर दिया। धर्मपाल के पुत्र देवपाल का शासन भी काशी पर बना रहा परन्तु उसके बाद कन्नौज के प्रतीहारों ने लगभग 850 ई. सन् में काशी को अपने अधिकार में ले लिया। 816 ई. सन् राष्ट्रकूट राजा इन्द्र तृतीय ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया लेकिन काशी के प्रतीहारों का ही शासन बना रहा। 1015 से 1041 तक त्रिपुरी के राजा गांगेयदेव के अधिकार में काशी आ चुकी थी। इसी समय महमूद गजनी ने कन्नौज का विध्वंस किया। महमूद गजनवी के एक सेनापति 1034 ई. स. में नियल्तगीन गंगा के जलमार्ग से काशी तक पहुँच गया और उसने पूरी काशी को अच्छी तरह लूटा और यहाँ के वस्त्र, आभूषण, जवाहरात, सुंगध इत्र इत्यादि और सुंदरी नर्तकियों को उठा ले गया। दोपहर होने के बाद काशीवासियों के प्रबल प्रतिरोध

---

1 डॉ. मोतीचन्द्र : काशी का इतिहास, पृ. सं. 44

2 वही, पृ. सं. 53

3 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 58

होने से उसे भागना पड़ा।[1] "गांगेयदेव के बाद उनके पुत्र कर्ण गद्दी पर बैठे और इनका राज्य करीब 1041 से 1072 ईस्वी तक रहा। कर्ण प्रभावशाली राजा था। उसने गुजरात के राजा भीम (करीब, 1041–1064 ई.) की मदद से भोज को हरा दिया और कन्नौज पर भी धावे किये। कम–से–कम सारनाथ के एक लेख से पता चलता है कि बनारस कर्ण के राज्य में बराबर था। 1058 ई. से तो बनारस पर कर्ण का अधिकार था ही। जबलपुर के एक ताम्रपट्ट से, जिसका समय 1065 ई. है यह पता चलता है कि काशी में कर्ण ने कर्णमेरु नाम का एक मंदिर बनवाया था।"[2]

"12 वीं शताब्दी में गहड़वाल राजाओं ने कान्यकुब्ज के अतिरिक्त काशी को भी अपनी राजधानी बनाया था। उनके द्वारा निर्माण कराए गए महलों के ध्वंसावशेष खण्डहर के रूप में राजघाट गंगा किनारे (काशी) आज भी प्रमाणस्वरूप अपने अतीत का स्मरण दिला रहे हैं। इन राजाओं में विजयचन्द एवं उनके पुत्र जयचन्द ने काशी को धार्मिक एवं राजनैतिक महत्त्व प्रदान करने में विशेष योगदान दिया है।"[3]

"कुतुबुद्दीन ऐबक और शहाबुद्दीन गौरी ने 1194 ई. में बनारस को फतह किया और बनारस की हुकूमत उन्होंने अपने एक बड़े आला अफसर के हाथ सुपुर्द कर दी, जिसमें बनारस में मूर्तिपूजा हटाने का पूरा प्रयत्न किया। बनारस की अनुश्रुतियों के अनुसार इस सूबेदार का नाम सैयद जमालुद्दीन था और मशहूर है कि उसी ने बनारस का जमालुद्दीनपुरा मुहल्ला बसाया। पर बनारस कुछ ही दिनों के बाद मुसलमानों के हाथ से निकल गया और उसे कुतुबुद्दीन को 1197 ई. में दोबारा फतह करना पड़ा।"[4]

"मुसलमान शासकों के शासनकाल में काशी पर अनेक बार आक्रमण हुए। इन आक्रमणों में यहाँ के मन्दिरों और उत्कृष्ट शिल्पों को नष्ट किया गया, किन्तु यहाँ के धर्मप्राण नागरिकों पर इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा और कालान्तर में पुनः इस भूलुण्ठित धूलिधूसरित अनेक सुप्रसिद्ध मंदिरों का पुनर्निमाण अनेक धार्मिक विचारधाराओं से ओतप्रोत भारतीय नरेशों के सहयोग से हुआ। काशी का धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन अक्षुण्ण एवं गतिमान रहा, और काशी नगरी अप्रभावित एवं पूर्ववत् धर्म एवं शिक्षा की केन्द्रस्थली बनी रही।"[5]

---

1 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 58–59

2 डॉ. मोतीचन्द्र : काशी का इतिहास, पृ. सं. 85

3 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 8

4 डॉ. मोतीचन्द्र : काशी का इतिहास, पृ. सं. 149

5 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 8

वाराणसी में ऐतिहासिक कालक्रम के साथ धर्म, कला, साहित्य, व्यापार, शिल्प एवं संगीत के विकास की गौरवपूर्ण एवं समृद्ध परंपरा रही है। धर्म की दृष्टि से देखें तो यहाँ हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुस्लिम आदि सभी धर्म यहाँ की आबोहवा में खूब फले फूले अर्थात हम यह कहें कि धार्मिक दृष्टि से काशी ने पूरे देश का नेतृत्व कर धर्म द्वारा मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास को गति प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बनारस में वैदिक एवं पौराणिक काल से लेकर आज तक धर्म एवं संस्कृति की अविरल धारा निरन्तर प्रवाहमान है। मध्यकालीन पुराणों में काशी को शैवधर्म के प्रसिद्ध क्षेत्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। भगवान बुद्ध ने यहाँ धर्मचक्र प्रवर्तन कर भिक्षुओं को अमर उपदेश सुनाया। वाराणसी जैन धर्म का भी प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। यहीं जैनों के प्रसिद्ध तीर्थकर पार्श्वनाथ का जन्म हुआ। काशी हिन्दू धर्म की प्रगाढ़ आस्था का केन्द्र है भगवान विश्वनाथ की पावन नगरी काशी में पतित पावनी गंगा के किनारे असंख्य सुन्दर एवं कलात्मक घाट, मठ एवं मंदिर स्थित हैं जो अपने सुनहरे अतीत की गाथा कहते हैं। ''नदी के किनारे असंख्य छोटे–बड़े मंदिर हैं जिनमें बहुत से तो घाट तक चले आये हैं। ये मन्दिर एक सरखा पत्थर के बने है और इनकी बनावट इतनी पुख्ता है कि ये बरसात में गंगा की तीखी धार को अच्छी तरह झेल सकते हैं।''[1] हिन्दू मान्यता अनुसार काशी का कर्मकाण्डों एवं संस्कृत अध्ययन हेतु भी पौराणिक महत्त्व है। गुप्तकाल से ही बनारस वैदिक शिक्षा ग्रहण करने के रूप में प्रमुख केन्द्र रहा है। रामानंद, कबीर और महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के साथ–साथ कितने ही संत, महात्मा एवं धर्म प्रवर्तकों ने काशी को अपनी कर्मस्थली बनाकर भक्ति एवं ज्ञान द्वारा सम्पूर्ण विश्व को मार्ग दिखाया। गोस्वामी तुलसीदास जी ने सगुणभक्ति की बुलंद आवाज उठाकर यहीं से भक्ति ज्ञान और आदर्श की धारा को समाज में प्रवाहित किया।

4.2 बनारस की संगीत परंपरा एवं संगीत जगत में योगदान

वाराणसी के आसपास के प्रागैतिहासिक काल के भित्ति चित्रों एवं पुरावशेषों द्वारा उस समय की संगीत की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। बनारस के राजघाट नामक स्थान से प्राप्त मृणमूर्ति में ढोलक को हाथ में लिए हुए दर्शाना यहाँ की प्राचीन संगीत परंपरा को प्रमाणित करता है। सुमेरियन इतिहास में वाद्ययंत्रों तथा वीणा वादन का विवरण प्राप्त होता है। वैदिक काल में वैदिक संहिताओं के गान की परंपरा ने बनारस के लिए धार्मिक एवं सांगीतिक पृष्ठभूमि की निर्मिति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। काशी नगरी

---

1 डॉ. मोतीचन्द्र : काशी का इतिहास, पृ. सं. 297

प्राचीनकाल से गुरु–शिष्य परंपरा के अंतर्गत वेद एवं पुराणों के अध्ययन–अध्यापन का केन्द्र होने के कारण यहाँ समानान्तर रूप से संगीत को भी निरन्तर पोषण मिलता रहा है। श्रीमद्भागवत में काशी का विवरण विद्या अध्ययन एवं उपासना केन्द्र के रूप में मिलता है। यहाँ शैव एवं वैष्णव सम्प्रदायों का महत्त्व समान रूप से रहा है इसीलिए कहा जाता है कि ''आधी काशी शिव की, आधी गोपाल लाल की''। दोनों ही संप्रदायों की उपासना पद्धति का संगीत अभिन्न अंग रहा है। रामायण एवं महाभारत काल में पाये जाने वाले संदर्भो से ज्ञात होता है इस काल में संगीत को राज्याश्रय प्राप्त था। पं. कामेश्वर नाथ मिश्र के अनुसार ''बौद्धकालीन जातक कथाओं में वर्णित काशीराज ब्रह्मदत्त के शासनकाल में संगीत की समुन्नति के लिए शिक्षालयों की व्यवस्था का वर्णन प्राप्त है, जिसका सम्पूर्ण व्यय राजकोष से वहन किया जाता था। उसी युग में काशी के सुविख्यात वीणा वादक गुप्तिल ने अपने समकालीन उज्जैन निवासी सुप्रसिद्ध वीणा वादक मुसिल को वीणा वादन की प्रतियोगिता में पराजित कर काशी का गौरवर्धन किया था।

बौद्धकालीन नगर वधू चित्रलेखा, सुलसा, श्यामा आदि के नृत्य–संगीत से नगरी गुंजायमान थी। नगरवासियों के पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, मांगलिक उत्सवों में इनके नृत्य संगीत का आयोजन अपरिहार्य एवं सामाजिक प्रतिष्ठा का द्योतक था।''[1]

डॉ. वनमाला पर्वतकर के अनुसार ''बौद्धकाल में नाट्य या नाटक के लिए पेक्खा (प्रेक्षा) संज्ञा थी। इस काल में नाट्य व संगीत को राज्याश्रय प्राप्त था। तत्कालीन समाज में संगीत की प्रगति सामाजिक रूप में हो चुकी थी। उत्सवों (अनुष्ठानों) में राज्यसभा में संगीत का आमोद प्रमोद के लिए प्रयोग था। जातक कथाओं में वे अधिकतर बनारस से संबंधित होने के कारण बुद्धकालीन बनारस के संगीत की स्थिति की उन्नत अवस्था का दर्शन होता है। काशी में इस काल में वैशिक परंपरा पूरी तरह स्थापित थी। काशी या बनारस की गणिकाओं ने पूरे भारत में गायन और नृत्य में अपना विशेष स्थान बनाया। बोधिसत्व के समय लोकसंगीत को भी उत्सव में अपनाने से सिद्ध होता है कि काशी में गणिकाओं द्वारा उत्सव में कजरी, झूला, होरी, चैती आदि के सांगीतिक प्रयोगों का होना इसकी भी पृष्ठभूमि दर्शाता है।[2]

विशेष अवसरों पर काशी के मंदिरों, देवालयों, आश्रमों में आयोजित विविध उत्सव जैसे जन्मोत्सव, वार्षिक शृंगार, झुलनोत्सव, लोक उत्सव आदि विशेष धार्मिक अवसरों पर

---

1 पं. कामेश्वरनाथ मिश्र : काशी स्वर गंगा सम्मान–पत्रिका में प्रकाशित लेख 'काशी की विशिष्ट संगीत परम्परा'

2 डॉ वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 54

यहाँ का आमजन नृत्य संगीत के रसास्वादन से भावविभोर होता आया है। इन सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं के चलते यहाँ का सामान्य आदमी भी श्रोता के रूप में परिपक्व होता चला गया। यद्यपि कलाकारों एवं कलासाधकों के एक वर्ग ने इसे आजीविका का साधन बना लेने के कारण संकुचित दृष्टिकोण के चलते कला की प्रतिष्ठा कुछ हद तक क्षीण अवश्य हुई लेकिन फिर भी काशी के वातावरण, गुणीजनों एवं कुछ प्रबुद्ध कलाकारों के समन्वित दृष्टिकोण एवं कला समर्पण के फलस्वरूप यहाँ की कला, कलाकार व श्रोता कला की अनन्त गहराई में उतरते हुए सिद्ध होते चले गये।

"विदेशी लूटेरों महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी, लोदी, तुगलक, खिलजी, तैमूर, बाबर, मुगल एवं ब्रिटिश सत्ता तक ने भारतीय जनमानस की चेतना, सांस्कृतिक विरासत, धर्म, साहित्य, दर्शन एवं संगीत को समूल नष्ट करने का पूर्ण प्रयास किया। इन विदेशियों के साथ आये सूफी सन्तों, इरानी विद्वानों, संगीतवेत्ताओं की भारतीय संगीत मनीषियों के बीच परस्पर चर्चा जिज्ञासा से जहाँ विदेशी विद्वानों के मानस स्थल पर भारतीय संगीत ने अपनी अमिट छाप अंकित की वहीं भारतीय संगीत परस्पर आदान–प्रदान से प्रभावित भी हुआ। अनेक प्राचीन मान्यताएँ यदि कहीं टूटी तो अनेक नवीन शैलियों का विकास भी हुआ, अनेक संगीत वाद्यों का नवनिर्माण हुआ और वादन शैलियाँ विकसित हुई, जिससे भारतीय संगीत दिनोंदिन समृद्धिपथ पर अग्रसर होता गया।"[1]

काशी में तानसेन परम्परा के बारे में डॉ. सुशील कुमार चौबे के अनुसार "अठारहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य का अंत हो रहा था। उस समय तानसेन के वंशज तीन घरानों में बँट गये थे। पहला घराना तो तानसेन के सबसे छोटे लड़के विलास खाँ के नाम से था। दूसरा घराना तानसेन के एक दूसरे पुत्र सुरतसेन के नाम से और तीसरा घराना मिश्री सिंह के नाम से था जो महाराज समोखन सिंह का पुत्र था और उसका विवाह तानसेन की पुत्री सरस्वती देवी से हुआ। वह घराना जो तानसेन के सबसे बड़े लड़के सुरतसेन के नाम से संबंधित था, जयपुर में जाकर बस गया। इस घराने की शिष्य परंपरा में ध्रुपद गायक और सितार वादक दोनों थे। तानसेन के सबसे छोटे लड़के विलास खाँ के घराने और उसके दामाद मिश्री सिंह के घराने में गहरा संपर्क था। विलास खाँ के घराने के गायक ध्रुपद की शुद्ध बानी के विशेषज्ञ थे और वाद्यों में उन्होंने रबाब (रूद्रवीणा) में ही विशेष कुशलता प्राप्त की थी। मिश्री सिंह के वंशज वीणा के और ध्रुपद की डागुर और खंडार बानियों के विशेषज्ञ थे। अठारहवीं शताब्दी के दूसरे भाग में जाफर खाँ, प्यार खाँ और बासत खाँ ये तीनों भाई

1 पं. कामेश्वरनाथ मिश्र : काशी स्वर गंगा सम्मान–पत्रिका में प्रकाशित लेख 'काशी की विशिष्ट संगीत परम्परा'

विलास खाँ के घराने के प्रमुख और प्रतिनिधि माने गये। ये तीनों ध्रुपद गायन भी करते थे और रबाब भी बजाते थे। बासत खाँ को सुरसिंगार वाद्य का आविष्कारक कहा जाता है। इन दोनों घरानों के संगीतज्ञों ने देहली छोड़कर बनारस को ही अपना निवास स्थान बनाया। बनारस के कबीरचौरा में यह सब रहते थे। ये संगीतज्ञ लखनऊ दरबार से भी संबंधित थे। दुर्गा पूजा के अवसर पर ये सब बनारस में जमा होते थे। काशी नरेश भी इन्हे जब बुलाते थे तब ये आते थे और श्रोताओं के सामने अपना संगीत चमत्कार दिखाते थे। इन्हें काशी नरेश ने जमीन इत्यादि भी दे रखी थी।[1]

मिश्री सिंह की परंपरा में निर्मलशाह अद्वितीय बीनकार हुए। सन् 1856 ई. में गदर के बाद लखनऊ दरबार का अन्त हुआ और बासत खाँ अपने दोनों पुत्रों अली मुहम्मद खाँ (सुरसिंगार वादक) और मुहम्मद अली खाँ (ध्रुपदिये और रबाबिये) के साथ गया में बस गये थे। जाफर खाँ के लड़के सादिक अली खाँ और उनके भाई मिसर अली खाँ काशी नरेश के दरबार में ही सुशोभित हो गये थे। संगीत शास्त्र के विद्वान सादिक अली खाँ को रबाब एवं वीणा बजाने में निपुणता प्राप्त थी। उन्होंने ध्रुपद गायन, सितार एवं वीणा हेतु कई शिष्य तैयार किए। उनके शिष्यों में सितार में बाजपेई जी एवं वीणा वादन में महेशचन्द्र सरकार और मिठाई लाल जी प्रमुख हैं। सादिक अली खाँ के निधन के पश्चात बासत खाँ के सबसे बड़े पुत्र अली मुहम्मद खाँ गया छोड़कर काशी नरेश के दरबार में दरबारी कलावंत नियुक्त हो गये और वह काशी नरेश के महल के पास ही रामनगर में निवास करने लगे। सुरसिंगार वाद्य हेतु अली मुहम्मद खाँ की शिष्य परंपरा में पन्नालाल जैन, वैद्य अर्जुनदास, गया प्रसाद मिश्र और अन्य प्रवीण शिष्यों में सैयद मीर नासिर खाँ (जालंधर), वजीर खाँ (रामपुर), बंगाल के हरिनारायण मुखर्जी एवं ताराप्रसाद घोष आदि प्रमुख थे। अली मुहम्मद खाँ के निधन के पश्चात सेनिया घराने के अन्य वंशज जयपुर एवं रामपुर में जाकर बस गये। अतः यह कहा जा सकता है कि सेनिया घराने के मुख्य केन्द्र बनारस एवं रामपुर रहे हैं।

ख्याल गायन के क्षेत्र में काशी में ठाकुर दयाल मिश्र जी के घराने का अद्वितीय योगदान है। इनके घराने के पितामह दिलाराम मिश्र, चिन्तामणि मिश्र एवं पिता जगमन मिश्र के समय तक छन्द प्रबन्ध, विष्णुपद एवं ध्रुपद गायन की परंपरा रही है। ठाकुर दयाल मिश्र जी के संगीत विद्वान एवं रचनाकार सदारंग अदारंग जी के सम्पर्क में आने से कला का आदान–प्रदान शुरू हुआ। सदारंग–अदारंग ने छन्द प्रबन्ध, विष्णुपद एवं ध्रुपद गायकी को

---

1 डॉ. सुशील कुमार चौबे : संगीत के घरानों की चर्चा, पृ. सं. 43, 44

आत्मसात किया तो वहीं ठाकुरदयाल मिश्र ने ख्याल गायन की विशेषताओं को अपनाया। इसी घराने के प्रसिद्ध प्रतिनिधि गायक बन्धु प्रसिद्धू मनोहर मिश्र द्वारा घराने की पताका चहुँ और फहराते हुए काशी घराने के यश एवं कीर्ति में अभिवृद्धि की। घराने के वंशानुगत कलाकारों एवं शिष्यों–प्रशिष्यों द्वारा यह ख्याल गायन की परंपरा आज भी सतत् जारी है।

''यहाँ उल्लेखनीय है कि दिलाराम जी मिश्र के पूर्वज गोंडा बलरामपुर के मठाधिपति थे आपके पूर्वजों को बाबर की सेना ने मौत के घाट उतार दिया था। बाद में दिलाराम जी मिश्र अपने पाँच भाइयों को साथ लेकर वृन्दावन चले गये। आपने वृंदावन में राधावल्लभ सम्प्रदाय के स्वामी हितहरिवंश जी के सानिध्य में 36 वर्ष तक संगीत शिक्षा ग्रहण की। स्वामी जी की आज्ञा पाकर दिलाराम जी काशी आ गये और दूसरे भाई चिन्तामणि मिश्र पहले दिल्ली और वहाँ से महाराष्ट्र प्रस्थान कर गये। श्री दिलाराम जी ने 'सेवक' उपनाम से असंख्य ध्रुपदों की रचना कर भारतीय संगीत को समृद्ध बनाने में योगदान दिया। चिन्तामणि मिश्र जी ने महाराष्ट्र में पूना के पेशवा दरबार में रहकर ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी आदि की गायकी में नारायण शास्त्री, वामन बुआ, लाल बुआ, चन्दन चौबे, देवजी बुआ, जोशी बुआ, बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर जैसे कलाकारों एवं मूर्धन्य विद्वानों की शृंखला खड़ी कर दी। इस शृंखला में पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, अनन्त मनोहर जोशी, नीलकंठ बुआ जंगम, बामनराव, चाफेकर, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, विनायकराव पटवर्धन, नारायण राव व्यास, बी. आर. देवधर, डी. वी. पलुस्कर जैसे देश के ख्यातनाम कलाकारों और उनके शिष्यों–प्रशिष्यों के माध्यम से द्वितीय ग्वालियर घराने के संस्थापक के रूप में आपने गौरव प्राप्त किया। पं. चिन्तामणि मिश्र जी के योगदान का भारतीय संगीत जगत सदैव ऋणी रहेगा।

पियरी घराने के श्री ठाकुर दयाल मिश्र जी की वंश परम्परा में जगमन मिश्र, ठाकुर दयाल मिश्र, प्रसिद्धू मनोहर विश्वेश्वर मिश्र, रामकुमार मिश्र, गोविन्द दास केशवदास, लक्ष्मीदास मिश्र, शिवसहाय जी, रामसेवक मिश्र, शिवा पशुपति जी, रामकृष्ण मिश्र भानुसेवक, विष्णु सेवक मिश्र आदि कलाकारों एवं विद्वानों ने अपने शिष्य प्रशिष्यों द्वारा घराने की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए सम्पूर्ण देश में वर्चस्व स्थापित किया।

गुलाम नबी उपनाम शौरीमियाँ को टप्पा गायन शैली का जन्मदाता माना जाता है। आपका जन्म पंजाब के झंगसियाल नामक ग्राम में हुआ। गुलाम नबी के पिता गुलाम रसूल खाँ लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला के दरबारी गायक थे। ''पिता गुलाम रसूल खाँ ने शोरी मियाँ की जन्मजात पतली आवाज के कारण इन्हें ख्याल गायकी की शिक्षा देना उचित नहीं समझा। पंजाबी ऊँटहारों के समूह में प्रचलित लोकसंगीत की धुनों को सुनकर शोरी मियाँ

विशेष प्रभावित हुए और अपनी व्यक्तिगत विलक्षण संगीत प्रतिभा एवं चिन्तन साधना से आपने पंजाबी भाषा में संयोग वियोग युक्त श्रृंगारिक बंदिशों की असंख्य रचनाएँ सृजित कर एक नवीन टप्पा शैली को जन्म दिया, जो धीरे–धीरे देश के अनेक संगीत घरानों में लोकप्रिय होती चली गई। विशेष रूप से पटियाला (पंजाब), ग्वालियर एवं बनारस घराने ने इस गायकी पर महारथ हासिल की, जिसमें बनारस घराने की टप्पा गायकी का अंदाज सबसे निराला है।''[1]

काशी में टप्पा गायकी के प्रवेश के विषय में कहा जाता है कि जब काशी के प्रसिद्धू मनोहर मिश्र को जब अयोध्या के नवाब सादत अली द्वारा दरबारी गायक नियुक्त किया गया तो वहाँ आपका परिचय शोरी मियाँ से हुआ। अनेक वर्षो तक साथ रहने के कारण दोनों में घनिष्ठता हुई एवं गायन शैलियों का भी आदान–प्रदान होना स्वाभाविक था। वहीं से काशी की विविध गायन शैलियों में टप्पा गायकी भी सम्मिलित हो गई। दूसरी प्रमुख बात है कि शोरी मियाँ के कोई संतान नहीं थी तो उन्होंने गामू खाँ को टप्पा गायकी की तालीम दी। गामू खाँ और उनके पुत्र शादी खाँ ने भी दीर्घकाल तक बनारस में ही प्रवास किया। शादी खाँ को काशी नरेश उदित नारायण सिंह द्वारा दरबारी गायक नियुक्त किया गया। शादी खाँ से टप्पे की शिक्षा प्राप्त करने वालों में काशी की चित्रा, इमामबांदी प्रमुख थी। बाद में इमामबांदी के बेटे रमजान खाँ उनके शिष्य नगेन्द्र भट्टाचार्य ने बंगाल तक इस गायकी का प्रचार–प्रसार किया।

काशी के लगभग सभी गायकों एवं सारंगी वादकों को टप्पा शैली के गायन एवं वादन में महारथ हासिल है। टप्पा शैली से गाना बजाना यहाँ की संगीत शिक्षा का अभिन्न अंग है। टप्पा गायन–वादन में पं. शिवसहाय जी, ठाकुर प्रसाद जी, मिठाईलालजी, बडे गणेश जी, विरई जी, शम्भूनाथ मिश्र, सुमेरूजी, सियाजी, विनायक मिश्र जी ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कर काशी को गौरवान्वित किया है।

बनारस के संगीत साधकों एवं कलाकारों की यह खूबी रही है उन्होंने संगीत की सभी विधाओं को अपनाया लेकिन साथ ही उस पर मौलिकता का बनारसी रंग चढाते हुए अपेक्षित सुधार के साथ सौन्दर्य में वृद्धि करते हुए नवीन साँचे में ढाल दिया। बनारस की ठुमरी गायकी की यही विशेषता रही है। पं. कामेश्वर नाथ मिश्र के अनुसार ''टप्पा की चपल, चमत्कृत, लच्छेदार गायकी एवं ख्याल अंग की शान्त, गंभीर, तन्मयता, तल्लीनतापूर्ण गायन शैली के युगल मोहक सम्मिश्रण से इस सम्मोहक मधुकरी गायकी का जन्म हुआ, इसमें कोई संदेह नहीं। जहाँ इस गायन शैली ने लखनऊ की नफासत व शराफत से भरी

---

1 पं. कामेश्वरनाथ मिश्र : काशी स्वर गंगा सम्मान–पत्रिका में प्रकाशित लेख 'काशी की विशिष्ट संगीत परम्परा'

निहायत सलीकेदार संगीत रसिक धरती पर जन्म लिया, वहीं जवान हुई और युवावस्था की गरिमा से क्रमशः परिचित होती हुई गम्भीरता युक्त ओढनी ओढकर यह बनारस पहुँची। गंगा, गोमती के इस अद्‌भुत मिलन से काशी निहाल हो उठी और इतना प्यार काशी की पवित्र मिट्टी ने इस गायकी को सँवारने सजाने और अनुपम बनाने पर लुटाया कि ठुमरी गायकी अब तक प्राप्त इस गायन शैली की हृदयस्पर्शी विशेषताओं का संजोया खजाना काशी को सौंप निश्चिंत हो गई, मानो उसे सही मार्गनिर्देशक प्राप्त हो गया हो और काशी की धरती तक जाना इसका सही लक्ष्य रहा हो। बनारस ने इसे बड़े ही प्यार और आदर के साथ अपने में समेट आत्मसात, करके हमेशा–हमेशा के लिए अपनी चिरसंगिनी बना लिया।''[1]

बनारस की संगीत परम्परा में ठुमरी गायन की परम्परा सदियों से चली आ रही है। ठुमरी के ख्यातिप्राप्त एवं रससिद्ध गायक गायिकाओं में जगदीप मिश्र, मौजुद्दीन खाँ, बडी मैना, विद्याधरी, हुस्ना, राजेश्वरी, बड़ी मोती, काशी, सरस्वती, जद्दनबाई, जवाहर, छोटी बीबी, सिद्धेश्वरी, रसूलन, पं. बडे रामदास, छोटे रामदास, महादेव मिश्र, गिरिजा देवी, रामाजी गुजराती, एवं श्री नन्दलाल तथा बिस्मिल्लाह खाँ जैसे ख्यातनाम शहनाई वादकों एवं अनेकानेक सुप्रसिद्ध सारंगी वादकों ने लोकप्रियता एवं यश अर्जित कर बनारस घराने की पहचान एवं प्रतिष्ठा बढाई है। काशी की खूबी यह है कि यहाँ के कलाकारों ने लोक संगीत की परिधि में आने वाली चैती, कजली, होरी, बिरहा, बारहमासा, दादरा आदि विधाओं का शास्त्रीयकरण कर उनका अद्‌भुत शृंगार कर उन्हें उपशास्त्रीय संगीत की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। वर्तमान में इन्हें भी ठुमरी के समान ही आदर प्राप्त है।

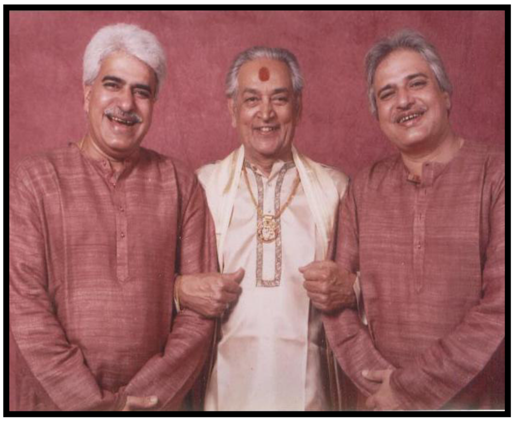

पद्म विभूषण पं. किशन महाराज जी
(तबला सम्राट)
एवं पं. राजन साजन मिश्र

पद्म विभूषण विदुषी गिरिजा देवी जी
(शास्त्रीय गायिका)
एवं पं. राजन साजन मिश्र

[1] पं. कामेश्वरनाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा पृ. सं. 69

कबीर चौरा मुहल्ले में काशी के मूर्धन्य एवं लब्ध–प्रतिष्ठित कलाकारों एवं साधकों का लगभग दो तिहाई से अधिक समुदाय निवास करता था और आज भी अनेक घरानों के ख्यातनाम कलाकार और वंशज यहाँ रहते हैं।

भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ एवं पं. हनुमान प्रसाद मिश्र कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए

पं. कामेश्वरनाथ मिश्र के अनुसार ''गायन के क्षेत्र में पं. शिवदास, प्रयाग मिश्र, मूर्धन्य ठुमरी सम्राट् पं. जगदीप मिश्र, विविध गायन शैली में पारंगत पं. जयकरन मिश्र (पं. बड़े रामदास मिश्र के श्वसुर एवं गुरु), बेतिया ध्रुपद घराने के धन्नू जी, संवरू जी, (पं. छोटे रामदास ने आप लोगों से ध्रुपद गायकी की शिक्षा प्राप्त की), पं. रामसहाय जी, बैजू जी, प्रताप महाराज, दरगाही मिश्र, ठाकुर प्रसाद मिश्र, पं. शम्भूनाथ मिश्र, बड़े गणेश मिश्र, रामसुमेर मिश्र, बिहारी जी, बिरई जी, ननक लाल मिश्र, पं. कंठे महाराज, शुकदेव महाराज आदि विद्वानों का स्थायी निवास स्थान विशिष्ट संगीत गढ़ कबीर चौरा मुहल्ला रहा है।''[1] काशी के प्राप्त इतिहास के अवलोकन से यह प्रमाणित होता है कि सरस्वती की अजस्त्र नादधारा काशी में अविच्छित, निरन्तर गतिमान है जो आज भी इस नगरी के वर्चस्व को संगीताकाश के ज्वाजल्यमान नक्षत्रों के रूप में काशी के अनेक सुप्रतिष्ठित घरानों एवं उन घरानों से अभिप्रेरित, प्राणवान, तपोनिष्ठ, शिष्यों प्रशिष्यों के घरानों के प्रतिनिधियों के माध्यम से शीर्षस्थ है। काशी के नक्षत्री कलाविदों के रूप में – श्री ठाकुरदयाल मिश्र, प्रसिद्धू मनोहर मिश्र, लक्ष्मीदास जी, शिवसहाय जी, रामसेवक जी, पं. रामसहाय जी, भैरो सहाय जी, प्रताप महाराज, शरण जी, भगत जी, बलदेव सहाय जी, गोकुल जी, विश्वनाथ जी, शिवदास प्रयाग जी, ठाकुर प्रसाद जी, दरगाही जी, शम्भूनाथ जी, बड़े गणेश जी, शीतल जी, वांचा जी, विक्कू जी, श्यामलाल मिश्र (छम्मा जी), पं कंठे महाराज, मौलवीराम जी, वीरू जी, शामा जी, बन्दी जी, पुरूषोत्तम जी, मिठाई लाल मिश्र, आशिक अली खाँ, मुश्ताक

[1] पं. कामेश्वरनाथ मिश्र : काशी स्वर गंगा सम्मान–पत्रिका में प्रकाशित लेख 'काशी की विशिष्ट संगीत परम्परा'

अली खाँ, रामू जी, श्री चन्द्र मिश्र, हरिशंकर मिश्र, अनोखेलाल जी, गुदई महाराज, किशन महाराज, हनुमान मिश्र, बैजनाथ मिश्र, गोपाल मिश्र, सितारा देवी, गोपी कृष्ण, बड़ी मैना, हुस्ना, विद्याधरी राजेश्वरी, जद्दन बाई, रसूलन बाई, सिद्देश्वरी कमलेश्वरी, काशी, श्रीमती गिरिजा देवी, डॉ. एन. राजम्, शारदा सहाय, रंगनाथ मिश्र, अमरनाथ–पशुपतिनाथ, राजन–साजन मिश्र, अनन्त लाल, राजेन्द्र प्रसन्ना संगीत क्षितिज की गौरव गाथा बन प्रकाशमान हैं।[1]

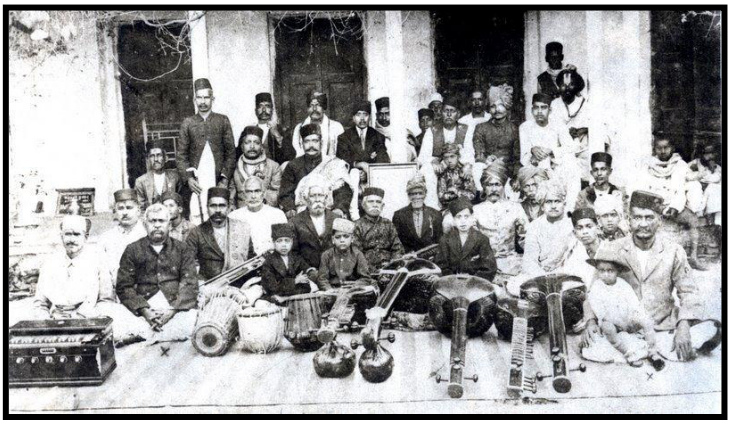

बनारस घराने के विद्वतजन एवं कलाकार

4.3 बनारस घराना पं. राजन साजन मिश्र के परिप्रेक्ष्य में

हमारे देश में भारतीय शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत गायन, वादन एवं नर्तन की विविध शैलियों के निर्माण और संगीत के संरक्षण में घरानों का योगदान उल्लेखनीय है। घरानों की स्थापना एवं अनुयायियों के बारे में डॉ. सुशील कुमार चौबे का कथन है कि ''किसी घराने के एक दो गायक अथवा वादक ही उसके संगीत का ओर उसकी शैली का निर्माण करते हैं और वह उसके संरक्षक और मार्गदर्शक बन जाते हैं। जहाँ तक तालीम अथवा शिक्षा का संबंध होता है वह उनकी भी नींव डालते हैं और उसका प्रचार करते हैं।''[2]

---

1 पं. कामेश्वरनाथ मिश्र : काशी स्वर गंगा सम्मान–पत्रिका में प्रकाशित लेख 'काशी की विशिष्ट संगीत परम्परा'

2 डॉ. सुशील कुमार चौबे : घरानों की चर्चा, पृ. सं. 20

घराने के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए यह भी आवश्यक है कि कम से कम तीन से चार पीढ़ियों तक यह शैलीगत विशेषताओं से परिपूर्ण एवं अलंकृत विशेष संगीत का क्रम निरन्तर चलता रहे। गायन या वादन की विशेष शैली को उसके प्रतिभाशाली अनुयायियों द्वारा प्रचलन में लाने के उपरान्त ही उसे घराने के रूप में सामाजिक एवं प्रामाणिक मान्यता मिलती है। डॉ. आवान ए. मिस्त्री घरानों की पृष्ठभूमि के बारे में लिखते हैं कि ''कोई एक असाधारण प्रतिभाशाली, प्रबल महत्त्वाकांक्षी और कुछ विशेष कर दिखाने की क्षमतापात्र व्यक्ति जब अपनी परंपरागत विद्या में एक अभिनव सौन्दर्य कल्पना का निर्माण करता है तब उसकी कला निर्मिति में एक पृथक दृष्टिकोण पूर्ण वैशिष्ट्य का उद्भव होता है। वह उसकी अपनी निराली शैली बनती है, जो बाद में कुछ विशेष नियमों एवं सिद्धान्तों से अनुबन्धित हो जाती है। शनैः शनैः दूसरे लोगों की शैली से उस शैली की बन्दिशों में इतना अधिक अन्तर सुस्पष्ट हो जाता है कि जिसकी पृथकता तुरन्त पहचानी जा सकती है, तब वह शैली घराना बन जाती है, जो वंश परम्परागत तथा शिष्य–परंपरागत साभिमान और कट्टरतापूर्वक निभाई जाती है।[1]

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''बनारस भारत की सांस्कृतिक राजधानी रही है और सबसे पुराना शहर, सबसे पुरानी संस्कृति होने के नाते बहुत बड़े–बड़े विद्वान वहाँ जाकर रहे और बनारस घराने के पं. दिलाराम जी और पं. चिंतामणि जी मिश्र जैसे शीर्ष पुरुष हुए और चिंतामणि मिश्र जी की शिष्य परम्परा में पं. इचलकरंजीकर बुआ आये, जो ग्वालियर का द्वितीय घराना माना जाता है। बनारस बहुत ही प्राचीन घराना है और शिव की नगरी है, आध्यात्मिक जगह है तो वहाँ संगीत को अध्यात्म की तरह देखा गया है और वहाँ से वह संगीत की सरिता बहती रही। उसमें लोग आते रहे और पनपते रहे, बहुत बड़े–बड़े कलाकार यहाँ हुए।''[2]

बनारस के संगीत साधकों में विविध घरानों के वंशजों एवं शिष्यों–प्रशिष्यों द्वारा परंपरागत एवं शैलीगत संगीत को संरक्षित रखते हुए घरानों की वंशानुगत एवं शिष्यानुगत परंपराओं को प्रतिष्ठित किया गया। यहाँ काशी गौरव युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र के घराने के संदर्भ में अध्ययन से पहले काशी के संगीत घरानों पर सूक्ष्म दृष्टि डालनी होगी। पं. कामेश्वर नाथ मिश्र के अनुसार ''किसी समय में काशी का सम्पूर्ण क्षेत्र घरानेदार संगीतज्ञों के गढ के रूप में चार भागों में मान्य था।

---

1 डॉ. आवान ए. मिस्त्री : पखावज एवं तबले के घराने एवं परंपराएँ, पृ. सं. 149

2 "Music and Art Resides in Banaras"- Pt Rajan Sajan Mishra (Bhimsen Studios) www.youtube.com

(1) तेलियाना घराना (2) पियरी घराना

(3) शिवदास प्रयाग मिश्र घराना (4) संपूर्ण कबीर चौरा मुहल्ला।''[1]

उपर्युक्त घरानों में से पंडित राजन साजन मिश्र जी का संबंध कबीर चौरा मुहल्ले से रहा है। आपके पूर्वज काशी के कबीर चौरा मुहल्ले के घरानेदार संगीतज्ञ रहे हैं एवं वहाँ आपकी पैतृक संपत्ति है। प्राप्त जानकारी के अनुसार आपके घराने की परंपरा का विवरण आपके प्रपितामह पं. रामबख्श मिश्र जी के समय से प्राप्त होता है। वह स्वयं एक धुरंधर, गुणी एवं लोकप्रिय सारंगी वादक थे। काशी के घरानेदार टप्पा वादकों में पं. रामबख्श मिश्र जी का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। पं. साजन जी मिश्र ने चर्चा में बताया कि जहाँ तक मुझे याद है ''हमारे परम्पितामह थे पं. रामबख्श मिश्र जी जो कि धुरंधर सारंगी वादक हुए हैं। उनके बेटे हुए पं. गणेश मिश्र जी और शीतल मिश्र जी, ये दोनों भाई बहुत ही बिरले सारंगी वादक थे, बहुत नाम था इनका अन्धे मोहम्मद खाँ और मम्मन खाँ साहब के जमाने में। उनके बाद हमारे दादा हुए पं. सुरसहाय मिश्र जी (पं. गणेश मिश्र जी के पुत्र) और उनके दो पुत्र हुए पं. हनुमान प्रसाद मिश्र और पं. गोपाल प्रसाद मिश्र।''[2]

पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र के पुत्र रत्न पं. राजन मिश्र (ज्येष्ठ) एवं पं. साजन मिश्र (कनिष्ठ) हैं जो सम्पूर्ण विश्व में ख्याल गायन के क्षेत्र में काशी की गौरवशाली परंपरा की पताका देश–विदेश में फहरा रहे हैं। पं. राजन जी मिश्र के पुत्र पं. रितेश मिश्र (ज्येष्ठ) एवं पं. रजनीश मिश्र (कनिष्ठ) हैं। ये दोनों भ्राता भी युगल गायन की पारिवारिक परंपरा को आगे बढाते हुए देश विदेश में ख्याति अर्जित कर रहे हैं। पं. साजन जी मिश्र के पुत्र पं. स्वरांश मिश्र भी गायकी की परंपरा के साथ संगीत निर्देशक के रूप में भी संगीत जगत् को अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

बनारस में नौका विहार के साथ संगीत का आनंद लेते हुए पं. राजन साजन मिश्र

पिता एवं गुरु पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी से संगीत शिक्षा ग्रहण करते हुए पं. राजन साजन मिश्र

1 पं. कामेश्वरनाथ मिश्र : काशी स्वर गंगा सम्मान–पत्रिका में प्रकाशित लेख 'काशी की विशिष्ट संगीत परम्परा'

2 पं. साजन जी मिश्र– वार्ता (गुरुपूर्णिमा, दि. 12.7.2014, नई दिल्ली)

पं. राजन साजन मिश्र जी का घराना पूर्वजों के समय से मूलतः सारंगी का घराना रहा है। पं. रामबख्श मिश्र जी से पं. गोपाल मिश्र जी तक लगभग 200–250 वर्ष की घरानेदार परंपरा में सारंगी वादन की परंपरा निरन्तर जारी रही परन्तु पं. राजन साजन मिश्र जी की विशेष अभिरूचि गायन की ओर उन्मुख होने के कारण आपके पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र ने आपको गायन की विधिवत शिक्षा अल्प आयु से देना आरम्भ कर दिया। यहाँ उल्लेखनीय है कि आपके पिताजी एवं चाचाजी ने घराने की गौरवशाली परंपरा के निर्वहन के साथ–साथ महान रससिद्ध गायक एवं विद्वान पं. बड़े रामदास जी का भी शिष्यत्व ग्रहण किया था। पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र के पास सारंगी वादक एवं संगतकार होने के कारण स्वयं के घराने की शैलीगत विशेषताएँ तो थी ही, साथ ही गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी का शिष्यत्व ग्रहण करने के कारण आशीर्वाद स्वरूप आपके पास बंदिशों का विशाल संग्रह एवं शैलीगत विशेषताओं को अपनाने का एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित हो गया। वैसे भी सारंगी का कलाकार चहुँमुखी प्रतिभा का धनी होता है, वह गायकी में समाहित सभी शैलीगत विशेषताओं एवं अंगों–उपांगों की अपने वाद्य द्वारा सुन्दरतम् एवं श्रेष्ठतम् अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए गायन को भावपूर्ण बनाते हुए पूर्णता प्रदान करता है। यद्यपि पं. राजन मिश्र जी को भी गायनाचार्य जी का शिष्यत्व मिला लेकिन अल्प समय के लिए अतः आप दोनों की सम्पूर्ण संगीत शिक्षा पिताजी एवं चाचाजी के सानिध्य में हुई। पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र एवं पं. गोपाल प्रसाद जी मिश्र की विद्वता एवं जीवन पर्यंत किए गये कठोर परिश्रम एवं ज्ञानार्जन का लाभ पं. राजन साजन मिश्र जी को मिला। इस साधना की परिणति भ्राताद्वय की उत्कृष्ट युगल गायकी के रूप में हुई। पं. राजन मिश्र जी के अनुसार ''बनारस में जो हम लोगों को तालीम मिली वह सारे घरानों की अच्छाइयों की तालीम मिली और दूसरी सबसे बड़ी बात है कि बनारस घराना ही ऐसा घराना अभी तक भी है जहाँ ध्रुपद–धमार से लेकर कजरी–चैती तक की परंपरा रही है। ऐसा किसी अन्य घराने में तुम नहीं दिखा सकते हो, यह सारे अंगों को समेटे हुए है। बनारस घराने की गायकी में जहाँ ध्रुपद की विशेषताएँ जैसे मीड गमक आदि का समावेश है तो ठुमरी की नज़ाकत भी है, इसमें इमोशन्स भी हैं। हिन्दी प्रदेश होने के कारण यहाँ का उच्चारण भी साफ है। जितनी भी बंदिशें हमारी अवधी या ब्रज भाषा में है उनका उच्चारण स्पष्ट है अतः इसका भी एक प्रभाव है, इस वजह से बनारस घराना एक अनूठा घराना है।''[1]

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता, गुरु पूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

पं. राजन साजन मिश्र जी के घराने को स्थापित करने एवं प्रतिष्ठित करने में वंशानुगत कलाकारों का योगदान रहा है। सभी कलाकारों का जीवन परिचय यहाँ प्रस्तुत है। इस घराने को 'पं. रामबख्श मिश्र घराना' अथवा 'पं. बड़े गणेश मिश्र घराना' कहकर संबोधित किया जाता है।

पं. रामबख्श मिश्र

प्राप्त विवरण के अनुसार पं. राजन साजन मिश्र जी के घराने का उल्लेख आपके प्रपितामह पं. रामबख्श मिश्र जी के समय से प्राप्त होता है। संभवतः इनके भी कई वर्षो पूर्व से यह घरानेदार वंशानुगत परंपरा चली आती रही हो। पं. रामबख्श मिश्र जी की गिनती अपने समय के काशी के प्रमुख सारंगी वादकों में होती थी। डॉ. वनमाला पर्वतकर के अनुसार ''बनारस के संगीत जगत में सारंगी वादन के लिए पं. रामबख्श मिश्र लोकप्रिय एवं गुणी सारंगी वादक हुए। इनके घराने की विशेषता थी टप्पा शैली से सारंगी बजाना।''[1]

पं. रामबख्श मिश्र जी के यहाँ दो सुयोग्य पुत्र पं. बड़े गणेश मिश्र (ज्येष्ठ) और पं. शीतल मिश्र (कनिष्ठ) हुए। इन दोनों सुयोग्य पुत्रों ने पैतृक गुणों के साथ घरानेदार परंपरा को आगे बढ़ाते हुए खूब नाम एवं यश अर्जित किया।

पं. बड़े गणेश मिश्र

पं. बड़े गणेश जी मिश्र का जन्म लगभग 1850 ई. में काशी में हुआ। आप पं. राजन साजन मिश्र जी के परदादा हैं। काशी के घरानेदार सारंगी वादकों में टप्पा शैली से बजाने के कारण आपकी संगीत जगत में विशिष्ट एवं प्रमुख पहचान बनी। आपको सांगीतिक शिक्षा विद्वान पिता पं. रामबख्श मिश्र जी की देखरेख में मिलने लगी। कठोर साधना, लगन, निष्ठा एवं प्रतिभा के बल पर आपने अपना स्थान काशी के शीर्षस्थ सारंगी वादक एवं टप्पा वादक के रूप में बना लिया। वादन के साथ–साथ टप्पा अंग की गायकी में भी आपकी विशिष्ट पहचान एवं प्रसिद्धि थी। आपके पास टप्पे की दुर्लभ बंदिशों का बहुत बड़ा संग्रह था।

पं. कामेश्वर नाथ मिश्र ने 'काशी की संगीत परंपरा' नामक पुस्तक में पं. बड़े गणेश मिश्र जी से संबंधित एक अत्यंत रोचक एवं प्रेरणास्पद संस्मरण का उल्लेख किया है –

---

1 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 184

“आपके समय में एक बार बरेली के विख्यात सारंगी वादक अंधे मोहम्मद खाँ काशी आए और दालमण्डी स्थित कच्ची सराय में ठहरे। आपके आगमन से परिचित काशी के संगीतज्ञ एवं संगीत प्रेमी नित्य प्रति उनके पास जाते, उनकी प्रभावशाली वादनशैली सुनकर प्रभावित होते और सारे शहर में उनके वादन की प्रशंसा करते अघाते न थे। कई दिनों तक काशी में नित्यप्रति अपनी सारंगी बजाते सुनाते एक रोज उपस्थित संगीतज्ञों से खाँ साहब ने कहा “मैंने काशी के सारंगी वादकों की अपार प्रशंसा सुनी है, मैं भी उन्हें रूबरू सुनना चाहता हूँ कि उनकी वादन शैली में क्या विशेषता है।” काशी के तत्कालीन संगीतज्ञों के विशेष आग्रह पर पं. बड़े गणेश मिश्र अपनी 12 तारों वाली टोटा सारंगी लेकर अन्धे मोहम्मद खाँ साहब के पास कच्ची सराय पहुँचे। सारी सराय काशी के संगीतज्ञों एवं संगीतप्रेमियों से भरी थी। सर्वप्रथम आपने समयानुकूल राग की ख्याल शैली की आलापचारी के साथ वादन आरम्भ किया और क्रमशः राग की मर्यादा को पराकाष्ठा पर ले जाकर और समापन कर सबकी अपार प्रशंसा प्राप्त की और तत्पश्चात आपने टप्पा बजाना शुरू किया और टप्पे में गिटकरी, फिरन्त, क्लिष्ट, प्रभावशाली नवीन उपजों की अन्तहीन शृंखला खड़ी कर खाँ साहब सहित उपस्थित संगीत प्रेमियों को अवाक् कर दिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर भावविभोर खाँ साहब ने गणेश मिश्र जी का हाथ चूमते हुए कहा “इतनी छोटी सी सारंगी में 20–25 उपजों में समाप्त हो जाने वाली टप्पा गायकी को पर्वत बना देने की अपूर्व क्षमता, प्रभावशाली नवीन उपजों की अद्भुत परिकल्पना प्रत्यक्ष करने का मेरी जिन्दगी का प्रथम सुअवसर है। आप जैसे विद्वानों की साधना से धन्य है बनारस।”[1]

आप जैसे उदार हृदय वाले, स्वाभिमानी, निर्लोभी, पुरूषार्थी, अद्भुत प्रतिभावान एवं कला पर अधिकार रखने वाले मूर्धन्य सारंगीवादक को पाकर सम्पूर्ण काशी नगरी गौरवान्वित हुई है। काशी की इस अनुपम संगीत विभूति का जन्माष्टमी के पुण्य पर्व पर सन् 1914 ई. में स्वर्गवास हो गया। काशी की घरानेदार परंपरा में आपके घराने को गुणीजन पं. रामबख्श मिश्र घराना अथवा पं. बड़े गणेश मिश्र घराना के नाम से संबोधित करते हैं।

पं. शीतल मिश्र

पं. शीतल जी मिश्र का जन्म सन् 1855 ई. में काशी के कबीरचौरा मुहल्ले में पैतृक निवास स्थान पर हुआ। आप पं. रामबख्श मिश्र जी के दूसरे पुत्र एवं पं. गणेश मिश्र जी के अनुज हैं। आपने संगीत की शिक्षा पिता पं. रामबख्श जी मिश्र से प्राप्त की एवं साथ ही साथ बड़े भ्राता पं. गणेश मिश्र जी के वादन की सूक्ष्मताओं को अपनाकर विद्वान सारंगी

---

1 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 212–213

वादक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। पिताजी की घरानेदार शैलीगत विशेषताओं को अपनाने के कारण आपकी गणना टप्पा, टपख्याल एवं ठुमरी अंग के कुशल वादकों में थी। पं. कामेश्वर नाथ जी मिश्र ने पं. शीतल जी मिश्र से संबंधित उस जमाने के अत्यंत रोचक एवं प्रेरक संस्मरण का उल्लेख किया है – ''एक बार देश के सुप्रसिद्ध सारंगी वादक उस्ताद मम्मन खाँ दिल्ली से कलकत्ता जाते हुए अपने आत्मीय प्रशंसकों के विशेष आग्रह पर बनारस रुक गये। खाँ साहब के सम्मान में उनके प्रशंसकों ने एक संगीत जलसा आयोजित किया जिसमें काशी के सभी संगीतज्ञ आमंत्रित होकर सम्मिलित हुए। मम्मन खाँ साहब ने उस जलसे में अपनी सुमधुर सारंगी वादन की अमिट छाप अंकित कर विशेष प्रशंसा अर्जित की और दो तीन दिन बाद अपने गन्तव्य कलकत्ता के लिए प्रस्थान कर गये। पं. बड़े गणेश मिश्र उक्त आयोजन के समय अत्यन्त अस्वस्थ चल रहे थे। अन्य संगीतज्ञों से उस्ताद मम्मन खाँ के वादन की प्रशंसा सुन लेने के बाद उन्होंने अपने अनुज शीतल मिश्र जी को बुलाया और अत्यन्त खरी खोटी सुनाते हुए कहा ''अच्छे–अच्छे वादकों के रहते हुए मम्मन खाँ काशी में बजाकर, प्रशंसा अर्जित कर चले गये और बनारस की इस बेइज्जती से तुम्हें लज्जा भी नहीं आई, धिक्कार है।'' बड़े भ्राता की यह बात आपको लग गई और उसी दिन सारंगी लेकर शीतल जी ने कलकत्ता के लिए प्रस्थान किया। उ. मम्मन खॉ उस युग की सुप्रसिद्ध गायिका गौहरजान के अतिथि थे। कलकत्ता पहुँचकर उ. मम्मन खाँ के ठहरने का स्थान ज्ञात कर पं. शीतल जी मिश्र गौहरजान के आवास पर पहुँचे और परस्पर दुआ सलाम की औपचारिकता की समाप्ति के पश्चात आपने खाँ साहब से कहा–''अपनी सांरगी से दिल पर चोट करने वाली कोई बाबत सुनाइए।'' पं. शीतल जी मिश्र के तेवर भाँपते हुए उ. मम्मन खाँ साहब बोले कि बुरा न मानें तो कोई ऐसी बाबत् आप ही सुनाइये, जो दिल पर चोट करे।'' शीतल जी तो काशी से ही यही मन बनाकर कलकत्ता गए थे, तुरन्त खाँ साहब की चुनौती स्वीकार कर ली। दूसरे दिन गौहर–जान ने अपने आवास पर एक वृहद् जलसा आयोजित किया जिसमें कलकत्ता में उपस्थित सभी विद्वान कलाकार उपस्थित हुए। पं. शीतल जी मिश्र के चुटीले सारंगी वादन को सुनने वालों से गौहरजान का विशाल कक्ष भरा था। पं. शीतल जी मिश्र ने सर्वप्रथम मम्मन खाँ सा. की वादन शैली से अपना वादन प्रारम्भ किया। खाँ साहब की वादनशैली की प्रमुख विशेषताओं को प्रस्तुत कर अपनी विशिष्ट वादन प्रतिभा का परिचय दिया तत्पश्चात टप्पा बजाकर उपस्थित जनसमुदाय को अपनी विद्वता से प्रभावित किया और अन्त में राग सिन्दूरा की प्रसिद्ध ठुमरी ''आए ना श्याम मोरी लीनी ना खबरिया'' का हृदयस्पर्शी वादन शुरू करके विरहिणी नायिका की मार्मिक वेदना का विभिन्न सुरों के द्वारा ऐसा जीवन्त रूप साकार किया कि मम्मन खाँ सा. सहित समस्त संगीत प्रेमी आपकी चुटीली वादन शैली से अवाक् हो उठे। मम्मन खाँ साहब ने पं.

शीतल जी मिश्र को हृदय से लगाते हुए मार्मिक शब्दों में कहा कि ''सचमुच आपकी वादनशैली में हृदय पर चोट करने वाला खिंचाव है, जो सुनने वाले सुरीले लोगों को मोम की तरह पिघला लेने की अपूर्व क्षमता रखता है।''[1]

काशी का गौरव बढ़ाकर पं. शीतल जी मिश्र जब पुनः काशी लौटे तो बड़े भ्राता पं. गणेश मिश्र जी ने उन्हें हृदय से लगा लिया। आपके दो सुयोग्य पुत्र पं. गौरीशंकर मिश्र (ज्येष्ठ) एवं पं. हरिशंकर मिश्र (कनिष्ठ) हुए। यहाँ उल्लेखनीय है कि आपकी प्रथम पत्नी से उत्पन्न पुत्र पं. काशी मिश्र का नाम भी गुणी सारंगी वादकों में लिया जाता है। इनका युवा अवस्था में ही देहावसान हो गया था।

पं. सुरसहाय मिश्र

पं. बड़े गणेश मिश्र जी के एक मात्र पुत्र हुए पं. सुरसहाय जी मिश्र। मूर्धन्य सारंगी वादक एवं विद्वान गायक पं. सुरसहाय जी मिश्र (पं. राजन साजन मिश्र जी के दादाजी) का जन्म सन् 1875 ई. में काशी के कबीरचौरा मुहल्ले में हुआ। आपकी सांगीतिक शिक्षा सारंगी वादक पिता पं. गणेश जी मिश्र व चाचा पं. शीतल जी मिश्र के मार्गदर्शन में हुई। सारंगी के प्रतिष्ठित कुल में जन्म होने के कारण घराने की टप्पा अंग की पारंपरिक वादन शैली में तो आपने दक्षता प्राप्त कर ही ली साथ ही अन्य शैलियों में भी प्रतिभा एवं निरन्तर साधना के बल पर कुशलता प्राप्त की। आपके पास घरानेदार बंदिशों का विशाल भंडार था। आपको टप्पा, टपख्याल, ठुमरी आदि की अनगिनत बंदिशें कंठस्थ थी। आप काशी नगरी में रससिद्ध सारंगी वादक होने के साथ–साथ सुरीले एवं लोकप्रिय गायक के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

डॉ. वनमाला पर्वतकर संगीतमय बनारस में लिखती हैं कि ''पं. सुरसहाय मिश्र जी को अपने पिताजी और चाचाजी दोनों के गायकी के सभी अंगों की शिक्षा के साथ सारंगी वादन की बेजोड़ शिक्षा मिली। युवावस्था में ही आप ख्याति प्राप्त सारंगी वादक माने जाने लगे। रामनगर और कबीरचौरा निवासी ठाकुर प्रसाद मिश्र और पियरी घराने के गुणीजनों के सम्पर्क से आप सुरीले गवैये, लाजवाब सारंगी वादक बन गये।''[2] आपके पिता पं. गणेश जी मिश्र एवं चाचा पं. शीतल जी मिश्र के निधन के पश्चात बनारस के संगीत प्रेमी एवं संगीतज्ञ व्यंगात्मक शैली में इस बात को लेकर प्रश्न उठाने लगे कि लगता है शायद अब

---

1 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 213–214

2 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 184

इस घराने की श्रेष्ठता एवं परंपरा का अंत हो गया है। इन बातों से पंडित सुरसहाय मिश्र जी को आत्मग्लानि हुई और आपने साधना का क्रम प्रतिदिन 16 से 18 घंटे करके इन शंकाओं को निर्मूल साबित कर वादन की विद्वतापूर्ण, भावपूर्ण एवं घरानेदार विशिष्ट शैली के माध्यम से संगीत जगत को चमत्कृत करते हुए संगीतानुरागियों को दिल खोलकर प्रशंसा करने पर मजबूर कर दिया। आपने नियम संयम के साथ फलाहार करते हुए 40 दिन का सारंगी का सांगीतिक अनुष्ठान भी किया। आपने 41 वें दिन काशी के सभी प्रतिष्ठित गुणी कलाकारों को अपने आवास पर आमंत्रित कर 6 घंटों तक विभिन्न शैलियों में अद्‌भुत सारंगी वादन प्रस्तुत कर एक विद्वान एवं धुरंधर सारंगी वादक के रूप में प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा अर्जित की। पंडित जी अपने जमाने के मात्र ख्यातनाम सारंगीवादक ही नहीं थे अपितु आपकी एक विलक्षण प्रतिभा वाले गायक के रूप में भी पहचान थी। आपका गायन एवं वादन दोनों क्षेत्रों में समान अधिकार था।

आपकी विद्वता की पुष्टि हेतु पं. कामेश्वर नाथ मिश्र ने एक रोचक संस्मरण का उल्लेख किया है – "एक बार दिल्ली के देश प्रसिद्ध सारंगी वादक उस्ताद बुन्दू खाँ साहब का काशी आगमन हुआ। एक समारोह में अपने सुमधुर स्वतंत्र सारंगीवादन से आपने काशी के संगीत प्रेमियों के मानस पटल पर अपनी अमिट छाप अंकित की। उस समारोह में काशी के समस्त संगीतज्ञ, पं. सुरसहाय मिश्र एवं रसज्ञ संगीत श्रोता उ. बुन्दूखाँ की प्रभावशाली वादन शैली से प्रभावित हुए। काशी के अनेक संगीत प्रेमियों ने पं. सुरसहाय मिश्र जी से गाने एवं बुन्दू खाँ सा. से उनके साथ सारंगी संगति करने का विनम्रतापूर्वक आग्रह किया। बुन्दू खाँ साहब दैनिक क्रिया के अतिरिक्त हर समय सारंगी वादन में तल्लीन रहने वाले अपने युग के महान साधक थे। आपके वादन में सपाट तानों की अटूट शृंखला में तैयारी, सफाई शहजोरी, माधुर्य का अद्‌भुत समन्वय था। संगीत की भरी महफिल में किए गए विनम्र आग्रह को दोनों ही कलाकारों ने शिरोधार्य किया। पं. सुरसहाय जी ने एक टप्पा की बंदिश प्रारम्भ की, जिसमें फिरन्त तानों का एक जाल सा बुन दिया। कुछ देर तक बुन्दू खाँ साहब बजाते रहे, तत्पश्चात सारंगी रखते हुए कहा कि "टप्पा अंग मेरा बाज नहीं है, काशी के ही सारंगी वादकों को चारों पट की गायकी के साथ कुशलतापूर्वक बजाने की दक्षता प्राप्त है।"[1]

"सुरीले गले के गवैये, मृदुभाषी, धार्मिक प्रवृत्ति वाले सुरसहाय जी काशी के सभी वर्गो के प्रिय थे। वैष्णव मंदिरों के साथ–साथ आपका विशेष लगाव औघड़ बाबा कीनाराम

---

1 काशी की संगीत परंपरा : पं. कामेश्वर नाथ मिश्र पृ. सं. 214–215

की समाधि से भी था। बाबा कीनाराम की समाधि के औघड़ महात्माओं की आप निरंतर सेवा करते रहे। कालांतर में आप बाईसाहेब हुस्नाबाई के स्थाई संगतकार भी बने रहे। अपने में यह एक महत्त्वपूर्ण प्रमाण है आपके श्रेष्ठ सारंगी वादन का।"[1] अतः अनवरत साधना, प्रतिभा, निष्ठा एवं वंशानुगत गुणों के कारण आपने एक कुशल एवं ख्याति प्राप्त सारंगी वादक एवं गायक के रूप में पहचान बनाते हुए भारतीय संगीत की महती सेवा की। आप सामान्य वेशभूषा धारण करने वाले, धार्मिक, आस्थावान, सेवाभाव, प्रसन्नता, व्यवहारकुशलता आदि गुणों से विभूषित सरल व्यक्तित्व के धनी संगीतज्ञ एवं आदर्श कलाकार थे। संगीत जगत में लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में स्थापित होकर धन, सम्मान एवं यश अर्जित कर आप 65 वर्ष की आयु में सन् 1939 ई. में काशी की पुण्य धरा पर स्वर्गवासी हो गये।

पं. गौरीशंकर मिश्र

सारंगी के लब्ध प्रतिष्ठित घराने में पं. शीतल जी मिश्र की द्वितीय पत्नी से पं. गौरीशंकर जी मिश्र (ज्येष्ठ पुत्र) का जन्म हुआ। मात्र 5 वर्ष की आयु में ही आपके सिर से पिता का साया उठ गया। आपने चचेरे भाई विद्वान गायक एवं सारंगीवादक पं. सुरसहाय मिश्र जी के सानिध्य में सारंगी–वादन की शिक्षा प्राप्त कर लगन एवं निरन्तर साधना से एक प्रतिष्ठित सारंगी वादक के रूप में अपनी पहचान बनाई। अपने जमाने की मशहूर गायिका काशीबाई के आप चहेते संगतकार थे। बंबई की ग्रामोफोन कम्पनी द्वारा जब काशीबाई और पं. छोटे रामदास मिश्र जी के रिकॉर्ड बनाये गये तब आपको संगत हेतु विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। आपकी प्रसिद्धि संगीत जगत में उत्तरोत्तर बढ़ रही थी लेकिन दुर्भाग्यवश युवावस्था में ही आप स्वर्गवासी हो गये।

पं. हरिशंकर मिश्र

कुशल गायक एवं सारंगी वादक पं. हरिशंकर मिश्र ख्यातनाम सारंगीवादक पं. शीतल जी मिश्र के कनिष्ठ पुत्र थे। आपने सांगीतिक शिक्षा चचेरे भाई पं. सुरसहाय मिश्र जी से प्राप्त की तत्पश्चात आपने गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी मिश्र का शिष्यत्व ग्रहण किया। आपने सारंगी वादन के साथ–साथ गायन के क्षेत्र में भी उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त की। आपका ख्याल, टपख्याल, टप्पा एवं ठुमरी आदि सभी शैलियों के गायन पर पूर्ण अधिकार था। आपके पास सभी शैलियों की मनमोहक एवं विशिष्ट बन्दिशों का भण्डार था। पं. हरिशंकर मिश्र के व्यक्तित्व की खास बात यह थी कि जहाँ वह अपने घराने की

---

1 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 185

विशेषताओं की विद्वतापूर्ण प्रस्तुति में पारंगत थे वहीं अन्य घरानों के विद्वान कलाकारों की भी खुले दिल से प्रशंसा करते थे। आपके स्वभाव में निर्भीकता एवं स्पष्टवादिता आदि गुणों के कारण आपको संगीत जगत में विशेष आदर व सम्मान प्राप्त था। काशी के गुणी एवं प्रतिष्ठित सारंगी वादक एवं गायक पं. हरिशंकर मिश्र जी का मात्र 55–60 वर्ष की आयु में ही स्वर्गवास हो गया। पं. शीतलजी मिश्र की शाखा तीसरी पीढ़ी तक ही चल पाई। इस शाखा में श्रेष्ठ एवं गुणी संगीत साधक हुए हैं।

पं. हनुमान प्रसाद मिश्र

मूर्धन्य एवं लोकप्रिय सारंगी वादक एवं गायक पं. सुरसहाय मिश्र जी के ज्येष्ठ पुत्र एवं विश्व प्रसिद्ध शास्त्रीय युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र जी के पिता ख्यातनाम गुणी सारंगी वादक पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र का जन्म सन् 1914 ई. में भारत की सांस्कृतिक नगरी काशी में हुआ। आपकी संगीत शिक्षा का क्रम आपके पिता पं. सुरसहाय मिश्र जी के मार्गदर्शन में आरम्भ हुआ।

आकाशवाणी अभिलेखागार में संकलित ''स्वर निवेश'' कार्यक्रम के अंतर्गत आपने संगीत साधना और संगत के बारे में विस्तार से बताया ''हमारा तालीम तो भाई करीब 9 साल की उम्र से शुरू हुआ और बड़ा लाड़ प्यार से हमारे पिताजी रखते रहे हमको। पहले गाने का हमको शुरूआत किया, इतने सुरीले थे कि उनका सुरसहाय नाम हो गया कि भई सारा बनारस सुरसहाय के नाम से जानता था। तालीम देने का तो यही तरीका था कि सुबह चार बजे भोर में वह उठ जाते थे, पहले तो साधु रहे और अपना रोज़ का क्रिया करके कंडाल के पानी से नहायके भस्मी लगायके भजन गाते रहें 6 बजे तक 7 बजे तक, उसके बाद फिर वह निकलें, उनका यह क्रिया था। मगर जगा दें हम लोगों को तो अपने ही जाग जायें, सिर पर गाना हो रहा है और वो गावें एक से एक भजन, एक से एक राग में गावें, एक से एक चीज़ गावें। उठ जायें हम लोग तो चलो चलो भेरो (भैरव) ज़रा सीख लो।

पियरवा मैका भोर जगावे (बंदिश राग भैरव में गाकर सुनाते हैं)

ये सब सिखावें, जितने बड़े हम थे उतना ही बड़ा तानपुरा खरीद लाये, उसी नाप का और एक छोटा बायाँ अभी तक उनका दिया हुआ है। उनका कहना ये था कि एक हाथ से बायाँ का ठेका लगाइये और तानपुरा छेड़िए गाइये। जो जो गाना बतलाते गए

उसको गाते गये, उसके साथ लय स्वर का दोनों तीनों काम करें साथ में, तो एक दो साल ऐसे ही चला। जब दस साढ़े–दस बरस के हुए तब फिर लगे कहने कि भई थोड़ा सारंगी भी बजाओ क्योंकि सारंगी बजाना बहुत जरूरी है इस वखत, ज़माना ऐसा आया है कि गाने वालों का ज़्यादा खोज नहीं है, सारंगी का ज़रूरत ज़्यादा पड़ता है। गाने वाली, गाने वाले सब खोजते हैं कि भई सारंगी वादक चाहिए, उससे भराव रहता है गाने का। ये सब बात चला तो हमको फिर सारंगी भी पकड़ाये। सारंगी भी बजाने लगे धीरे–धीरे, जो–जो बतलाते थे, वो–वो निकालने का कोशिश करें। पहले तो सरगम तान, बीसों किसम का सरगम तान पलटा, तब फिर उसके बाद आलापचारी में, और कैसे उंगली रक्खा जायेगा ये सब बताने लगे तो 11 साल 12 साल का होते होते थोड़ा एक आध दो चीज़ निकलने लगा। हमारे घराने में ख़ासतौर से ज़्यादातर ख्याल, टप्पा, ठुमरी हर चीज़ का तालीम है। सारंगी वादक होने के लिए तो इतना बड़ा चीज़ जुटाना होता है कि पहले तो अनुभवी हो, ज्ञानी हो, कान वाला हो, बुद्धि वाला हो, पहली बात ये। दूसरी बात ये है सारंगी वादकों के लिए, हर लोगों के लिए कह रहे हैं कि थोड़ा टप्पा का भी ज्ञान होना चाहिए, थोड़ा ठुमरी का भी वज़न, अंदाज हाथ से निकलना चाहिए इसलिए गुरु लोग पहले ठुमरी भी बतलाते हैं। मैन चीज़ तो संगत के माने क्या हैं हेल्प करने वाले, तो मान लीजिए आप गला लगाएं तो उस जगह पर हमारी सारंगी जब बोलेगा तो एक–दो सुर मिलके एक लाइट आवेगा। इसमें सौ रंग हैं, सारंगी नहीं इसका नाम सौरंगी है, बजाने वाला होना चाहिए इसके विशेषता को जानने के लिए। बहुत बड़ी और मुश्किल चीज़ है, बहुत बड़ा दिमाग और माथा होगा तब बजा सकता है।''[1]

पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी की गणना उनकी लगन, निष्ठा एवं निरन्तर साधना के बल पर काशी के प्रतिभावान एवं प्रतिष्ठित सारंगी वादकों में होने लगी। सन् 1938 ई. में आपके पिता के स्वर्गवास के लगभग एक वर्ष पूर्व आपने गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया। आपने जहाँ एक ओर वंशानुगत घरानेदार शिक्षा रूपी विरासत को सहेजा वहीं दूसरी ओर गायनाचार्य जी का शिष्यत्व ग्रहण करने के कारण आपकी वादन एवं गायन कला का चहुँमुखी विकास हुआ। पं. कामेश्वर नाथ मिश्र के अनुसार ''गायनाचार्य जी की देखरेख में विभिन्न प्राचीन, क्लिष्ट, जनसामान्य में लोकप्रिय राग–रागिनियों, तालों आदि के ख्याल, टपख्याल, टप्पा, ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी, होरी गायन शैली की अभिनव शिक्षा आपको मिली। आपकी संगीत शिक्षा का चहुँमुखी विकास

---

1 www.youtube.com - (All India Radio Programme - 'Swar Nivesh' Episode No. 7 (Radio Serial based on Archival Recordings)

हुआ, जिसमें आपके वादन को अत्यन्त सुरीला, लयदार, प्रभावशाली एवं सुन्दर बनाया। आप स्वतंत्र वादन एवं संगति दोनों विधाओं के पारंगत सारंगीवादक प्रतिष्ठित हुए।''[1]

आपके परिपक्व, विद्वतापूर्ण एवं विशिष्ट सारंगी वादन के कारण जहाँ आपको देश की प्रमुख रियासतों, संगीत सम्मेलनों, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्रों द्वारा आमंत्रित किया गया वहीं दूसरी ओर देश के ख्यातनाम गायकों जैसे उ. फैयाज खाँ, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, उ. बड़े गुलाम अली खाँ, श्रीमती केसरबाई आदि के साथ सारंगी की प्रभावपूर्ण एवं सुरीली संगति कर देश के शीर्षस्थ संगतकार के रूप में स्थापित हुए। आपने देश के लगभग हर घराने के ख्यातनाम एवं श्रेष्ठतम संगीतज्ञों के साथ सारंगी की उत्कृष्ट संगत कर ख्याति अर्जित की है। आपकी विद्वता, परिपक्वता एवं सुरीलेपन का प्रमाण आपके दोनों पुत्र एवं शिष्य विश्वविख्यात गायक पं. राजन साजन मिश्र जी की गायकी में स्पष्टतः दिखाई देता है। आपके अनुज पं. गोपाल मिश्र जी को ख्यातिप्राप्त सारंगी वादक बनाने एवं पं. राजन साजन मिश्र जी को विश्व प्रसिद्ध ख्याल गायक बनाने में आपके मार्गदर्शन, घरानेदार शिक्षा एवं प्रोत्साहन ने अकल्पनीय भूमिका निभाई है। आप अपने घराने की वंश परंपरा के अन्तिम सारंगीवादक के रूप में जीवन के अन्त समय तक देशी विदेशी शिष्य–शिष्याओं को संगीत का रसपान कराते रहे। संगीत जगत में आपकी सेवाएँ चिरस्मरणीय हैं। डॉ. वनमाला पर्वतकार के अनुसार ''पं. हनुमान प्रसाद मिश्र बड़े ही मृदुभाषी और मिलनसार व्यक्ति थे। खाने पीने और खाने खिलाने के ऐसे तबीयतदार आदमी थे जो जाड़ेभर मुलायम दाने की मटरचुड़ा और बनारसी मगदल और मलाई के साथ नित्य बादाम की ठंडाई का सेवन करते थे और पान जमाते थे।''[2]

ऐसी ही मज़ेदारी इनके बनारसी शैली के सारंगी वादन में रही। आपके व्यक्तित्व की खूबियों के बारे में पं. कामेश्वर नाथ मिश्र लिखते हैं ''सुन्दर व्यक्तित्व, खानपान, नियम संयम से शान्तिमय ढंग से संगीतमय वातावरण में हर क्षण रमे रहने में लालायित, पान, ठंडाई, बादाम के नियमित सेवनकर्ता, दुर्व्यसनों से दूर धार्मिक प्रवृत्ति के पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र बनारसी शैली के गौरवपूर्ण इतिहास के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में 80 वर्ष की उम्र तक भी कुछ सुनने–सुनाने, शिक्षा देने एवं साधना में संलग्न रहे।''[3] संगीत की अनवरत साधना एवं सेवा हेतु उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा सन् 1986 ई. में एवं केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी दिल्ली द्वारा विशेष धनराशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर आपको

---

1 पं. कामेश्वरनाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 216

2 संगीतमय बनारस : डॉ. वनमाला पर्वतकर, पृ. सं. 185–186

3 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 216

सम्मानित किया गया। महान् संत प्रकृति के संगीतज्ञ पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र का स्वर्गवास वर्ष 1999 में हो गया।

पं. गोपाल प्रसाद मिश्र

विलक्षण प्रतिभा के धनी, काशी के गौरव, सुरीले, गुणी एवं बेजोड़ सारंगी वादक पं. गोपाल मिश्र जी का जन्म लब्ध प्रतिष्ठित काशी के सारंगी घराने में सन् 1920 ई. में कबीर चौरा मोहल्ले में हुआ। आपमें वंशानुगत सांगीतिक प्रतिभा एवं गुणों को देखकर पिता पं. सुरसहाय मिश्र जी ने आपकी संगीत शिक्षा आरम्भ कर दी। कुछ समय पश्चात आपमें संगीत कला हेतु निहित विलक्षण प्रतिभा को देखकर पिताजी ने आपको गायानाचार्य पं. बड़े रामदास जी के चरणों में सौंप दिया। गायनाचार्यजी ने आपकी कुशाग्र बुद्धि, सीखने की ललक एवं कठोर परिश्रम के गुण को देखकर उदार ह्रदय से संगीत की शिक्षा प्रदान की। पं. कामेश्वर नाथ मिश्र के अनुसार'' पं. गोपाल मिश्र जी की कुशाग्रता, स्मरणशक्ति एवं संगीत विद्या की ग्रहण शक्ति देखकर गायनाचार्य जी अत्यन्त प्रभावित हुए और पूर्ण उदारता से इन्हें प्रचलित अप्रचलित रागों, रागिनियों, तालों, विभिन्न गायन शैलियों की विशिष्ट शिक्षा अत्यन्त मनोयोग से देने में कोई भेदभाव संकोच नहीं किया। गायनाचार्य जी की विलक्षण शिक्षा पद्धति से उनकी सत्संगति एवं सत्परामर्शों पर पूरी आस्था एवं गुरुभक्ति रखते हुए पं. गोपाल मिश्र ने सारंगीवादन के क्षेत्र में शीर्षस्थ होने के लिए नियमित कठोर साधना की और 25 वर्ष की आयु आते आते आप कुशल सारंगी वादक के रूप में पहचाने जाने लगे।''[1] सारंगी वादन की शिक्षा में पं. गोपाल मिश्र जी को ज्येष्ठ भ्राता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र का सत्परामर्श एवं आशीर्वाद जीवन पर्यंत मिला। डॉ. वनमाला पर्वतकर के अनुसार ''गोपाल मिश्र जी ने गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी से गायकी बजाने का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया साथ ही साथ वह संगीत नायक पं. छोटे रामदास जी के पास बैठकर रियाज़ करते रहते थे। पूरे देश के सारंगी वादकों में युवावस्था में ही पं. गोपाल मिश्र अपनी वादन कला और बेजोड़ संगत करने की क्षमता में सबसे अधिक लोकप्रिय सारंगीवादक हो गये हैं। रेडियो संगीत सम्मेलन में लगभग 35 वर्ष पहले मुम्बई से प्रसारित पं. गोपाल मिश्र की सारंगी और पं. विष्णुगोविन्द जोग की वायलीन की जुगलबंदी अप्रतिम और चिरस्मरणीय उदाहरण है।''[2]

---

1 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परम्परा, पृ. सं. 216–17

2 डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 186

देश के लगभग सभी प्रमुख नगरों में आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में अपनी प्रभावपूर्ण एवं चमत्कृत कर देने वाली वादन शैली से अत्यन्त लोकप्रिय कलाकार का दर्जा प्राप्त कर आपने काशी की एवं घराने की गरिमा में अभिवृद्धि की है। स्वतंत्र सारंगी वादन के अन्तर्गत चित्ताकर्षक एवं विद्वतापूर्ण शैली, सुरीलेपन के साथ विशेष उपज, लयकारी, तैयारी, सफाई, कमानी एवं अँगुलियों का उचित समन्वय आदि विशेषताओं एवं गुणों के कारण आपकी गिनती देश के दिग्गज एवं गुणी सारंगीवादकों में होती है।

देश के ख्यातनाम एवं शीर्षस्थ गायक–गायिकाओं में प्रमुख पं. बड़े रामदास मिश्र, पं. छोटे रामदास मिश्र, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, उ. फैयाज खाँ, बड़े गुलाम अली खाँ, विदुषी केसरबाई केरकर, गंगूबाई हंगल, हीराबाई बड़ौदकर, सिद्धेश्वरी देवी, रोशनआरा बेगम, गिरिजा देवी, किशोरी अमोनकर, नज़ाकत सलामत अली, अमानत अली फतेह अली, डी. वी. पलुस्कर, विनायकराव पटवर्धन, नारायण राव व्यास, कृष्णराव शंकर पंडित, भीमसेन जोशी, डागर बन्धु, हरिशंकर मिश्र एवं श्रीचन्द मिश्र सरीखे बड़े एवं महान् कलाकार आपके न केवल प्रशंसक थे अपितु इनके साथ आपने विद्वतापूर्ण शैली में अनूठी सारंगी संगत कर संगीत जगत् में अपना विशेष स्थान आजीवन बनाये रखा।

आप स्वभाव से सरल, मिलनसार एवं स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी थे। जीवन के अंतिम वर्षों में आप दिल्ली में निवास करने लगे। यहाँ भी आपके द्वारा सारंगी का प्रशिक्षण जारी रहा। आपके कोई संतान न होने के कारण आपने अपने अग्रज पं. हनुमानप्रसाद जी मिश्र के परिवार को ही अपना परिवार समझा। देश के ख्यातनाम ख्याल गायक पं. राजन साजन मिश्र को अपने चाचा पं. गोपाल मिश्र जी से सदैव स्नेहाशीष एवं सांगीतिक ज्ञान मिलता रहा। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इन्हीं के सत्प्रयासों एवं आशीर्वाद से दोनों भ्राताओं को दिल्ली में स्थापित होने एवं संगीत के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति हेतु प्रेरणा मिली। टप्पा घराने के नाम से प्रसिद्ध सारंगी के बनारस घराने के बेजोड़ कलाकार पं. गोपाल मिश्र जी का 22 जनवरी 1977 को दिल्ली में असामयिक निधन हो गया। आपका निधन संगीत जगत् की अपूरणीय क्षति है। डॉ. वनमाला पर्वतकर के अनुसार "पं. गोपाल मिश्र के लिए यह लिखना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि इनके जैसा साफ सुथरा और सारंगी के सभी अंगों को बजाकर संगत करने वाला कोई दूसरा सारंगी वादक खोजना दुष्कर है।"[1]

---

[1] डॉ. वनमाला पर्वतकर : संगीतमय बनारस, पृ. सं. 186

पं. राजन साजन मिश्र

बनारस की पूज्य एवं पावन धरा पर महान् सारंगी वादक पं. रामबख्श मिश्र जी के घराने एवं वंश परंपरा के प्रतिनिधि कलाकार सारंगीवादक पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र के यहाँ दो विलक्षण प्रतिभाओं ने जन्म लिया जो वर्तमान में भारतीय संगीत जगत के अनमोल रत्न एवं प्रतिनिधि कलाकार के रूप में पं. राजन साजन मिश्र के नाम से संपूर्ण विश्व में

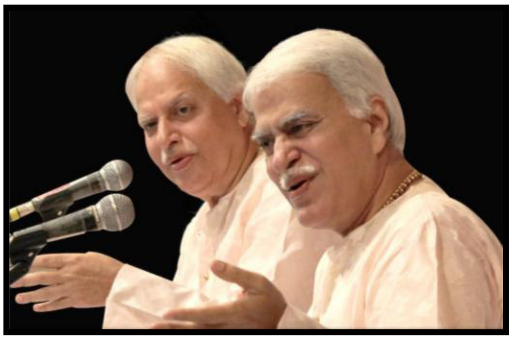

विख्यात हैं। पं. राजन जी मिश्र का जन्म सन् 1951 ई. में व पं. साजन जी मिश्र का जन्म सन् 1956 ई. में पौराणिक नगरी काशी के प्राकृतिक, आध्यात्मिक एवं संगीतमय वातावरण में हुआ। वर्तमान समय के लोकप्रिय एवं ख्यातनाम युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र जी की संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा स्वयं के घराने में ही हुई। बनारस के लब्ध प्रतिष्ठित सारंगी घराने की वंश परंपरा से सम्बद्ध होने के कारण बाल्यकाल से ही लालन–पालन के साथ संगीत के उच्चकोटि के संस्कार मिलने लगे। दोनों भ्राताओं द्वारा बचपन से ही पिताजी एवं चाचाजी को निरन्तर गाते बजाते सुनने के कारण सुर, ताल, लय एवं राग–रागिनियों की रसमयी धारा के प्रवाह के बीच संगीत की बारीकियों को समझने का दृष्टिकोण विकसित हो गया। घर के साथ–साथ सदैव स्वर लहरियों से गुंजायमान काशी के कबीरचौरा मुहल्ले के संगीतमय वातावरण के प्रभाव से संगीत आपकी रग–रग में रच बस गया। इस सुन्दर सांगीतिक परिवेश ने भविष्य में आप दोनों के महान् कलाकार बनने हेतु मज़बूत आधार तैयार कर दिया।

पं. राजन मिश्र जी की संगीत शिक्षा महज 5 वर्ष की आयु से विद्वान पिता एवं गुरु पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र की देखरेख में आरम्भ हुई। कुछ वर्षो पश्चात आपने गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया। पं. साजन जी मिश्र की संगीत शिक्षा पिताजी, चाचाजी एवं बड़े भ्राता पं. राजन जी मिश्र के कुशल निर्देशन में हुई। पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''पं. बड़े रामदास जी हमारे औपचारिक गुरु तो थे लेकिन हमारी 9 साल की उम्र हुई तो वह चल बसे लेकिन उनका आशीर्वाद पूरा मिला।''[1] आप दोनो भ्राताओं ने स्वयं के घराने की गायकी की सूक्ष्मताओं का अपने पिताजी एवं चाचाजी के माध्यम से रसपान कर ही लिया साथ ही गायनाचार्यजी की गायन शैली की विशेषताओं को भी आत्मसात कर लिया। यहाँ यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि भ्राताद्वय को पं. बडे

---

1 पं. राजन जी मिश्र, वार्ता, दिनांक 12.7.2014 गुरुपूर्णिमा, नई दिल्ली

रामदासजी का भले ही ज्यादा समय सानिध्य न मिला हो लेकिन गायनाचार्य जी द्वारा पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र एवं चाचा पं. गोपाल जी मिश्र को प्रदत्त सांगीतिक शिक्षा का पूरा लाभ विरासत में पं. राजन साजन मिश्र जी को मिला। दोनों भ्राताओं ने ख्याल, टपख्याल, टप्पा, तराना आदि की दुर्लभ एवं प्राचीन बंदिशों के अपार संग्रह एवं गायन शैली की सूक्ष्मताओं का गायन में सम्मिश्रण करते हुए गायन शैली को बेजोड़ एवं प्रभावशाली बना लिया। इसके साथ ही आपके पिताजी एक गुणी एवं प्रसिद्ध सारंगी संगतकार के रूप में स्थापित होने के कारण, देश के विविध घरानों के नामी एवं धुरंधर गवैयों की गायकी का सार भी पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र के पास था, अतः इस अनुभव का लाभ भी दोनों भ्राताओं को विशेष रूप से मिला। अतः घर में मिले सांगीतिक वातावरण व घरानेदार तालीम ने दोनों भ्राताओं के लिए रससिद्ध, धुरंधर एवं ख्यातनाम गायक जोड़ी बनने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। पं. राजन साजन मिश्र जी का विद्यालयीन शिक्षा का क्रम भी गायन की शिक्षा के साथ निरन्तर चलता रहा। पं. राजन जी मिश्र ने समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर एवं पं. साजन जी मिश्र ने स्नातक स्तर की परीक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। बचपन से मिले पारिवारिक संस्कार, संगीत की घरानेदार तालीम, विद्यालय में मिले शैक्षिक वातावरण के साथ बनारस की संगीतमय आबोहवा में रचते बसते हुए ख्याल एवं टप्पा अंग की गायकी की अनवरत साधना के फलस्वरूप आप काशी के संगीत प्रेमियों एवं गुणीजनों के बीच चर्चित एवं लोकप्रिय होते चले गये।

आपके चाचाजी पं. गोपाल प्रसाद जी मिश्र इसी दौरान काशी छोड़कर दिल्ली में निवास करने लगे और कुछ समय पश्चात आपने दोनों भ्राताओं को भी दिल्ली ही बुला लिया। पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''सोशियोलोजी से एम. ए.'' किया था तो दिल्ली में ''लेबर वेल्फेयर ऑफिसर ट्रेनी'' के पद पर एक साल की ट्रेनिंग के लिए मुझे नियुक्ति मिल गयी क्योंकि चाचाजी की डीसीएम के मालिक से मित्रता थी। 1973 में यहाँ (दिल्ली) पक्का आ गया था और सर्विस ज्वाइन कर लिया था।''[1] इस दौरान एक कार्यक्रम में आपकी भेंट नामधारी सतगुरु जगजीत सिंह जी महाराज से हुई। उन्होंने गाना सुनने के उपरान्त आपको बुलाकर आपके बारे में जानकारी प्राप्त की। बातचीत के बाद सतगुरु जी ने कहा कि आप यह नौकरी छोड़ दीजिए। उनके सुझाव को शिरोधार्य करते हुए पं. राजन मिश्र जी ने नौकरी छोड़ दी।

आकाशवाणी द्वारा इस युगल गायक जोड़ी को पहली बार में ही ए ग्रेड कलाकार के रूप में सूचीबद्ध किया गया और यहाँ से आप दोनों भ्राता सफलता के नित नये आयाम

[1] पं. राजन जी मिश्र, वार्ता, दिनांक 12.7.2014, गुरुपूर्णिमा, नई दिल्ली

छूते गये। तब से लेकर आज तक उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर आपका हर कदम सफलता की नई कहानी कहता है। आपने स्वयं के घराने की मूलभूत एवं रसमयी गायन शैली के साथ–साथ मूर्धन्य कलाकारों के गुण वैशिष्ट्य को अपने गायन में समाहित कर गायन शैली को अद्भुत, शास्त्रपूर्ण, चित्ताकर्षक, मनमोहक एवं प्रभावशाली रूप दे दिया। आपकी मनमोहक ख्याल गायन शैली में शास्त्रीय मर्यादा के अनुरूप स्वर, ताल, लय, राग, रस, पद्धति, छन्द, भाषा साहित्य आदि सभी अवयवों का उचित समन्वय दृष्टिगत होने के कारण आज आपकी गणना परिपक्व एवं प्रतिष्ठित शीर्षस्थ शास्त्रीय गायकों की सूची में अग्रिम पंक्ति में है। युगल गायन में दोनों भ्राताओं में अद्भुत सामंजस्य गायकी की रसोत्पत्ति में अभिवृद्धि कर उसे संपूर्ण बनाता है। आपने आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं संगीत–सम्मेलनों में निरन्तर कार्यक्रमों की सफलतम प्रस्तुतियों द्वारा देश–विदेश में ख्याति अर्जित करते हुए काशी की प्रतिष्ठा बढाई है। दक्षिण भारतीय भाषा में निर्मित चलचित्र शंकराभरणम् को जब हिन्दी भाषा में सुर–संगम के नाम से बनाया गया तो उसमें आपके पार्श्वगायन ने देश–विदेश में उल्लेखनीय ख्याति अर्जित की। आपके स्वभाव में निहित गुण मिलनसारिता, शालीनता, विनम्रता, बुद्धिमत्ता और सद्भाव के कारण आपको संगीत जगत में सभी बड़े कलाकारों एवं श्रोतागणों का विशेष स्नेह प्राप्त है।

पं. राजन साजन मिश्र जी की युगल जोड़ी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत रूपी पताका को देश के अतिरिक्त विदेशों में जैसे श्रीलंका, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, स्विटजरलैण्ड, इंग्लैण्ड, आस्ट्रिया, नीदरलैण्ड, सिंगापुर, कतर और मस्कट आदि देशों में फहराकर भारतीय संगीत को संपूर्ण विश्व में लोकप्रिय बनाने का भागीरथी कार्य किया है। पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र ने वर्ष 2017 एवं 2018 में आयोजित वर्ल्ड म्यूजिक टूर ''भैरव से भैरवी तक'' द्वारा सम्पूर्ण विश्व में शांति का संदेश प्रसारित किया। इंदिरा गाँधी सेन्टर फॉर द आर्ट्स एवं मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर के तत्त्वावधान में यह कार्यक्रम हमारे देश के प्रमुख शहरों सहित दक्षिण पूर्व एशिया, कनाड़ा, यू.एस.ए., साउथ अमेरिका, ब्रिटेन एवं आस्ट्रेलिया आदि देशों के विभिन्न शहरों में आयोजित किए गए हैं।

आपको अमेरिका के वाल्टीमोर शहर के लिए सम्मानसूचक नागरिकता का सम्मान प्रदान किया गया। आपको श्लाघापूर्ण गायकी के लिए 1998 में संगीत नाटक अकादमी की तरफ से राष्ट्रपति सम्मान, देश के प्रधानमंत्री की ओर से संस्कृति सम्मान, प्राचीन कला केन्द्र चंडीगढ द्वारा संगीत नायक सम्मान, इलाहाबाद से संगीत रत्न सम्मान, वाराणसी से संगीत भूषण, काशी गौरव सम्मान, भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण एवं मध्यप्रद्रेश सरकार द्वारा क्रमशः कुमार गंधर्व सम्मान एवं तानसेन सम्मान के अतिरिक्त बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा डी. लिट् की उपाधि से विभूषित किया गया है।

वर्तमान में आपकी शिष्य परंपरा में पं. राजन मिश्र जी के पुत्र पं. रितेश रजनीश मिश्र एवं पं. साजन मिश्र जी के पुत्र पं. स्वरांश मिश्र एवं अनेकानेक देश–विदेश में साधनारत शिष्य आपके घराने की आभा को चहुँ ओर बिखेर रहे हैं।

पं. रितेश रजनीश मिश्र

प्रतिष्ठित युगल शास्त्रीय गायक पं. रितेश रजनीश मिश्र का जन्म बनारस के सांगीतिक वातावरण में हुआ। आप दोनों विश्वविख्यात शास्त्रीय गायक पद्म भूषण पं. राजन मिश्र जी के वरिष्ठ एवं कनिष्ठ पुत्र हैं। आप दोनों अपने घराने की लगभग 300 वर्षो से चली आ रही संगीत परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। वंशानुगत चली आ रही परंपरा के अन्तर्गत आपकी संगीत शिक्षा दादाजी श्रद्धेय पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र, पं. गोपाल जी मिश्र, पिता पं. राजन जी मिश्र एवं चाचा पं. साजन जी मिश्र के कुशल निर्देशन में हुई। अल्प आयु से ही आप दोनों भ्राताओं ने वाराणसी एवं अन्य प्रमुख स्थानों पर आयोजित संगीत समारोहों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। पहले सार्वजनिक कार्यक्रम के समय पं. रितेश मिश्र जी की आयु मात्र 9 वर्ष और पं. रजनीश मिश्र जी की आयु मात्र 7 वर्ष थी। घर में घरानेदार परंपरा रूपी खजाने के साथ विश्व प्रसिद्ध ख्याल गायक पिता एवं चाचा पं. राजन जी मिश्र एवं पं. साजन जी मिश्र के सानिध्य में आपकी कला निरन्तर निखरती चली गई। आप दोनों भ्राताओं ने विरासत में प्राप्त अद्‌भुत एवं विलक्षण गायन शैली के साथ स्वयं के चिन्तन एवं दृष्टिकोण को भी गायकी में समाविष्ट किया है। सांगीतिक शिक्षा के साथ आपका विद्यालयीन शिक्षा का क्रम भी जारी रहा। आप दोनों ने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक तत्पश्चात संगीत विषय में स्नातकोत्तर की उपाधियाँ प्राप्त की।

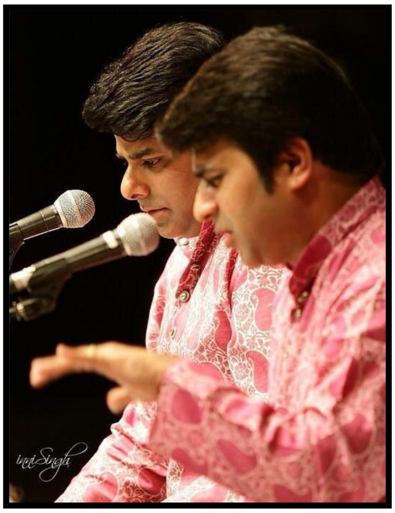

आपने अपने युगल गायन से देश–विदेश में अपार ख्याति अर्जित की है। आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं विभिन्न रिकार्डिंग कम्पनियों द्वारा प्रसारित एलबम के माध्यम से आप भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। आकाशवाणी दिल्ली द्वारा आपको प्रथम बार में 'ए ग्रेड' में सूचीबद्ध किया गया। वर्तमान में आप दोनों भ्राता आकाशवाणी के टॉपग्रेड कलाकार हैं। आपकी एलबम ''थर्ड ट्रेक महादेवा'' (RISE) को ग्रेमी अवार्ड के लिए नामित किया गया है।

देश–विदेश के अनेक प्रतिष्ठित मंचों के माध्यम से आपने अपनी कला का रसास्वादन श्रोताओं को करवाया है। विदेशों में प्रस्तुत कार्यक्रमों में बीबीसी द्वारा लंदन के अलबर्ट हॉल में आयोजित कार्यक्रम, लिंकन सेन्टर यू एस ए एवं कॉमन वेल्थ गेम्स 2002 के समापन अवसर पर यू के में आयोजित कार्यक्रम प्रमुख है। आपके द्वारा संगीत के क्षेत्र में प्रदान की जा रही उल्लेखनीय सेवाओं के लिए विभिन्न पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। इन पुरस्कारों में वर्ष 1999 के लिए 'युवा रत्न अवार्ड', वर्ष 2007 के लिए भविष्य ज्योति अवार्ड, वर्ष 2008 में संगीत नाटक अकादमी अवार्ड एवं संगीत समृद्धि अवार्ड जैसे अलंकरणों से सुशोभित किया गया है।

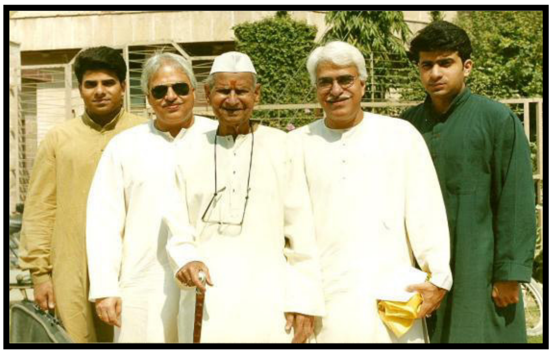

बनारस घराने की संगीत परंपरा

पं. स्वरांश मिश्र

कुशल गायक एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी पं. स्वरांश मिश्र का जन्म बनारस के प्रतिष्ठित संगीत घराने में हुआ। दिनांक 11 दिसम्बर 1984 को नई दिल्ली में जन्मे स्वरांश मिश्र को संगीत के संस्कार विरासत में मिले। आप पं. साजन मिश्र जी के सुपुत्र एवं विश्व प्रसिद्ध शास्त्रीय नर्तक पं. बिरजू महाराज जी के नाती हैं। आपकी संगीत शिक्षा दादाजी पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र, ताऊजी पं. राजन जी मिश्र एवं पिताजी पं. साजन जी मिश्र के कुशल निर्देशन में हुई। आपने अल्प आयु से ही विभिन्न प्रतिष्ठित मंचों से प्रस्तुति देना प्रारम्भ कर दिया। आपने देश के प्रमुख शहरों जैसे दिल्ली, वाराणसी, बैंगलोर, इलाहबाद, सहारनपुर, देहरादून आदि में अपनी कला से श्रोताओं का दिल जीता है। पं. स्वरांश मिश्र ने हिन्दू कॉलेज नई दिल्ली से आर्टस में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

घर में चली आ रही परंपरागत संगीत शिक्षा को आत्मसात् करते हुए विलक्षण प्रतिभा द्वारा शास्त्रीय गायन के साथ–साथ संगीत निर्देशन में भी आपकी रूचि बढ़ने लगी।

आपकी संगीत के साथ–साथ गीत लेखन में भी गहरी रूचि है। आपने अनेक डोक्यूमेन्ट्रीज़ के लिए संगीत रचना का कार्य कर प्रशंसा अर्जित की है। आपके द्वारा निर्मित धुनों को रूप कुमार राठौड़, श्रेया घोषाल एवं सोनू निगम जैसे ख्यातनाम पार्श्वगायक–गायिकाओं ने गाया है। आपको प्रतिष्ठित ''दादा साहब फिल्म फेस्टिवल अवार्ड'' से नवाजा गया है।

गायनाचार्य पं. बड़े रामदास मिश्र

काशी के घरानेदार संगीतज्ञों में सन्त गायक पं. बड़े रामदास जी मिश्र का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। काशी की मूर्धन्य विभूतियों में आपका नाम बहुत श्रद्धा एवं आदर से लिया जाता है। आपका जन्म काशी की पुण्य धरा पर 23 जनवरी 1877 ई. को संगीतज्ञ परिवार में हुआ। आपके पिता का नाम पं. शिवनन्दन मिश्र और माता का नाम भाग्यवन्ती देवी था। उत्कृष्ट संगीत शिक्षा हेतु आपके पिता आपको उस समय के उत्कृष्ट गायक पियरी घराने के श्री शिवसहाय मिश्र के पास ले गए। उन्होंने वृद्धावस्था के कारण सिखाने में असमर्थता व्यक्त करते हुए आपकी विलक्षण प्रतिभा को देखकर, लोकप्रिय गायक बनने हेतु आशीर्वाद प्रदान किया। तत्पश्चात् आपने बेतिया घराने के आपके श्वसुर पं. जयकरण मिश्र जी से विधिवत संगीत शिक्षा लेना आरम्भ कर दिया। आपने ध्रुपद–परम्परा के मूर्धन्य विद्वान गायक पं. जयकरण मिश्र जी से संगीत शिक्षा प्राप्त करते हुए लगभग चार–पाँच सौ ध्रुपद–धमार, ख्याल, टपख्याल, टप्पा, होरी आदि की विभिन्न रागों एवं तालों की अनूठी बंदिशें याद कर ली। निरन्तर कठोर परिश्रम एवं रियाज़ से आपकी ख्याति चहुँ और फैलने लगी। देश की प्रसिद्ध रियासतों, राजों–रजवाड़ों, ज़मींदारों द्वारा आपको कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जाने लगा। आपने लगभग 12 से 14 वर्षों तक नेपाल दरबार में राजगायक के पद को सुशोभित किया। आपको इसके अतिरिक्त अन्य रियासतों में आमंत्रित किया जाता रहा एवं आपने वहाँ प्रवास भी किया। इसके बाद विशेष सम्मान यश ख्याति, प्रतिष्ठा अर्जित कर पुनः काशी लौट आए। आपने अपना शेष जीवन बिना भेदभाव के मुक्त हस्त से संगीत विद्या का दान देते हुए बिताया। आप निरभिमानी मृदुभाषी, सदाचारी, उदार हृदययुक्त, निर्व्यसनी प्रवृत्ति के संत गायक थे। अपने आराध्य का स्मरण करते हुए सरल से सरल एवं कठिन से कठिन प्रतीत होने वाली अनेक रागों एवं तालों में आपने उत्कृष्ट, विद्वतापूर्ण एवं चमत्कारिक रचनाओं का निर्माण किया। आपके द्वारा रचित पदों में 'रामदास के मोहन प्यारे' अथवा 'रामदास के गोविन्द स्वामी' जुड़ा रहता है।

आपके जीवन से जुड़ी रोचक एवं प्रेरक घटना का उल्लेख पं. कामेश्वर नाथ मिश्र ने किया है ''संगीत मार्तण्ड पं. ओंकारनाथ ठाकुर जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित संगीत महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर नियुक्त होकर स्थायी रूप से काशी में बस गए तो अपने गुरु पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर एवं अन्य विद्वानों से सुनी प्रशंसात्मक चर्चा की उत्सुकता से प्रभावित होकर पं. बड़े रामदास जी मिश्र से मिलने बिना किसी पूर्व सूचना के कबीर चौरा आए। पं. रामदास जी अपने शिष्यों को संगीत शिक्षा देने के पश्चात् मृगचर्म पर बैठ भगवन्नाम जाप कर रहे थे। उधर ओंकारनाथ जी आपके आवास के समीप तक पहुँचकर किसी मुहल्ले के व्यक्ति से रामदास जी का आवास पूछ रहे थे। आपके ही परिवार के किसी बालक ने, जिसने ओंकारनाथ जी के चित्रों को कई बार देखा था, तत्काल ही उन्हें देखकर पहचान लिया और दौड़कर बड़े रामदास जी को ओंकारनाथ जी के आगमन की सूचना दी। भगवन्नाम के जप के बाद जैसे ही आप चैतन्य हुए, तब तक मुहल्ले के कई पड़ौसी कलाकारों की भीड़ के साथ ओंकारनाथ जी आपके बैठक की ड्योढ़ी तक पहुँच चुके थे। पं. ओंकारनाथ जी को देखते ही बड़े रामदासजी ने राग तोड़ी की साढ़े तीन सप्तक की ऐसी विलक्षण तान मारी कि ओंकारनाथ जी बैठक के दरवाजे को हाथों से थामे हुए अवाक् ठगे से खड़े रह गए और गद्‌गद वाणी में बोले, ''मैंने जैसा आपके बारे में गुरुजी आदि विद्वानों से सुना था, आज वैसा ही विलक्षण दर्शन एवं प्रत्यक्ष अनुभव लाभ मिला।'' उस समय बड़े रामदासजी की अवस्था 65 वर्ष के आसपास थी। बड़ी ही स्नेहसिक्त विनम्र वाणी में ओंकारनाथ जी का स्वागत करते हुए पं. रामदासजी ने कहा कि देश के आप जैसे महान् लोकप्रिय विद्वान गायक का जैसा विलक्षण स्वागत एक कलाकार द्वारा होना चाहिए, वैसा तो वृद्धावस्था के कारण नहीं कर पाऊँगा, अतः अब केवल बानगी ही दिखा सकता हूँ।''[1]

उस आयु में भी आपकी सरल, स्वाभिमान, विनम्रता, भव्य मुखाकृति, संगीतसमर्पित दिनचर्या, सभी के प्रति हृदय में आदर की भावना आदि मानवोचित सांस्कारिक गुणों से ओंकारनाथ जी अत्यंत प्रभावित हुए। बहुत देर तक दोनों ही विद्वान, राग, ताल, शास्त्र परिचर्चा में निमग्न रहे, और जब ओंकारनाथ जी बड़े रामदासजी से मिलकर लौटे तो उनके मानस पटल पर पं. रामदास मिश्र जी की गायकी–नायकी–प्रतिभा, विद्वता, सरलता, उदारता, आत्मीयता, अतिथि सत्कार आदि गुणों की अमिट छाप अंकित हो चुकी थी।''[2]

डॉ. वनमाला पर्वतकर के अनुसार ''पूरे देश में आपकी गायकी का यश आज भी बना है। आपने कितना धन अर्जित किया होगा उसका एक उदाहरण 4–5 बड़े–बड़े चाँदी

---

1 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परम्परा, पृ. सं. 105–106

2 वही

के कटोरों में आप राजा रजवाड़ों से मिली अंगूठियों को रखते थे जिसमें हीरा, पन्ना, माणिक जुड़ी हुई बेशकीमती अंगूठियाँ ही अधिक थी। कभी–कभी आप उन अंगूठियों को जाड़े के दिनों में धूप में रखकर देख लेते थे। उस समय आपका जो शिष्य जिस अँगूठी की प्रशंसा कर देता था उसे वही अँगूठी तत्काल दे देते थे। ऐसे उदार हृदय पूज्य पंडित बड़े रामदासजी को आजीवन धन की कमी नहीं हुई। स्वभाव से आप खाँटी बनारसी थे और आपकी वेशभूषा परिष्कृत रुचि की थी। आपकी और छोटे रामदास जी की ऐसी मित्रता थी कि यदि कोई अच्छा वस्त्र अपने लिए आवें तो एक–दूसरे के लिए दोनों ले आते थे। वृद्धावस्था में जब बड़े रामदास जी मरण शैय्या पर थे तो जो–जो उनकी इच्छा थी सभी दान करने के बाद उनके परिवार वालों ने पूछा कि अब पलंग से नीचे उतारें ? बड़े रामदास जी ने अपनी नाड़ी देखकर कहा ''रुक जाओ !'' अभी तीन बन्दिशें गाने का समय है और द्रुतलय की बन्दिशें गायी। फिर नाड़ी देखकर बोले नीचे उतारो! नीचे कुशासन पर कंबल बिछाकर घरवालों ने उन्हें लिटा दिया। बड़े रामदास जी ने अपनी नाड़ी फिर देखी और बोले अभी दो बंदिश और गायेंगे। दो बंदिशें और गाने के बाद उन्होंने उपस्थित सभी को आशीर्वाद दिया और ''अब चल रहे हैं'' कहकर शरीर त्याग दिया।''[1]

पं. कामेश्वर नाथ मिश्र के अनुसार ''रागों की सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी एवं शास्त्रीय मर्यादा के अंतर्गत कठिन से कठिन तालों की विभिन्न लयकारियों से सहजतापूर्वक खेलने वाले आप काशी के विलक्षण विद्वान एवं लोकप्रिय गायक थे। आजीवन किसी भी प्रकार के दुर्व्यसन से अत्यंत अछूते पूर्ण संयमित, नियमित जीवन को संगीत साधना में समर्पित कर, बिना किसी प्रलोभन, स्वार्थ रहित, भेदभाव रहित मुक्त हस्त से विद्या दान करने में तत्पर अनुपम विद्वान संगीतज्ञ के रूप में आप हमेशा याद किए जाते रहेंगे।''[2] काशी के युग पुरुष, काशी गौरव, रससिद्ध विलक्षण संत गायक पं. बड़े रामदासजी मिश्र को संगीतभूषण, संगीतोपाध्याय, संगीताचार्य, गायनाचार्य, संगीत कला निधि आदि अनेक सम्मानों एवं अलंकरणों से विभूषित किया गया। आप संगीत जगत को अपनी अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान करते हुए 83 वर्ष की अवस्था में 11 जनवरी 1960 ई. को स्वर्ग सिधार गये। आपकी विस्तृत शिष्य परंपरा द्वारा पूरे देश में आपकी गायकी का प्रचार–प्रसार हो रहा है।

ख्यातनाम युगल गायक पं. राजन–साजन मिश्र जी की गायन शैली में आपकी गायकी के स्पष्ट दर्शन होते हैं। आप पं. बड़े रामदास जी के गंडाबंध शागिर्द है। यहाँ उल्लेखनीय है कि पं. राजन साजन मिश्र जी के पिता पं. हनुमान प्रसाद मिश्र एवं चाचा पं.

---

1 डॉ. वनमाला पर्वतकर : बनारस की संगीत परम्परा, पृ. सं. 205

2 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 106

गोपाल मिश्र जी ने भी गायनाचार्य जी का शिष्यत्व ग्रहण किया था। पं. राजन साजन मिश्र जी को गायनाचार्य का सानिध्य अल्प समय के लिए मिला लेकिन पिता जी एवं चाचा जी द्वारा उनसे ग्रहण की गई शिक्षा का लाभ आप दोनों भ्राताओं को विरासत में मिला। अतः स्वयं के घराने के साथ–साथ गायनाचार्य जी की विलक्षण शैली का प्रभाव भ्राताद्वय के गायन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

पं. राजन साजन मिश्र जी अपने दादा–गुरु पं. बड़े रामदास जी की बंदिशों को बहुत ही कुशलतापूर्वक एवं प्रभावपूर्ण ढ़ंग से प्रस्तुत करते हैं। यहाँ तक की आप दोनों भ्राताद्वय स्वयं के द्वारा रचित बंदिशों को भी पं. बड़े रामदास जी के नाम से ही बनाकर गाते हैं। पं. राजन साजन मिश्र जी का अपने गुरु पं. बड़े रामदास जी के प्रति यह श्रद्धा, आदर एवं समर्पण का भाव गुरुभक्ति की अनूठी मिसाल है। आप दोनों भ्राताओं का यह स्पष्ट मत है कि हम जो कुछ भी गाते हैं यह हमारे गुरुजनों की कृपा से ही गाते हैं।

4.4 गायन शैली एवं विशेषताएँ

प्रत्येक घराना एवं संबंधित कलाकार अपने गायन में परंपरा, सृजन, रचना एवं चिन्तन का सुन्दर समन्वय स्थापित कर मौलिक शैली विकसित करता है। किसी भी शैली का विकास उसके हूबहू नकल करने से एवं हेरफेर से नहीं हो सकता अपितु उसके लिए स्वयं के चिन्तन–मनन का सम्मिश्रण मौलिक तत्वों एवं तकनीक के साथ होना आवश्यक है। शैलीगत विशेषताएँ कलाकार को एक अलग पहचान दिलाते हुए उसके अस्तित्व एवं कार्य से सम्पूर्ण कला जगत का परिचय करवाती है। ख्याल गायकी के स्थापन एवं विकास रूपी यज्ञ में अनेक महान् कलाकारों ने आहूतियाँ देकर सतत् उन्नयन की दिशा में योगदान प्रदान कर संगीत जगत में प्रतिष्ठित किया है।

पं. कामेश्वर नाथ मिश्र घरानों एवं उनकी शैलीगत विशेषताओं के बारे में लिखते है कि ''संगीतकला के दो प्रमुख पक्ष स्वर तथा लय है। इन्हीं दो प्रमुख स्तंभों पर ही संगीत की पूरी इमारत निर्मित हुई है। सूक्ष्म दृष्टि डालने पर यह तथ्य प्रकट होता है कि स्वर एवं लय इन्हीं दो के बीच भिन्न–भिन्न शैली से एक विभाजन रेखा खींचकर हर घराने ने अपनी मौलिकता एवं स्वतंत्र अस्तित्व अक्षुण्ण बनाये रखा है। किसी घराने ने स्वर को प्राथमिकता दी लय को गौण कर दिया, किसी घराने ने स्वर–लय दोनों को समान आदर दिया, किसी घराने ने लय की प्रधानता के साथ स्वर को विशिष्टता प्रदान की। सारांश यह कि कंठसंगीत के शारीरिक अंग–उपांगों के रूप में आलाप, स्वर संयोजन, मींड़, गमक, मुर्की, खनक, सूत, सरगम, पलटा, बंदिशों के प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण की विशिष्ट शैली, लय

प्रधान गायकी, अप्रचलित, मिश्रित, अर्धमिश्रित रागों के प्रस्तुतीकरण में सुदक्षता, तानों के विभिन्न प्रकारों पर अधिकार, बंदिश के बोलों, मुखड़ा के साथ नवीन ढंग से सम पर आने का ढंग इत्यादि विभिन्न अवयवों पर प्रवीणता अपनाकर प्रत्येक घराने ने अपने को दूसरे घराने से अलग बना रखा है, जो विभिन्न नामों और घराने के रूप में जाने जाते हैं।''[1]

डॉ. सुशील कुमार चौबे के अनुसार ''कोई भी घराना क्यों न हो, वह अपनी शैली से जाना जाता है। शैली हम किसे कहते हैं, गायन की शैली को हम 'गायकी' के नाम से पुकारते हैं। इसी तरह वादन की शैली को हम 'बाज' कहकर पुकारते हैं। आमतौर से यह शब्द घरानेदार और व्यावसायिक संगीतज्ञों के संगीत ही पर लागू होते हैं अथवा उन संगीतज्ञों पर जिनमें व्यवसायिक योग्यता होती है अथवा जो परम्परागत संगीत के विशेषज्ञ होते हैं।''[2]

पं. राजन साजन मिश्र बनारस घराने की 300 वर्ष से चली आ रही गौरवशाली परंपरा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। ख्याल गायकी के क्षेत्र में आपने बनारस घराने की गायन शैली को विश्व पटल पर स्थापित कर न केवल काशी का अपितु पूरे देश का गौरव बढाया है। आपने गायन के क्षेत्र में परंपरागत मूल्यों को अक्षुण्ण रखते हुए प्रयोग एवं आविष्कार की आड़ में संगीत की मर्यादा का कभी उल्लंघन नहीं किया। आपकी बनारसी गायन शैली में कंठ संगीत के सभी अंगों उपांगों के प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण के साथ–साथ अन्य मूर्धन्य बड़े कलाकारों की आभा के दिग्दर्शन होते हैं।

पं. कामेश्वर नाथ मिश्र के अनुसार ''दिल्ली में रहते हुए देश के शीर्षस्थ कलाकारों को नजदीक से सुनने के असंख्य अवसरों ने आप लोगों के मानस पटल को भी झंकृत किया और लोकप्रिय मूर्धन्य कलाकारों की चित्ताकर्षक शैली, गुण वैशिष्ट्य से प्रभावित होना स्वाभाविक था।''[3] निसंदेह यह कहा जा सकता है कि आपकी गायन शैली में आपने जहाँ वर्षों से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही परंपरा को छाती से लगाकर रखा वहीं लोकप्रिय मूर्धन्य कलाकारों की विशेषताओं को अपनी गायन शैली में अपनाने में परहेज नहीं किया।

आपका संबंध बनारस घराने के मूर्धन्य सारंगी वादक पं. रामबख्श जी की वंश परंपरा से है। पं. रामबख्श जी की वंश परंपरा में पं. बड़े गणेश मिश्र, पं. शीतलमिश्र, पं. सुरसहाय मिश्र, पं. गौरीशंकर मिश्र, पं. हरिशंकर मिश्र, पं. हनुमान प्रसाद मिश्र एवं पं.

---

1 पं. कामेश्वरनाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 64

2 डॉ. सुशील कुमार चौबे : संगीत के घरानों की चर्चा, पृ. सं. 21

3 पं. कामेश्वर नाथ मिश्र : काशी की संगीत परंपरा, पृ. सं. 129

गोपाल प्रसाद मिश्र जैसे लोकप्रिय मूर्धन्य एवं गुणी सारंगी वादक एवं गायक हुए हैं। पं. साजन जी मिश्र अपने घराने की परंपरा के बारे में कहते हैं कि ''इस घराने की खासीयत यह है कि यहाँ चारों पट की गायकी की परंपरा रही है और हमारे घराने में खासकर के सारंगी की 300 सालों की परंपरा रही है। हमारे पिताजी जो हम लोगों के गुरु भी हैं पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी और हमारे चाचा जी बहुत बड़े सारंगी नवाज थे हिन्दुस्तान के स्व. पं. गोपाल मिश्र जी उनसे हम लोगों की तालीम हुई और बनारस के बहुत बड़े संत संगीतज्ञ थे हमारे दादा गुरु स्व. पं. बड़े रामदास जी उनसे हम लोगों का गंडाबंधन और तालीम हुई। अतः हम लोग बड़े सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे परंपरागत परिवार में जन्म हुआ हम लोगों का।''[1]

यहाँ एक बात का उल्लेख करना अत्यंत आवश्यक है जैसा कि पं. राजन मिश्र जी से ज्ञात हुआ कि आपके पिता पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी एवं चाचा पं. गोपाल मिश्र जी ने देश के ख्यातनाम एवं शीर्षस्थ गायकों के साथ सारंगी की संगत की है। लगभग सभी बड़े स्थापित गवैयों के साथ सारंगी संगत के कारण उनकी गायकी का सारांश आपके पिताजी एवं चाचाजी के पास आ जाने के कारण आप दोनों भ्राताओं को उस अनुभव का भी पूरा पूरा लाभ मिला। साथ ही पं. बड़े रामदास जी की गायन शैली का रसपान करने का सौभाग्य तो आपको मिला ही।

पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा गायन शैली के अंतर्गत रागों के प्रति दृष्टिकोण, प्रस्तुतीकरण में प्रार्थना भाव, स्वर लगाव, मिश्रित रागों का प्रस्तुतीकरण, सौन्दर्य बोध, रागों में अलंकरण एवं युगल गायन आदि के विषय में प्रकट किये गये विचार प्रस्तुत है।

बनारस घराने की गायन शैली और विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए पं. राजन जी मिश्र ने 'अद्वैत संगीत' में कहा है कि ''बनारस घराना ही एक मात्र ऐसा घराना है जिसमें ध्रुपद–धमार, तिरवट, चतुरंग, ख्याल, टप्पा, टपख्याल, टपतराना उसके बाद ठुमरी, कजरी, चैती इतनी बड़ी परम्परा है, यदि इतने बड़े केनवास को जब एक जगह समेटा जायेगा तो मल्टीडाइमेन्शनल गाना हो जाता है। जिसमें ध्रुपद–धमार का मींड़ भी आता है, गमक भी आता है और ठुमरी की नज़ाकत भी आती है तो जब यह पहलू गाने में शामिल हो जाता है तो वो गाना, उसको हम सांगीतिक भाषा में बोलते हैं चारों पट, तो बनारस घराने का जो गाना था वो चारों पट का गाना था।''[2]

---

1 पं. साजन जी मिश्र : वृन्दावन गुरुकुल–धरोहर, https://www.youtube.com

2 अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''टप्पा की गायकी इसलिए गले में बैठाते थे कि खटका, मुर्की, जमजमा ये तीनों चीजें गले में आ जाए। हमारे गुरु पिताजी बोलते थे कि टप्पा गाओगे तो गला जो है चौराहा बन जायेगा। किधर भी जा सकते हो तो इसलिए टप्पा तुमको सीखना और गाना बहुत जरूरी है।''[1]

टपख्याल के बारें में पं. राजन जी मिश्र ने बताया ''टप्पा और ख्याल दोनों का अंग मिश्रित करके एक शैली बनी तो टपख्याल हो गया। टपख्याल की कल्पना पुराने बुजुर्गों की है और खासकर के बनारस घराने के बुजुर्गों की है क्योंकि टपख्याल इतने बड़े उम्र में मैंने और कहीं नहीं सुना। ऐसा कहा जाता है कि ये टपतराना एक ही पीस है। हमारे पिताजी कहते थे कि बेटा हम अपने पूरे जीवन में टप्पा अंग का तराना किसी से नहीं सुने और हम लोग भी अभी तक नहीं सुने टप्पा अंग का तराना। ये बड़ा दुर्लभ कम्पोजिशन है। तराने का बहुत वेरायटी बनारस घराने में है।''[2] उल्लेखनीय है कि टपतराना पं. राजन साजन मिश्र ने एच. एम. वी द्वारा जारी कैसेट 'A Marvel in Musical Partnership' vol.2 में काफी राग में गाया है।

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''कजरी, चैती, झूला, ठुमरी जितनी भी चीज़ें हैं वो सब जो पंडित लोग होते थे विद्वान, जो गुरु लोग होते थे उनके गाने का दर्जा अलग होता था, प्रजेन्टेशन उनका अलग होता था और जो शिष्य समुदाय में होते थे उनका प्रजेन्टेशन थोड़ा सा अलग होता था। उसका कारण ये था कि जो संगीत पंड़ित लोग गाये बनारस के विद्वान, वो आराधना भाव से गाये। उसको रिझाने वाला या लुभाने वाला संगीत नहीं बनाया उन्होंने, स्वान्तः सुखाय संगीत को बनाया तो इसलिए उसका रूप परिवर्तित हो गया।''[3]

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''राग के धर्म के बीच में रहकर मर्यादा में रहकर आप अगर राग को अपने से बड़ा समझते हैं तो राग आपको रास्ता भी दिखाता है और अगर आप अपने आप को बड़ा समझते हैं कि राग मेरा चेला है तो राग उठा के पटक देता है, हमने बहुत पटकनी देखा है। बड़े–बड़े राग उठा लेते हैं लोग और समझते हैं कि ये हमारे घर का झंडा है। उसमें सुझाई नहीं देता कि कहाँ से उसमें कैसे घर बनेगा? हमें अब जब बाल सफेद हो गया है, इतना उमर हो गया अब लगने लगा कि भूपाली नहीं आता, यमन नहीं आता अर्थात् अब ये फील होने लगा। गुरुओं का ध्यान करके, सब गुणियों का

[1] अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)
[2] वही
[3] वही

ध्यान करके हम लोग राग को पूजा की दृष्टि से शुरु करते हैं और वही हमें रास्ता बताता जाता है।''[1]

संगीत को कलाकारी अथवा इबादत के रूप में प्रस्तुत करने के विषय पर पं. राजन मिश्र जी का कहना है कि ''जिन लोगों ने भी गाया है वह सब ऊपर पहुँचे हुए लोग हे, वैसे तो लाखों लोग गा रहे हैं ख्याल, लाखों लोग सितार बजा रहे हैं, लाखों लोग तबला बजा रहे हैं, लाखों लोग हारमोनियम बजा रहे हैं, लेकिन कुछ लोग ऊपर क्यों पहुँचते हैं, क्योंकि उन्होंने इबादत की। उन्होंने सुरों में अपने इबादत को खोजा। अब तबले में नाम ले लीजिए पं. किशन महाराज जी, पं. सामता प्रसाद जी, उस्ताद अल्लाह रक्खा खाँ साहब, उस्ताद अहमद जान थिरकवा खाँ साहब, ये जितने लोग थे उन्होंने तबले में भी इबादत किया और इस वजह से उन्होंने दिलों पे राज किया। सितार में उस्ताद विलायत खाँ साहब, पं. रविशंकर जी, इन लोगों ने सितार में भी इबादत की। उस्ताद अमीर खाँ साहब, उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ साहब, पं. भीमसेन जोशी जी, पं. ओंकार नाथ ठाकुर जी, पं. विनायक राव पटवर्धन जी, सभी लोगों ने प्रार्थना ही किया अपने संगीत में और जिन लोगों ने भी प्रार्थना ही किया वह उस स्तर पर पहुँचे और अभी तक कायम हैं। लता मंगेशकर जी ने प्रार्थना नहीं किया। हम लोगों को पिताजी जब सिखाते थे बचपन में और हम लोग प्रेक्टिस जब करते थे, 50 बार, 100 बार तान–पलटा करते थे, तो वह कहते थे अरे–अरे रुको–रुको, अपने संगीत को ऐसा बनाओ, देखो लता को देखो तीन मिनट में यहाँ हृदय में खींच लेती है और तुम घंटा भर हा–हा कर रहे हो और एक मिनट भी हृदय को छू नहीं रहे हो। ऐसा कौनसा संगीत है, तो ये बचपन से हम लोगों को उन्होंने समझाया कि संगीत को कर्णप्रिय बनाओ, हृदयस्पर्शी बनाओ, सुर को खोजो। बचपन में हम लोगों का मन तो लगता नहीं था गाने में। इतना एक चीज़ को लेके 100 बार गाना है। एक पलटा को 100 बार रियाज़ करना है, 200 बार करना है। भाग जाते थे, खेलने लगते थे। वह बोलते थे कि अभी नहीं मन लग रहा है जब सुर की चोट लगेगी तब आओगे इस रास्ते पर, तो अब जब सुर की चोट लग रही है तो अब ऐसा लग रहा है कि उम्र तो बीत गया अभी तो शुरु हुआ है उम्र सीखने का, ये उम्र है सीखने का जब सुर की थोड़ी–थोड़ी समझ शुरु हुई है तो चल रहा है भगवान गवा रहे हैं, हो रहा है, सब वही प्रभु ही कर रहा है।''[2]

---

1 www.youtube.com (Vrindaban Gurukul Anubhav Baithak with Pt. Rajan And Sajan Mishra, 14Nov, 2014)

2 www.youtube.com (Sarb Akal Baithak with Pt. Rajan And Sajan Mishra, 27 May, 2018)

वृंदावन गुरुकुल द्वारा आयोजित व्याख्यान एवं प्रदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत एक प्रश्न के उत्तर में पं. राजन मिश्र जी ने बताया कि ''राग के पूरी तरह प्रकट होने में अलंकरण का बहुत बड़ा योगदान है। कण का जो प्रयोग होता है राग में या श्रुति का जो प्रयोग होता है वह बहुत बड़ा महत्व रखता है। एक ही कोमल रिषभ भैरव में लगता है और अभी श्री में लग रहा था और तोड़ी में भी लगता है और बहुत से रागों में लगता है। एक ही शुद्ध रिषभ यमन में भी लगता है और नट भैरव में भी लेकिन प्रकृति बदल जाती है। हर स्वर का प्रकृति है और राग के हिसाब से बुजुर्गो ने उसको सोचा। वह तभी ध्यान में आयेगा जब उसकी शिक्षा हो। अगर उसकी शिक्षा हो कि ये कण जो है ठीक नहीं लग रहा है। बताने वाला शिष्य को बतायेगा कि ये कण है और हर स्वर का उच्चारण करने की विधि क्या है? कोमल मध्यम को कैसे कहेंगे, कोमल निषाद को कैसे कहेंगे गले से? शुद्ध निषाद को, तीव्र मध्यम को कैसे कहेंगे? ये एक गुरु का तालीम है। बागेश्वरी का मध्यम कैसा होगा? मालकौंस का मध्यम कैसा होगा और आप उसको उच्चारित कैसे करेंगे?

अलंकरण जो है वो सजाने की वस्तु है एक्स्ट्रा नहीं है, उसकी जगह है, बिल्कुल जगह है। अलंकरण का मतलब है कि कौनसी चीज़ को कितना और कितने अनुपात में कहाँ प्रयोग किया जाए। कितना तान कितना सरगम, कितनी लयकारी, कितना बंदिश, कितना बोलबाट, कितना होना चाहिए? उसका वह अनुपात प्रभु की कृपा से किसी को मिल जाये तो उसको एक रास्ता मिल जाता है, वह चलने लगता है।''[1]

दो रागों के मिश्रण से बने रागों के बारे में पं. राजन मिश्र जी का कहना है कि ''ये जितने भी दो रागों वाले मिश्रित राग हैं जैसे तिलक कामोद है, श्याम कल्याण है या मारू बिहाग है। ये दो राग हैं लेकिन वो दोनों राग का जो मिलन है, वह इतना प्रचलित है कि मारू को खोजने का समय नहीं है। बिहाग को मारू के साथ ऐसा मर्ज किया कि वह एक राग बन गया। वैसे ही तिलक कामोद में है, वैसे ही श्याम कल्याण में हैं। जो दो रागों का नाम है वो एक्जिस्ट करते हैं। ऐसा नहीं है कि एक्जिस्टेंस नहीं है। एक्जिस्टेंस नहीं होता तो वह दो राग बनते ही नहीं लेकिन वह लुप्त हो चुके हैं। हमारी कितनी ही विद्या लुप्त हो चुकी है, कितना सब कुछ जा चुका है। थोड़ा सा जो बचा है उसी को हम बचा लें तो ये बहुत प्रभु की कृपा होगी।

---

1 www.youtube.com (Vrindaban Gurukul Anubhav Baithak with Pt. Rajan And Sajan Mishra, 14 Nov, 2014)

मैं तो कहता हूँ भैया यमन साध लो खत्म करो बात। एक साधे सब सधे और सब साधे सब जाय। यमन का गंधार सध गया तो जितने शुद्ध गंधार वाले राग है सब सध गये। भूपाली है जो इतना बड़ा राग है, पाँच सुर का राग है, इतना विशाल है, इतना बड़ा है कि पहले बचपन में हम लोग खूब धड़ल्ले से गाते थे भूपाली, लेकिन शुद्ध कल्याण सीखा, देशकार सीखा तो भूपाली से डर लगने लगा। वह डर इसलिए लगने लगा कि शुद्ध कल्याण कहीं मिक्स नहीं हो जाए इसके साथ। कहीं देशकार की छाया नहीं आ जाये इसके साथ अर्थात् जैसे–जैसे आपका ज्ञान बढ़ता है, वैसे–वैसे आप बहुत नाज़ुक होते जाते है, उस समय में आपके टूटने का बहुत भय रहता है। जैसे–जैसे आप ऊपर पहुँचते है वैसे–वैसे गिरने का भय ज़्यादा हो जाता है। आप कम ऊँचाई से गिरोगे तो कोई चोट नहीं लगेगा। ऊपर जाने का सबसे बड़ा खतरा है गिरने का कि गिरे तो गये। ऊपर जो भी जाता है वो गिरने का खतरा मोल लेके तब जाता है और जब खतरा मोल ले लेता है तो गिरता नहीं है, जाता ही रहता है।''[1]

युगल गायन में समन्वय के बारे में पं. राजन जी मिश्र ने बताया कि ''कार्यक्रम में हमारे और साजन जी के बीच में शायद अच्छा इसलिए बन पड़ता है क्योंकि हम प्रेम में हैं एक दूसरे के। जैसे कोई तान हमने गंधार पर ले जाके छोड़ दिया तो साजन जी उसको मध्यम से उठा लेंगे, ये एक स्पोन्टेनियस इंतजाम है। ये कोई फिक्स नहीं है, जैसे मैंने कोई एक सपाट तान लिया तो वो कोई चक्करदार तान कर दिये तो इस तरह से वो मोनोटोनस न होकर नया–नया फूल, नये–नये पत्ते जुड़ते जाते हैं और बगीचा में खुशबू फैलने लगता है।[2]

युगल गायन एवं आपसी सामंजस्य के बारे में पं. राजन मिश्र जी के अनुसार ''ये तब ही संभव होता है जब प्रेम में हो आदमी। जब प्रेमी और प्रेमिका एक–दूसरे के प्रेम में होते हैं तो उनकी नज़र से हर चीज़ जैसा एक को दिखता है वैसा ही दूसरे को भी दिखने लगता है। हमारे बुजुर्गो ने हमारे गुरुओं ने ऐसी शिक्षा दी और अभी तक आप सभी के आशीर्वाद से हम लोगों का एक ही किचन है। एक साथ रहते हैं, एक साथ उठते हैं, एक साथ खाते हैं अर्थात् एक साथ सब कुछ होता है। आपको जानकर ये ताज्जुब होगा कि हमारे शरीर दो हैं लेकिन हम आत्मा से एक हो चुके हैं और कई बार ऐसा होता है कि अगर हमें थोड़ा बुखार है तो इनको भी हो जाता है। इनको अगर है तो मुझे भी हो जाता है तो इतनी भगवान की कृपा हो गई, ये अस्तित्वगत इंतजाम है। यह हमारे हाथ में नहीं है, यह उसकी कृपा है। हम एक दूसरे के गाने की प्रशंसा करते हैं, हम एक दूसरे के गाने

1 www.youtube.com (Sarb Akal Baithak, Calgary, May 27, 2018).

2 अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

का आनंद लेते हैं, हम प्रतिस्पर्धा के लिए नहीं गाते है, यह नहीं दिखाना चाहते कि हमारी ये तालीम है, ये बंदिश है, ये तान है। तान का भी हम आनंद लेते हैं। तान जो है अलंकार है, लेकिन मैंने अपनी इस उमर तक देखा है कि तान गाते समय लोग थोड़े एग्रेसिव हो जाते है और उसका ऐसा दिखावा करते हैं कि ये हमारा ऐसा पावर है, तलवार है कि तलवार से तुमको काट डालेंगे। हमारे में वो भावना नहीं है, हम आनंद में तान मारते हैं। हमारे तान में भी जगह–जगह से सब बन रहा है, रिपीटेशन बहुत कम हो रहा है लेकिन उसका हम आनंद लेने का प्रयास करते हैं। इस वजह से हम दोनों भाइयों का ऐसा एक कोर्डिनेशन दिल से बना हुआ है और वह प्यार है, वह प्रेम है।[1]

पं. साजन मिश्र जी के अनुसार ''हमारे पिताजी, चाचाजी पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्रा और पं.गोपाल मिश्रा जी ये दो भाई थे और ईश्वर की कृपा से इतना रेसपेक्ट था एक दूसरे के लिए, दोनों ही महान कलाकार हुए अपने समय के और महान विभूति हुए। हम लोगों को उनसे संस्कार मिला कि अपने बड़ों का कैसे इज्जत करना चाहिए। यदि भाई साहब बोल रहे हैं या मैं बोल रहा हूँ तो एक ही बात है। मुझे ऐसा नहीं लगता है कि मैं भी किसी विषय में बात करूँ तो वो जो संस्कार मिला है यह बहुत बड़ा उनका देन है, आशीर्वाद है और ये (राजन जी) तो हमारे गुरु तुल्य भाई है, और यह मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि मैं इनके जैसे गवैये के साथ बैठकर गा रहा हूँ, यह बहुत ही कठिन कार्य है और युगल गायन मतलब सबसे मुश्किलात का गाना है। एक दूसरे के हृदय को समझते हुए गाना होता है। कई बातें ऐसी होती है कि कई बार गाते गाते भावना में बह जाते हैं, आपको कोई उपज ऐसी आ रही है और उस समय कोई दूसरा प्रवेश कर गया तो आप एक सैकण्ड के लिए डिस्टर्ब होते हैं लेकिन वह सब बातें जा चुकी हैं। अब काई असर नहीं होता है, तो ये जो आनंद है जैसा कि भाई साहब ने कहा कि हम आनन्द के लिए गाते हैं तो हम वाकई आनन्द के लिए ही गाते हैं।''[2]

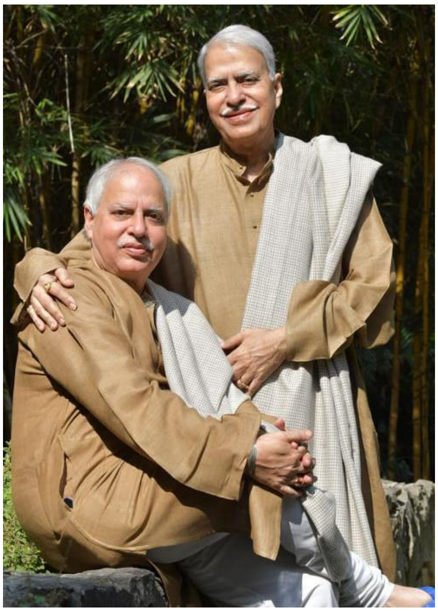

"Two Voices and One Soul"

---

1 Times Music- CD Vol.2, 'Bhairav se Bhairvi Tak'.

2 वही

पं. साजन मिश्र जी ने आगे चर्चा में बताया कि ''एक बार ऐसे ही हमारे श्रोता एक थे बहुत चाहने वाले, उन्होंने कहा कि आप आँख बंद करके गाते हैं तो आपको कैसे एहसास होता है कि इस समय राजन जी छोड़ेंगे या छोड़ने वाले हैं। हमने कहा हमारे मन की आँखें देख लेती हैं उनको । ये ऐसा हो गया है कि अब एक दूसरे के हम लोग पूरक हो चुके हैं और ये आप सब श्रोताओं का आशीर्वाद है। हमारे गुरुओं का, माता–पिता का, सभी का प्रेम और स्नेह है। हम लोग बहुत ही भाग्यशाली है कि हमारे जो शुभ चिंतक हैं वह हमारे लिए प्रार्थना करते है अपनी पूजा में, तो आप जैसे लोग अगर शुभकामना, शुभेच्छा और आशीष रखेंगे तो निश्चित रूप से वो पौधा जो है पनपेगा ही। आप लोगों (श्रोताओं) का भी इसमें बहुत बड़ा योगदान है और आप लोग ऐसे ही हम लोगों के ऊपर अपना स्नेह और आशीष रखें ऐसी कामना करता हूँ।''[1]

विरासत में प्राप्त संगीत शिक्षा, घरानेदार बंदिशों के प्रस्तुतीकरण का मनमोहक ढ़ंग एवं चित्ताकर्षक गायन शैली का रहस्य जानने के लिए लोकप्रिय एवं शीर्षस्थ गायक पं. राजन जी मिश्र से लिया गया साक्षात्कार प्रस्तुत है।

पं. राजन जी मिश्र से दि. 10.7.17 को की गयी संगीत विषयक चर्चा

शोधार्थी – आपकी गायन शैली में कुछ खास बातें हैं, जैसे आवाज़ की रेंज मंद्र अतिमंद्र से लेकर तार अतितार तक, ऐसा बहुत कम गायकों में देखने को मिलता है, बिरले ही ऐसे कलाकार हैं जिनमें यह विशेषता देखने को मिलती है, तो किस तरह से क्या तालीम इसमें आपकी रही है?

पं. राजन जी – यह तालीम हमारे पिताजी की थी कि मंद्र सप्तक में भी गला बोलना चाहिए।

शोधार्थी – आप तो अतिमंद्र तक भी जाते हैं?

पं. राजन जी – हाँ अतिमंद्र तक भी जाते हैं, शुरू से ही तालीम में ये शामिल था कि मंद्र सप्तक का भी अभ्यास हो और तार सप्तक का भी होना चाहिए। जब अतिमंद्र से अतितार तक गायन शैली होगा तो उसका रेंज बढ़ जाता है, स्कोप बढ

1 Times Music- CD Vol.2, 'Bhairav se Bhairvi Tak

जाता है, स्पेस बहुत बढ़ जाता है। उसमें विस्तार भी बढ़ जायेगा, तान भी बढ़ जायेगा, वेरायटी भी बढ़ जायेगी। जिसका मंद्र में गला नहीं जाता है ज़्यादा, वह मंद्र का काम तो कर नहीं सकता, तो ये गायक का बहुत बड़ा गुण है और प्रकृति प्रदत्त गुण है कि मंद्र से लेकर तार तक, अतितार तक गला बोले।

शोधार्थी – छोटे गुरुजी (पं. साजन जी) तो अतितार तक बहुत आराम से जाते हैं।

पं. राजन जी – यह एक बहुत बड़ी प्रभु की कृपा है कि इतना रेंज गले में भगवान ने दिया है और इसकी साधना शुरू से करते रहे हम लोग, तभी वह आगे बढ़ा और अभी तक कायम है।

शोधार्थी – रागों के प्रस्तुतीकरण में भाव एवं रस की निष्पत्ति का विशेष महत्त्व है। हम यह पाते हैं कि आप सरल से सरल और कठिन से कठिन प्रतीत होने वाले रागों में भाव और रस की जो निष्पत्ति दिखाते हैं वह अकल्पनीय हैं। दूसरी बात है, जैसा कहा जाता है संगीत के विद्यार्थियों से कि रागों का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए तो आपके गाने के रिकॉर्ड सुनाने से उनको यह स्पष्ट हो जाता है कि यह गुजरी तोड़ी है या यह मियाँ की तोड़ी है एवं अन्य रागों में कि यह मध्यमाद सारंग है या मेघ है आदि।

पं. राजन जी – उसका कारण यह है कि हमने हमेशा राग को बड़ा समझा है अपने से। राग के ऊपर स्वयं के हावी होने के बजाय हम राग का आह्वान करते हैं और राग का आह्वान तभी हो सकता है जब उसके बारे में आपको जानकारी हो कि वादी संवादी क्या है? न्यास के सुर क्या हैं? ये सब जानकारी होने से हम राग के साथ न्याय कर सकते हैं।

शोधार्थी – गुजरी तोड़ी में आप कोमल धैवत का प्रयोग षड्ज को स्पर्श करके जो करते हैं वह बहुत सुन्दर और रागात्मक है?

पं. राजन जी– वह सोच की बात है कि अगर हम गुजरी गा रहे हैं तो धैवत का क्या स्थान है? कैसे लगना चाहिए? अब जैसे हम लोग हमीर,

कामोद, केदार, नंद आदि ये सब राग गाते है और सब में करीब–करीब समान सुर हैं, बहुत सारे अंग मिलते हैं, तो उसमें पहले तो ये चारों राग जानकारी में होने चाहिए। चारों रागों की क्या प्रकृति है, क्या वादी–संवादी है, कौन–कौनसे अंग हैं अर्थात ये सब जानकारी होगा तभी नंद के साथ, हमीर के साथ, कामोद के साथ न्याय होगा। अब सिर्फ तुमको पूरिया मालूम है मारवा नहीं मालूम है और सोहनी नहीं मालूम है तो पूरिया के साथ न्याय नहीं कर पाओगे। शुद्ध कल्याण मालूम है भूपाली नहीं मालूम है, देशकार नहीं मालूम है तो शुद्ध कल्याण के साथ न्याय नहीं हो पाएगा या भूपाली के साथ न्याय नहीं हो पाएगा अर्थात ये जो इस तरह के समान सुर और प्रकृति वाले राग हैं उनकी पूरी जानकारी कलाकार को होनी चाहिए तभी वह उस राग के साथ न्याय कर पाता है।

शोधार्थी – मुझे ध्यान है कि आपने आकाशवाणी पर एक बार तीन–चार समप्राकृत राग केदार, हमीर, कामोद आदि को एक साथ सीरीज में गाया था। लगभग एक से डेढ़ घण्टे का कार्यक्रम बनाया था आकाशवाणी ने।

पं. राजन जी – हमने तो प्रोग्रामों में भी गाया है एक–एक, डेढ़–डेढ़ घण्टा इसी तरह से अर्थात सब एक साथ, कारण है कि चुनौती लेने में मुझे बड़ा मज़ा आता है। देखो जब तक तुम चुनौती नहीं लोगे तब तक तुम जीवन को एक्सप्लोर नहीं कर पाओगे इसीलिए जैसे पूरिया गाया तो मैं इसके तुरंत बाद सोहनी गाता हूँ, मारवा गाया तो सोहनी गाता हूँ, नंद के बाद हमीर गाता हूँ तो वो एक चैलेंज है। भीमपलासी के बाद धानी गाता हूँ वह भी बड़ा मुश्किल है।

शोधार्थी – वही हमने भी महसूस किया कि समप्राकृत रागों को स्पष्ट समझाने का उदाहरण आपसे बेहतर किसी के पास नहीं है।

पं. राजन जी – ऐसा ही होना चाहिए ना !

शोधार्थी – आपके आलाप पक्ष में बहुत गंभीरता और गहराई है और हमें तो आपकी तानें भी आलाप के समान उतनी ही गहराई लिए हुए

प्रतीत होती हैं। दूसरी अहम बात है कि तानों में कहीं भी राग के मूल स्वरूप का नुकसान नहीं होता। ऐसा कहीं भी प्रतीत नहीं होता कि राग के साथ अन्याय हो रहा है, तो ये बड़ा मुश्किल है इसे कैसे कायम रखते हैं आप, क्योंकि बड़े–बड़े कलाकार भी इन बातों की कभी–कभी अनदेखी कर जाते हैं। इसके पीछे क्या कारण है ?

पं. राजन जी – इसका सीधा कारण है तुम्हारी मानसिकता में, अब जैसे तान या सरगम जो है वह अलंकार है, अलंकार ही बोलते हैं ना, तो यदि किसी भी अलंकार को अलंकार के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाये तब तो वह अलंकार लगता है और उसको एक्स्ट्रा ऑर्डीनरी तैयारी से गाया जाए तो उसमें राग के भ्रष्ट होने की संभावना बहुत है। तैयारी जितना है और राग निभाने की जितनी क्षमता है उसी के हिसाब से राग चुनना चाहिए। अब आप गौड़सारंग गा रहे हैं और उसमें सपाट तान मार रहे हैं या तिलक कामोद गा रहे हैं और उसमें सपाट मार रहे हैं, तो ये उचित नहीं है। हम लोग जो राग गाते हैं तो प्रयास करते हैं कि उसके राग धर्म को निभाकर ही गायें, चाहे वो विस्तार में हो, चाहे तान में हो या चाहे सरगम में हो।

शोधार्थी – आलाप पक्ष राग का प्राण होता है और इसके सौंदर्य, गांभीर्य और रस की निष्पत्ति में किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है?

पं. राजन जी – आलाप अंग जो है मैं समझता हूँ कि राग की प्रार्थना है। जब हम मंदिर में बैठकर प्रभु का प्रार्थना करते हैं, प्रभु को स्नान कराते हैं, कपड़े पहनाते हैं, तिलक लगाते हैं, चंदन लगाते हैं, शृंगार करते हैं, गहने पहनाते हैं, तो वो जो भाव होता है वही भाव राग के प्रति होना चाहिए। एक राग है, उसकी पर्सनालिटी है, उसका हम कैसे धीरे–धीरे शृंगार करें और सिलसिलेवार होना चाहिए यह भी ध्यान रखने की बात है कि कपड़ा पहनाके तो नहला नहीं सकते मूर्ति को। पहले नहलाना है फिर चंदन टीका लगाना है या उनको

मसाज करना है अर्थात उसका जो एक सिलसिला बना हुआ है कि आलाप जब शुरू होगा तो एक–एक सुर का विस्तार होगा। वह मंद्र सप्तक से शुरू होता है फिर सा पर आयेगा फिर वादी सुर पर ज्यादा होगा, संवादी का उससे थोड़ा कम होगा बाकी और सुरों का उसी के अनुपात में होगा तो ये सब दिमाग में रखते हुए गाना चाहिए। नट सेल में ये बात है कि जब तुम गाने बैठो तो इतने चैतन्य रहो कि तुमको पता हो कि मैं क्या कर रहा हूँ, लोग गाने बैठते हैं तो भूल ही जाते हैं कि मैं क्या कर रहा हूँ? उनका तो सिर्फ गाने पर ध्यान रहता है, तकनीकी पक्ष पर ध्यान रहता है, तान पर ध्यान रहता है, लयकारी पर ध्यान रहता है, गलेबाजी पर ध्यान रहता है लेकिन वो करने क्या बैठे हैं असली, असली तो वो प्रार्थना करने बैठे हैं ना, तो हम राग का जब प्रार्थना करेंगे, उसका आह्वान करेंगे, विनती करेंगे उससे, तब शायद राग आकर खड़ा हो जाए, और जब राग आ जाता है तो वह अपने प्रभाव से ऐसा वातावरण बना देता है कि श्रोता भी उस वातावरण में डूब जाते हैं। राग सब कहलवा देता है जो आप कहना चाहते हैं। अधिकांश कलाकार राग को अपना चेला समझते हैं और हम राग को अपना गुरु समझते हैं यही अंतर है क्योंकि राग कभी खत्म नहीं होने वाला है। एक–एक राग को हज़ारों–हज़ारों लोगों ने गाया है। मालकौंस को कम से कम पचास हजार लोगों ने गाया होगा लेकिन मालकौंस खत्म हुआ कहीं ? कभी खत्म नहीं होगा, भैरव कभी खत्म नहीं होगा, श्री कभी खत्म नहीं होगा, मेघ कभी खत्म नहीं होगा। ये पुराने जो राग हैं ये छुपते नहीं हैं, इनके अंदर इतनी संभावना है कि आप खोज करते रहो, नये नये रास्ते आपको मिलेंगे लेकिन वो रास्ते तभी मिलेगे जब आप श्रद्धा और समर्पण भाव से जाओगे राग के पास।

शोधार्थी – आपकी बंदिशें अन्य सभी बड़े कलाकारों से बिल्कुल अलग दिखाई देती हैं उनका प्रस्तुतीकरण और कम्पोजीशन बिल्कुल अलग सौंदर्य लिए हुए है। राग के वादी–संवादी को ध्यान में रखकर इतना सुन्दर ताना बाना आप बनाते हैं कि श्रोता बंदिश को

सुनकर हर क्षण आनन्द की अनुभूति करता है और साथ ही सुनते समय उसमें विस्मय का भाव पैदा होता है कि अरे ये कैसे हो गया? यह बात इतने खूबसूरत ढ़ंग से कैसे बनकर आ गई? ऐसी मुश्किल–मुश्किल जगह से आपकी बंदिशें शुरू होती हैं और सम पर खूबसूरती से बनकर आना एक अलग तरह का सांगीतिक आनन्द प्रदान करती हैं। इसके अलावा कई कम प्रचलन वाली तालों में भी आपकी बहुत सुन्दर–सुन्दर बंदिशें हैं। कृपया इस बारे में थोड़ा प्रकाश डालिए।

पं. राजन जी – हम लोगों को जिन तालों में तालीम मिला है वो हैं– तीनताल, एकताल, सूलफाक्ता, आड़ाचारताल, पंचम सवारी, झपताल, रूपक आदि।

शोधार्थी – हाँ पंचम सवारी, आड़ाचौताल, सूलफाक्ता इनमें बहुत कम लोग गाते हैं।

पं. राजन जी – हाँ कम लोग गाते हैं लेकिन हम लोगों को बचपन से इसकी तालीम मिली है। जैसे हर राग का अपना ब्यूटी है वैसे ही हर ताल का भी ब्यूटी है। भाव और राग एक दूसरे के पूरक हैं। जैसे ह्रदय धड़कता है तो वह ताल है, रिदम है और जैसे वाणी निकलती है वो सुर है अर्थात सुर और ताल का अटूट संबंध है। एक दूसरे के बिना वो अधूरे हैं। ताल से बंदिशों के रिदमिक पैटर्न बनते हैं और कठिन जगह से शुरूआत होने से एक चैलेंज है कि तान मार के, सरगम करके उसी जगह पर आना है।

शोधार्थी – सामान्यतः लोग तो उन बंदिशों को सुनकर गा भी नहीं पाते हैं। आप तो कठिन से कठिन तालों में स्वरचित बंदिशों को बहुत सहजता से बनाते हैं और गाते हैं मानो तीनताल में या एकताल में गा रहे हों।

पं. राजन जी – उसका यह कारण है कि हम वही काम करते हैं कि जो हमसे हो पाए। सबसे बड़ी बात क्या बताऊँ तुमको कि हम गाना अपने लिए गाते हैं। अन्य लोग गाना दूसरों को सुनाने के लिए गाते हैं। दूसरों को अचम्भित करने के लिए गाते हैं या दूसरों से तालियाँ

बजवाने के लिए गाते हैं। हम लोगों को तालियाँ नहीं चाहिए, हमें अपनी शांति चाहिए, हमें अन्तर्यात्रा चाहिए, यही फर्क है।

शोधार्थी – बंदिशों का जो साहित्य है उसके साथ आपका स्वर, ताल एवं लय का बहुत सुन्दर समन्वय रहता है। बंदिशों में जो शब्द गायन के समय आते हैं जैसे 'मुरलीधर', तो गाते समय भी आपके हावभाव चलते रहते हैं और बहुत सहजता से चलते हैं, आपके हाथ स्वतः ही मुरली बजाने की मुद्रा में आ जाते हैं अर्थात आप शब्दों को जीकर गाते हैं। इसमें आपकी किस तरह की सोच काम करती है?

पं. राजन जी – शब्दों को जो नहीं जिएगा वह गाना नहीं गा पाएगा वह तमाशा कर सकता है, तमाशा और गाना में बड़ा फर्क है। तमाशा तो एक मदारी भी करता है, गाना तो एक जो बहुत ही चिन्तनशील आदमी है, जो मनन करता है वही गा सकता है और काव्य को जो नहीं जिया वो तो तुम समझो कि गाना ही नहीं गाया। कविता को जीना ही पड़ेगा क्योंकि वही तुमको गवा रहा है, वही तुमको दिशा दिखा रहा है। राग के साथ भाव का सृजन करने में साहित्य का देन है अगर साहित्य नहीं हो तो तुम कितनी देर आ–आ करके गा सकते हो। संगीत से साहित्य का अटूट संबंध है। साहित्य तुमको दिशा देता है। अब एक ही राग में कोई बंदिश है जो शृंगार रस की है, कोई बंदिश भक्ति रस में है, कोई बंदिश वीर रस की है तो जब तक अंदर तुम्हारे वो भाव नहीं आयेगा तब तक उसकी अदायगी कैसे होगी ? वीर रस का है तो वीर रस का भाव आना चाहिए, शृंगार रस का है तो शृंगार रस में आना चाहिए, भक्ति रस है तो भक्ति रस का भाव आना चाहिए। कविता ही उसमें हमारी मदद करती है लेकिन कविता को समझना पड़ेगा ना पहले। कई लोग बिना समझे ही किताबों से बंदिशे गा रहे हैं उसमें अपभ्रंश भी हो जाता है। मैं पहले उनको समझने की कोशिश करता हूँ तब उसमें हाथ लगाता हूँ।

शोधार्थी – आपके स्वयं के द्वारा रचित बंदिशें भी बहुत हैं। कौन कौनसी रागें हैं जिनमें आपने बंदिशें बनायी हैं? कहीं ऐसा भी सुनने में आया है

कि आपने अपने गुरु जी का नाम बंदिशों में उपनाम के तौर पर जोड़ा है। क्या स्वयं का भी कोई उपनाम है ?

पं. राजन जी – नहीं, कभी उपनाम नहीं बनाया। हमारे पूज्य मामाजी पं. किशन महाराज जी बहुत अच्छे साहित्यकार थे, तबला सम्राट तो वे थे ही। वह हमसे बहुत समय तक यह कहते रहे कि तुम अपना एक उपनाम बनाओ क्योंकि मैं अपने गुरुजी का नाम डालता हूँ बंदिशों में पं. बडे रामदास जी का। मैं उनसे इस बात पर सहमत नहीं होता था उसका कारण है मैं ऐसा समझता हूँ कि जो भी बंदिश बनती है मेरे से वह उन्हीं लोगों की कृपा से बनती है और उन लोगों का नाम रखने से बंदिश का महत्त्व बढ़ जाता है। उनकी ही कृपा से हम गा रहे हैं, उन्हीं से सीखी हुई बातें हम आगे बढा रहे हैं तो उसमें अपना नाम क्यूँ डालें, ऐसी मेरी सोच है।

शोधार्थी – मुझे लगता है कि आपने कभी इसकी जरूरत महसूस नहीं की।

पं. राजन जी – कभी जरूरत महसूस नहीं की और करूंगा भी नहीं। मैंने लगभग तीन–चार सौ बंदिशें बनाई हैं।

शोधार्थी – यह हम लोगों के लिए दुविधा की बात है कि हम यह कभी जान नहीं पायेंगे कि इनमें से कौनसी बंदिशें आपकी हैं?

पं. राजन जी – हमारी बंदिशों पर हमारी एक शिष्या है विराज अहमदाबाद में, वह रिसर्च कर रही है। उनको हमने काफी बताया भी है करीब 60–70 बंदिशों पर उन्होंने काम किया है।

शोधार्थी – सिर्फ इतना चाहिए कि कुछ बंदिशों के बारे में जानकारी मिल जाए ताकि हमें उदाहरण स्वरूप ज्ञात हो जाए कि ये बंदिशें आपके द्वारा रचित हैं।

पं. राजन जी – जैसे दुर्गा की जो बंदिश है ''जय जय जय दुर्गे माँ'' इसमें पं. बड़े रामदास जी का नाम है। अंतरा है ''पाप निवारिणी महिषासुर मर्दिनी, रामदास शरण गये भवानी दयानी शिवानी''। इसमें हमारे गुरु जी का नाम है लेकिन बंदिश मेरी है। एक बंदिश राग जोग की 'सुरन के साधे'' यह भी हमारी ही बंदिश है। राग मारवा में ''साँझ भई अब तो गुनीजन गाओ राग मारवा'' यह भी मेरी ही बंदिश है, यह एकताल में है क्या अच्छा जगह है उसमें, तो बहुत

		सारा चीज़ हमने बनाया परन्तु कभी भी अपना नाम उसमें रखने का हमें जरूरत महसूस नहीं हुआ।
शोधार्थी	–	मुझे लगता है मालकौंस के तराने जो एच एम व्ही के रिकार्ड में आपने गाये हैं संभवतया वह भी आपकी ही कम्पोजीशन हैं।
पं. राजन जी	–	हाँ यह भी हमारी ही है ''देरेना देरेना दींमत नूं''।
शोधार्थी	–	यह जो पं. किशन महाराज जी की बंदिश है ''ब्रह्म को संगीत रूप मान गुनीजन'' इसके बारे में कृपया बतायें।
पं. राजन जी	–	यह शब्द रचना पं. किशन महाराज जी की है और स्वर रचना मेरी है। इसे राग हमीर में झपताल में हमने बैठाया है।

पं. राजन मिश्र जी एवं पं. साजन मिश्र जी से
शोध विषयक चर्चा करते हुए शोधार्थी

पं. राजन साजन मिश्र की गायन शैली की विशेषताएँ एक दृष्टि में

- सुरीली, दमदार, गंभीर एवं जवारीदार आवाज़।
- मंद्र, मध्य एवं तार तीनों सप्तकों तक आवाज़ की स्पष्ट एवं सुगम पहुँच।
- प्रभावोत्पादक एवं चित्ताकर्षक स्वर लगाव।
- घरानेदार बंदिशों के प्रभावशाली एवं मनमोहक प्रस्तुतीकरण की विशिष्ट शैली।
- अलग–अलग तरीके से तिहाइयाँ लेकर सम पर आने की विलक्षण क्षमता।

- राग की तीनों सप्तकों में अद्‌भुत स्वर संयोजनों द्वारा क्रमबद्ध बढ़त करते हुए प्रार्थना भाव से प्रस्तुतीकरण।
- प्रभावी उपज अंग के माध्यम से गायन शैली में आलाप, बोल आलाप, बोलबाट, सरगम, बहलावा, तान आदि के द्वारा राग में अन्तर्निहित भावों का प्रकटीकरण।
- रागात्मक शुद्धता के साथ गमक, मींड, मुर्की, खनक, सूत, कण, खटका, जमजमा आदि सांगीतिक अवयवों का संतुलित प्रयोग।
- छन्द भाषा एवं साहित्य के स्पष्ट उच्चारण से युक्त गंभीर, आकर्षक एवं भावपूर्ण गायन शैली।
- क्लिष्ट रागों को भी पारंपरिक रागों की तरह पूर्ण दक्षता से गाने की क्षमता।
- तीनों सप्तकों में स्पष्ट, गमकयुक्त, दानेदार, अलंकारिक एवं अति तैयार तानों के विविध प्रकारों के गायन में सुदक्षता।
- बनारस की गायन शैली के अनुरूप ख्याल में ही ध्रुपद, धमार, टप्पा, ठुमरी आदि अन्य गायन शैलियों की आंगिक विशेषताओं को दर्शाना।
- ख्याल के अतिरिक्त टपख्याल, टप्पा, तराना, ठुमरी, चैती, दादरा एवं भजन आदि गाने में निष्णात।
- बनारस की गायन शैली को मूल में रखते हुए अन्य घरानों के गुण वैशिष्ट्य को अपनाने का उदार दृष्टिकोण।
- राग में निहित प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक भावों को प्रकट करने की क्षमता।
- युगल गायन में निहित सुंदर सामंजस्य।
- विद्वतापूर्ण, शास्त्रोक्त एवं मनमोहक गायन शैली।
- घरानेदार गायकी में स्वयं के चिन्तन एवं अन्वेषण का सम्मिश्रण।
- समप्राकृत रागों को विद्वतापूर्ण स्वर लगाव द्वारा स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने की क्षमता।
- ताल एवं लय पर पूर्ण अधिकार। गायकी में विविध लयकारियों का प्रदर्शन।

- तार–अतितार सप्तक से सीधे मंद्र सप्तक के स्वरों के बीच मींड़ घसीट द्वारा अकल्पनीय स्वर संयोजन दर्शाने की क्षमता।
- तीनों सप्तकों में आवाज़ लगाने की विशेष तकनीक।

अतः निष्कर्षतः यह कहना उचित होगा वाराणसी की सांस्कृतिक परंपराओं में कला के प्रति दृष्टिकोण सिर्फ मनोरंजन का न होकर अध्यात्म अनुप्रेरित रहा है। कला के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण के कारण यहाँ का संगीत भक्ति का पर्याय बन परमपिता परमेश्वर की शरणागति का आधार बना। बनारस के सिद्ध कलाकारों एवं मनीषियों द्वारा परम्परागत संगीत के साथ सतत् साधना एवं सृजनात्मक चिंतन के द्वारा नवीन शैलीयों के स्थापन एवं विकास से भारतीय संगीत समृद्धि के पथ पर अग्रसर होता चला गया।

बनारस में संगीत के अनेक घराने एवं उपघराने हुए हैं। पं. राजन साजन जी मिश्र का संबंध पं. रामबख्श मिश्र जी के घराने से है जो मूलतः सारंगी का घराना रहा है और आपकी गायकी पर गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी मिश्र का भी संपूर्ण प्रभाव रहा है। अतः आपके पिताजी एवं चाचाजी से प्राप्त शिक्षा के साथ प्राचीन एवं नवीन दृष्टिकोण के सुन्दर समन्वय से उद्भूत आपकी गायकी ने अनूठा, मनमोहक और सर्वग्राह्य रूप ले लिया। अतः यह कहना उचित होगा कि पं. राजन साजन जी मिश्र का गायन एक ऐसे सुन्दर गुलदस्ते के समान है जिसे भाँति–भाँति के सुन्दर एवं सुगन्धित पुष्पों से सजाया दिया गया हो।

कला के सौन्दर्य एवं निखार के लिए आवश्यक है कि उसके प्रस्तुतीकरण हेतु कलाकार को उसके स्तर के अनुरूप उचित मंच, पर्याप्त अवसर एवं प्रोत्साहन मिले। इसी क्रम में आपके चाचाजी पं. गोपाल मिश्र जी द्वारा आपको दिल्ली बुलाये जाने के उपरांत अथक परिश्रम, साधना, शालीनता, व्यवहार कुशलता आदि गुणों के साथ आप दोनों भ्राता गायकी को निखारते हुए प्रगति पथ पर बढ़ते चले गये।

***

पंचम अध्याय

गायन कार्यक्रम एवं सम्मान

पंचम अध्याय

गायन कार्यक्रम एवं सम्मान

किसी भी महान् कलाकार के जीवन में संगीत साधना के साथ–साथ कला के प्रदर्शन हेतु मिलने वाले विशेष अवसर उसकी प्रतिभा एवं कला में निखार लाने के अतिरिक्त राष्ट्र एवं विश्वव्यापी पहचान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पं. राजन साजन मिश्र को गायकी के क्षेत्र में क्षितिज पर आसीन करने में आकाशवाणी, दूरदर्शन और देश–विदेश में आयोजित संगीत सम्मेलनों का बहुत बड़ा योगदान रहा हैं। शास्त्रीय गायकी के क्षेत्र में आप दोनों भ्राताद्वय के अप्रतिम योगदान के लिए भारत सरकार एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक सम्मान एवं अलंकरणों से विभूषित किया गया हैं।

5.1 आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्रों पर कार्यक्रम

भारतीय संगीत रूपी विरासत को सहेजने, सँवारने एवं सरंक्षण में आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की भूमिका की जितनी सराहना की जाए कम है। आकाशवाणी के रिकॉर्डिंग संग्रह के द्वारा हम आज भी भारतीय संगीत के मूर्धन्य गायक गायिकाओं को श्रवण कर जीवन्त अनुभव प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे हैं।

पं. राजन साजन मिश्र की गायन शैली की महक को जन–जन में प्रचारित एवं प्रसारित करने में आकाशवाणी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उनके सांगीतिक केरियर में आकाशवाणी की भूमिका के बारे में पं. साजन जी मिश्र ने चर्चा में बताया ''1973 में बड़े भैया एम.ए. करके बनारस से दिल्ली आ गये चाचा जी के पास और उसी समय उन्होंने रेडियो में ऑडिशन के लिए एप्लाई कर दिया। हम दोनों साथ गाते थे तो मुझे टेलीग्राम आया कि तुम तुरंत दिल्ली आ जाओ अगले सप्ताह में ऑडिशन है। दिल्ली आये ऑडिशन में, तो उस समय के यहाँ के जो संगीत के दिग्गज लोग थे दिलीप चन्द्र वेदी जी बड़े भारी विद्वान्, सुमुति मुटाटकर जी, माधुरी मट्टू जी और विनय चंद्र मौदगल्य जी, ये लोग ऑडिशन में बैठे थे। ऑडिशन के समय जो पहला अपियरेन्स होता है कि सामने शीशे के आगे परदा लगा है और उसके पीछे से आप गा रहे हैं। हम लोगों का गाना हुआ और प्रायः ऐसे समय जज मिलते नही हैं लेकिन दिलीप चंद्र जी, सुमुति मुटाटकर जी यह सब लोग आकर मिले और उन्होंने बड़ा आशीर्वाद दिया। पहला जो परीक्षा था उसमें हम लोग

पास हुए। इसके बाद फाइनल रिकॉर्डिंग हुआ तो हम लोगों को पहली बार में 'ए ग्रेड' मिला। ईश्वर की और गुरु की कृपा से तब से अर्थात् 1974 से वह यात्रा चल रही है, हम लोग यात्रा में हैं अभी सीख रहे हैं।''[1]

प्रेरक एवं मार्गदर्शक सतगुरु श्री जगजीत सिंह जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''आकाशवाणी–दूरदर्शन'' पर हमारे कार्यक्रम 1974 से आरम्भ हुए। पहली ही बार में हमको ''ए ग्रेड'' मिला और 1982–84 में हम लोग 'टॉप ग्रेड' हो गये, प्रभु की बड़ी कृपा रही। वर्तमान समय में भी हम आकाशवाणी और दूरदर्शन पर गाते हैं। जब समय होता है तो जरूर आकाशवाणी का प्रोग्राम करते हैं। आकाशवाणी का भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार में बड़ा योगदान है। जिस ज़माने में हम लोगों ने गाना शुरू किया, सत्तर–अस्सी के दशक में तो वो जो जमाना था, उस समय आकाशवाणी का एक बहुत बड़ा रोल था। उसम समय टेलीविजन आदि अन्य माध्यम नहीं थे तो ज़्यादातर लोग आकाशवाणी ही सुनते थे। अभी भी कुछ ऐसे प्रेमी हैं जो आकाशवाणी के प्रोग्राम सुनते हैं।''[2]

आकाशवाणी के अभिलेखागार में पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र जी का गायन एक निधि के रूप में संग्रहित हैं। आज की पीढ़ी इनकी घरानेदार समृद्ध गायन शैली की सूक्ष्मताओं का अनुगमन पर उपकृत महसूस कर रही है। आकाशवाणी के अभिलेखागार में उपलब्ध रिकॉर्डिंग्स का विवरण यहाँ प्रस्तुत हैं।

---

[1] पं. साजन जी मिश्र, वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 12.7.2014, नई दिल्ली

[2] पं. राजन जी मिश्र, वार्ता– दिनांक 10.07.2017, नई दिल्ली

LIST OF HINDUSTANI CLASSICAL MUSIC RECORDING (VOCAL) :

ALL INDIA RADIO ARCHIEVES

List of Recording - HCM - Vocal 07102015

Sr. No.	Name of Artist	Date of Recording	Category	Raga	Composition	Tala	Duration
1.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	03.10.1986	Vocal Duet	Ramkali	Drut Khayal	Drut Teental	06 : 47
2.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	03.10.1986	Vocal Duet	Lalit	Drut Khayal	Drut Teental	07 : 03
3.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	03.10.986	Vocal Duet	Gujari Todi	Tarana	Drut Ektal	07 : 04
4.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	08.10.1994	Vocal Duet	Kirwani (Bhajan)	Bhajan	-	10 : 58
5.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	08.10.1994	Vocal Duet	Darbari Kanada	Vilambit Madhyalaya & Drut Khayal	Vilambit Ektal Madhyala Teental & Drut Ektal	42 : 44
6.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	09.10.1982	Vocal Duet	Sohini (Bhajan Soordas)	Bhajan	Keharwa	07 : 59

7.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	09.10.1987	Vocal Duet	Puriya Dhanashri	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Jhaptal & Drut Teental	35 : 51
8.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	09.10.1987	Vocal Duet	Durga	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Teental & Drut Ektal	19 : 55
9.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	10.03.1986	Vocal Duet	Jogia	Khayal	Teental	07 : 08
10.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	15.06.1996	Vocal Duet	Bhatiyar	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Ektal & Drut Teental	28 : 47
11.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	15.04.1996	Vocal Duet	Jhinjhoti	Vilambit Madhylaya & Drut Khayal	Vilambit Jhaptal Madhyalaya & Drut Teental	29 : 14
12.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	15.04.1996	Vocal Duet	Puriya	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Ektal & Drut Teental	29 : 07
13.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	15.07.1976	Vocal Duet	Malkauns	Vilambit Madhyalaya & Drut Khayal	Vilambit Ektal Madhyalaya & Drut Teental	54.29
14.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	15.07.1976	Vocal Duet	Madhukauns	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Roopak & Drut Teental	19.53
15.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	15.07.1976	Vocal Duet	Khamaj (Tappa)	Tappa	-	7 : 53

16.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	16.12.1978	Vocal Duet	Shuddha Sarang	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Ektal & Drut Teental	30 : 48
17.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	21.09.1996	Vocal Duet	Puriya Dhanashri	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Ektal & Drut Teental	39 : 01
18.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	21.09.1996	Vocal Duet	Shankara	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Ektal & Drut Jhaptal	28.41
19.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	21.09.1996	Vocal Duet	Kirwani	Khayal	Ektal	13.23
20.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	22.03.1979	Vocal Duet	Jaunpuri	VIlambit & Drut Khayal, Tarana	Vilambit Ektal & Drut Teental	30 : 33
21.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	22.03.1979	Vocal Duet	Malkauns	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Ektal & Drut Teental	29 : 30
22.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	22.03.1979	Vocal Duet	Mian Ki Malhar	Madhyalaya Khayal	Madhyalaya Teental	20 : 17
23.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	22.03.1979	Vocal Duet	Kafi (Tappa)	Tappa	Panjabi Theka	09 : 46
24.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	22.10.1989	Vocal Duet	Bilaskhani Todi	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Ektal & Drut Teental	43 : 32
25.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	22.10.1989	Vocal Duet	Bhairvi	Durga Stuti	Jhaptal	09 : 33
26	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	30.10.1977	Vocal Duet	Malshri	Madhyalaya & Drut Khayal	Madhyala Teental & Drut Adachautal	14:30

27.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	30.10.1977	Vocal Duet	Sohini (Bhajan)	Bhajan	Not Mentioned	11 : 11
28.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	30.10.1977	Vocal Duet	Marwa	Vilambit, Madhyalaya & Drut Khayal	Vilambit & Madhyalaya Ektal Drut Teental	55:35
29.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	N/A	Vocal Duet	Jog	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Ektal & Drut Teental	44:40
30.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	N/A	Vocal Duet	Durga	Madhyalaya & Drut Khayal	Madhyala Jhaptal & Drut Teental	25:24
31.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	N/A	Vocal Duet	Madhuvanti	Khayal	Not Mentioned	06:57
32.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	N/A	Vocal Duet	Puriya-Dhanashri	Khayal	Not Mentioned	06:56
33.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	N/A	Vocal Duet	Gavati	Khayal	Not Mentioned	06:56
34.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	N/A	Vocal Duet	Malkauns	Tarana	Not Mentioned	07:05
35.	Pt. Rajan Mishra & Pt. Sajan Mishra	N/A	Vocal Duet	Darbari Kanada	Vilambit & Drut Khayal	Vilambit Ektal Drut Teental	41:10

Details taken from all India radio.gov.in/profile/pages (List of Recording - HCM - Vocal 07102015)

यहाँ प्रस्तुत रिकॉर्डिंग विवरण के अतिरिक्त भी आकाशवाणी के पास आपके द्वारा गायी गई रागों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। देश के सभी आकाशवाणी केन्द्रों से आपके गायन के कार्यक्रम निरन्तर प्रसारित होते रहते हैं। इन कार्यक्रमों में स्टूडियो में रिकॉर्ड होने वाले कार्यक्रमों के अलावा भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण हेतु कार्यरत सरकारी, गैर सरकारी एवं मान्यता प्राप्त संस्थाओं द्वारा आयोजित संगीत सम्मेलनों की दुर्लभ रिकॉर्डिंग्स भी सम्मिलित हैं।

आकाशवाणी के साथ–साथ दूरदर्शन भी हमारी कला एवं संस्कृति का सशक्त प्रचारक–प्रसारक एवं सरंक्षणकर्ता बना। हिन्दुस्तानी संगीत के शीर्षस्थ एवं लोकप्रिय कलाकारों को दूरदर्शन के माध्यम से अपने समक्ष पाकर समस्त रसिक श्रोता अभिभूत हो उठते हैं। पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा दूरदर्शन के माध्यम से प्रसारित कार्यक्रमों में राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अतिरिक्त दूसरे अनेक कार्यक्रम दूरदर्शन के विभिन्न चैनल्स से प्रसारित हुए हैं।

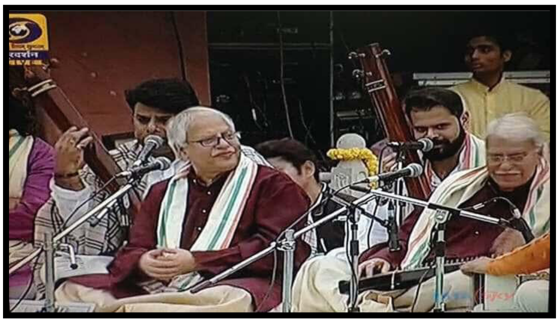

दूरदर्शन पर पं. राजन साजन मिश्र जी के कार्यक्रमों का प्रसारण

दूरदर्शन के डी.डी. भारती चैनल पर शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत विविध राग रागिनियों एवं गायन–वादन की शैलियों पर आधारित कार्यक्रमों की शृंखला में पंडित जी के युगल गायन के कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं। इन कार्यक्रमों में से एक में सूत्रधार की भूमिका उ. सुजात खाँ (प्रसिद्ध सितारवादक एवं उस्ताद विलायत खाँ सा. के सुपुत्र) ने बहुत ही विद्वतापूर्ण ढ़ंग से निभायी है। रागों के आधार पर बनाए गए एपिसोड रागमाला में पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा गाई गई रागों की बंदिशें जैसे राग जोगिया में पंजाबी ताल में ''मोरे अंगना कागा बोले'' राग पूरिया की एकताल में निबद्ध रचना ''पिया संग लागी लगन मोरी आली'', राग कामोद में तीनताल में निबद्ध ''ऐरी जाने न दूंगी'', राग बिलासखानी तोड़ी में एकताल में निबद्ध रचना ''कान्हा रे मुरली काहे ना तू बजायी'' आदि ने मर्मज्ञ एवं गुणी श्रोताओं से खूब दाद पायी।

Some Recordings and Memorable Programmes Telecast by Doordarshan and Available on Internet (Sites)

(1) Raag Jogiya

- Khayal in Punjabi (Madhya Laya)
  "More Angna Kaga Bole Re,
  Piya Ke Aavan Ka Det Sandeshwa"[1]

(2) Raag Puriya

- Khayal in Madhya & Drut Ektaal
  "Piya Sang Laagi Lagan Mori Aali"[2]

(3) Raag Kamod

- Khayal in Madhyalaya Teentaal
  "Aeri Jane Na Dungi Eri Maa"[3]

(4) Raag Bilaskhani Todi

- Khayal in Ektaal
  "Kanha Re Murli Kahe na Tu Bajaee"[4]

(5) Raag Jog on DD Bharoti (Saptak 2014, Ahmedabad)

- Khayal in Teentaal Madhya Laya
  "Sajan More Ghar Aaye"
- Drut Khayal in Ektaal
  "Sajan Kaase Kahun"[5]

(6) Raag Bihag on D.D. Bharati (Programme Organised by Prasaar Bharati, Akashwani, Delhi)

- Vilambit Khayal in Ektaal "Jag Jeevan Thora"
- Khayal in Teentaal Madhya Laya "Baje Re Mori Payal"[6]
- Tarana in Drut Teentaal "Taana Na Dir Dir Deem"[7]

(7) Raag Yaman Kalyan on DD Bharati

- Khayal in Teental[8]

---

1 https://www.youtube.com
2 https://www.youtube.com
3 https://www.youtube.com
4 https://www.youtube.com
5 https://www.youtube.com
6 https://www.youtube.com
7 https://www.youtube.com
8 https://www.youtube.com

दूरदर्शन के कार्यक्रमों का सर्वाधिक लाभ संगीत के क्षेत्र में साधनारत विद्यार्थियों एवं कलाकारों को भी मिलता रहा है। कार्यक्रम की प्रस्तुति के समय पं. राजन साजन मिश्र जी का महफिल में बैठने का ढंग, मुद्राएँ, हावभाव, बंदिशों के काव्य एवं राग में निहित भाव का समन्वय एवं अभिव्यक्ति आदि गुणों के कारण आपके गायन का प्रभाव श्रोताओं पर बहुत अधिक पड़ता है। अतः निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि दूरदर्शन एवं आकाशवाणी जैसे प्रभावी माध्यमों का उपयोग कर आपने भारतीय संगीत के प्रति जनरूचि जाग्रत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

5.2 संगीत सम्मेलनों में कार्यक्रम

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में विविध ऋतुओं, उत्सवों, मेलों एवं महान् संगीतकारों की जन्मतिथि एवं पुण्यतिथि आदि अवसरों पर आयोजित होने वाले संगीत सम्मेलनों के माध्यम से कलाकारों को प्रतिभा प्रदर्शन का उचित अवसर प्राप्त होता हैं। इन समारोहों के आयोजन से साधनारत नवोदित एवं प्रतिभावान कलाकारों को कला के प्रस्तुतिकरण हेतु मंच प्रदान किया जाता है। उच्च कोटि के संगीत समारोह से प्रशिक्षणार्थी एवं कलाकार भी समान रूप से लाभान्वित होते हैं। श्रेष्ठ एवं उच्चकोटि के कलाकारों के सांगीतिक प्रदर्शन से रसिक श्रोताओं एवं साधानारत् कलाकारों के संगीत विषयक ज्ञान में वृद्धि के साथ–साथ यहाँ पर चर्चा एवं समीक्षा का पर्याप्त अवसर प्राप्त होता है।

पं. राजन साजन मिश्र जी संगीत सम्मेलनों एवं समारोहों के माध्यम से अपनी सुरीली, शास्त्रोक्त एवं विद्वतापूर्ण घरानेदार गायकी का रसपान गुणीजनों को कराते रहे हैं। महफिल को जीतने की अद्भुत एवं विलक्षण क्षमता आप में विद्यमान है। पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''हमारा बड़ा कंसर्ट जो है संकटमोचन मंदिर बनारस में 1967 में हुआ जिसमें उस समय ढ़ाई से तीन हज़ार लोग आते थे। वहाँ हमारी पहली प्रस्तुति बड़े स्तर पर हुई। उसके बाद लॉयन्स क्लब का इंटरनेशनल फेस्ट हुआ बनारस में, उसमे उ. अली अकबर खाँ साहब का सरोद वादन और हम लोगों का गायन हुआ। उसके बाद धीरे–धीरे यात्रा शुरु हो गई''।[1]

''1973 के अन्त और 1974 से हम लोगों की यात्रा प्रारम्भ हुई। वैसे तो 1967 से यात्रा शुरु है, मेजर कन्सर्ट बनारस के संकटमोचन मंदिर से शुरू हुआ था। 1974 से हम लोगों की यात्रा बड़े स्तर पर शुरू हुई अर्थात संगीत आम लोगों के बीच में जाने लगा।

---

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 12.07.2014, नई दिल्ली

बड़े–बड़े शहरों में गाने का मौका मिला। सवाई गंधर्व जैसे फेस्टिवल में 1975 में हम लोग गाये। वहाँ से यात्रा हम लोगों की शुरू हुई।''[1]

पं. राजन जी मिश्र ने देश के यादगार संगीत सम्मेलनों के बारे में चर्चा में बताया'' सवाई गंधर्व, डोवर लेन, सप्तक, तानसेन, स्वामी हरिदास आदि ये सब अच्छे संगीत सम्मलेन हैं, इनमें श्रोता बहुत अच्छे होते हैं।''[2]

सवाई गन्धर्व संगीत समारोह

सप्तक संगीत समारोह

यहाँ यह बात विचारणीय है कि परिपक्व श्रोताओं एवं गुणीजनों की सभा में कलाकार अपनी कला का सटीक मूल्यांकन कर पाता है। इन सम्मेलनों एवं समारोह में की जाने वाली विद्वतापूर्ण प्रस्तुतियों के उपरान्त कलाकार में एक नई उर्जा का संचार होता है। यह उर्जा कला को परिष्कृत करते हुए उत्तरोत्तर प्रगति में सहायक व प्रेरक बनती है।

पं. राजन साजन मिश्र जी ने युगल गायकी का परचम देश ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में फहराया है। इन सम्मेलनों एवं समारोहों में की गई प्रस्तुतियों से आपने मर्मज्ञ श्रोताओं के अर्न्तमन में गहरी छाप छोड़ उन्हें आनन्द रूपी सरिता में भिगोया हैं। बनारस के संकटमोचन मंदिर से प्रारम्भ हुआ यह सफ़र अनवरत चल रहा हैं। आपके द्वारा जिन प्रतिष्ठित संस्थाओं के माध्यम से संगीत सम्मेलनों में प्रस्तुतियाँ दी जाती रही हैं उनमे प्रमुख हैं–

द डोवर लेन म्यूज़िक कान्फ्रेंस (पं. बंगाल), स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन (उत्तर प्रदेश), सवाई गंधर्व भीमसेन फेस्टीवल पूणे (महाराष्ट्र), तानसेन समारोह, ग्वालियर (मध्य प्रदेश), संकटमोचन संगीत समारोह, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), बुढवा मंगल, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), गंगा महोत्सव, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), सुरश्री केसरबाई केरकर संगीत समारोह, गोवा, सप्तक फेस्टीवल ऑफ म्यूज़िक, अहमदाबाद (गुजरात), पं. राजगुरु स्मृति समारोह,

---

1 पं. साजन जी मिश्र (Story of Renowned Classical Singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)

2 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरुपूर्णिमा दि. 12.7.2014, नई दिल्ली

उत्तरपदा संगीत चक्र (पं. बंगाल), हरवल्लभ संगीत सम्मेलन, जालंधर (पंजाब), संगीत संकल्प सम्मेलन, आकाशवाणी एवं संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रायोजित संगीत सम्मेलन एवं अन्य प्रतिष्ठित समारोह जैसे स्पिक मैके एवं अन्य संगीत के प्रचार प्रसार में लगी संस्थाओं द्वारा आयोजित समारोह।

पं. भीमसेन जोशी संगीत समारोह

श्री संकटमोचन संगीत समारोह

वृंदावन गुरुकुल 'बैठक'

संगीत संकल्प अधिवेशन

राव माधोसिंह म्यूज़ियम ट्रस्ट (कोटा) द्वारा आयोजित संगीत समारोह

5.3 विदेशों में कार्यक्रम

यदि हम सम्पूर्ण विश्व पर दृष्टि डालें तो पायेंगे कि सांस्कृतिक वैभव एवं समृद्धि की दृष्टि से हमारे देश का स्थान शीर्ष पर हैं। सर्वशक्तिमान परमपिता परमेश्वर द्वारा सृजित सृष्टि अर्थात प्रकृति, के प्रति हमारे पूर्वजों का दृष्टिकोण उसके सिर्फ दोहन का न होकर एक पालनकर्ता के रूप में रहा हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाये तो हमारा संगीत प्रकृति

जन्य संगीत हैं। प्रकृति एवं परमात्मा द्वारा उत्सर्जित संगीत को उनकी ही आराधना का आधार बनाना जीवमात्र के कल्याण की सुन्दर संकल्पना एवं परिणती हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत में मानवीय संवेदनाओं की श्रेष्ठतम् भावाभिव्यक्ति की अपार क्षमता होने के कारण ख्यातनाम कलाकारों ने देश ही नहीं विदेशों में भी भारतीय संगीत की पताका फहराई हैं। शांत, गंभीर, सौंदर्य एवं मौलिकता आदि गुणों के साथ प्राचीन स्वरूप एवं आनंद की अनंत गहराई की अनुभूति के कारण विदेशी भी हमारे संगीत को आदर और सम्मान से सुनते हैं और आनंद प्राप्त करते हैं।

गर्व की बात है कि इस वैश्वीकरण के दौर में हमारा संगीत देश की सीमाएँ लांघकर विदेशों में भी खूब फूला फला है। ''बीसवीं शती में स्वतंत्रता उपरान्त विशेष बात जो विश्व पटल पर सिद्ध हुई वह है, विश्व के नक्शे पर भारतीय संगीत को जगह और उच्चतम पहचान मिली है।''[1]

डॉ. नीलम वाला महेन्द्रू ने भारतीय शास्त्रीय संगीत का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसार करने में अहम् भूमिका निभाने वाले भारतीय महान् कलाकारों की सूची में पं. रविशंकर के गुरु बाबा अलाउद्दीन खाँ सा., उ. अली अकबर खाँ एवं उनके पुत्र उ. आशीष खाँ एवं उ. ध्यानेश खाँ, पं. रविशंकर, उ. अल्लारक्खा खाँ, उ. ज़ाकिर हुसैन खाँ, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पं. विश्व मोहन भट्ट, पं. देबू चौधरी, पं. रानू जी सेन गुप्ता, पं. निखिल बैनर्जी, उ. अमजद अली खाँ, पं. शिव कुमार शर्मा एवं पं. राजन साजन मिश्रा के नामों का विशेष उल्लेख किया है।

विश्व स्तर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रतिष्ठित करने में पं. राजन साजन मिश्र जी ने अविस्मरणीय भूमिका निभाई हैं। आपके द्वारा विदेशों में प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों की शृंखला में पहला कार्यक्रम 1978 में श्रीलंका में हुआ। पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''पहला डेलिगेशन भारत का श्रीलंका में गया था। वहाँ हमें करीब 10 लाख लोगों के बीच में गाने का सौभाग्य मिला। उस समय जयवर्धने जी राष्ट्रपति थे, यह हमारा पहला टूर था।''[2] इस प्रकार श्रीलंका से आरम्भ हुई सांस्कृतिक यात्रा विदेशों में निरन्तर जारी हैं। आपने विश्व के अनेक प्रमुख देशों जैसे अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, स्विटज़रलैण्ड, इटली, हॉलेण्ड, ऑस्ट्रिया, नीदरलैंण्ड, सिंगापुर, कतर और मस्कट आदि में मंच प्रदर्शन कर भारतीय संगीत एवं ख्याल गायकी का रसास्वादन संगीत रसिको को करवाकर विश्व स्तर पर ख्याति अर्जित की है।

---

1 डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ. 134

2 पं. साजन जी मिश्र (Story of Renowned Classical Singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)

विदेशों में स्थापित अमेरिका का वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट और लंदन के एशियन म्यूज़िक सर्किट जैसी महत्त्वपूर्ण संस्थाओं के माध्यम से शास्त्रीय गायन के प्रभावपूर्ण एवं मंत्रमुग्ध करने वाले प्रस्तुतिकरण एवं प्रशिक्षण द्वारा विदेशियों को हमारे संगीत के प्रशंसक एवं श्रोतावर्ग में सम्मिलित कर आपने देश की महती सेवा की है।

पं. राजन जी मिश्र भारतीय शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में विदेशी श्रोताओं के अनुभव को इस प्रकार व्यक्त करते हैं "देखो यहाँ अच्छे जो जगह हैं जैसे महाराष्ट्र और बंगाल, ये दो प्रान्त संगीत का प्रान्त है। इनमें जब गाना होता है, तो श्रोता जानकार होते हैं। वह पहले के लोगों (कलाकारों) को सुने होते हैं उनको जगह पता है तो एक–एक जगह पर वह दाद देते हैं आह, वाह, उनको जगह पता होती है। लेकिन विदेशों में एक भी शब्द हमारा उनको समझ में नहीं आ रहा है। अवधी या ब्रज भाषा में गा रहे हैं अर्थात हम क्या कर रहे हैं, उनको समझ नहीं आ रहा है। उनको सिर्फ हमारा अप्रोच समझ में आता है कि हम सुर किस अप्रोच से लगाते हैं और साथ में फीलिंग। दूसरी प्रमुख बात है कि वो जब टिकिट खरीद के आते हैं तो यह सोचकर आते हैं कि मुझे कुछ प्राप्त होना चाहिए। हमारे यहाँ क्या है कि इतना सुन चुके हैं लोग कि बायस्ड हो गये। उनको ऐसा लगता है कि हमारे घराने जैसा कोई नहीं है। अच्छाई तुम्हारे सामने से ऐसे निकल जा रही है वह तुमको दिख ही नहीं रही है क्योंकि तुम्हारा दिमाग बंद है।"[1]

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार यूनिवर्सल लेंग्वेज कहा गया है संगीत को, वो इसलिए कहा गया है कि संगीत को किसी भाषा, जाति और क्षेत्र से नहीं बांधा जा सकता है, आत्मा की वाणी है। हम लोग यूरोप में, जर्मनी में, आस्ट्रिया में, इटली में, हर जगह गाये हैं। वह हमारी भाषा नहीं समझते लेकिन मनोभावों को समझते हैं, वह सुर को समझते हैं"[2]

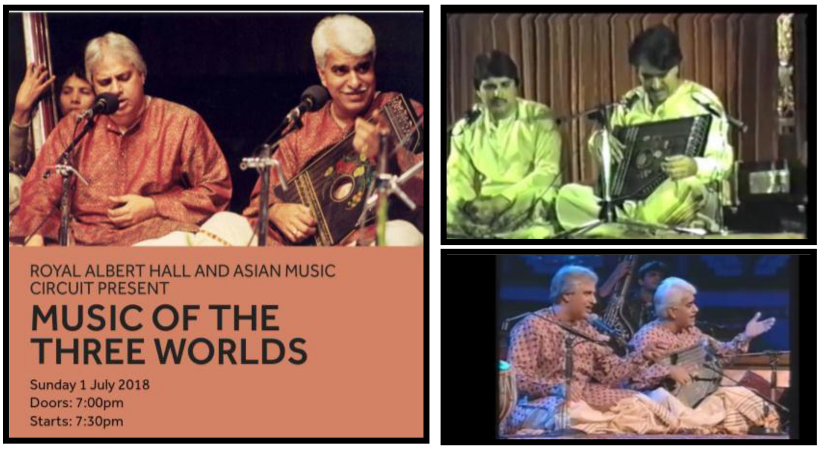

विदेशों में कार्यक्रमों की प्रस्तुति

[1] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरुपूर्णिमा, दिनांक 12.07.2014, नई दिल्ली

[2] पं. साजन जी मिश्र (Story of Renowned classical singer Pt. Rajan sajan mishra) (https://www.youtube.com)

विदेशों के कार्यक्रमों के एक अन्य अनुभव में पं. राजन जी मिश्र बताते हैं ''एक बार हॉलैण्ड में एक जगह है मैस्ट्रिच, वहाँ हम लोगों ने गाया। इससे पहले यूरोप में या अमेरिका में जहाँ भी गाया तो कार्यक्रम के बाद बहुत क्लेपिंग होती है लेकिन मैस्ट्रिच शहर में कोई क्लेपिंग नहीं हुआ, एकदम साइलेंस हो गया। हम लोग थोड़े डिसअप्वाइंट भी हुए कि आज क्लेपिंग क्यों नहीं हुआ? सैकण्ड हॉफ के लिए ग्रीम रूम चले गये फिर वहाँ के कुछ स्थानीय लोग आकर बोले कि ऐसा लगता है कि क्लेपिंग नहीं होने से आप डिसअप्वाइंटेड हैं। हमने कहा हाँ हमेशा ही क्लेपिंग होता हैं, आज हुआ नहीं। उन्होंने कहा कि आप लोगों को अनाउंस करना चाहिए कि कार्यक्रम में कोई क्लेप नहीं करे क्योंकि ''द वे यू मेक्स हारमनी बाय योअर मेलोडी'' वो जो मेलोडी है ''लेट्स गो विद देट मेलोडी'' अर्थात् क्लेपिंग की आवाज से वह मेलोडी टूट जाती है, तो आपको अनाउंस करना चाहिए कि हमारे कार्यक्रम में कोई भी क्लेप ना करे। इसका हमने बहुत जगह प्रयोग किया।''[1]

यहाँ हॉलेण्ड में श्रोताओं का कहने का तात्पर्य यह है कि दो से तीन घण्टे के शास्त्रीय गायन के पश्चात् श्रोता भावविहल हो राग–रागिनियों के वातावरण में डूब जाता है और वह उस वातावरण को अपने मन मस्तिष्क में साथ लेकर जाना चाहता है। कार्यक्रम के पश्चात कलाकार के उत्साहवर्धन हेतु बजने वाली तालियाँ उसके स्वयं के द्वारा निर्मित संगीतमय वातावरण अथवा मेलोडी को भंग कर देती है। इसीलिए हॉलैण्ड में श्रोताओं द्वारा पंडित जी से तालियाँ न बजवाने हेतु आग्रह किया गया ताकि वे उस संगीतमय वातावरण को अपने साथ लेकर जा सकें।

भारतीय संगीत मौलिकता, रचनात्मकता, सौंदर्यपरकता, रसात्मकता एवं गंभीरता आदि गुणों से परिपूर्ण है। अध्यात्म एवं दर्शन से ओतप्रोत होने के कारण यह मानवीय संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति करता हैं। अतः जो मानसिक शांति मनुष्य को प्रकृति की गोद में नैसर्गिक आनंद लेकर प्राप्त होती है वही परम आनन्द, शांति और सुख की अनुभूति उसे भारतीय संगीत की राग रागिनियों द्वारा उत्पन्न स्वर लहरियों से प्राप्त होती है। अतः पश्चिमी देशों में व्याप्त भौतिकीकरण के कारण आत्मशांति की खोज में भारतीय संगीत के प्रति उनका आकर्षण लाजिमी है। इस दिशा में भारतीय कलाकारों ने देश के गौरव में अभिवृद्धि करते हुए सम्पूर्ण विश्व को सांस्कृतिक दृष्टि से एक मंच पर लाने का अनूठा एवं अभिनव कार्य किया है।

---

[1] पं. राजन जी मिश्र (Story of Renowned classical singer Pt. Rajan sajan mishra) (https://www.youtube.com)

पं. राजन साजन मिश्र जी की भावपूर्ण गायन शैली एवं साधना का प्रबल प्रभाव है कि कार्यक्रम के दौरान विदेशी श्रोताओं के और आपके बीच में भाषा, धर्म, समुदाय एवं संस्कृति की दीवार पूर्ण रूप से ध्वस्त हो जाती है। श्रोतागण स्वर व ईश्वर के एकात्म भाव में राग रागिनियों की सुर सरिता में खोकर दिव्य आनंद की अनुभूति करते हुए आत्मसाक्षात्कार की अवस्था को प्राप्त करते हैं। उत्कृष्ट संगीत की चरम अवस्था भी यही है कि श्रोता साधन नहीं साध्य की प्राप्ति में लीन होकर आत्म सुख का अनुभव करने लगे।

5.4 प्रचार–प्रसार हेतु लक्षित कार्यक्रम

'वर्ल्ड म्यूज़िक टूर –भैरव से भैरवी तक'

पं. राजन साजन मिश्र ने बनारस घराने की मधुकरी गायकी के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का रसास्वादन देश के साथ–साथ विदेशों में भी खूब करवाया है। वैसे तो लगभग पिछले 50 वर्षों की संगीत यात्रा के माध्यम से आपकी गायकी की गूँज संपूर्ण विश्व में सुनाई दे रही है फिर भी भारतीय संगीत के अधिकाधिक प्रचार–प्रसार की शृंखला में आपके द्वारा वर्ष 2017–18 में 'इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर दी आर्ट एण्ड कल्चर नई दिल्ली' एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से संपूर्ण विश्व को भारतीय शास्त्रीय संगीत रूपी अनमोल धरोहर से परिचय करवाने एवं विश्व शांति का संदेश देने हेतु ''वर्ल्ड म्यूज़िक टूर– भैरव से भैरवी तक'' का प्रभावी एवं सफल आयोजन संपन्न हुआ। इस वर्ल्ड टूर की रूपेरखा तैयार करने एवं सूत्रधार के रूप में सलोनी गांधी जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्ल्ड टूर के दौरान सांगीतिक यात्रा में 13 देशों में लगभग 54 कन्सर्ट का सफल आयोजन संपन्न हुआ। इसमें ऐसे अनेकानेक देशों में आपके गायन के कार्यक्रम हुए जहाँ अभी तक भारतीय शास्त्रीय संगीत की स्वर लहरियाँ गुंजित नहीं हुई थी।

''वर्ल्ड म्यूज़िक टूर'' भैरव से भैरवी तक की अवधारणा के बारे में पं. राजन मिश्र जी ने एक बैठक में पुराने अनुभव के बारे में बताया ''उल्म एक छोटी सी जगह है जर्मनी में, वहाँ हम टूर कर रहे थे यूरोप का, तो वह जो ऑरगेनाइजर थे उन्होंने कहा कि हमने सुना है कि आपके यहाँ राग का टाइम साइकल है तो हमने उनको थोड़ा ब्रीफ किया कि मॉर्निंग मेलोडी है, फिर आफ्टरनून है, फिर लेट आफ्टरनून है, फिर अर्ली इवनिंग है, फिर नाइट राग हैं। उन्होंने कहा I want to organise three concerts in a day हमने कहा बहुत अच्छी बात है तो फिर वह तैयार थे, उल्म में उन्होंने वह ऑरगेनाइज किया। सुबह दस से बारह साढ़े बारह बजे तक एक कंसर्ट हुआ फिर 4 बजे से 6 बजे तक हुआ फिर 7 बजे से

रात को 10 बजे तक हुआ। उसका नाम ''भैरव से भैरवी तक'' नहीं था लेकिन यह कंसेप्ट लेकर उन्होंने प्रोग्राम किया। उन्होंने एक पैकेज टिकट बेचा जिसमें ब्रेकफास्ट, लंच, टी, स्नेक्स आदि शामिल थे। जब इसकी चर्चा हमारे मित्रों से हुई तो उन्होंने पूना में एक प्रोग्राम रखा बहुत बाद में 2010 में। पूना में यह कार्यक्रम दो दिन हुआ 7–7 घंटे का सिर्फ हम ही थे। उसी कंसेप्ट को लेकर एक प्रोग्राम बॉम्बे में हुआ षण्मुखानन्द हॉल में, जो सुबह से लेकर रात तक हुआ 14 घंटे और उसमें हम ही लोगों ने गाया। कार्यक्रम में पब्लिक पूरी भरी हुई थी और कोई भी गया नहीं। कार्यक्रम के बीच में थोड़ा लेक्चर डिमोन्स्ट्रेशन भी था। प्रश्न भी हम लोग लेते थे ऑडियन्स से और उसका उत्तर भी देते थे। अतः सलोनी जी को ऐसा लगा कि भैरव से भैरवी तक एक टाइटल रखा जाए जिसका वर्ल्ड टूर बनाया जाए और पूरे विश्व में हमारे भारतीय संगीत की स्वर लहरियाँ दिलों को जोड़ने के लिए प्रस्तुत की जाएं।''[1]

वर्ल्ड टूर 'भैरव से भैरवी तक' 2017–18

''भैरव से हमारे रागों की शुरूआत होती है तो भैरव के बहुत सारे प्रकार हैं– नट भैरव, अहीर भैरव, आनंद भैरव आदि। भैरव के प्रकार से हम धीरे–धीरे तोड़ी में जाते है तोड़ी के प्रकार होते हैं फिर उसके बाद हम लोग सारंग के प्रकार में जाते हैं। उसके बाद मुल्तानी, पटदीप, भीमपलास और मधुवन्ती ये प्रहर आता है। इसके बाद मारवा, श्री अर्थात शाम के राग शुरु होते हैं। इसके बाद पूरिया, जोग, बागेश्वरी, बिहाग और रात को मालकौंस फिर दरबारी। अन्त में में जो भैरवी गाने की प्रथा है, भैरवी का मतलब है समापन। भैरवी के बाद फिर कुछ गाना बजाना नहीं होता है क्योंकि भैरवी को सदा सुहागन रागिनी कहा गया है और भैरवी एक ऐसी रागिनी है जिसमें आप बारहों सुर का इस्तेमाल कर सकते हैं, उसके कई कलर्स बना सकते हैं इसलिए विद्वानों ने सोचा कि भैरवी अंत में गाया जाये ताकि इसी से इति श्री हो जाये अर्थात् भैरव से शुरु करके भैरवी तक, यह कन्सेप्ट है।''[2]

---

1 www.youtube.com (Sarb Akal Baithak, Calgary, May 27, 2018)

2 www.youtube.com (Sarb Akal Baithak, Calgary, May 27, 2018)

वर्ल्ड टूर – सर्ब अकाल बैठक केलगरी (कनाडा)

वर्ल्ड म्यूज़िक टूर 'भैरव से भैरवी तक' 2017–18

वर्ल्ड म्यूज़िक टूर 2017–18 के अंतर्गत 'भैरव से भैरवी तक' शीर्षक के प्रथम चरण में आयोजित हुए कार्यक्रमों का शुभारंभ देश की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी बनारस से हुआ। तदुपरान्त क्रमशः अहमदाबाद, कलकत्ता, बैंगलोर, दिल्ली, गोआ, पुणे, मुम्बई आदि देश के प्रमुख शहरों में प. राजन साजन मिश्र जी की भावविभोर करने वाली यादगार प्रस्तुतियाँ हुई।

द्वितीय चरण में एशिया, तृतीय चरण के प्रथम भाग में उत्तरी अमेरिका, द्वितीय भाग में दक्षिण अमेरिका, चतुर्थ चरण में युनाइटेड किंगडम, पंचम चरण में यूरोप और छठे चरण में न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया के प्रमुख शहरों में भारतीय संगीत द्वारा भाईचारे एवं शांति का संदेश देकर भारतीय संगीत की अस्मिता एवं आध्यात्मिक शक्ति से सम्पूर्ण विश्व को रूबरू कराया गया। 'वर्ल्ड म्यूज़िक टूर' के माध्यम से भारतीय संगीत को सम्पूर्ण विश्व में लोकप्रिय बनाते हुए प्रतिष्ठित करने में प. राजन साजन मिश्र जी के भागीरथी प्रयासों की जितनी सराहना की जाये उतनी कम है। आपने भारतीय शास्त्रीय संगीत की महक से सम्पूर्ण विश्व का परिचय करवाकर अधिकाधिक प्रचार–प्रसार द्वारा हमारे देश का गौरव बढ़ाया है।

The World Tour 2017-18 - Bhairav se Bhairvi Tak[1]

1 www.rajansajan.com

5.5 सम्मान एवं पुरस्कार

किसी भी कलाकार को मिलने वाले सम्मान उसे अपनी कला एवं साधना के प्रति अधिक कर्तव्यनिष्ठ, कर्मनिष्ठ एवं दृढ़ प्रतिज्ञ बनाते हुए नवचेतना जागृत करने का अनूठा कार्य करते हैं। यद्यपि सच्चा कलाकार सम्मान एवं पुरस्कारों से प्रभावित हुए बिना परमात्मा द्वारा सौंपे गये दायित्व का ईमानदारी से निर्वहन कर सही अर्थों में समाज की सेवा करता है। महान् कलाकार गहन साधना द्वारा कला को परिष्कृत करते हुए सम्पूर्ण सांस्कृतिक जगत् के लिए आदर्श स्थापित करते हुए प्रेरक एवं दिशादृष्टया की भूमिका निभाते हैं। कलाकारों द्वारा कला के क्षेत्र में दिए जाने वाले योगदान के लिए हमारे देश में भी सरकारी, गैर सरकारी एवं अन्य संस्थाओं द्वारा सम्मानित किए जाने की परंपरा रही है।

पं. राजन साजन मिश्र जी के युगल गायकी के स्वर सभी संगीत मर्मज्ञों, कलाकारों, साधकों एवं रसिक श्रोताओं के मन मस्तिष्क में गुंजायमान हो रहे हैं। उन्होंने संगीत प्रेमियों का दिल जीतकर उन्हें परमानन्द से सराबोर किया है। घरानेदार परंपरा में स्वयं के दृष्टिकोण एवं चिन्तन का उचित एवं सुंदर समन्वय स्थापित कर गायकी को एक नया कलेवर दिया है। शास्त्रसम्मत, मनमोहक एवं हृदयस्पर्शी गायकी ने आपको देश के महान् एवं प्रतिष्ठित गायकों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया। यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि 70–80 के दशक में जब आपका राष्ट्रीय स्तर पर ख्याल गायकी के क्षेत्र में प्रवेश हुआ तब पं. भीमसेन जोशी, उ. अमीर खाँ, पं. जसराज, विदुषी किशोरी अमोनकर जैसे महान् व दिग्गज कलाकार ख्याल गायकी के क्षेत्र में उच्चतम शिखर पर आसीन थे। युवा अवस्था में ऐसे महान् कलाकारों के बीच में अपना स्थान बनाना एक बड़ी चुनौती थी। इस हेतु सफल होने का श्रेय आप पूज्य पिताजी पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी, चाचाजी पं. गोपाल प्रसाद मिश्र जी एवं अन्य सभी बड़े गुरुजनों द्वारा प्रदत्त तालीम एवं बड़े कलाकारों के आशीर्वाद व सत्परामर्श को देते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति की गई समर्पित सेवा हेतु आपको भारत सरकार, राज्य सरकारों एवं संगीत के प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा विभिन्न पुरस्कारों एवं सम्मानों से अलंकृत किया गया है।

पं. राजन साजन मिश्र जी को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मिले प्रमुख पुरस्कारों एवं सम्मानों की सूची

(1) पं. कुमार गंधर्व सम्मान

शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में उत्कृष्ट, सृजनात्मक प्रतिभा, प्रयोगशील कल्पना और अनवरत साधना हेतु यह सम्मान मध्यप्रदेश शासन द्वारा 6 दिसम्बर 1995 को प्रदान किया गया।

(2) **काशी गौरव सम्मान**

शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में काशी के गौरव की अंतर्राष्ट्रीय अभिवृद्धि करने हेतु बृजपालदास रमादेवी संस्थान, वाराणसी द्वारा 15 जनवरी 1997 को इस सम्मान से अलंकृत किया गया।

(3) **संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार**

यह पुरस्कार हिन्दुस्तानी संगीत के प्रमुख गायकों के रूप में सम्मानित कर अकादमी द्वारा वर्ष 1998 में प्रदान किया गया।

(4) **पद्म भूषण**

भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय आ. प. जै. अब्दुल कलाम साहब द्वारा व्यक्तिगत गुणों के लिए आपके सम्मानार्थ दिनांक 23 मार्च 2007 को पद्म भूषण प्रदान किया गया।

(5) **राष्ट्रीय तानसेन सम्मान**

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्टता, गहन साधना और सतत् सृजन सक्रियता के साथ बनारस घराने की यशस्वी परम्परा के गौरवमयी निर्वहन के लिए ग्वालियर में मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन द्वारा 14 दिसम्बर 2012 को प्रदान किया गया।

(6) **स्वर सम्राट पं. बसवराज राजगुरु नेशनल अवार्ड**

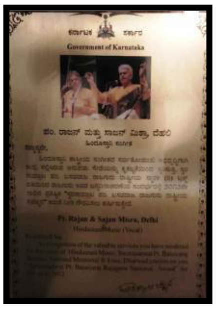

हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में अमूल्य सेवाओं के लिए यह पुरस्कार वर्ष 2012 में कर्नाटक सरकार द्वारा प्रदान किया गया।

(7) यश भारती सम्मान – 2013–14

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत परंपरा के प्रचार–प्रसार एवं उन्नयन हेतु किए गए कार्यों के लिए इस सम्मान से मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश शासन द्वारा दिनांक 9 फरवरी 2015 को अलंकृत किया गया।

(8) गुरुराव देशपाण्डे राष्ट्रीय संगीत पुरस्कार "गुरु गंधर्व"

बनारस घराने के प्रतिनिधि गायक पं. राजन साजन मिश्र को शास्त्रीय संगीत के लिए समर्पित सेवाओं हेतु यह पुरस्कार 24 दिसम्बर 2012 को गुरुराव देशपाण्डे संगीत सभा द्वारा बैंगलोर में प्रदान किया गया।

(9) विमला देवी सम्मान 2010–11

यह पुरस्कार विमला देवी फाउण्डेशन न्यास, अयोध्या द्वारा शास्त्रीय संगीत के लिए पं. राजन मिश्र एवं पं. साजन मिश्र को नवोन्मेष, रचनात्मक संवेदनशील तथा सक्रिय कलात्मक उपस्थिति के लिए प्रदान किया गया।

(10) संस्कृति अवार्ड

यह सम्मान भारत के प्रधानमंत्री की और से प्रदान किया गया।

(11) पं. ओंकार नाथ ठाकुर अवार्ड

(12) संगीत नायक सम्मान (प्राचीन कला केन्द्र चंडीगढ़ द्वारा)

(13) संगीत रत्न सम्मान (अलाहाबाद)

(14) संगीत भूषण सम्मान (वाराणसी)

(15) अमेरिका के वाल्टीमोर शहर के लिए सम्मान सूचक नागरिकता का सम्मान।

(16) डी. लिट. उपाधि (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय)[1]

---

[1] सभी पुरस्कारों एवं सम्मान पत्रकों की जानकारी पं. राजन साजन मिश्र जी से व्यक्तिगत रूप से संग्रहित की गई।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से डी.लिट. की उपाधि प्राप्त करते हुए

माननीय राष्ट्रपति डॉ. आ.प.जै. अब्दुल कलाम साहब से पद्मभूषण प्राप्त करते हुए

माननीय राष्ट्रपति डॉ. प्रणब मुखर्जी से सम्मान प्राप्त करते हुए

माननीय राष्ट्रपति डॉ. आर. वेंकटरमन से सम्मान प्राप्त करते हुए

माननीय राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी से सम्मान प्राप्त करते हुए

माननीय राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जेल सिंह से सम्मान प्राप्त करते हुए

पं. राजन मिश्र की जीवन यात्रा के साठ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर पं. जसराज, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पं. शिव कुमार शर्मा एवं पं. साजन मिश्र सम्मान पत्रक प्रदान करते हुए

तत्कालीन मुख्यमंत्री गुजरात एवं वर्तमान प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी से सम्मान प्राप्त करते हुए

अतः घरानेदार गायकी के साथ अनवरत साधना और सतत् चिन्तन और अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण के कारण आपकी गायकी प्रचार–प्रसार के विविध माध्यमों आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं संगीत सम्मेलनों के द्वारा चहुँओर अपनी खुशबू बिखेरने लगी। देश ही नहीं विदेशों में भी आपकी चित्ताकर्षक गायन शैली के लोग प्रशंसक होते चले गये। भारतीय शास्त्रीय संगीत रूपी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने के लिए आपके योगदान हेतु अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मानों से आपको सुशोभित किया जाना संगीत के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों का प्रमाण है।

आपके द्वारा भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण को उपर्युक्त माध्यमों तक ही सीमित नहीं रखा गया अपितु सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण का कार्य भावी पीढ़ी में संगीत की घरानेदार शिक्षा के हस्तांतरण के लिए मजबूती से किया जा रहा है।

जनसामान्य में शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि जाग्रत करने हेतु आपने निस्वार्थ भाव से देश–विदेश में स्थित विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से व्याख्यान एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाई।

5.6 विश्व प्रसिद्ध कलाकारों के विचार

अद्वैत संगीत नामक डॉक्यूमेंट्री फिल्म के अंतर्गत पं. राजन साजन जी मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विश्व प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा अपने विचार व्यक्त किए हैं। महान् कलाकारों द्वारा पं. राजन साजन जी मिश्र के बारे में प्रकट किए गए विचारों को सम्मान एवं पुरस्कारों के समान ही स्थान देना उचित होगा। अपने क्षेत्र में निष्णात् एवं सिद्ध कलाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार संकलित रूप में यहाँ प्रस्तुत हैं।

विश्वविख्यात कथक नृत्यकार पद्म विभूषण पं. बिरजू महाराज जी के कथनानुसार ''कहते हैं संगीत या स्वर या ताल खत्म नहीं होता है। शरीर बदल जाते हैं लेकिन शरीर दूसरे रूप में जब आते हैं तो फिर से वही रंग पकड़ने लगते हैं। वही आनन्द आज मुझ राजन भैया और साजन भैया के अन्दर मिलता है। वो स्वर के साथ लगाव, वो ईश्वर का ध्यान और गायन के अन्दर पूरे नाद का जो स्वरूप है वो इन लोगों की आवाज़ में सुनाई पड़ने लगा। बड़ी खुशी होती है जब इनकी आवाज़ों को सुनता हूँ। ये बिल्कुल लीन हैं प्रभु की कृपा है, स्वर के लिए इनका प्यार जो बना हुआ है ईश्वर करे ऐसे ही बना रहे।''[1]

---

1 अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

प्रख्यात तबला वादक पद्मश्री पं. विजय घाटे जी के अनुसार " जबसे मैंने होश संभालना शुरु किया तबसे इन लोगों को देखा, पं. राजन मिश्र और पं. साजन मिश्र ये हमारे आइडियल रहे हैं। इनको देखके मैंने ऐसा सोचा है कि काश हम भी गाना बजाना कभी कर सकते या हम भी कुछ कोशिश करें ज़िन्दगी में या भगवान हमको भी इस तरह का कोई आशीर्वाद दे कि हम भी इस तरह का कोई काम कर सकें।"[1]

विश्वविख्यात बाँसुरी वादक पद्म विभूषण पं. हरिप्रसाद जी चौरसिया ने पं. राजन साजन मिश्रजी के बारे में अपनी राय व्यक्त करते हुए कहा "जीवन में बहुत संत और गुणी लोग आते हैं जाते हैं लेकिन एक जोड़ी जो हमेशा हमारे आँख में जो खेलती रहती है और जहाँ जाता हूँ इनको सुनता हूँ, इनके साथ बैठता हूँ, इनसे दोस्ती कर ली है इनका नाम है राजन साजन। ये एक ऐसी बड़ी हस्ती हैं कि जो संगीत जगत में आके ऐसा चमत्कार कर दिया कि मुझे लगता है कि शायद मैं पुराना गाना भी सुनता हूँ, आज का गाना भी सुनता हूँ और आने वाली पीढ़ियों का गाना भी सुनता हूँ। मुझे बहुत ही अच्छा लगता है उनका गाना। भगवान करे कि उनको हमारी उम्र भी लग जाये और अच्छा गाते रहें और दोनों भाई जो दो हस्तियाँ हैं ऐसी न हुई थी न होगी।"[2]

विश्वप्रसिद्ध शास्त्रीय गायक पद्म विभूषण पं. जसराज जी ने पं. राजन साजन मिश्र जी के बारे में ज़िक्र करते हुए कहा कि "दोनों भाई अद्‌भुत गायक हैं, बहुत अच्छी जुगलबन्दी है ये, हमारे बीच में जुगलबन्दी की प्रथा पुरानी है और हमेशा से ऐसा हुआ है कि एक आद ही जुगलबंदी सर्वोपरि होती है। इस वक्त पं. राजन जी, पं. साजन जी मिश्र जो बनारस घराने के हैं मेरा ख्याल है भारत में या अब्रोड में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ पे उन्होंने गाया नहीं और उनकी प्रशंसा न हुई हो। बनारस अपने आप में एक ऐसी जगह हे जो भारत का बहुत बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र है और वर्षों से रहा है। इसमें हमेशा संगीत, जो एक अद्‌भुत चीज़ है पनपी है या पनपती है और पनपती रहती है। इस वक्त ये दो भ्राता जो बनारस घराने के हैं इनका सच में कोई जवाब नहीं है। मुझे तो इन दोनों का गाना इतना पसन्द है कि मैं तो अगर थका मांदा भी होता हूँ तो सुनने जाता हूँ।"[3]

विश्वविख्यात संतूर वादक पद्म विभूषण पं. शिवकुमार शर्मा जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति मे कहा कि "मेरा एक अलग रिश्ता भी इनसे है मेरे पिता गुरु पं. उमादत्त शर्मा

---

[1] अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

[2] अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

[3] अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

जी और इनके पिताजी पं. हनुमान प्रसाद मिश्रा जी गुरु भाई थे। पं. बड़े रामदास जी के पास मेरे पिताजी ने भी सीखा और इनके पिताजी और चाचाजी ने भी, तो मेरा एक घर का भी ताल्लुक है लेकिन मैं घर का हूँ इसलिए तारीफ़ नहीं कर रहा हूँ, सच्ची बात कह रहा हूँ। हम लोग तंत्रकार हैं, हमारे पास शब्द नहीं हैं, गायक के पास एक ख़ास सुविधा है शब्दों की। राग अनुसार शब्द हों और फिर उसका सही उच्चारण करें, उसका इस्तेमाल करें तो राग का भाव तो बहुत खूबसूरती से आप प्रदर्शित कर सकते हैं। इनके गाने में एक ख़ासियत ये भी है कि शब्दों का जो इस्तेमाल जो पुरानी बंदिशें भी हैं या जिनकी इन्होंने रचना की है वो राग को इतना अच्छा व्यक्त करती है और बहुत कम ऐसा होता है कि जुगलबंदी में किसको क्या करना है कहाँ पर क्या चीज़ करने से समन्वय बनेगा वो इनकी गायकी में देखने को मिलता है। बड़ी शुभकामनाएँ और ये दीर्घायु हों और अपने संगीत से ऐसे ही पूरे विश्वभर में भारत की पताका फहराते रहें।''[1]

विश्व प्रसिद्ध तबलावादक पं. कुमार बोस के अनुसार ''मैं खुद इनका बहुत फैन हूँ। बहुत बजाया तो हूँ उससे ज़्यादा सुना भी हूँ। इनके साथ मेरा पारिवारिक रिश्ता रहा और आज भी है। इसलिए मैं इतना कहना चाहता हूँ कि कलाकार से ज़्यादा इंसान होना बहुत जरुरी है और संस्कार को बरकरार रखना बहुत ज़रुरी है। इन्होंने अपनी फैमिली में जैसे संस्कार को बरकरार रखा है ये बहुत बड़ी बात है, बहुत बड़ा गुण है इनमें। मेरे हिसाब से उस्ताद अली अकबर खाँ और पंडित रविशंकर जी का जो डुएट बहुत सक्सेसफुल रहा था उसके बाद अगर डुएट कोई सक्सेसफुल है हिंदुस्तानी संगीत में तो इन लोगों (पं. राजन साजन जी मिश्र) का है। डुएट गाना बहुत मुश्किल होता है और अपने आप में एक अंडरस्टेंडिंग और उतना ही म्यूज़िकल होना एक दूसरे से, एक दूसरे को समझना। ये सब बातें बहुत अच्छी तरह है इनमें और इसी वजह से पूरी दुनियाँ में इनका नाम हुआ।''[2]

विश्व प्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद ज़ाकिर हुसैन कहते हैं कि ''साजन भैया राजन भैया दो ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने संगीत की अटूट सेवा की है और संगीत के विषय पर काफी रिसर्च किया है। इनके गाने में हर वक्त हर समय जब भी उनको सुनें कुछ नयापन नज़र आता है और ऐसी बंदिशें उनसे सुनने को मिलती हैं कि जी करता है कि उनके घर चले जायें और कहें अब आप दो चार घण्टे रोज़ बैठके हमें ये सब सुनाया करिये। मतलब कुछ कलाकार ऐसे होते हैं जिनको सुनके लगता है कि भई वाकई आनन्द बिल्कुल पूरा ऐसा आया है कि जवाब ही नहीं है लेकिन ऐसा लगता है कि उनके पास और भी मसाला

---

1 अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

2 वही

है जो हमने आज नहीं सुना, कुछ कलाकार ऐसे होते हैं जिनको सुनके लगता है कि आज तो सभी कुछ सुनाके रख दिया उन्होंने।’’[1]

विश्वविख्यात मोहन वीणा वादक पं. विश्वमोहन भट्ट के अनुसार ‘‘शास्त्रीय संगीत में सिर्फ अगर ग्रामर को ही अगर आप बजाने लग जायेंगे तो ग्रामर तो हमेशा शुष्क होता है सूखा होता है, तो आपके अन्दर एस्थेटिक्स होना चाहिए। आवाज़ लगाने का ढ़ंग होता है, साउण्ड मोड्यूलेशन होते हैं और साउण्ड मोड्यूलेशन में इन दोनों भाइयों का कोई जवाब नहीं। किस तरह से एक घण्टे के गाने में एक राग में कितने रस और कितने भाव भर सकते हैं। ईश्वर का आशीर्वाद इनको प्राप्त है और मैं इतना ही कहूँगा कि इनको (पं. राजन साजन मिश्र) सिद्धी प्राप्त हो चुकी है।’’[2]

विश्व प्रसिद्ध कलाकारों के साथ मधुर स्मृतियाँ

***

[1] अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

[2] वही

षष्ठम अध्याय

सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण

षष्ठम अध्याय

सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण

हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के अविरल प्रवाहमान बने रहने और संगीतरूपी महक को कायम रखने में सदियों से संगीत के मनीषियों, तपस्वियों एवं साधक–कलाकारों का सतत् योगदान रहा है। शास्त्रीय गायकी हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इसके फलने–फूलने, सजने–सँवरने एवं उत्कृष्टता के शिखर पर पहुँचने में अनेकानेक संगीतज्ञों ने अमूल्य योगदान दिया है। महान् एवं गुणी कलाकारों के रचनात्मक, प्रयोगात्मक एवं अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण के फलस्वरूप शैलीगत विशेषताओं से आबद्ध संगीत मौलिक स्वरूप में रहते हुए भारतीय जनमानस को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को आनन्द रूपी परब्रह्म की अनुभूति करा रहा है। इसी शृंखला में पं. राजन साजन मिश्र जी की गणना उन मूर्धन्य गायकों में होती है जिनकी चित्ताकर्षक गायन शैली की विशेषताओं से प्रेरणा लेकर अनेक शिष्य व साधक साधनारत् हैं। रागों के प्रति व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ उनमें दर्शन एवं आध्यात्मिक चिंतन की सोच आपके विराट व्यक्तित्व को दर्शाती है।

बनारस घराने की परंपरा के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर पंडित राजन साजन मिश्र जी शास्त्रीय गायकी का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण देश–विदेश में आयोजित कार्यक्रमों के अतिरिक्त विद्यार्थियों को प्रशिक्षण, व्याख्यान एवं प्रदर्शन और संगीत हेतु स्थापित संस्थाओं में भूमिका आदि माध्यमों से कर रहे हैं।

6.1 विद्यार्थी (शिष्य परंपरा)

पूरे देश में पं. राजन साजन मिश्र जी की विस्तृत शिष्य परंपरा है। पंडित जी बनारस घराने की परंपरा रूपी विरासत को सहेजने एवं नई पीढ़ी को हस्तांतरण हेतु विगत चार से पाँच दशकों से प्रयासरत हैं। गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत पारिवारिक सदस्यों के अतिरिक्त संगीत सीखने हेतु इच्छुक प्रतिभावान बच्चों को आप समर्पित एवं उदार भाव से शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। पं. राजन मिश्र जी के अनुसार ''हमारी अपनी ही गुरुकुल परंपरा चलती है देहरादून में, वहाँ हम बच्चों को सिखाते हैं और एडवांस ट्रेनिंग देते हैं।''[1]

---

[1] पं. राजन जी मिश्र (Story of Renowned classical singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)

पं. राजन मिश्र जी ने टाइम्स म्यूज़िक द्वारा जारी 'अद्वैत संगीत' नामक डॉक्यूमेंटरी फिल्म में बताया कि ''यह गुरुकुल हमारा स्वप्न था कि ऐसा कोई स्थान हो जहाँ पर हम अपने शिष्यों के साथ संगीत साधना कर पायें। चाहे वो रात का 2 बजे हो और वो चाहे 4 बजे सुबह का भी हो, हमें कोई डिस्टर्ब नहीं करे या हमारे संगीत से और लोगों को भी कोई डिस्टर्बेन्स ना हो। जब हम यहाँ आये थे, यह एक प्लॉट था तो उस दिन फुल मून था और नीचे एक नदी बहती है। तो इस प्लॉट पर जब मैं खड़ा हुआ और देखा कि सामने इतना बड़ा चाँद निकला हुआ है और नीचे नदी की आवाज़ आ रही है। हमने अपने मन में कहा कि भगवान यही जगह मुझे दिला दो।''[1] ''यह निर्णय हुआ कि यहाँ गुरुकुल बनायें जहाँ विद्यार्थी भी आकर रहें हमारे साथ में और संगीत की शिक्षा यहाँ चलती रहे। उसी के निमित्त और ईश्वर की कृपा से इतने अच्छे वातावरण में यह गुरुकुल बन गया है कि यहाँ जब हम लोग आते हैं तो यहाँ से जाने का मन नहीं करता है लेकिन मजबूरी यह है कि हम लोगों को पूरे विश्व में घूमना होता है तो जाना ही पड़ता है। इसमें एक भाव यह भी था कि इस तरह का वातावरण हो, बगीचा हो, तो उस परिकल्पना को लेके यह गुरुकुल का निर्माण हुआ।''[2]

गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत संगीत की शिक्षा प्रदान करने हेतु आपके द्वारा देहरादून में लगभग 20 से 25 वर्ष पूर्व गुरुकुल की स्थापना की गई है। सुरम्य एवं प्राकृतिक वातावरण के बीच पहाड़ियों पर स्थित गुरुकुल, संगीत शिक्षण हेतु पंडित जी द्वारा संजोयी गई कल्पना का साकार रूप है। पं. रजनीश जी मिश्र (पं. राजन मिश्र जी के कनिष्ठ पुत्र) यहाँ की सभी व्यवस्थाओं को सुनियोजित ढंग से संभालते हैं। उनके अनुसार ''देहरादून में बहुत खूबसूरत गुरुकुल बनाया पिताजी लोगों ने, उसमें हम सभी स्टूडेन्ट्स जाते हैं। वहाँ पिताजी के कहने पर हम लोगों ने हर महीने एक बैठक भी शुरू कर दी जिसमें कि बड़े–बड़े कलाकार भी आते हैं। साल में हम दो बड़े इवेंट करते हैं जो कि शहर के लोगों के लिए होते हैं। इनकी यह सोच थी कि देहरादून एक ऐसी सुकून वाली जगह है जहाँ हम म्यूज़िक को बहुत अच्छे से संरक्षित कर सकते हैं और अच्छी सोच उसमें डाल

1 पं. राजन मिश्र – अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

2 वही

सकते हैं, क्रिएटिविटी वहाँ अच्छी हो सकती है। उसी सोच से गुरुकुल बना और सफल रूप से चल रहा है।''[1]

देहरादून में संचालित 'गुरुकुल'

गुरुकुल में पं. रितेश रजनीश मिश्र प्रस्तुति देते हुए

'रसिपा' द्वारा संचालित गतिविधियाँ

पं. साजन मिश्र की जीवन यात्रा के साठ वर्ष पूर्ण होने पर रसिपा द्वारा आयोजित कार्यक्रम

नवोदित प्रतिभाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने एवं कला के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु स्थापित संस्थाओं का संचालन पं. रितेश मिश्र, पं. रजनीश मिश्र एवं पं. स्वरांश मिश्र द्वारा बखूबी किया जा रहा है। इन संस्थाओं में देहरादून स्थित गुरुकुल के अलावा रसिपा (पं. राजन एण्ड साजन मिश्रा इंस्टीट्यूट ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स) संस्था द्वारा महान् संगीतकारों के प्रदर्शन, व्याख्यान एवं कार्यशालाओं के आयोजन आदि उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं।

अपनी गुरु शिष्य परंपरा और घराने की परंपरा के विषय में पं. राजन जी मिश्र कहते हैं ''देखिये हमारा संगीत परंपरा से ही जुड़ा हुआ है इसलिए शास्त्रीय संगीत कहा जाता है और यदि हम परंपरा छोड़ते जायेंगे तो इसकी शास्त्रीयता नहीं रहेगी। यह वेदों से चला आ रहा है इसीलिए इसे हम शास्त्रीय संगीत कहते हैं क्योंकि आज के युग में

[1] पं. रजनीश मिश्र (Story of Renowned classical singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)

परिस्थितियाँ बदल रही हैं, परिवर्तन हो रहे हैं, समाज में हर तरह से परिवर्तन हो रहा है तो उसमें गुरु शिष्य परंपरा को कायम रखना बहुत ही मुश्किल सा हो गया है। फिर भी आज के जितने कलाकार हैं उनमें जो गुरु शिष्य परंपरा पर ही आधारित शिक्षा जो लोग ले रहे हैं वही लोग आगे की स्टेज पर आ पा रहे हैं।[1]

ऐसा क्यों हो रहा है इस पर पंडित जी आगे कहते हैं कि ''क्लास रूम में एक साथ बहुत सारे शिष्यों के साथ गुरु का वह कम्यूनिकेशन नहीं हो सकता है। गुरु शिष्य परंपरा में गुरु के साथ शिष्य रहता है। उनकी जीवन शैली का अध्ययन करता है, गुरु कैसे सोते हैं, गुरु कैसे उठते हैं, गुरु कैसे रियाज़ करते हैं, गुरु कैसे खाना खाते हैं इन सारी बातों का समावेश एक शिष्य को बनाने के लिए ज़रूरी है। कौनसा सुर किस मूड से लगाते हैं, कौनसी बंदिश कैसे गाते हैं, तो इसका आभास जब शिष्य गुरु के साथ रहता है तभी हो पाता है। इसलिए गुरु शिष्य परंपरा बहुत जरूरी है।''[2]

रियाज़ करते वक्त ध्यान रखने योग्य बातों एवं वॉइस कल्चर पर गुरु एवं शिष्य की भूमिका के बारे में पंडित जी का कहना है कि ''रियाज़ करते समय एक तो भगवान के प्रति आस्था होनी चाहिए। सरस्वती की आराधना कर रहे हैं, गुरु के चरणों के प्रति आस्था होनी चाहिए और ये गुरु का कर्तव्य है कि शिष्य का कान ऐसा तैयार करे जो खुद की कमजोरी को पहचान ले। उसका जो वॉइस कल्चर बनता है वो खुद का एक तजुर्बा है, खुद का एक्स्पीरियेंस है। उस एक्स्पीरियेंस से जो वॉइस उसको खुद को अच्छा लगे वही उसके वॉइस कल्चर का हिस्सा है। इसलिए हम लोगों को हमारे गुरु लोगों ने ऐसी तालीम दी, ऐसी शिक्षा दी कि संगीत की ऐसी साधना करो जो तुम्हारे मन को खुद भाये। तुम खुद उस संगीत का आनंद ले सको ऐसा अपने आपको बनाओ तो हम लोग वैसा ही प्रयास करते हैं। अपने संगीत को हम खुद ही एन्जॉय कर सकें, अपने श्रोता खुद बन सकें यह हमारी कोशिश है।''[3]

पं. राजन साजन मिश्र जी की शिष्य परंपरा में अनेक वरिष्ठ, उदीयमान कलाकार एवं साधक सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ कलाकार तो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। पं. साजन जी मिश्र, पं. रितेश जी एवं पं. रजनीश जी मिश्र द्वारा गुरुपूर्णिमा 2017 के आयोजन के दौरान आपकी शिष्य परंपरा की जानकारी प्रदान की गई।

---

1 पं. राजन जी मिश्र (वृंदावन गुरुकुल धरोहर) www.youtube.com

2 वही

3 वही

पं. राजन साजन मिश्र जी की शिष्य परंपरा

- पं. रितेश मिश्र
- पं. रजनीश मिश्र
- पं. स्वरांश मिश्र
- भारत भूषण गोस्वामी
- पंकज सदाफल
- सारथी चटर्जी
- रितु भारद्वाज
- मोहन सिंह
- सुखदेव सिंह
- उमेश कम्पूवाले
- रूपान्दे शाह
- भोलानाथ मिश्र
- सदाशिव गौतम
- विराज अमर
- कणिका पाण्डेय
- प्रणव विश्वास
- जसमीत कौर
- सोनाली सिन्हा
- शालिनी सिन्हा
- तनु श्री
- साजन सिंह नामधारी
- अनुराग मिश्रा
- दिवाकर प्रभाकर कश्यप
- विवेक सचदेवा
- मैत्री सान्याल
- मंदाकिनी लाहिड़ी
- दीपक प्रकाश मिश्रा
- दिव्या शर्मा
- अभिश्रुति बेजबरुआ
- शेष कुमार तिवारी
- गरुण मिश्रा
- अनूप मिश्रा
- इन्दु भारद्वाज
- सागर मिश्रा
- डॉ. नुपूर सिंह
- पूनम सहाय
- सीमा अग्रवाल
- महुआ चटर्जी
- अमरीश मिश्रा

गुरु पूर्णिमा का अनूठा आयोजन

संगीत के क्षेत्र में गुरु शिष्य परंपरा का सर्वाधिक महत्त्व है। यही वह क्षेत्र है जिसमें आज भी गुरु की शिष्य के प्रति सहृदयता एवं उदारता और शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण एवं कृतज्ञता का भाव दिखाई देता है। सच्चे पथ प्रदर्शक होने के साथ–साथ आपके स्वभाव में विद्यमान प्रेम, सहृदयता, उदारता, करुणा आदि गुणों के साथ कर्तव्य एवं दायित्व बोध के कारण शिष्यों से आपके आत्मीय संबंध स्थापित हो जाते हैं। आप दोनों के व्यक्तित्व में सहनशीलता का गुण है। गुरु पूर्णिमा उत्सव 2017 के दौरान यह देखने में आया कि कोई विद्यार्थी चाहे कितना ही सुरीला गा रहा है अथवा सामान्य गा रहा है आप सभी का उत्साहवर्द्धन कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में पं. राजन जी मिश्र ने चर्चा के दौरान प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बताया कि ''जो विद्यार्थी संगीत में लगे हुए हैं उनको सबको प्रोत्साहन देना है। उनका कोई पेशन है, उनकी कोई चाह है तभी तो लगे हुए हैं।''[1]

[1] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 10.07.2017, नई दिल्ली

नई दिल्ली (रमेश नगर) स्थित आवास पर गुरुपूर्णिमा उत्सव का आयोजन

पं. राजन साजन मिश्र को पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए शोधार्थी

प्रतिवर्ष पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र जी के नई दिल्ली में रमेशनगर स्थित आवास पर गुरुपूर्णिमा के दिन बहुत ही सुन्दर एवं अनूठा आयोजन होता है। इस आयोजन का शुभारंभ सुबह आप दोनों एवं परिवारजनों द्वारा माँ सरस्वती एवं सभी गुरुजनों के चित्रों पर माल्यार्पण एवं पूजा–अर्चना के साथ होता है। प्रातः काल से रात के 10–11 बजे तक देश–विदेश में साधनारत शिष्यों एवं कलाकारों का घर पर आना–जाना लगा रहता है। इस दिन दोनों गुरुजी की शिष्यों द्वारा पूजा एवं माल्यार्पण के पश्चात् सभी शिष्यों द्वारा बारी–बारी से हाजरी लगाने की परंपरा है। हाजरी लगाने के दौरान ही गुरुजी द्वारा शिष्यों को आशीर्वाद स्वरूप गायन को श्रेष्ठ बनाने हेतु उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श दिया जाता है। इस दिन बड़े व छोटे गुरुजी और दोनों गुरुआनी जी का आशीर्वाद पाकर सभी शिष्य अभीभूत हो उठते हैं। गुरुपूर्णिमा के दिन आप दोनों का बनारसी अंदाज में लोगों से आत्मीयता से बतियाना, सभी शिष्यों का गुरुजी के समक्ष गाना बजाना, सांगीतिक संस्मरण, अनुभव, आध्यात्मिक वार्ता, जीवन दर्शन आदि विषयों पर रोचक वार्ता के साथ–साथ गुरुजी के घर पर प्रसाद (भोजन) ग्रहण करने की अनिवार्यता इस उत्सव को अनूठा एवं अविस्मरणीय बना देती है।

6.2 कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ (व्याख्यान एवं प्रदर्शन द्वारा)

आधुनिक युग में व्याख्यान एवं प्रदर्शन पर आधारित संगीत कार्यक्रमों के दौरान कलाकार को दो प्रकार के श्रोताओं से रूबरू होना पड़ता है। प्रथम वर्ग में हम उन श्रोताओं को रख सकते हैं जो किसी विद्यालय या कॉलेज में अध्ययनरत हैं और वह प्रायः शास्त्रीय संगीत से अनभिज्ञ रहते हैं। दूसरे वर्ग में वह श्रोता आते हैं जो प्रायः संगीत के विद्यार्थी, रसिक श्रोता, विद्वतजन एवं कलाकार और समीक्षक या आलोचक भी हो सकते हैं। दोनों ही वर्ग के श्रोताओं की जिज्ञासाओं को शान्त करना कलाकार का नैतिक दायित्व है।

पं. राजन साजन मिश्र जी की गायकी का प्रभाव यह है कि आप मंच प्रदर्शन के दौरान कला कुशलता के माध्यम से दोनों प्रकार के श्रोताओं के हृदय में सहजता से अपना स्थान बना लेते हैं। आपके द्वारा व्याख्यान एवं प्रदर्शन के द्वारा दी गई प्रस्तुतियों ने सभी वर्ग के श्रोताओं में सांगीतिक उन्नयन की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस दिशा में भारत की वैभवशाली समृद्ध कला–संस्कृति की महिमा को युवा पीढ़ी में प्रसारित करने के उद्देश्य से ''स्पिक मैके'' द्वारा किए गए प्रयासों में महान् युगल गायक जोड़ी ने भरपूर योगदान दिया। पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''स्पिक मैके ने तो एक बहुत रिवोल्यूशनरी काम किया है, लोगों को भारतीय वाद्ययंत्रों, संगीत एवं संस्कृति से परिचय करवाने का। स्पिक मैके शुरू हुआ था 1977 में और हम लोग 1978 से जुड़ गये और अभी तक जुड़े हुए हैं।''[1]

'स्पिक मैके' द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए

भारतीय विद्यापीठ, पुणे द्वारा आयोजित व्याख्यान एवं प्रदर्शन कार्यक्रम में राग दरबारी की बंदिश सिखाते हुए

डॉ. हुकुम चन्द के अनुसार ''स्पिक मैके का मूल उद्देश्य भारतीय पारम्परिक संस्कृति से उनके मूल रूप से परिचय कराना है, ताकि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति के गरिमापूर्ण सौंदर्य एवं वैभवशाली समृद्ध कलाओं की महिमा को केवल जाने ही नहीं, आत्मसात् भी करे। उसके प्रति संवेदनशील रह कर समन्वयवादी मानवीयता के मूल चिन्तन का आधार पा सके। भारतीय शास्त्रीय संगीत हज़ारों हज़ार साल से मानवीय अभिव्यक्ति का मुख्य साधन रहा है। आज भी अपनी क्षमता से यह कलाएँ युवाओं की मृतप्राय मानसिकताओं को जीवन्त करने में पूर्णरूपेण सक्षम हैं।''[2]

पं. राजन साजन मिश्र जी ने स्पिक मैके द्वारा शृंखलाबद्ध तरीके से आयोजित ''लेक्चर एण्ड डेमोंस्ट्रेशन'' के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाकर समाज में सांस्कृतिक चेतना जागृत करने का पुनीत कार्य किया।

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरुपूर्णिमा 12.07.2014, नई दिल्ली
2 डॉ. हुकुम चन्द : आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, पृ. सं. 102

डॉ. हुकुम चन्द ''सव्याख्या प्रस्तुति'' के बारे में लिखते हैं कि यह ''स्पिक मैके'' की कार्यशैली का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसे दर्शक वर्ग का विकास करना है जो शास्त्रीय सांस्कृतिक कलाओं का रसास्वादन कर सके। इस प्रकार के कार्यक्रमों की शृंखला शैक्षिक सत्र के आरम्भ में ही सम्पन्न होती है अर्थात् अगस्त, सितम्बर में इसमें कलाकार अपनी कला की मूलभूत बारीकियों को गहराई से तथा मार्मिक ढंग से समझाते हैं तथा अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इसी शृंखला के अतिरिक्त भी सव्याख्या प्रस्तुतियाँ नियमित अन्तराल में समय–समय पर स्कूलों कॉलेजों में सम्पन्न की जाती है। इनमें प्रदर्शन नितान्त औपचारिक होता है।''[1]

अतः हम कह सकते हैं कि सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत से अपरिचित श्रोताओं को विशेषकर नई पीढ़ी को, दर्शक एवं श्रोता वर्ग में सम्मिलित करने व संस्कृति से जोड़ने में पं. राजन साजन मिश्र जी ने अतुलनीय योगदान देकर हमारे संगीत को आमजन में प्रतिष्ठित करने का प्रमुख कार्य किया है।

व्याख्यान एवं प्रदर्शन से संबंधित दूसरा श्रोता वर्ग वह है जिसमें संगीत के जानकार लोग होते हैं। इसके अन्तर्गत संगीत शिक्षा से जुड़े विद्यार्थी, कलाकार, विद्वान, समीक्षक एवं आलोचकों के साथ रसिक श्रोता भी सम्मिलित रहते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन प्रायः संगीत के विद्यार्थियों एवं गुणी श्रोताओं के बीच होता है। ये कार्यक्रम कलाकार की साधना के लिए एक चुनौती होते हैं। शास्त्रीय गायकी के अंतर्गत आपने परंपरागत शैली के साथ सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पहलुओं का संतुलन बिठाकर गायन शैली के सृजन में रचनात्मक, प्रयोगात्मक नवाचारों को शास्त्रीय मर्यादा के अंतर्गत उचित स्थान दिया है। यही कारण है कि आपका गायन विद्वानों वं गुणीजनों के चहुँ और एक सुरमयी आवरण बनाकर गुणी श्रोताओं को उसमें निमग्न रखते हुए आनन्द एवं आत्मसुख की अनुभूति कराता है।

पं. राजन साजन मिश्र जी ने देश–विदेश के महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, सांगीतिक संस्थाओं एवं संगीत गोष्ठियों के माध्यम से प्रदर्शन–व्याख्यान कार्यक्रमों द्वारा अपने अनुभव एवं ज्ञान से गुणी श्रोताओं कलाकारों एवं विद्वतजनों की जिज्ञासाओं का समाधान कर उन्हें लाभान्वित किया है।

---

1 डॉ. हुकुम चन्द : आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, पृ. सं. 103

6.3 प्रचार एवं संरक्षण हेतु स्थापित संस्थाओं में भूमिका

विदेशों में भारतीय संगीत के प्रचार प्रसार, प्रोत्साहन, शिक्षण एवं प्रदर्शन हेतु अनेक संस्थाएँ, विद्यालय और विश्वविद्यालय कार्य कर रहे हैं। पं. राजन साजन मिश्र उन प्रमुख भारतीय कलाकारों में सम्मिलित हैं जिनके अथक प्रयासों से भारतीय संगीत की पहचान विश्व पटल पर बनी। आपने विदेशों में भारतीय संगीत हेतु स्थापित सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से संगीत के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विदेशों में स्थापित प्रमुख केन्द्र ''एशियन म्यूज़िक सर्किट'' के बारे में डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू लिखती हैं ''आर्ट्स काउंसिल ऑफ ग्रेट ब्रिटेन ने 1989 ई. में एशिया के संगीत के प्रदर्शन, संरक्षण, ध्वन्यांकन, शिक्षण, शोध आदि पल्लवन कार्यों के उद्देश्य से एशियन म्यूज़िक सर्कट की स्थापना की। 1991 ई. से इसका संचालन कार्य आर्टस काउंसिल ऑफ इंग्लैंड के द्वारा दी गई अनुदान राशि से नियमित एवं स्वतंत्र रूप से होता चला आ रहा है और इंग्लैण्ड में एशिया के संगीत के प्रोत्साहन का कार्य करने के लिए ही इस संस्था का लगातार विकास होता चला आ रहा है। यूरोप की इस महत्त्वपूर्ण म्यूज़िक कम्पनी की पहुँच एशिया के संगीत को प्रोत्साहन देने, संगीत उत्पादन के कार्यों और उच्च दर्जे के सांगीतिक शिक्षणात्मक पर्यटनों के प्रबन्ध करने में हैं। इस काम को परिपूर्ण करने में कम्पनी के निजी एशियन म्यूज़िक सेन्टर का अत्यधिक योगदान हैं, जहाँ संगीत वाद्य, दृश्य और श्रव्य संगीत संग्रहालय हैं और दूरदराज के लोगों के सांगीतिक आदान प्रदान के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऑन लाइन और ऑफ लाइन सुविधा प्राप्त करवाने का प्रयोजन है।''[1]

''इसके अलावा प्रपत्र पढ़ने का आयोजन, कार्यशालाओं का आयोजन, एशियन वाद्यों का परिरक्षण, अलग–अलग क्षेत्रों से संबंधित महान् संगीतकारों को बुलवाकर योजनाबद्ध तरीके से शिक्षार्थियों को हर सम्भव सहायता उपलब्ध करवाना आदि महत्त्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं।''[2]

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि एशियन म्यूज़िक सर्कट की तरफ से प्रदर्शन कर चुके कुछ मुख्य कलाकारों में पं. राजन साजन मिश्र जी का नाम अग्रणी कलाकारों में सम्मिलित है। ''आप एशियन म्यूज़िक सर्कट से वर्ष 1989 से अभी तक निरन्तर जुड़े हुए हैं। इस संस्था के माध्यम से लंदन के रॉयल अलबर्ट हॉल सहित यूनाइटेड किंगडम के

---

1 डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ.सं. 181

2 वही, पृ.सं. 183

सभी बड़े शहरों में आप कार्यक्रमों का आयोजन कर भारतीय संगीत को प्रचारित प्रसारित करते रहे हैं।''[1]

''अमेरिका में रह रहे देशवासियों को विश्व की सभी संगीत शैलियों की समृद्धता से परिचित करवाने के लिए और सीखने सिखाने के उद्देश्य से वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई। यह संस्था व्यवसायिकता को ध्यान में लेकर विश्व के हर कोने से पारम्परिक और समकालीन संगीत प्रदर्शन, संगीत में शिक्षण और शोध कार्य के प्रोत्साहन के लिए संगीत समारोहों (कंसर्टों) का आयोजन करवाती है। एशिया के देश भारत के संगीत को विश्व में परिचित करवाने और योग्य स्थान दिलवाने में इस संस्था के द्वारा करवाए गए कार्यक्रमों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।''[2]

1986 से 2006 तक भारतीय कलाकार, जो वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यट के माध्यम से प्रस्तुत किए जा चुके हैं उनमें पं. राजन साजन मिश्र जी का नाम प्रमुख कलाकारों में सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त आपको इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक सर्कट ऑफ ऑस्टिन (ICMCA), द सेन्टर ऑफ परफोर्मिंग आर्टस ऑफ इण्डिया (यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग) जैसे अनेकानेक शिक्षण संस्थानों द्वारा कंसर्ट और संगीत संभाषणों के पर्यटनों के लिए आमंत्रित किया जाता रहा है।

भारतीय संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने में योग साधक महर्षि महेश योगी ने अद्वितीय कार्य किया है। ''भारतीय वेदान्त दर्शन की महत् शाखा योग पद्धति और उसके साथ–साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत का विश्व भर में प्रचार कर क्रांति पैदा करने में महर्षि महेश योगी का नाम समूचे विश्व में प्रसिद्ध हुआ।''[3]

महर्षि महेश योगी जी द्वारा भारतीय संस्कृति एवं विश्व शांति हेतु किए गए प्रयासों में पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा भारतीय संगीत के प्रति विदेशों में सम्मान, निष्ठा और आस्था विकसित करने के क्रम में एवं आध्यात्मिक भाव जाग्रत करने हेतु विशेष योगदान दिया गया। उनके माध्यम से आयोजित कार्यक्रमों के साथ–साथ उनके द्वारा जारी किए गए सी. डी. एवं एलबम हमारी सांगीतिक धरोहर है। पं. साजन मिश्र जी के अनुसार ''एक रिकॉर्डिंग हॉलैण्ड से निकली महर्षि महेश योगी जी के लिए, 24 सी. डी. का वह रिकॉर्ड

---

1 www.amc.org.uk

2 डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अंतर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ. सं. 185–186

3 आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू, पृ. सं. 296

पैक था और वह बहुत पॉपुलर है यूरोप में, खासकर अमेरिका में, हर घर में वह मिल जाता है।"[1]

अतः राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों एवं शिक्षण संस्थानों के माध्यम से पं. राजन साजन जी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रतिष्ठित कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संगीत की राष्ट्र एवं विश्वव्यापी पहचान बनाने में आपने जिन सरकारी व गैर सरकारी संगठनों एवं संस्थाओं के माध्यम से अनथक प्रयास किए उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली (ICCR)
2. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली।
3. इंदिरा गाँधी नेशनल सेन्टर फॉर द आर्टस एण्ड मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, नई दिल्ली।
4. स्पिक मैके (Society for the Promotion of Indian Classical Music and Culture Among Youth)
5. एशियन म्यूज़िक सर्किट
6. वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट

भारत सरकार के प्रमुख सांस्कृतिक संगठनों में पं. राजन साजन मिश्र अपनी भूमिका निभा रहे हैं। पं. रितेश जी मिश्र के अनुसार "सांस्कृतिक मंत्रालय में सलाहकार के रूप में, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली (ICCR) द्वारा निर्णायक के रूप में एवं संगीत नाटक अकादमी में भी सलाहकार के रूप में पिताजी व चाचाजी को आमंत्रित किया जाता है।"[2]

अतः पं. राजन साजन मिश्र जी कला जगत में विविध भूमिकाओं का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, दायित्व व कर्तव्य बोध के साथ करते हुए कला जगत के सच्चे पथ प्रदर्शक बन न केवल देश अपितु सम्पूर्ण विश्व की सेवा कर रहे हैं।

---

1 पं. साजन जी मिश्र (Story of Renowned classical singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)

2 पं. रितेश जी मिश्र – वार्ता, गुरुपूर्णिमा दिनांक 10.07.2017, नई दिल्ली

6.4 अन्य (वेबसाइट, सी. डी. विडियो, कैसेट्स एवं साहित्य)

आपने घरानेदार गौरवशाली परंपरायुक्त समृद्ध गायन शैली का प्रचार–प्रसार संचार के विविध माध्यमों से जैसे कैसेट, सी डी, डी वी डी एवं अनेकानेक वेबसाइट्स के द्वारा किया है। आपके गायन की रिकॉर्डिंग्स लगभग सभी प्रतिष्ठित कम्पनियों जैसे सी बी एस, एच एम वी, मेगनासाउण्ड, म्यूज़िक टुडे, टी–सीरीज़, बी एम जी, वीनस, सोनी, टाइम्स म्यूज़िक, आदि से जारी हुई हैं। इनके साथ–साथ अनेक विदेशी कम्पनियों द्वारा भी आपके गायन के रिकॉर्डस जारी हुए हैं। विस्तृत अध्ययन से ज्ञात होता है कि बहुत–बड़ी संख्या में आपके गायन के रिकॉर्डस जारी हो चुके हैं। यह सभी रिकॉर्ड्स हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं और ऑडियो–विडियो के वर्तमान में प्रचलित विविध माध्यमों के द्वारा शास्त्रीय संगीत का निरन्तर प्रचार–प्रसार हो रहा है। इनका विस्तृत विवरण अध्याय–3 में दिया गया है।

इनके अतिरिक्त आपने देश में आयोजित विभिन्न संगीत प्रतियोगिताओं एवं टीवी शो जैसे टीवीएस सा रे गा मा, बिग बाल कलाकार एवं नवोदित प्रतिभाओं हेतु आयोजित आइडिया जलसा जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से निर्णायक एवं मार्गदर्शक कलाकार की प्रमुख भूमिका निभा कर नई पीढ़ी में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिरुचि जाग्रत करने हेतु महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं।

सच्चे कलाकार, सहृदयी होने के साथ–साथ संगीत के माध्यम से समाज में जनकल्याण, शांति, भ्रातृत्व, समता एवं विश्वबंधुत्व आदि मूल्यों की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसी महान् उद्देश्य की पूर्ति हेतु पं. राजन साजन मिश्र जी ने विश्वविख्यात संत एवं धर्मगुरु श्री श्रीरविशंकर जी द्वारा स्थापित संस्था 'द आर्ट ऑफ लिविंग'' के अन्तर्गत दिनांक 12 जनवरी 2010 को आयोजित कार्यक्रम 'अन्तर्नाद' के माध्यम से 2750 शास्त्रीय गायक गायिकाओं के साथ शास्त्रीय गायन प्रस्तुत कर संगीत एवं अध्यात्म के समन्वय का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत कर विश्व इतिहास रच दिया। अन्तर्नाद शीर्षक के अन्तर्गत आपने दो कार्यक्रमों में भाग लिया। एक कार्यक्रम 'वन्दे मातरम्' में आध्यात्मिक गुरु श्री श्रीरविशंकर जी, पं. राजन साजन मिश्र एवं पार्श्वगायक श्री शंकर महादेवन ने गायन में भागीदार बनकर कार्यक्रम को अविस्मरणीय बना दिया। दूसरा प्रमुख कार्यक्रम 'माँ बसंत आयो रे' में राग बसन्त बहार में पं. बड़े रामदास जी द्वारा रचित तीनताल में निबद्ध बंदिश को 2750 शास्त्रीय गायक–गायिकाओं ने पं. राजन साजन मिश्र जी के नेतृत्व में प्रस्तुत कर विश्व रिकॉर्ड कायम किया।

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''अन्तर्नाद कार्यक्रम श्री श्रीरविशंकर जी ने आयोजित किया था। इसमें हमारी बंदिश (माँ बसन्त आयो रे) को 2750 लोगों ने गाया और 'गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में दर्ज हुआ। बसन्त बहार की इस बंदिश को पहले हमने सी डी में गाकर भेज दिया था तो जितने भी गायक–गायिकाएँ थे ग्रुप में, सबको वह भेज दिया गया। उन्होंने रियाज़ किया फिर एक दिन पहले हम वहाँ पहुँचे तो एक दिन रिहर्सल हुआ उसके बाद वो कार्यक्रम हुआ।''[1]

श्री श्रीरविशंकर जी द्वारा आयोजित अन्तर्नाद कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए

उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम के लिए जहाँ इतनी बड़ी संख्या में शास्त्रीय गायक–गायिकाओं को एक प्लेटफार्म पर लाया गया उसी के अनुरूप 27000 स्क्वायर फीट का स्टेज बनाया गया। लगभग 8:30 मिनट की इस भाव विभोर कर देने वाली प्रस्तुति में पंडित जी द्वारा बसंत ऋतु का बहुत सुंदर साक्षात्कार करवाया गया है। यह ध्वन्यांकन सचमुच में केवल एक विश्व रिकॉर्ड ही नहीं अपितु विश्व धरोहर बन पड़ा है।

अतः पं. राजन साजन जी मिश्र ने भारतीय संगीत एवं परंपराओं के सिंचन, निर्वहन एवं संरक्षण में प्रमुख भूमिका निभाई हैं। सांगीतिक विरासत को सहेजने के साथ–साथ नवोदित प्रतिभाओं को भी आप उदार भाव से गुरु–शिष्य परंपरा पर आधारित शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। आपने देश–विदेश में स्थापित विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से भारतीय संगीत के प्रति जनरूचित जाग्रत करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है।

पं. राजन साजन जी मिश्र ने कला के क्षेत्र में साधना के साथ–साथ शास्त्र की परिधि में नित नई संकल्पनाएँ, सृजन एवं शोधपरक चिंतन के द्वारा कला को नवीन रूप में परिभाषित किया है। शास्त्रीय गायन परंपरा के अंतर्गत मौलिक तत्वों को अक्षुण्ण रखते हुए नवाचारों द्वारा नवचेतना के प्रस्फुटन से कला को स्फूर्त रूप प्रदान किया है।

***

[1] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरुपूर्णिमा, दिनांक 10.07.2017, नई दिल्ली

सप्तम् अध्याय

शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग

सप्तम अध्याय

शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग

7.1 मौलिक चिन्तन एवं मान्यताएँ

पं. राजन साजन मिश्र जी ने परंपरावादी मूल्यों को संरक्षित रखते हुए कलात्मक, रसात्मक एवं भावात्मक अभिव्यक्ति के साथ शास्त्र की परिधि में रहकर सृजनात्मक दृष्टिकोण से परिपूर्ण रचनात्मक, प्रयोगात्मक एवं सतत् चिन्तनशील विचारधारा से अनुप्रेरित हो कला का सुन्दर चित्रण कर एक अभिनव कल्पना को साकार रूप दिया है। विरासत में मिली सुदृढ़ परंपराओं के साथ स्वयं के चिंतन एवं दृष्टिकोण के द्वारा सिंचन एवं पल्लवन की धारणा ने आपकी गायकी को विकासोन्मुखी बनाते हुए आदर्श रूप में स्थापित किया।

रागों के प्रस्तुतिकरण के अन्तर्गत राग दर्शन एवं अध्यात्म का प्रभाव आपकी गायकी में श्रोता महसूस करते हैं। इस संदर्भ में चर्चा के दौरान आपने (पं. राजन जी) बताया कि ''सबसे बड़ा रहस्य यह है कि मैं हमेशा राग को अपने से बड़ा मानता हूँ। कोई भी राग छोटा से छोटा भी राग यदि तुम समझते हो चाहे यमन, भैरवी या काफी हो या खमाज हो, इनको प्रायः बहुत छोटे रागों की श्रेणी में माना गया हैं। प्रारम्भिक स्तर पर सिखाने के कारण ऐसा सोच लिया गया है। मैं गाते समय इनका विशाल रूप देखता हूँ, और मुझे ऐसा लगता है कि अभी भी इन रागों को मैं पूर्ण रूप से नहीं देख पाया हूँ। शुरू में बागेश्वरी, मालकौंस आदि रागों में जब तान सरगम चलने लगता है तो ऐसा लगता है कि बड़ा इज़ी (आसान) राग है। हर राग में हर्र हर्र तान मार रहे हैं लेकिन जब उसकी गहराई में हम घुसते हैं, जब वादी संवादी का संवाद शुरू होता है तब पता चलता है कि इस राग का कितना डेप्थ है, कितनी गहन व्यवस्था इसकी है। मैं अभी भी यमन सिखाता हूँ अच्छे–अच्छे स्टूडेन्ट्स को जो हमारे पास 10 साल 15 साल से सीख रहे हैं, तैयार गा रहे हैं तो यमन सिखाते–सिखाते कोई ऐसा कॉम्बीनेशन (स्वर–संयोजन) आ जाता है मैं घूम जाता हूँ कि अरे यह रास्ता तो हमने आज तक देखा ही नहीं। मालकौंस सिखाते–सिखाते कुछ ऐसी बात हो जाती है अर्थात् किसी भी राग में, तो मुझे यह महसूस हो गया कि राग मेरे से बहुत बड़ा है अतः उसका आह्वान करना पड़ता है। जब आदमी को ऐसा लगने लगता है कि यह राग तो हमारे अंडर (अधीन) में आ गया, अब हम कब्जा कर लिए तो वह प्रार्थना भाव खत्म हो जाता है। जब अपने से बड़े रूप में राग को देखोगे तो तुम प्रार्थना भाव में रहोगे, तुम विनम्रता में रहोगे। यदि तुम्हें यह समझ में आ गया कि तुमने यमन पर विजय

प्राप्त कर ली तो तुम काहे को यमन को बड़ा समझोगे ? जो बड़े–बड़े लोग जिनका अभी बड़ा नाम है वे राग को अपना चेला समझते हैं, जो चाहे वो कर देते हैं, कहीं से भी कुछ भी। अरे वादी–संवादी है उसकी जाति है, उसका धर्म है, उसकी मर्यादा है। राग की मर्यादा को यदि आप कुछ नहीं समझते हो तो राग आपको क्या समझेगा, उठा के पटक देगा। उनके रिकॉर्डिंग में भी है, यदि मैं तुम्हें अगर बैठाकर सुनाऊँगा तो बता दूंगा कि देखो ये उपज बार–बार हो रही है। फँसे हुए हैं, राग रास्ता ही नहीं दे रहा है क्योंकि प्रार्थना भाव खत्म हो गया। जब आप एक्सप्लोर करोगे अर्थात किसी चीज़ को खोजोगे तब तो आप विनम्र रहोगे और जब आप खोज लिए तब तो आप विजय प्राप्त कर लिए, तो विजय प्राप्त करने वाला व्यवस्था यहाँ रास नहीं है। कभी भी सुर तुमको उठा के पटक देगा अर्थात् सुर लगेगा ही नहीं। कभी भी तानपुरा उठाके पटक देता है मिलेगा ही नहीं, घंटा भर से लगे हुए हैं तानपुरा ही नहीं मिल रहा है, ऐसा भी है। जब तानपुरा ही नहीं मिल रहा है तो सुर कहाँ से मिलेगा, तो राग कहाँ से मिलेगा ?

हमारे नानाजी का एक बंदिश है बेटा ''नाद अपार उदधि गंभीर'' अर्थात् नाद के समुद्र में अगर गोता मार दिए तो निकल नहीं सकते। यह दरबारी में है, उसका अन्तरा क्या बनाया उन्होंने ''जापर द्रवही शारदा'' अर्थात जिस पर शारदा की कृपा हो ''सोई तैरे कछु तीर तीर रे, नाद अपार उदधि गंभीर'' अर्थात वह किनारे–किनारे थोड़ा–थोड़ा तैर सकता है। बीच में जाने का हिम्मत किसका है ? अगर गये तो अस्तित्व खत्म है, घुसो बागेश्वरी में घुसो भैरवी में, जीवन लग जायेगा इन्हें खोजने में मगर नहीं खोज पाओगे।''[1] रागों के प्रस्तुतिकरण के बारे में जब पंडित जी से चर्चा की गयी कि आपके बारे में कहा जाता है कि तानों में भी आप राग धर्म को पूरा निभाते हैं जबकि कई बार ऐसा देखने में आता है कि कई कलाकार तानों में राग के नियमों को शिथिल कर देते हैं लेकिन आपके बारे में ऐसा कभी सुनने को नहीं मिलता। इस पर उनकी प्रतिक्रिया थी कि ''यही सब तो मैं लेकर चल रहा हूँ, खोज रहा हूँ, अभी खोज कहाँ पूरा हुआ है।''[2]

पं. राजन जी मिश्र द्वारा व्यक्त उपर्युक्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि कोई भी कलाकार महज गले की तैयारी के आधार पर राग के स्वरूप का दर्शन नहीं करवा सकता। हमें राग के स्वरूप को समझने के लिए एवं अन्तःस्थित भाव के प्रकटीकरण के लिए समग्र अध्ययन, चिन्तन विश्लेषण एवं मनन करना होगा और यह तभी

---

[1] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 12.07.2014, नई दिल्ली

[2] वही

संभव है जब कलाकार उचित मार्गदर्शन एवं साधना के साथ–साथ राग के प्रति प्रार्थना का भाव हृदय में रखे। जब कलाकार धैर्यवान होकर गंभीरतापूर्वक विनम्र भाव से ईश्वर, गुरुजनों एवं महान् कलाकारों का स्मरण करते हुए यदि राग की आराधना करता है तो प्रार्थना का भाव हृदय में जाग्रत होता है। पं. राजन जी मिश्र के कथनानुसार हमें राग की साधना करते समय उसके शास्त्र पक्ष अर्थात थाट, वादी–संवादी, जाति, चलन, स्वरों का बर्ताव, पारंपरिक स्वरूप आदि को ध्यान में रखकर राग की मर्यादा में रहकर ईश्वर का ध्यान करते हुए राग के भावों को प्रकट करना चाहिये।

पं. राजन साजन जी ने बनारस घराने की ख्याति को देश–विदेश में फैलाया है। आप दोनों लगभग 250 से 300 वर्षों से चली आ रही घरानेदार परंपरा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आपने वंशानुगत एवं शिष्यानुगत चली आ रही घरानेदार परंपरा के अंतर्गत संगीत की तालीम को हृदयंगम करते हुए अन्य घरानों एवं बड़े कलाकारों की विशेषताओं को भी आत्मसात कर गायन शैली को समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि आपकी गायन शैली घरानेदार विशेषताओं के साथ सभी अंगों को समेटे हुए हैं। इस संदर्भ में पंडित राजन जी मिश्र ने चर्चा में बताया कि ''हमारे पिताजी इतने खुले विचार के आदमी थे कि वह सिर्फ बनारस घराने की बात नहीं करते थे, वह सारे घरानों की बात करते थे, चाहे वह आगरा हो, ग्वालियर हो, पटियाला हो या अन्य कोई। वह तो यह कहते थे कि भीख माँगने वाला भी यदि इकतारा बजाकर गाता हुआ जाए तो कोई अच्छी बंदिश या अच्छा भजन गा रहा है तो उससे भी सीख लेना। उन्होंने हमको एक ब्रॉड सोच दिया और बांधा नहीं कि ये बनारस घराना है और इसी में रहो। मैंने बहुत लोगों को सुना, बनारस में बड़े–बड़े विद्वान हुए हैं। पिताजी सारंगी वादक थे और गायक भी, सारंगी वादक होने के नाते कितने–कितने लोगों के साथ उन्होंने बजाया, वो सारे गाने का जो निचोड़ है अर्थात् सारांश है वो उनके पास आ गया। वह सारांश बनारस में और किसी के पास नहीं है क्योंकि अन्य लोगों की सोच थी कि हमारा खानदान, हमारा गद्दी, हमारा झंडा। उन्होंने बनारस के घराने और बाहर के घराने सभी के साथ बजाया है। वह पं. विनायक राव पटवर्धन के साथ कितना बजाये हैं, पं. ओंकार नाथ ठाकुर के साथ कितना बजाये हैं, उ. फैयाज खाँ साहब के साथ बजाये हैं तो उनकी जो विशेषताएँ थी वो सारा कुछ उनके अंदर आ गया। तुम यह देखो कि हिन्दुस्तान के जो सबसे मशहूर गायक हुए है वो सब सारंगिए थे, यह एक बहुत बड़ा सत्य हैं। उ. अब्दुल करीम खाँ पहले सारंगी बजाते थे, उ. बड़े गुलाम अली खाँ, उ. अमीर खाँ पहले सारंगी बजाते थे। इसका मतलब सारंगी का जो घराना है या सारंगी का जो कलाकार है वह चहुँमुखी प्रतिभा का धनी होता है। उसके पास चारों तरफ की

विद्या आ जाती है। इनसे बड़ा नाम गाने में किसका लोगे? हमने तीन नाम बताये, ये सब सारंगी के घराने के लोग थे और इन्होंने गाने की नज़ाकत को, दिशा को बदल दिया। पहले का जो गाना था उसको पूरी एक दिशा दे दी। मेरा मानना है कि अमीर खाँ साहब यदि नहीं होते तो जैसे ध्रुपद खत्म हो गया था वैसा ही ख्याल का भी हश्र होता। उन्होंने एक नयी दिशा दी ख्याल को, एक ठहराव दिया, एक मिज़ाज दिया, एक एस्थेटिक दिया, एक इमोशन दिया। हर आदमी अपने बुजुर्गों को फोलो करता है। वह एक धारा चलती है तो उस धारा में सभी नहाने लगते हैं। एक झरना बह रहा है तो वह झरना तो नहीं कहता कि तुम हिन्दू हो, मैं तुमको नहीं नहलाऊँगा या तुम मुसलमान हो तो नहीं नहलाऊँगा। एक फूल खिल रहा है, वह तो यह नहीं कहता कि हम तुमको खुशबू नहीं देंगे तुम ईसाई हो। फूल की खुशबू तो सबके लिए है, वैसे ही संगीत की धारा सबके लिए है और उसी धारा से सभी निकलते हैं। पहले लोग कहते थे कि हम अमुक घराना गाते हैं लेकिन अमीर खाँ साहब, बड़े गुलाम अली खाँ साहब, भीमसेन जी, जसराज जी जो ये बड़े लोग हुए हैं इनको आप छुए बगैर गाना कैसे गा सकते हैं ? यह कितनी सत्य बात है। सामता प्रसाद जी, किशन महाराज जी, अल्लारक्खा खाँ साहब, अनोखेलाल जी ये तबले के ऐसे पुरोधा हुए हैं कि इनको अब छुए बिना तबला कैसे बजायेंगे? पं. गोपाल मिश्र, पं. हनुमान मिश्र, उ. शकूर खाँ और पं. रामनारायण जी अब इनको छुए बगैर आप सारंगी कैसे बजाएँगे ? अर्थात् एक धारा जो बहती रहती है, उसी में सब नहाते हैं। सबको यह चाहिए कि हर आदमी (बड़े कलाकार) की कृतज्ञता ज्ञापित करे। जितने भी लोग आज हैं, जो अपने घराने का झंडा लेकर फहरा रहे हैं, उनके गाने में बीस जगह मैं ऐसा बता दूँगा कि यह ग्वालियर नहीं किराना है, यह किराना नहीं जयपुर है, यह जयपुर नहीं पटियाला है, यह पटियाला नहीं बनारस है। बनारस में हम लोगों को सारे घरानों की अच्छाइयों की तालीम मिली।''[1]

पं. साजन जी मिश्र अपने ज्येष्ठ भ्राता पं. राजन जी मिश्र के स्वभाव में निहित सिद्धान्तवादी विचारधारा का समर्थन करते हुए कहते हैं ''सिद्धान्त की जहाँ बात है तो फिर वहाँ तो सैद्धान्तिक बात होनी ही चाहिए। लॉजिक से अगर हटकर आप बात करते हैं तो वो सैद्धान्तिक बात नहीं होगी। वह सही बात को कहने में नहीं चूकते इसी के जरिए उनके जीवन का शोध चलता है। मैंने यह अनुभव किया है कि उनको यदि वो चीज़ एकदम से क्लिक नहीं करेगा तो उसे वह नहीं करेंगे। यहाँ तक कि नए राग भी वो गाते हैं तो जब तक उनको अपने हिसाब से नहीं देख लेंगे कि सटीक है या नहीं तब तक गायेंगे नहीं। दस लोगों से सुनेंगे फिर अपनी विवेचना करेंगे तो वह विवेचना ही उसका सार होता है

---

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरुपूर्णिमा, दिनांक 12.07.2014, नई दिल्ली

और उसी से गाना अलग दिखाई पड़ता है। बड़े रागों को रिसर्च करके गाने वाले लोगों में मेरे ख्याल से हिन्दुस्तान में पं. राजन मिश्र जी एक मात्र हैं। बहुत कम लोग हैं जो राग को अंततः निभाते हैं, लोग आलाप तक राग को निभाते हैं उसके बाद तान में जाके बदल जाते हैं। लिबर्टी (छूट) हर आदमी लेता है, कहीं–कहीं लिबर्टी ठीक है लेकिन पूरी तरह से आपके गाने में लिबर्टी आ जाये यह ठीक नहीं है।''[1]

पंडित जी से जब यह कहा गया कि आप लोगों के बारे में गुणीजन यह प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं कि आप राग को तान में भी उतना ही निभाते हैं जितना आलाप में। इस पर आपकी राय थी कि ''तभी तो वह राग कहलायेगा ना, दरबारी का तान अलग है, मालकौंस का तान अलग है, बागेश्वरी का तान अलग है, मियाँमल्हार का तान अलग है। भैया का यह अनुभव बहुत बड़ा अनुभव है और उसमें हमारे पिताजी की भी बड़ी भारी प्रेरणा रही है। उन्होंने यह शिक्षा दिया कि हर राग एक चरित्र है। यहाँ तक कि वह सा रे ग म को भी बोलते थे कि एक–एक स्वर जो है वह एक–एक व्यक्तित्व है। उसको अगर ध्यान से देखोगे तो सा का अलग व्यक्तित्व है, रे का अलग व्यक्तित्व है अर्थात् उसको व्यक्तित्व के तौर पर अनुभव करो।''[2]

पं. साजन मिश्र जी के अनुसार ''सा रे ग म प ध नि सां, सां नि ध प म ग रे सा करते हो तो कभी सा को देखने का प्रयास करो कि सा क्या है ?, और तुम देखोगे तो मिलेगा। ऋषभ क्या है, कोमल ऋषभ क्या है ? कोमल गंधार क्या है ? बशर्ते उस पर निगाह जायेगा तब दिखेगा। ऐसे तो भई बहुत तैयार गा रहे हैं। सरगम इतना–इतना तैयार गा रहे हैं कि समझ में सुनने वाले को भी नहीं आ रहा है कि क्या कर रहे हैं ? उनको शायद ज्यादा सुनाई देता होगा। उतना ही करो जो कि तुम खुद समझ सको। उतना ही स्पीड में आदमी को रहना चाहिए जितनी उसकी क्षमता हो। मतलब रियाज़ के लिए तुमकों बता रहा हूँ बेटा, हम लोग दो घंटा, ढाई घंटा गाने के बाद जब गरम होते थे तो एक तो कान पकड़ के उठा के लाये हैं कि रियाज़ नहीं कर रहे हो और जब गर्मा गये अर्थात् जब और मन होने लगा करने का, तो बस। क्षमता तुम्हारी उतनी ही है, अब जो गाये हो दो घंटा उस विषय में थोड़ा–सा सोचो कि हम क्या–क्या गाये हैं ? क्या ग़लतियाँ हुई हैं उस विषय में सोचो। इस तरह रोक देना सबको बुरा लगता है, तो ये रोक देना अर्थात् स्पीड ब्रेकर सबको बुरा लगता है। आप एक स्पीड में भाग रहे हो उस पर लगाम लगाओ। घोड़ा

---

1 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता– गुरुपूर्णिमा, दिनांक 12.07.2014, नई दिल्ली

2 वही

बेलगाम नहीं होता उसकी लगाम होना चाहिए, जब हम चाहें ढीला करें, जब हम चाहें खींचे, हमारे अंदर होना चाहिए वो लगाम। तुम बेलगाम घोड़े की तरह भाग रहे हो होश नहीं है। कहाँ सुर लग रहा है ? कहाँ दिमाग़ है ? बंदिश गा रहे हो ''मोहन जागो भोर भइलवा'' लग रहा है कि कोई लाठी मार रहा है।''[1]

पं. साजन जी मिश्र द्वारा कही गई प्रेरणात्मक बातों से यह बातें उभर कर आती हैं कि कलाकार को संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष की अनदेखी करे बगैर उसके व्यवहारिक पक्ष को कला कुशलता से भावपूर्ण ढ़ंग से प्रकट करना चाहिए। साधना के दौरान सर्वमान्य गुरुजनों एवं बड़े कलाकारों के विवेचनात्मक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर अभ्यास करना चाहिए। आपके अनुसार स्वरों एवं रागों के चलन को धैर्यपूर्वक सुनकर एवं समझकर गाने से होने वाली अनुभूति स्वर में ईश्वर के भाव का दर्शन करवाती है। संगीत का अनियंत्रित होकर जोश एवं ऊर्जा से किया गया प्रदर्शन भावात्मक कम मशीनी अधिक प्रतीत होता है।

विभिन्न रागों में एक ही स्वर को लगाने के विविध ढ़ंग एवं श्रुतियों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए पं. राजन जी मिश्र कहते हैं कि ''बैरागी भैरव का ऋषभ है, अहीर भैरव का ऋषभ है तो हर ऋषभ को गुणियों ने अलग–अलग स्थान पर रखा है। श्रुतियों के अलग–अलग प्रयोग हैं कि किसी में अति कोमल ऋषभ लगता है, किसी में थोड़ा चढ़ा हुआ लगता है, किसी में इनके बीच वाला लगता है अर्थात् सा से रे के बीच में जो श्रुतियाँ हैं, उनको डिवाइड किया गया रागों की प्रकृति के हिसाब से, उसकी जब तालीम हुई तब वो राग जो है सामने आने लगा। आजकल राग सामने इसलिए नहीं आ रहा है कि उसका वादी संवादी ही भूल गये लोग, श्रुति तो बहुत दूर की चीज़ है। जैसे मालकौंस गा रहे हैं तो मालूम ही नहीं है कि मध्यम वादी है, गंधार पर प्रबलता दिए जा रहे हैं, धैवत को प्रबल बना दिया, निषाद को प्रबल बना दिया तो मालकौंस खड़ा ही नहीं हो पाता है।''[2]

प्रकृति की संरचना एवं समय चक्र के साथ रागों के समय चक्र का निर्धारण और मानव के साथ ही जीव जन्तुओं एवं प्रकृति पर रागों के पड़ने वाले प्रभाव पर आप अति सुन्दर एवं तार्किक व्याख्या करते हैं। ''उदाहरण के तौर पर आदमी यहाँ लेटा हुआ है, तुम उसके कान के पीछे जोर–जोर से शंकरा गा रहे हो, उत्तरांग प्रधान राग होने के कारण उससे नींद तो नहीं आयेगा। कहने का तात्पर्य है कि कौनसे मधुर सुर हों, कोमल सुर लगे या तीव्र सुर लगे, उसके कौनसे कोम्बीनेशन ऐसे बनाये जाएँ जो कि शयन के समय गाया

1 पं. साजन जी मिश्रा : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 12.07.2014, नई दिल्ली

2 पं. राजन जी मिश्रा : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 19.7.2016, नई दिल्ली

जाये। इसी तरह सुबह एक अच्छा नींद लेके आदमी उठता है तो फिर उसको कैसे उठाया जाये ? यही प्रकृति अपने रागों की है। जैसे भैरव है तो भैरव में जो कोमल व आंदोलित ऋषभ की व्यवस्था की गई है वह इसी वजह से की गई है। ऋषभ (भैरव में) खड़ा नहीं लगता है, साथ ही धैवत की भी इसी प्रकार की व्यवस्था की गई है। इसमें स्वर का जो ये आंदोलन है यह बड़ा वैज्ञानिक है। अब कोई सोया हुआ उठ रहा है, हल्का–हल्का आँख खुल रहा है और यदि तुम "ग म ध – – प, ग म रे – सा" में धैवत व ऋषभ का खड़ा प्रयोग करोगे तो कैसा लगेगा ? अर्थात् राग के अनुरूप समय के अनुरूप स्वर लगाओगे तो आनन्द का अनुभूति होगा, एक आध्यात्मिक भाव प्रवृत्त होगा। ये सब कुछ समय चक्र सूर्य के साथ बंधा होता है। जब भैरव गाया जाता है तो उस समय के सूरज का ऐसा स्वरूप होता है ऐसा ओरेंज कलर होता है वैसा हम बना नहीं सकते। जो लालिमा होती है वो कितनी कोमलता लिए हुए होती है और जैसे–जैसे सूरज का किरण तेज होता है वैसे–वैसे हमारे सुरों की प्रकृति भी बदलती है। अब दिन होते–होते ऋषभ खड़ा होने लगा और फिर जैसे–जैसे गोधूली समय आने लगता है तो ऋषभ आया राग "श्री' में तो वहाँ उसका अंदाज़ बिल्कुल बदल जाता है अर्थात् अति कोमल रे के रूप में आ गया। उसके बाद मारवा में आ गया तो लग रहा है खड़ा सुर लेकिन तोड़ी वाले ऋषभ से मारवा वाला ऋषभ अलग है। कहने का मतलब ये हुआ कि हम भी तो सूरज से बने हैं, हमारे अंदर भी तो पंचतत्त्व अर्थात् पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि है। जो परिवर्तन प्रकृति में हो रहा है वही परिवर्तन उसी अमुक समय पर हमारे शरीर में भी हो रहा है और उसी हिसाब से संगीत भी परिवर्तित हो रहा है। अब सवाल ये है कि तुम गाने बैठे गाना, ये बड़ा सोचने और समझने वाला बात है कि जो राग तुम गा रहे हो जिस प्रहर में, उस प्रहर के मूड को यदि पहले तुम समझो तो राग ज्यादा प्रभावशाली होगा ना।"[1]

"प्रकृति में विभिन्न ऋतुएँ है बरसात का ऋतु है, ग्रीष्म ऋतु है, शीत ऋतु है, बसंत ऋतु है और उसके भी भेद हैं। जैसे सात सुरों की 22 श्रुतियाँ हैं सा से रे के बीच, रे से ग के बीच उसी प्रकार से ऋतुओं की भी उपऋतुएँ हैं। अब जैसे बरसात है तो एक दम ठंड नहीं होगा। इसके बीच एक काल ऐसा आयेगा कि जब बारिश भी होगा, ठंडा भी होगा और मिलते–मिलते पूरी तरह से ठंड में परिवर्तित हो जाता है, तो वो जो परिवर्तन काल है उसमें भी उपऋतुएँ हैं। इसी प्रकार से 9 मुख्य रस हैं लेकिन नवरस के भी कितने सारे भेद हैं और वह होंगे ही अर्थात् जो प्रकृति का चक्र चल रहा है यह अपने आप में सम्पूर्ण व्यवस्था का परिचायक है। अब यदि प्रकृति की व्यवस्था में हम हस्तक्षेप करते हैं तो

---

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता – गुरु पूर्णिमा, दिनांक 19.7.2016, नई दिल्ली

गड़बड़ी होती है। कहने का मतलब यह है कि मालकौंस का निर्धारण किया गया है कि रात को गाना है और आप लगे दोपहर में गाने तो उससे क्या होगा? मतलब यह है कि कितना वायरस फैलेगा ? वायरस यह फैलेगा कि तुम्हारे कान उस समय उसे स्वीकार करने लायक हैं ही नहीं। यहाँ तक कि शरीर व दिमाग़ उस समय स्वीकारने योग्य नहीं हैं तो प्रकृति आपका सहयोग नहीं करेगी। उससे फायदा होने के बजाय नुकसान होने की संभावना अधिक है। किसी भी चीज़ का हम जब क्रम निर्धारित करते हैं तो उसकी पालना होनी चाहिए। हम प्रकृति के विपरीत चले जा रहे हैं, संगीत तो छोड़ो हम अपने दैनिक जीवन में भी यही कर रहे हैं। कितने बजे उठना चाहिए हम उठ रहे हैं, नहीं उठ रहे हैं, कितने बजे भोजन करना चाहिए हम कर रहे हैं ? नहीं कर रहे हैं। हम अपना पूरा दिनचर्या बदल दिए हैं और इसी से हम कष्ट पा रहे हैं।''[1]

पंडित राजन जी मिश्र की संगीत एवं प्रकृति से संबंधित विश्लेषणात्मक व्याख्या के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है हमारा संगीत प्रकृति जन्य संगीत है और हमारा स्वयं का निर्माण भी पंचतत्त्वों से हुआ है। अतः प्राकृतिक वातावरण एवं दैनिक समय चक्र का प्रभाव संगीत के अन्तर्गत लगने वाले सुरों की अवस्था एवं स्वभाव पर पड़ता है। भारतीय संगीत की संपूर्ण व्यवस्था का निर्धारण प्रकृति के अन्तर्गत घटित प्रतिदिन अष्टप्रहर के काल खण्ड, ऋतुओं और मौसम में होने वाले परिवर्तन के आधार पर होता है। स्वरों एवं रागों का समयानुसार एवं ऋतु अनुसार प्रयोग पूरी तरह से प्राकृतिक घटनाक्रम पर आश्रित है। अतः संगीत को समझने के लिए हमें प्रकृति को पहले समझना होगा।

गायन के क्षेत्र में किए जाने वाले तकनीकी प्रयोगों के अन्तर्गत आपने सदैव रचनात्मक एवं अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। पं. राजन साजन मिश्र जी ने अपनी गायकी में सदैव नवाचारों को स्थान दिया है। शास्त्रीय गायकी में गुणात्मक मूल्यों में अभिवृद्धि करते हुए उसे आदर्श रूप में स्थापित करने हेतु आप सतत् चिन्तनशील रहे हैं। आपके अभिनव दृष्टिकोण ने भारतीय शास्त्रीय गायकी को नयी सोच, दिशा एवं दृष्टि प्रदान की है।

दिनांक 19.7.2016 को गुरु पूजा उत्सव के दौरान अपने शिष्यों के बीच चर्चा के दौरान आपने गायन को उत्कृष्ट बनाने हेतु कुछ अनुभव साझा किए। पं. राजन जी मिश्र ने शिष्यों से प्रश्न किया कि ''सुर का opposite क्या है ? शिष्यों से जवाब मिला गुरुजी बेसुरा। पंडित जी कहते हैं सभी लोगों का एक ही उत्तर है जबकि यह उत्तर ग़लत है। सुर

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता – गुरु पूर्णिमा, दिनांक 19.7.2016, नई दिल्ली

का विपरीत असुर या बेसुर वह उसी की परिभाषा है। बेसुर भी तो सुर का ही एक्स्टेंशन वाला बात है फिर उसका अपोज़िट जो है वह होगा मौन अर्थात् ध्वनि और मौन। ध्वनि के बीच में जितना मौन डालते जाओगे उतना ही संगीत आगे बढ़ता जाएगा क्योंकि मौन में ही संगीत होता है। एक सुर से दूसरे सुर पर जाते हो उसके बीच का जो मौन है वही संगीत है और जितना रुककर जाओगे उतना ही संगीत बनता जाएगा। गाते–गाते कभी देखना, इसको प्रयोग करना तुम लोग। गाते–गाते दिमाग में रखना कि तुमको रुकना है। किसी एक सुर पे रूक जाओ और थोड़ा लम्बा रूको, देखो तुम्हारे अंदर क्या हो रहा है, फिर तुमको समझ में आ जायेगा। जब रुकोगे ना तब ही तुमको असली संगीत सुनाई देगा। जैसे ही तुम रुके 5–10 सैकण्ड, वैसे ही तुमको लगेगा हो हो हो.... ये रास्ता है। इसीलिए मैं कहता हूँ तानपूरा सुनो, हर समय लगातार मत गाओ। लगातार जो लोग गाते बजाते हैं वह शोर बन जाता है। जब तक उसमें पॉज़ नहीं आयेगा म्यूज़िक बन ही नहीं सकता। जो जितना लम्बा पॉज़ मारना शुरू करेगा उसका संगीत उतना ही प्रभावशाली होता चला जायेगा। बीच–बीच में जो पॉज़ लगता है वह तुमको सही ट्यून करता है और तुमको सही रास्ता भी दिखा देता है। जैसे ही तुम रुकने का अभ्यास शुरू करो वैसे ही तुम देखोगे कि गाना एक्सपेंड होने लगा, नई–नई चीज़ें आयेंगी।

अभी जो संगीत चल रहा है तुम देखो कि ये रिपीट कितना हो रहा है, फुल रिपीटेशन, कोई नई बात नहीं हो रही है। कोई नई बात इसलिए नहीं हो पा रही है कि रुकना ही भूल गये लोग। नहीं रुकने के पीछे दूसरी साइकोलॉजी यह काम करती है कि अगर मैं रुका तो मेरा गाना डल हो जाएगा जबकि बात उल्टी है। तुम प्रयोग करके देखो खुद ही तुमको समझ में आयेगा, रुकना मंत्र है। अच्छा फिर यह गाने में ही नहीं है हर जगह है चलने में, गाने में, खाने में, बात करने में। जो लगातार बात करता है उसको पता नहीं चलता कि शब्द कितने–कौनसे निकल गये। जो रुककर बोलते हैं वे हमेशा नियंत्रित शब्दों का प्रयोग करते हैं, उनसे कभी ग़लती होता ही नहीं है। रुक–रुक के चले आदमी तो ठोकर लगेगा, कभी नहीं। रुक–रुक के खाना खाए तो कभी इनडाइजेशन होगा, कभी नहीं। रुक–रुक के नहाये तो कभी मैल छुपा रह जाएगा, कभी नहीं।"[1]

संगीत सुनते समय आनन्द की अनुभूति के विषय में पं. राजन मिश्र जी के विचार हैं कि "जब आपका ईगो गिर जाता है तब आप आनंद में ही रहते हैं। जैसे हम प्रकृति में जाते हैं, घूमने जाते हैं, पहाड़ों पर जाते हैं तो वहाँ हमें अच्छा क्यों लगता हैं? वहाँ हमें

[1] पं. राजन जी मिश्र : वार्ता – गुरु पूर्णिमा, दिनांक 19.7.2016, नई दिल्ली

अच्छा इसलिए लगता है कि वहाँ मेरा अहंकार गिर जाता है। इतना विशाल प्रकृति का स्वरूप देखकर अपनी औकात ऐसी (सूक्ष्म) हो जाती है। इतना बड़ा संसार, इतना बड़ा पहाड़, इतने बड़े पानी के स्त्रोत यह सब देखते ही अपने को लगता है कि मैं कुछ भी नहीं हूँ वैसे ही आनंद आना शुरु हो जाता है। आप लोग कल जो आनंद ले रहे थे वह इसलिए ले रहे थे कि आपके हृदय में अपना अहंकार तिरोहित हो रहा था। आपके विचार तिरोहित हो रहे थे। आप विचार शून्य होने की स्थिति में थे। तब सबको स्वर लहरियों का आनंद मिल रहा था। श्रोताओं में बहुत सारे ऐसे भी लोग होंगे जिन्होंने पहले बहुत सुन रखा है या बहुत जानकारी है उनको आप जैसा आनंद नहीं मिला होगा क्योंकि वह हर समय इस फिराक में थे कि मारवा में ज़रा सा गंधार ज्यादा लग रहा है या ज़रा सा निषाद ज़्यादा लगा, वे इसकी खोज कर रहे होंगे। मतलब पहले से सीखे हुए हैं, पहले से जानकारी है तो बायस्ड मेंन्टलिटी है वह आपके अहंकार को गिरने नहीं देता है।[1]

संगीत के विषय में परंपरा के धरातल पर किए गए मौलिक चिन्तन, मनन के साथ व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक अनुभवों के फलीभूत विकसित अभिनव दृष्टिकोण ने आपकी गायकी का सिंचन कर आदर्श रूप में स्थापित करते हुए संपूर्ण संगीत जगत को नई दिशा दिखाई है। यहाँ की गई व्याख्याओं में पं. राजन साजन मिश्र जी ने संगीत साधना, स्वर लगाव, स्वरों एवं रागों के प्रति दृष्टिकोण, घरानेदार परंपरा के अनुसरण में व्यापक दृष्टि, मूर्धन्य कलाकारों का भारतीय संगीत के स्थापना एवं विकास में योगदान, संगीत का सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान, प्रकृति का सुरों की अवस्था पर पड़ने वाला प्रभाव, संगीत एवं प्रकृति का समय एवं ऋतु अनुसार तादात्म्य, रागों में अन्तःस्थित भावों के साक्षात्कार हेतु किए गए रचनात्मक प्रयोग एवं अवधारणा आदि विषयों पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है।

7.2 गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग

वृंदावन गुरुकुल के अनुभव बैठक कार्यक्रम में पं. राजन जी मिश्र ने संगीत के क्षेत्र में नवीन आविष्कारों से संबंधित एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि ''सत्य तो यह है कि नया कुछ भी नहीं हो रहा है। हम डिस्कवरी कर रहे हैं यह साइन्टिफिक ट्रूथ है। आइंस्टाइन ने भी कहा था कि ''यूनिवर्स इज़ एक्सपेन्डिंग'' अर्थात् आप जितना खोजते जाओगे उतना ही एक्सपेंड करता जा रहा है और ये पृथ्वी का जो इतिहास है वह मिलियन–बिलियन इयर्स का है। कितने हज़ार बार पृथ्वी बसी और फिर उजड़ गई फिर बसी फिर उजड़ गई। हम जो चीज़ वायुमण्डल में है उसको डिस्कवर कर रहे हैं। अगर हम कहते हैं कि हमने नया

---

1 www.youtube.com (Sarb Akal Baithak, Calgary, May 27, 2018)

राग बनाया, नया ताल बनाया तो ये कहने को है कि नया बनाया, ये सब बन चुका है और वायुमण्डल में है और आपका हृदय वैसा है तो वो आपको वेव लेन्थ मिल गया और आपने उसकी रचना कर दी। कुछ भी नया नहीं है और नया हो भी नहीं सकता, सब डिस्कवरी है। मेरे ख्याल से साइंस भी अभी एक्जिस्टेंस के 0.5 प्रतिशत डिस्कवरी पर पहुंचा है। एक्जिस्टेंस रोज़ बदल रहा है, रोज़ नये पत्ते खिल रहे हैं, रोज नई चिड़ियाँ आ रही हैं, रोज नये झरने झर रहे हैं, रोज पानी का मोड़ बदल रहा है। हर चीज़ नित्य नया हो रहा है एक बार डूबा हुआ सूरज दूसरी बार वैसा नहीं निकलता है, वह दूसरा ही सूरज होता है। हमारे अन्दर भी वैसे ही प्रकृति बदल रही है नित्य, हर बार। हम सिर्फ डिस्कवरी कर रहे हैं, ये मेरा अपना विचार है। मालकौंस 10 हजार लोगों ने गाया होगा हमारे बुजुर्गों ने और अगर हमारी श्रद्धा है तो इन 10 हजार लोगों की वाणी हमें मिल सकती है। दरबारी 50 हजार लोगों ने गाया होगा तो अगर हमारी श्रद्धा है उस राग में और अपने बुजुर्गों के प्रति, अपनी परंपरा के प्रति तो हो सकता है कि उन लोगों की वाणी हमें मिल जाये और हम कुछ और कर भी नहीं सकते बस कृपा चाहिए, आशीर्वाद चाहिए, श्रद्धा चाहिए, समर्पण चाहिए। उसी के भरोसे सब चल रहा है।''[1]

पं. राजन साजन मिश्र जी के जीवन चरित्र एवं कार्यों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'अद्वैत संगीत' में आपके द्वारा "Master Class with Pt. Rajan Sajan Mishra" के अंतर्गत आपके पुत्र एवं शिष्य पं. रितेश मिश्र एवं पं. रजनीश मिश्र को संगीत शिक्षा प्रदान करते हुए उनके माध्यम से गायन विषय सम्बन्धी गहन शोध को उजागर किया गया है। इस मास्टर क्लास में पं. राजन साजन जी मिश्र द्वारा गायन तकनीक को उन्नत एवं प्रभावी बनाने सम्बन्धी अमूल्य सुझाव दिये गये हैं जो भावी पीढ़ी के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। पं. राजन जी मिश्र ने विलंबित ख्याल की बंदिश के मुखड़े के प्रस्तुतीकरण के विषय में कहा ''मुखड़ा कहने के पहले जो बन्द है वो क्यों यूज़ किया जाता है? हम इसे सीधा भी शुरू कर सकते हैं। जिस तरह से किताब लिखा जाता है तो उसका एक foreword (प्राक्कथन) लिखा जाता है, Preface (मुखबन्ध) लिखा जाता है तो ये मुखड़े का Preface है, मुखड़े का शुरुआत है। राग के चरित्र के साथ–साथ तुम्हारा लय में कितना ज्ञान है इसका द्योतक है। जिसको सिर्फ धिं से मुखड़ा पकड़ना है वो तो ये काम नहीं कर सकता। जिसके अंदर लय की क्षमता होगी, पूरे साइकल को जानता रहेगा वही वहाँ से उठायेगा मुखड़ा, वह मुखड़े का प्राक्कथन है। तुम्हारे लय का जब तुम्हें आभास रहेगा तभी तुम वहाँ

---

1 www.youtube.com (Vrindaban Gurukul Anubhav Baithak with Pt. Rajan & Sajan Mishra, 14 Nov., 2014)

छोड़ोगे, नहीं तो आलाप चलता जा रहा है, इतना बड़ा मुखड़ा है और पता लगा कि आ गया तो मुखड़ा छोटा करके आ गये। ख्याल की बंदिश का मतलब है बंधा हुआ वो चाहे विलंबित एकताल में हो चाहे द्रुत एकताल में हो वो वहीं से शुरू हो रहा है। साथ ही जितना बड़ा मुखड़ा गा रहे हो उसके लिए चैतन्यता रखो, उसके लिए अवेयरनेस रखो कि इतना बड़ा मुखड़ा है और उसके साथ ही ये एक बन्ध भी जोड़े हुए हैं तो उसको कहाँ से उठायेंगे।''[1]

मास्टर क्लास के अन्तर्गत प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पं. राजन जी मिश्र ने बताया ''हमारे परनाना पं. नानक मिश्र जी बड़े भारी विद्वान थे, नेपाल दरबार के गुरु थे। हमारे पिताजी गुरु हमको बताया करते थे कि इसी पूरिया में एक ख्याल है 'सुघर बना'। उस 'सुघर बना' में जब वो मध्यम पर उतरते थे तो ऐसा लगता था कि जैसे पाँच मन का कोई पत्थर सीने पर रख दिया हो सुनने वाले के, इतना पावरफुल मध्यम होता था। पुराने लोगों का आवाज़ उनका क्वालिटी और दमखम जो था वो ऐसे मध्यम पे उतरते थे कि बब्बा (पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र) बोलते थे कि ऐसा लगता था कि जैसे पाँच मन का कोई पत्थर रख दिया हो सीने पर। इस तरह का ज़िक्र सुनने से तुम जब मध्यम लगाओगे तो नहीं पाँच मन का, पाँच सौ ग्राम का तो लगा सकते हो। इसलिए ये सब कहानी उपयोगी है कि गंधार कैसे लगेगा, मध्यम कैसे लगेगा, निषाद कैसे लगेगा। यदि पुराने बुजुर्गों का रेफरेन्स तुमको बताया जायेगा और गाते–गाते उन बुजुर्ग का रेफरेन्स और चेहरा तुमको याद आयेगा तो उसमें से थोड़ा सा अंश आ जायेगा तुम्हारे गाने में।

मास्टर क्लास में वॉइस मॉड्यूलेशन के संदर्भ में अपने प्रदर्शन एवं व्याख्यान के माध्यम से पं. रितेश जी एवं रजनीश जी से चर्चा में बताया कि ''वॉइस मॉड्यूलेशन बहुत ज़रूरी है और नहीं भी, सबसे ज़्यादा ज़रूरी है तुम्हारा इन्वॉल्वमेंट। वह ज़रूरी इसलिए है कि जब तुम इनवॉल्व होके गाओगे तो अपने आप वॉइस जो है तुमको वहाँ ले जायेगा। जैसे उदाहरण के रूप में जिस वॉइस में हम नीचे (मंद्र में) गा रहे हैं अब वहाँ वॉइस भारी है जैसे–जैसे ऊपर सप्तक में बढ़ते रहोगे वैसे–वैसे वॉइस हल्का होना चाहिए।

देखो एक छोटा सा उदाहरण बता रहा हूँ तुमको, अब जैसे तीव्र मध्यम है और शुद्ध मध्यम है उसको कैसे कहोगे ? दोनों का उच्चारण 'म' है। उसका उच्चारण कैसे होगा कि वह तीव्र मध्यम लगे और शुद्ध मध्यम लगे। हल्का सा नेज़ल साउण्ड तीव्र मध्यम में और शुद्ध मध्यम में ये गोल हो गया। इसी प्रकार से कोमल 'नि' और शुद्ध 'नि' का उच्चारण, उसी प्रकार से शुद्ध 'ध' और कोमल 'ध' का उच्चारण, उसी प्रकार का शुद्ध

1 अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

ऋषभ और कोमल ऋषभ का उच्चारण है। अर्थात् जब इतना डिटेल में तुम जाओगे तब वो सुर तुम्हारा साथ देगा। अब ये नि (शुद्ध) जो है trebble sound hives इसमें ज़्यादा है।''[1]

मास्टर क्लास के अन्तर्गत तान लगाने के तरीके के बारें में आपने बताया कि ''तान भी ऐसा हो कि जैसे तुम्हारे हृदय में गुदगुदी पैदा हो जाये। तुम्हारे हृदय को कोई सहलाने लगे ऐसा तान हो। आजकल बहुत से लोग तैयार गाना गाते हैं तो वो गले से तान मारते हैं तो आपकी आवाज़ बदल जायेगी, क्वालिटी बदल जायेगी। कहने का मतलब ये है हर जगह इनवॉल्व करो अपने को बंदिश में इनवॉल्व करो, राग में इनवॉल्व करो, सरगम में इनवॉल्व करो।''[2]

संगीत में ताल की अवस्था और प्रयोग के संबंध में पं. राजन जी मिश्र का कथन है कि ''मेरा अपना ऐसा सोच है और रिसर्च है ज़िंदगी का कि रिदम जो है वह मानव जीवन को बहुत जल्दी आकर्षित करता है लेकिन ठहरा हुआ रिदम जो संतत्व को प्राप्त हो गये हैं उनको आकर्षित करता है अर्थात् जो अंदर से शांत हो गये हैं उनको आकर्षित करता है। जो उथले–पुथले लोग हैं उनको रिदम ज़्यादा आकर्षित करता है। इस वजह से पोप म्यूज़िक और मॉडर्न म्यूज़िक ज्यादा प्रचार में है क्योंकि वह आपके पैर को हिलाता है, आपके सर को हिलाता है, आपकी बॉडी को कंपाता है इसीलिए आप उसमें जल्दी रम जाते हैं।

अतः साररूप में यह कहा जा सकता है कि पं. राजन साजन जी मिश्र ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत ख्याल गायन के मूलस्वरूप को कायम रखते हुए उसे स्वचिंतन एवं अन्वेषण के माध्यम से नवीन स्वरूप में ढाला है। आपने रागों के विशेष संदर्भ में स्वरों के प्रयोग, उच्चारण, वॉइस मॉड्यूलेशन, बंदिशों का साहित्य अनुरूप प्रस्तुतीकरण एवं गायन तकनीक आदि संदर्भों में गहन शोध कर नवीन एवं रचनात्मक प्रयोगों द्वारा गायन शैली को आदर्श रूप प्रदान किया है। निश्चित रूप से इस दिशा में आपके द्वारा किया गया कार्य सदैव भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करता रहेगा।

एक कलाकार का चिंतन सदैव उसे नित नए सृजन हेतु प्रेरित करता है। पं. राजन साजन जी मिश्र को इस नवीन दृष्टिकोण हेतु अपने इर्दगिर्द घटने वाली घटनाओं एवं प्रसंगों से निरन्तर प्रेरणा मिलती रही है। हर कदम पर कुछ न कुछ सीखने और ग्रहण करने के नज़रिये से आपकी कला साधना परिपक्वता की ओर अग्रसर होती गयी।

***

---

1 अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

2 वही

अष्टम अध्याय

कलाकारद्वय से जुड़े रोचक एवं प्रेरक प्रसंग

अष्टम अध्याय

कलाकारद्वय से जुड़े रोचक एवं प्रेरक प्रसंग

8.1 संगीत संबंधी प्रसंग

प्रत्येक महान् कलाकार को सफलता के शिखर पर पहुँचने के लिए एक लंबी यात्रा तय करनी पड़ती है। इस यात्रा में पं. राजन मिश्र जी को युवा अवस्था में अनेक सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। मनोविनोदपूर्ण ढ़ंग से गंभीर एवं तथ्यात्मक बातों को उजागर करना आपकी वाकपटुता को दर्शाता है। पं. राजन जी मिश्र ने युवा अवस्था की चुनौतियों के बारे में चर्चा में बताया ''हमारे यहाँ उस समय अरेन्ज मैरिज होता था। ऐसा नहीं था कि लड़का–लड़की आपस में एक–दूसरे को देखेंगे या बात करेंगे तब संबंध तय होगा। हमारे चाचाजी इनको (धर्म पत्नी श्रीमती बीना मिश्रा जी) पसंद करके आ गये कलकत्ता में और आके बोल दिए कि हम इनके लिए लड़की पसंद कर लिए हैं। हमारे ससुर जी और चाचाजी में काफी गहरी दोस्ती थी तो दोनों ने वायदा कर लिया कि हाँ भई ये लड़की हम ले जायेंगे तो बात खत्म हो गई। उस समय दादी हमारी बीमार थी तो दादी का ज़िद था कि भई एक बड़े पोते का शादी देखकर जाऊँगी। इस हिसाब से मेरी शादी 19 वर्ष की उम्र में हो गई और देखा जाये तो एक तरह से अच्छा भी है और गलत भी, हर बात के दो पहलू होते हैं। जल्दी शादी हो जाने से बच्चे जल्दी पैदा हो जाते हैं जल्दी वो बड़े हो जाते हैं। तुम्हारा बुढ़ापा आने के पहले बच्चे सेटल हो जाते हैं यह एक प्लस प्वाइंट है। दूसरा प्लस प्वाइंट है कि आपको जिम्मेदारी मिल जाती है। अकेले तो आप जैसे भी चाहें जीवन चला सकते हैं लेकिन जब बच्चे बीवी आ जायें तो उनके लिए तो कमाई का साधन ढूँढना पड़ेगा अर्थात् बिना कमाई किए तो चलेगा नहीं। घर वाले तो खाना दे रहे हैं, कपड़ा दे रहे हैं, रहने की जगह दे रहे हैं, इससे ज्यादा क्या करेंगे, लेकिन अपना हाथ खर्च है, बच्चे का दूध–दवा आदि गृहस्थी के खर्चे का स्वयं को जुगाड़ करना पड़ता है अर्थात् जीवन का वह अनुभव बहुत मायने रखता है और उसके लिए हमने ट्यूशन बहुत की। बनारस में जब मैं बी. ए. द्वितीय वर्ष में था तब मेरी शादी हुई। एक साल और पढ़ाई करके बी.ए. पास करना था तो उस दौरान मैंने ट्यूशन की गाने की। दूर–दूर तक साइकिल पर जाता था। उस समय ट्यूशन का रेट था 45 रु., 50 रु. या 60 रुपये अधिक से अधिक। अच्छे ट्यूशन के अधिकतम 60 रुपये मिलते थे और सप्ताह में दो दिन जाना रहता था। खुद जाके सिखाना है तो वह अनुभव बढ़ा अच्छा अनुभव रहा, मतलब एक

स्ट्रगल होता है ना। ट्यूशन का भी ऐसा नहीं हैं कि बराबर चलता रहे, पाँच–दस ट्यूशन चल रहा है तो उसमें से दो खत्म हो गया।

उस समय परीक्षा के हिसाब से प्रयाग संगीत समिति आदि के कोर्स की तैयारी करवाई जाती थी। अभी तक हमें याद है कि एक लड़की थी उसने दरबारी चॉइस राग रखा था। उसको मैंने 7–8 महीने सिखाया तो शुद्ध निषाद उससे हटा नहीं पाया। दरबारी का ख्याल है मुबारक बादियाँ, मैं आठ महीने उसे सिखाने गया लेकिन वह कोमल नी नहीं समझ सकी। हमने कहा कि चॉइस राग बदल दो तो उसने कहा कि गुरुजी दरबारी राग हमें बहुत पसंद है मैं यही रखूँगी, तो हमने कहा रखो अर्थात् इस तरह के अनुभव हुए। साथ ही सिखाने से क्या है कि खुद सीखने को मिलता है। किसी को भी सिखाना है तो आपको तैयारी पहले करना पड़ेगा। रागों की जानकारी, तालों की जानकारी, ठाह, दुगुन, तिगुन आदि तो ये सब सीखने को मिला उस दौरान में।[1]

संगीत जगत के ख्यातनाम गायक कलाकार जैसे भीमसेन जी, जसराज जी, किशोरी जी आदि इसी तरह से वादन में रविशंकर जी, विलायत खाँ साहब, अमज़द अली खाँ सा., हरिप्रसाद जी, शिवकुमार जी आदि से जुड़े प्रसंगों के बारे में पूछने पर आपने चर्चा में बताया "इनके साथ बहुत सारे प्रसंग हैं, इन लोगों का तो बहुत स्नेह हम लोगों पर रहा है। ये सब हमारे बड़े कलाकार हैं और आजीवन इन लोगों को हमने अपने से बहुत बड़ा समझा है। वही भाव रखा, वही इज़्ज़त दिया और उनका आशीर्वाद हमको वैसा ही मिला। पं. रविशंकर जी हुए, विलायत खाँ साहब हुए, अमज़द अली खाँ साहब हुए, जसराज जी हुए, शिवजी हुए, हरिजी हुए, बहुत सारा प्रसंग है इन लोगों के साथ का। विलायत खाँ साहब के साथ तो हम 15–15 दिन रहे हैं, सतगुरु जी (जगजीत सिंह जी) के साथ में, सवेरे हमारा प्रोग्राम हो रहा है तो शाम को विलायत खाँ साहब का प्रोग्राम हो रहा है, कभी शाम को हमारा हो रहा है तो सुबह वह बजा रहे हैं। आपस में जो ये एक्सचेंज होता था रागों का, बंदिशों का तो इससे हम कुछ उनसे सीखते थे और वह भी हमें सुनकर प्रशंसा करते थे। जसराज जी के साथ तो बहुत पुराना हम लोगों का संबंध रहा है। एक जगह तो अंबाला में जसराज जी तबला लेकर बैठ गये घर में, पं. गणेश प्रसाद जी वहाँ के एक विद्वान हैं उनके घर में हम सब लोग ठहरे थे। मणीलाल जी नाग थे सितार वाले, जसराज जी थे और हम लोग थे। वहाँ सुबह की बैठक में ऐसे ही गाना बजाना होने लगा तो जसराज जी ने बायाँ तबला ले लिया। वह बहुत अच्छा तबला बजाते हैं। वह तबला बजा

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 12.07.2014 नई दिल्ली

रहे हैं हम लोग गा रहे हैं, मणीलाल जी सितार बजा रहे हैं। जसराज जी का बहुत स्नेह हम लोगों को मिला, बहुत प्यार करते हैं और अभी तक भी वह हर जगह बोलते हैं। उनका आशीर्वाद हम लोगों के साथ है, हम महसूस करते हैं उनका आशीर्वाद। कहने का तात्पर्य है कि जब आप झुकोगे तो आपको कुछ मिलेगा सीधा हिसाब है। जब हाथ को ऐसे करके (हथेली को समतल करके दिखाते हुए) प्रसाद माँगोगे तो हाथ में रुकेगा प्रसाद ? ऐसे करके माँगने से हाथ से गिर जायेगा। सबसे बड़ी बात हम लोगों के साथ तालीम की है, पिताजी–चाचाजी ने हम लोगों को हर बड़े व्यक्ति के सामने झुकना सिखाया।[1]

पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''विनम्रता विद्या की जननी है, विनम्र रहोगे तो सब कुछ आता जायेगा। जहाँ अहंकार आयेगा वहाँ कुछ नहीं रहेगा। भैया (पं. राजन जी मिश्र) बोलते हैं न कि 'ई' जो है वही ईगो है और ईगो जब मिट जाता है तो वही 'ई' ईश्वर बन जाता है।''[2]

जीवन में प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए आने वाली चुनौतियों का डटकर सामना करना एवं उनसे प्रेरणा लेकर निरन्तर आगे बढ़ते रहने की जिज्ञासा आपके पुरुषार्थ को दर्शाती है। आप दोनों भ्राताओं के स्वभाव में विनयशीलता का गुण विद्यमान होने के कारण आपको सभी बड़े एवं महान् कलाकारों का स्नेह एवं आशीष मिला है। सभी महान् एवं गुणी कलाकारों द्वारा संगीत के क्षेत्र में किए गए मूलभूत कार्यों के लिए आप सदैव कृतज्ञता का भाव अपने हृदय में रखते हैं।

पद्म विभूषण पं. बिरजू महाराज कथक नृत्य एवं पं. राजन साजन मिश्र गायन प्रस्तुत करते हुए

---

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 10.07.17, नई दिल्ली

2 पं. साजन जी मिश्र : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 12.7.2014, नई दिल्ली

पं. राजन जी मिश्र ने चर्चा में बताया कि ''हमने हज़ारों प्रोग्राम किए हैं, बहुत सारे रोचक संस्मरण हैं। हम लोगों का एक प्रोग्राम हुआ मुंबई में, उसमें पं. बिरजू महाराज जी और किशन महाराज जी तबले पर थे। वह बड़ा यूनिक प्रोग्राम था, गायन, वादन और नृत्य तीनों एक साथ था। बंदिश हमें गाना था उस पर बिरजू महाराज जी का नृत्य और किशन महाराज जी का तबला था। बिरजू महाराज जी ने कहा कि एक आध नाच के बोल भी पढ़ दीजिए। एक दो बोल याद हैं हमको नृत्य का, अब ये कहीं–कहीं से उठके बनके तिहाई मारके आना है, ये एक चैलेंज था। ये एक बहुत बड़ा अनुभव रहा इतने बड़े दिग्गज कलाकारों के साथ और यह प्रोग्राम बाद में बहुत जगह हुआ। सिर्फ मुम्बई में ही नहीं हुआ बल्कि दिल्ली में हुआ, पटियाला में हुआ, बैंगलोर में हुआ, कलकत्ता में हुआ। हर जगह तीनों विधाओं के लोग अर्थात तीनों विधाओं के ज्ञाता थे। इसमें संगीत का संपूर्ण रूप सामने आया। अब आप सिर्फ गाना ही गाते हैं डांस को एप्रीशिएट नहीं करते हैं तो नहीं हो पाएगा। तबले को एप्रीशिएट नहीं करेंगे तो आपको लय का जानकारी नहीं होगा। तीनों विधाओं से मिलकर ही संगीत बना है, सभी में बराबर रुझान होना चाहिए और हर जगह कुछ न कुछ अच्छी बातें हैं। कहीं न कहीं अच्छाई हर जगह बिखरी हुई है, उसको लेने की कोशिश करो।''[1]

इसी क्रम में अन्य वाद्यों के साथ जुगलबंदी कार्यक्रम के बारे में आपने बताया कि ''शाहिद भाई (प्रसिद्ध सितार वादक) के साथ एक बार कार्यक्रम हुआ था, विश्व मोहन जी (प्रसिद्ध मोहन वीणा वादक) के साथ एक बार हुआ और बिरजू महाराज जी, किशन महाराज जी इनके बारे में तो हम बताये ही हैं, ये तो लीजेंड हैं।''[2]

'अद्वैत संगीत' के अंतर्गत पं. साजन जी मिश्र ने भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी जी से सम्बन्धित अत्यंत रोचक एवं प्रेरणादायक संस्मरण बताया। ''रेड़ियो ने हम लोगों के जीवन में एक बहुत बड़ा रोल निभाया। उस ज़माने में आकाशवाणी ही एक ऐसी संस्था थी कि वहीं से कलाकार का परिचय बढ़ता था, प्रचार–प्रसार बढ़ता था। हम लोगों का नेशनल प्रोग्राम हुआ और वही प्रोग्राम सुनके पं. भीमसेन जोशी जी हम लोगों को सवाई गंधर्व में बुलाये 1975 में और हमें वह क्षण याद है क्योंकि हम लोग तानपुरा को लेके बहुत कॉन्शियस रहते हैं, अलर्ट रहते हैं कि तानपुरा ठीक से मिला होना चाहिए। हम लोग गा रहे थे और जो पीछे तानपुरा बजा रहे थे उनमें से एक तो बहुत ही अच्छा बजा रहे थे लेकिन जो दूसरे थे वो प्रोपर नहीं छेड़ रहे थे जिसकी वजह से तानपुरा बार–बार डिस्टर्ब

---

1 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 10.07.17, नई दिल्ली

2 पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरु पूर्णिमा, दिनांक 10.07.17, नई दिल्ली

हो रहा था। मैं बार–बार अपनी तरफ वाले तानपुरे को घूमकर ट्यून कर रहा था तो पंडित जी (पं. भीमसेन जोशी) सामने बैठे हुए देख रहे थे। वो ऑडियन्स में से उठकर आये और मेरे पीछे खड़े हो गये। तानपुरा पकड़ लिए और मराठी में उस शख्स से उन्होंने कहा कि दूसरे आदमी को भेजो। फिर उन्होंने अपने हाथ से तानपुरा ट्यून किया हमने कहा पंडितजी मैं देखता हूँ वह बोले नहीं नहीं आप गाते रहो और वो तानपुरा मिलाके खड़े होके हमारे पीछे और हम समझते हैं कि कम से कम दस मिनट उन्होंने हमारे साथ तानपुरा बजाया। यह तो हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य था लेकिन उनका बड़प्पन देखिये, उनका सोच देखिये कि गाना डिस्टर्ब नहीं होना चाहिए। जब तक वो दूसरा व्यक्ति आया तब तक हमारे साथ उन्होंने अपना आशीर्वाद दिया।''[1]

8.2 यात्राओं से संबंधित रोचक प्रसंग

पं. राजन जी मिश्र ने 'भैरव से भैरवी तक' एलबम में अपने संस्मरणों को साझा करते हुए कहा ''आपको मैं एक ज़िक्र बताना चाहता हूँ कि जब सबसे पहला सवाई गंधर्व हम लोग गाने आये थे शायद सन् 1975 में, उसमें विनायक राव पटवर्धन जी के जो बड़े बेटे थे, नारायण राव जी जो गाते थे वो नहीं उनसे भी बड़े एक थे, उनका नाम मुझे याद नहीं आ रहा है। हम लोग पूनम होटल में ठहरे थे। हमारे उस समय के गवाह यहाँ मौजूद हैं गोविन्द राव जी। दूसरे दिन सुबह आकर उन्होंने कहा कि इतना अच्छा गाया आप लोगों ने, मैं आपको इनाम देना चाहता हूँ। हमने कहा कि बड़ी कृपा है दीजिए, तो उन्होंने एक बंदिश इनाम दी हमें और वह बंदिश किसकी है, वह बड़े गुलाम अली खाँ साहब की है और हम लोगों ने मालकौंस गाया था इसलिए वह मालकौंस की बंदिश है। सन् 1975 में उन्होंने यह प्रसाद दिया था और अभी तक हम लोग उस प्रसाद का आनन्द लेते हैं और जहाँ गाते हैं उनकी छवि याद आ जाती है। बड़े गुलाम अली खाँ साहब को हम लोग प्रणाम करके तब यह गाते हैं बंदिश। (बंदिश–है आये पी मोरे मंदरवा, सबरंग सों लाग भाग)

एक और प्रसाद देखिए कैसे मिला, एक हमारे तबला वादक बड़े भाई की तरह थे पं. नन्दन मेहता जो सप्तक करते हैं। वह भी पान खाया करते थे। हम लोग कहीं से प्रोग्राम करके आ रहे थे तो वह गुनगुना रहे थे। हमने कहा कि क्या गुनगुना रहे हो? वह बोले बड़ी पुरानी रचना याद आ गई रजब अली खाँ साहब की। हमने कहा कि गाड़ी रोको

---

1 अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

पान थूँकिए, गाड़ी रोकके उनका पान थुँकवाया बाहर और उनसे गाड़ी में चलते–चलते यह पूरिया का रचना याद किया हमने ''मोरे मान रंगकर रसिया वे''।[1]

रोचक प्रसंग

पं. राजन साजन मिश्र ने फीचर फिल्म 'अद्वैत संगीत' में किशोर अवस्था के एक रोचक प्रसंग का उल्लेख किया कि ''एक बार भैया (पं. राजन मिश्र) शम्मी कपूर की फिल्म देखकर आये थे, तो उसमें शम्मी कपूर जी बर्फ पर से फिसलते हैं। अब पहाड़ कैसे बनाया जाये तो हमने तखत पर पूरा पौण्ड्स का पाउडर डालके कि बर्फ का इफेक्ट आ जाये और हम लोग ऊपर कड़ी पकड़ कर उसके ऊपर चढ़के स्केटिंग कर रहे हैं।''[2] ''दो बार तो ठीक–ठाक हो गया और तीसरी बार इनको (पं. साजन मिश्र) लग गया चोट तो बड़ा डाँट सुना हमने कि छोटे भाई का ध्यान नहीं रखते हो, उसको गिरा देते हो मार देते हो।''[3]

8.3 अन्य प्रेरक प्रसंग

पं. साजन जी मिश्र ने अपने पिता एवं गुरु पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी से संबंधित एक अत्यंत रोचक संस्मरण साझा किया। ''जब हम लोग व्यवसायिक कलाकार के रूप में स्थापित हो गये और पूरी दुनिया में नाम हो गया तो एक बार मैं बीच में गया बनारस। पिताजी नीचे ही सोते थे तो हमने माताजी से कह दिया था कि बाहर जा रहे हैं आज थोड़ा देर होगा। माताजी बोली कोई बात नहीं तुम धीरे से नॉक करना, एक टक करना और मैं सुन लूँगी। उस समय कॉल बेल नहीं हुआ करता था। अब करीब बज गया था बारह, वह भी थकी हारी सो गई, चाचीजी भी सो गई, मैंने दो बार टक–टक किया कोई जवाब नहीं आया तब तक पिताजी की आवाज़ आई कौन ? तो मैंने कहा हम, पिताजी बोले अच्छा–अच्छा आ गये, आओ–आओ और आकर दरवाज़ा खोले। बोले खाना वगैरह, हम बोले हाँ खा लिए (जबकि खाना नहीं खाये), एक बड़े भाई जैसे मित्र हैं सुधीर जी, उनका नाम लिए पिताजी बोले अच्छा–अच्छा सुधीर बाबू के यहाँ गये थे। कितना बजा यार ? हमने सोचा 12:00 बजे हैं बतायेंगे तो ज़रा चिढ़ जायेंगे तो डर के मारे मुँह से झूठ निकला कि अभी 10:40 हुआ है। पिताजी बोले अच्छा–अच्छा सो जाओ, हम सोने चले गये। फिर सुबह अपना तैयार वैयार होके निकल रहे हैं। क्योंकि दो चार दिन के लिए जाते थे तो ज़रा सवेरे भी पुराने दोस्तों में अड्डेबाजी। तैयार होकर निकल रहा हूँ तो पिताजी बोले

---

[1] पं. राजन मिश्र : 'भैरव से भैरवी तक', टाइम्स म्यूज़िक सीडी

[2] पं. साजन मिश्र – अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

[3] पं. राजन मिश्र – अद्वैत संगीत (टाइम्स म्यूज़िक)

यार लगता है मेरी घड़ी बंद हो गई है। हम बोले क्यों ? वह बोले नहीं वह सवेरे से ही शायद बंद है। जब तुम बताये कि 10:40 हुआ तो हम घड़ी जाकर देखें तो उसमें 12:00 बजा था। गिरिजा देवी जी के पति थे मधुसूदन दास जी, उनका घड़ियों का काम था प्रभात वाच कम्पनी के नाम से। बोले बेटा मधुसूदन बाबू के यहाँ ज़रा दिखवा दो पुरानी घड़ी है, इंग्लिश घड़ी है, हो सकता है इसमें कुछ स्प्रिंग वगैरह ढीला हो गया हो। अब देखो हमें कैसे पकड़ रहे हैं। अब मैं भी चोर, हमने कहा देखें हम भी, चाबी वाली घड़ी, हम भी झूँठ वूठ का ऐसे लगाके देख रहे हैं। हमने कहा नहीं चल रहा है। मैं ले जाता हूँ, सफाई–वफाई करवा के ले आता हूँ। घड़ी चल तो रहा ही है। अब बाहर ले आया। जेब में रखकर अपना घूमघाम के मित्रों से मिलकर वापस ले आये। हमने कहा इसमें थोड़ा सा स्प्रिंग ढीला होने से बंद हो गया था। सफाई कर दिए, स्प्रिंग भी नया डाल दिए हैं अब बढ़िया चल रहा है। बोले हाँ यार बड़ा अच्छा किए, अब वो भी चुप हम भी चुप।

अगले दिन फिर सवेरे उसी समय तैयार होके निकलने लगे। कुर्सी पर बैठे रहते थे दरवाजे पर, बोले नाश्ता वाश्ता किये, हम बोले जी, वह बोले एक मिनट इधर आओ, इसको क्या धर्मशाला समझ रक्खे हो कि आये खाये गये। आये खाये सोये और गये। यह धर्मशाला नहीं है यहाँ रहना है तो यहाँ के अनुशासन में रहो, रोज़ संगीत सुनो और सुनाओ तब तो रहो नहीं तो निकल जाओ अपने घर दिल्ली, ये धर्मशाला नहीं है।

उस माहौल में हम लोगों का जीवन पला है तुम सोच सकते हो। अनुशासन और वह भी एक ऐसी अवस्था में जब हम लोग पहले से एस्टेब्लिश हैं और उस अवस्था में भी उनका वह टोक, लेकिन आज वह समझ में आता है। कितना बड़ा वो प्रसाद था। उनका एक–एक बात उस समय चुभता था, बहुत चुभता था। इतना कटीली बात बोलते थे ना कि ऐसा लगे बर्दाश्त के बाहर है लेकिन आज यह लगता है काश ! थोड़ा–सा उनकी बातों को और मान लिए होते तो कुछ और प्रसाद मिल गया होता, अब मिसिंग लगता है।"[1]

उपर्युक्त प्रसंग से यह बात उजागर होती है कि आप दोनों भ्राताओं की परवरिश कितने कठोर अनुशासन के बीच हुई है। माता–पिता एवं गुरु के अनुशासन को यदि कोई भी व्यक्ति जीवन में अपना लेता है तो निश्चित ही वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हुए समाज में मान–सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। पंडित जी के जीवन के अनुभव एवं विचार उनके द्वारा कही गई बातों की स्वयं पुष्टि करते हैं।

***

[1] पं. साजन जी मिश्र : वार्ता गुरुपूर्णिमा, 12.07.2014, नई दिल्ली

उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के अन्तर्गत ख्याल गायन की परंपरा के स्थापन, विकास एवं प्रचार–प्रसार में नवीन प्रतिमान स्थापित करने वाले मूर्धन्य प्रतिनिधि कलाकारों के योगदान का स्मरण करते हुए इस श्रृंखला में पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र जी के योगदान को उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया गया है।

ख्याल गायन के क्षेत्र में बीसवीं सदी में कुछ कलाकार तो इतने उच्च कोटि के हुए कि उन्होंने ख्याल गायकी की दशा एवं दिशा को बदलते हुए अत्यंत उत्कृष्ट रूप प्रदान कर दिया। इन महान् शास्त्रीय गायकों में पं. बड़े रामदास मिश्र, उ. अब्दुल करीम खाँ, पं. सवाई गंधर्व, उ. फैयाज खाँ, पं. ओम्कारनाथ ठाकुर, पं. विनायक राव पटवर्धन, पं. नारायण राव व्यास, उ. बड़े गुलाम अली खाँ, उ. अमीर खाँ, पं. डी.वी. पलुस्कर, पं. भीमसेन जोशी, पं कुमार गंधर्व, विदुषी गंगूबाई हंगल, विदुषी किशोरी अमोनकर, पं. जसराज एवं पं. राजन साजन मिश्र आदि इसी श्रेणी के गायक हैं जिन्होंने ख्याल गायन को घरानेदार परंपरा के साथ स्वचिन्तन से मौलिकता का रंग चढ़ाकर अभिनव रूप में श्रृंगारित एवं सुसज्जित कर प्रतिष्ठा के आसन पर विराजित कर दिया।

पं. राजन साजन मिश्र जी की गायन शैली में बनारस घराने की सदियों से चली आ रही परंपरा रूपी विरासत के दर्शन होते हैं। प्राचीन काल से काशी में संगीत को ईश्वर की पूजा और आराधना के रूप में देखा गया है। बनारस एक पौराणिक नगरी है अतः यहाँ धर्म के आश्रय में सदैव संगीत का उत्तरोत्तर विकास होता आया है। बनारस घराने की गौरवमयी परंपरा के निर्वहन एवं इसे चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने हेतु पं. राजन साजन मिश्र जी ने तपस्या एवं अटूट साधना से इसका सिंचन किया है। आपको गुरू के रूप में पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र, चाचा पं. गोपाल प्रसाद जी मिश्र के साथ दादा गुरू पं. बड़े रामदास जी मिश्र का भी मार्गदर्शन एवं आशीष मिला फलस्वरूप आपकी गायकी नवीन साँचे में ढलकर अद्भुत रूप में प्रस्फुटित हुई।

शोधग्रंथ को आठ भागों में विभाजित किया गया है। सर्वप्रथम वैदिक काल से वर्तमान काल तक की विविध गायन विधाएँ एवं शैलियों का परिचयात्मक विवरण तत्पश्चात ख्याल गायकी को आदर्श रूप प्रदान करने वाले प्रतिनिधि कलाकारों के सांगीतिक योगदान का उल्लेख है। दूसरे अध्याय से आठवें अध्याय तक पं. राजन साजन मिश्र जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अन्तर्गत निजी जीवन से जुड़े सभी पहलुओं को सम्मिलित करते

हुए संगीत शिक्षा, गायन शैली, रिकॉर्डिंग्स, घरानेदार परंपरा, सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार–प्रसार, संरक्षण, पुरस्कार एवं रोचक प्रसंगों आदि के माध्यम से संपूर्ण सांगीतिक योगदान संबंधी तथ्यों को वर्णित एवं संकलित किया गया है।

प्रथम अध्याय– ''शास्त्रीय गायन की विधाएँ, शैलियाँ एवं गायक कलाकार'' शीर्षक अध्याय में ज्ञात हुआ कि भारतीय संगीत का उद्भव वेदों से हुआ है। वैदिक काल में सर्वप्रथम तीन स्वर उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित में सामवेद की ऋचाओं का गान होने लगा तत्पश्चात आगे चलकर इन तीन स्वरों से ही सात स्वरों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। हमारे ऋषि मुनियों ने प्रकृति एवं धर्म के आश्रय में संगीत को नियमों में आबद्ध करते हुए उसे व्यवस्थित रूप प्रदान किया। वैदिक काल से ईश उपासना का पर्याय बनी संगीत की अजस्र धारा सामगान, स्तुतिगान, ध्रुवागान, गीतिगान, जातिगान, प्रबन्धगान, ध्रुपद–धमार, एवं ख्याल आदि भिन्न–भिन्न रूपों में प्रवाहमान रही। राग–रागिनियों के रूप में प्रवाहित यह स्वर गंगा वर्तमान में ख्याल गायकी के माध्यम से लोकप्रियता के शिखर पर आसीन हो संगीतानुरागियों का आत्मानुरंजन कर रही है।

ख्याल गायकी के आदर्श रूप में स्थापन में घरानेदार प्रतिनिधि कलाकारों का योगदान वन्दनीय है। इस शृंखला में पं. राजन साजन मिश्र जी ने परंपरा के साथ स्वचिंतन के सम्मिश्रण से ख्याल गायकी को अभिनव रूप में संगीत रसिकों के सम्मुख रखा। इस युगल जोड़ी के सांगीतिक कार्यो को समझने के लिए पहले इनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का गहन अध्ययन आवश्यक है।

द्वितीय अध्याय– हमारे देश में भारतीय शास्त्रीय संगीत रूपी विरासत को संजोए रखने में घरानेदार कलाकारों ने विशेष योगदान दिया है। प्रत्येक घराने ने सुदृढ परंपराओं के निर्वहन के साथ गायकी पर मौलिकता का रंग चढ़ाकर उसे परिष्कृत रूप दिया हैं। बीसवीं सदी में ध्वनि प्रसारक यंत्रों के माध्यम से आई क्रांति ने गायन शैलियों के आपसी आदान–प्रदान के द्वार खोलते हुए कलाकारों को व्यापक एवं उदारवादी दृष्टिकोण अपनाने हेतु प्रेरित किया।

पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र बनारस घराने की समृद्ध परंपरा के दैदीप्यमान नक्षत्र रूपी ऐसे कलाविद हैं जो संगीतरूपी आकाश में निरन्तर प्रकाशमान हैं। पं. राजन साजन मिश्र जी के विराट व्यक्तित्व के समग्र अध्ययन हेतु व्यक्तित्व निर्माण में सहायक रहे विभिन्न कारकों से संबंधित तथ्यों को गहन अध्ययन, चिन्तन, विश्लेषण, विवेचन एवं प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा जानने में सफल हो सका। आपके व्यक्तित्व के अन्तर्गत प्रारम्भिक जीवन,

पारिवारिक स्थिति, संगीतात्मक पर्यावरण/परिवेश, वंश, स्वभाव, रहन–सहन, संगीत शिक्षा, जीवन दर्शन व अन्य रूचियाँ आदि विषयों पर सारगर्भित वार्ता एवं अध्ययन द्वारा गूढ़ तथ्यों के संकलन का सौभाग्य शोधार्थी को प्राप्त हुआ है। प्रत्यक्ष चर्चा एवं जीवन संस्मरणों के आधार पर मैंने पाया कि बाल्यकाल से मिलने वाले कुलीन संस्कार एवं विद्यालयीन शिक्षा के दौरान मिले मार्गदर्शन ने आपके जीवन को श्रेष्ठ आचार–विचार, अनुशासन, कर्मठता आदि जीवन मूल्यों से सिंचित कर सुदृढ चरित्र निर्माण द्वारा आदर्श कलाकार बनने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी काशी में स्थित संगीत गढ़ कबीर चौरा मोहल्ले में आप दोनों भ्राताओं का लालन–पालन एवं शिक्षा–दीक्षा होने के कारण आपके रोम–रोम में संगीत रच बस गया।

शोधकार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ कि आपके पिताजी पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र और चाचाजी पं. गोपाल जी मिश्र अपने जमाने के शीर्षस्थ सारंगी वादक होने के कारण परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सुदृढ थी। आप दोनो भ्राताओं को प्रेमपूर्वक मिलजुलकर संयुक्त परिवार में रहने के संस्कार अपने पूर्वजों से मिले। उल्लेखनीय है कि उस संयुक्त परिवार की अवधारणा का आज भी आप पालन कर रहे हैं।

बनारस में रहते हुए पं. राजन मिश्र जी द्वारा स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आपके चाचा पं. गोपाल मिश्र जी द्वारा दोनों भ्राताओं को दिल्ली बुला लिया गया। यहाँ आप चाचा पं. गोपाल मिश्र जी और सतगुरु जगजीत सिंह जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से प्रगति पथ पर अग्रसर होते चले गए। वर्तमान में आप नई दिल्ली स्थित आवास पर पारिवारिक सुख का आनन्द लेते हुए परमात्मा द्वारा सौंपे गये सांगीतिक दायित्व का कुशल निर्वहन कर रहे हैं।

काशी के संगीतमय पर्यावरण में जहाँ घर में निरन्तर गुंजायमान स्वरलहरियों के साथ–साथ कबीर चौरा मोहल्ले में घरानेदार ख्यातनाम कलाकारों को प्रत्यक्ष गाते बजाते सुनने के अनुभव, देवालयों में होने वाली संगीत की गोष्ठियाँ एवं प्रतिष्ठित कार्यक्रमों में भागीदारी से आपकी गायकी निखरती चली गई। शोधकार्य के दौरान संबंधित संस्मरणों से ज्ञात हो सका कि पं. राजन राजन मिश्र जी को बनारस के साथ–साथ देश के सभी वरिष्ठ एवं सिद्ध कलाकारों का सानिध्य एवं आशीष मिला।

यद्यपि आपका घराना मूलतः सारंगी का घराना रहा है लेकिन आप दोनों भ्राताओं की रूचि गायन में होने के कारण आपके पिता पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी और चाचा पं. गोपाल मिश्र जी ने आपको शास्त्रीय गायन की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया। अल्प समय

के लिए आपको गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी का भी आशीर्वाद मिला। वंशानुगत परंपरा के फलस्वरूप आपको विरासत में समृद्ध गायन शैली एवं बंदिशों का विशाल भंडार मिला। आपका संबंध बनारस घराने के प्रख्यात सारंगी वादक पं. रामबख्श मिश्र जी की वंशानुगत परम्परा से है।

उच्च संस्कारों से सुशोभित होने के कारण आप दोनों भ्राताओं का स्वभाव सरल, शांत, गंभीर, विनम्र, शालीन और मनोविनोद से परिपूर्ण है। बनारस की संस्कृति से ओतप्रोत आपकी जीवन शैली और वाकपटुता श्रोताओं पर गहरा प्रभाव छोडती है। आध्यात्मिक चिन्तन के अन्तर्गत आचार्य रजनीश 'ओशो' के विचारों का प्रभाव आपके व्यक्तित्व पर स्पष्ट दिखाई देता है। संगीत के साथ–साथ खेलकूद, कसरत, अखाड़ेबाजी, सैरसपाटा, साहित्य पठन किस्से–कहानी एवं फिल्में देखने में भी आपकी बहुत रूचि है।

पं. राजन साजन मिश्र जी ने गायन शिक्षा के अन्तर्गत रियाज़ की तकनीक एवं बंदिशों का प्रस्तुतीकरण आदि विषयों पर अपने अनुभव एवं अमूल्य विचारों को शोध में साझा कर साधनारत विद्यार्थियों एवं कलाकारों का मार्गदर्शन किया है। शोधकार्य के दौरान ज्ञात हुआ कि आप दोनों भ्राताओं को संगीत शिक्षा प्रदान करने में सबसे बड़ा योगदान विद्वान पिता पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी का है। पिताजी द्वारा तपस्वी के रूप में जीवन पर्यन्त की गई साधना एवं अनुभव का लाभ आपको सार रूप में प्राप्त हुआ। अतः निष्कर्षतः घरानेदार तालीम, सच्ची लगन, कठोर साधना, चिन्तन एवं स्वयं के दृष्टिकोण के सम्मिश्रण से गायन शैली अभिनव एवं आदर्श रूप में विकसित हुई।

तृतीय अध्याय– 'पं. राजन साजन मिश्र का कृतित्व'' अध्याय के अंतर्गत मैंने पाया कि आपने विद्वतापूर्ण, विलक्षण एवं चित्ताकर्षक गायन शैली का प्रचार–प्रसार ध्वन्यांकन के माध्यम से करते हए प्रबुद्ध जनमानस पर अपनी अमिट छाप छोड़ी।

सभी नामी कंपनियों द्वारा जारी ऑडियो कैसेट, सी.डी., डी.वी.डी. आदि के माध्यम से आपके शास्त्रीय गायन को सुनने वाले संगीत रसिकों का बहुत बड़ा वर्ग तैयार हो गया। आपका पहला ऑडियो कैसेट सी.बी.एस. ग्रामोफ़ोन रिकॉर्डस की 'स्वर श्री' शृंखला के अन्तर्गत निकला। इस रिकॉर्डिंग के माध्यम से सुधी श्रोताओं एवं गुणीजनों द्वारा आपको अपार ख्याति एवं प्रशंसा मिली। वर्ष 1984 से जारी हुआ रिकॉर्डिंग का यह सिलसिला अनवरत जारी रहा। श्लाघापूर्ण गायकी एवं आकर्षक व्यक्तित्व के कारण जहाँ आपको भरपूर सम्मान एवं प्रसिद्धि मिली वहीं आपको देश के सभी बड़े एवं मूर्धन्य कलाकारों का स्नेहाशीष भी प्राप्त हुआ। बहुत बड़ी संख्या में गायी गई प्रचलित–अप्रचलित रागों का ध्वन्यांकन भारतीय संगीत की निधि है जिनका सम्पूर्ण विवरण इस अध्याय में दिया गया है।

शोध में यह तथ्य उभर कर आया कि आपकी गायी गई बनारस घराने की बंदिशों के साथ स्वरचित बंदिशे भी गायन शैली एवं प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से विलक्षण प्रतीत होती हैं। बनारस घराने की रचनात्मक विशेषताओं से आबद्ध आपकी बंदिशों में उच्च कोटि का साहित्य, रागात्मक सौन्दर्य, ताल एवं लय का विद्वतापूर्ण प्रयोग, शब्दों की भावपूर्ण अभिव्यक्ति, सभी सांगीतिक अवयवों का संतुलित प्रयोग एवं ख्याल में ही अन्य गायन शैलियों के अंगों–उपांगों का समावेश आदि ऐसी विशेषताएँ हैं जो बनारस घराने की स्वतंत्र पहचान को इंगित करती हैं। आपके द्वारा विविध घरानों एवं महान् कलाकारों की प्राचीन एवं प्रचलित बंदिशों को भी मौलिकता का रंग चढ़ाकर बखूबी प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में आपके द्वारा गायी गई बंदिशों का लिपिबद्ध रूप भी प्रस्तुत किया गया है।

पं. राजन साजन मिश्र जी ने अपने युगल गायन में मुख्यतः ख्याल, टप्पा, तराना और भजन, इन चार शैलियों को सम्मिलित किया है। पं. राजन मिश्र जी से ज्ञात हुआ कि बनारस घराने पर ठुमरी का ठप्पा लगा दिए जाने के कारण उन्होंने अपने गायन में ठुमरी को प्रमुखता से सम्मिलित नहीं किया। इनके मतानुसार बनारस घराने की ख्याल गायकी को स्थापित एवं प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से यह कदम उठाया गया। यद्यपि उपशास्त्रीय गायन भी आप उतने ही प्रभावशाली, मनमोहक एवं हृदयग्राही रूप में प्रस्तुत करते हैं। आपने कुछ चुनिंदा रिकॉर्डिंग्स में उपशास्त्रीय गायन की भी अप्रतिम प्रस्तुति दी है।

आपके घराने में बुजुर्गो के समय से टप्पा अंग से सारंगी वादन एवं गायन करना सांगीतिक शिक्षा का अभिन्न अंग रहा है फलस्वरूप आप दोनों भ्राता भी सर्वाधिक कठिन समझी जाने वाली टप्पा गायकी को सहजता से अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। युगल गायकी के माध्यम से आपने ख्याल, तराना एवं टप्पा के साथ–साथ भजन गायन में भी विशेष लोकप्रियता अर्जित की। शास्त्रीय शैली में गाए गए भजन व्यवसायिक मानसिकता से परे होने के कारण आत्मिक आनन्द की अनुभूति कराते हैं। इतना ही नहीं पार्श्व गायन के क्षेत्र में भी आपने अहम् भूमिका निभाई है। वर्ष 1985 में निर्मित चलचित्र 'सुरसंगम' में पार्श्व गायन कर आपने अपार सफलता एवं लोकप्रियता अर्जित की। इसके अतिरिक्त वर्ष 2004 में फिल्म 'वो तेरा नाम था' में भी राग भैरवी में गाई ठुमरी के माध्यम से श्रोताओं से खूब दाद पाई।

अतः चारों पट की गायकी में पारंगत पं. राजन साजन मिश्र जी ने पांडित्यपूर्ण मधुकरी गायन शैली के अन्तर्गत ख्याल, टपख्याल, टप्पा, तराना, ठुमरी, दादरा, चैती, भजन आदि की भावपूर्ण एवं हृदयग्राही प्रस्तुतियों के माध्यम से भारतीय संगीत की पताका को

देश–विदेश में फहराकर सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार का पुनीत कार्य किया है। आप जैसे सिद्धहस्त कलाकारों के अभिष्ट प्रयोजन एवं योगदान के फलस्वरूप भारतीय संगीत अपनी आध्यात्मिकता को सम्पूर्ण विश्व में प्रमाणित कर रहा है।

चतुर्थ अध्याय– 'बनारस की सांगीतिक परंपरा' शीर्षक अध्याय के अंतर्गत मैं बनारस की पृष्ठभूमि का ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संदर्भो में अध्ययन करते हुए बनारस की संगीत परंपरा एवं संगीत जगत में योगदान संबंधी तथ्यों को प्रकट कर सका। शोधकार्य के माध्यम से मैं पं. राजन साजन मिश्र जी की वंशानुगत परंपरा और गायन शैली की विशेषताओं को तथ्यात्मक विश्लेषण एवं विवेचन द्वारा शाब्दिक अभिव्यक्ति प्रदान कर सका।

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि वाराणसी वैदिक एवं पौराणिक काल से ही धर्म, कला, साहित्य, व्यापार, शिल्प एवं संगीत की दृष्टि से काफी उन्नत रही है। भगवान विश्वनाथ की पावन नगरी में माँ गंगा के तट पर स्थिति असंख्य सुन्दर एवं कलात्मक मंदिर, मठ और घाट काशी के सुनहरे अतीत की गाथा कहते हैं। काशी के मंदिरों, देवालयों एवं आश्रमों में वर्ष पर्यन्त चलने वाले विविध उत्सव जैसे जन्मोत्सव, वार्षिक श्रृंगार, झुलनोत्सव, लोक उत्सव आदि के अन्तर्गत चलने वाली संगीत परंपराओं के कारण यहाँ की कला, कलाकार और श्रोता परिपक्व होकर सिद्ध होते चले गये।

काशी में ख्याल गायन की परंपरा में पं. ठाकुर दयाल जी मिश्र के घराने का प्रमुख योगदान रहा है। इनके पियरी घराने के पितामह दिलाराम जी मिश्र, चिंतामणी जी मिश्र और जगमन जी मिश्र के समय तक छन्द, प्रबन्ध, विष्णुपद एवं ध्रुपद गायन की परंपरा रही है। ठाकुर दयाल मिश्र जी के सदारंग अदारंग जी के सम्पर्क में आने के कारण गायन शैलियों का आदान प्रदान हुआ। उल्लेखनीय है कि काशी के पं. चिंतामणी मिश्र जी को द्वितीय ग्वालियर घराने के संस्थापक होने का गौरव भी प्राप्त है। इसी प्रकार से काशी के प्रसिद्धू मनोहर मिश्र जी का जब शौरी मियाँ से परिचय एवं घनिष्टता हुई तो गायन शैलियों के आदान–प्रदान के कारण काशी में टप्पा शैली से गायन वादन की परंपरा भी समाहित हो गई। यहॉ के कलाकारों ने ठुमरी गायकी को भी सजाते सँवारे हुए अनुपम रूप प्रदान कर सम्पूर्ण विश्व में लोकप्रिय बना दिया।

बनारस के संगीत साधकों में विविध घरानों के वंशजों एवं शिष्यों–प्रशिष्यों को मुख्यतः चार भागों में मान्यता प्राप्त थी– तेलियाना घराना, पियरी घराना, शिवदास प्रयाग

मिश्र घराना और सम्पूर्ण कबीर चौरा मोहल्ला। यहाँ के कलाकारों ने भारतीय संगीत को समृद्ध बनाने में अपरिमित योगदान दिया है। पं. राजन साजन जी मिश्र बनारस घराने की गौरव गाथा बन नक्षत्री कलाविदों के रूप में सम्पूर्ण संगीत जगत को आलोकित कर रहे हैं।

पं. राजन साजन मिश्र जी का संबंध बनारस के कबीर चौरा मोहल्ले से है जहाँ बनारस के दो तिहाई लब्ध प्रतिष्ठित कलाकारों एवं साधकों का निवास स्थान था। आपके घराने की परंपरा का विवरण परम्पितामह पं. रामबख्श मिश्र जी के समय से मिलता है। पं. रामबख्श मिश्र जी से पं. गोपाल मिश्र जी तक इस घराने में सारंगी वादन की परंपरा निरंतर जारी रही। इस घराने में लगभग सभी कलाकार लोकप्रिय एवं गुणी सारंगी वादक एवं गायक हुए हैं। टप्पा शैली से सारंगी बजाना इस घराने की विशेषता रही है। पं. राजन साजन मिश्र जी की रूचि सारंगी वादन के स्थान पर गायन में होने के कारण आपके पिता पं. हनुमान प्रसाद मिश्र जी और चाचा पं. गोपाल मिश्र जी ने आपको गायन की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया। सौभाग्यवश आपको गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी मिश्र का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। शोधकार्य में आपके घराने की वंशानुगत परंपरा के अन्तर्गत पं. रामबख्श मिश्र, पं. बडे गणेश मिश्र, पं. शीतल मिश्र, पं. सुरसहाय मिश्र, पं. गौरीशंकर मिश्र, पं. हरिशंकर मिश्र, पं. हनुमान प्रसाद मिश्र, पं. गोपाल मिश्र, पं. राजन साजन मिश्र, पं. रितेश रजनीश मिश्र और पं. स्वरांश मिश्र का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके सांगीतिक योगदान पर प्रकाश डाला गया है। निष्कर्षतः यह बात सामने आयी कि पं. राजन साजन मिश्र जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में बनारस के सांगीतिक परिवेश एवं आनुवांशिक परंपरा ने प्रमुख भूमिका निभाई। भ्राताद्वय बनारस घराने की लगभग 300 वर्षो से चली आ रही गौरवशाली परंपरा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

पं. राजन साजन मिश्र जी को गायन शैली को उन्नत करने हेतु वंशानुगत घरानेदार परंपरा का लाभ तो मिला ही लेकिन साथ ही आपके पिताजी एवं चाचाजी को देश के दिग्गज एवं शीर्षस्थ कलाकारों के साथ सारंगी की संगत का अनुभव होने के कारण उनके पास दिग्गज एवं सिद्ध कलाकारों की गायकी का निचोड़ भी था। इसके अलावा आपको स्वयं को तो पं. बड़े रामदास जी का सानिध्य अल्प समय के लिए मिला लेकिन पिताजी एवं चाचाजी द्वारा भी पं. बड़े रामदास जी से प्राप्त की गई संगीत शिक्षा आपको विरासत में मिली। परंपरागत शिक्षा, मौलिक चिन्तन एवं विश्लेषण के साथ रचनात्मक, सृजनात्मक एवं आध्यात्मिक संकल्पनाओं से उद्भूत आपकी गायन शैली में राग की क्रमबद्ध बढ़त, आलाप, बोलबाट, सरगम, तान आदि के प्रस्तुतीकरण में संतुलन, भावपूर्ण

स्वर लगाव, श्रेष्ठ साहित्य का चयन, शब्दों का स्पष्ट उच्चारण एवं भावानुरूप अभिव्यक्ति, राग शुद्धता का निर्वहन, ताल एवं लय का विद्वतापूर्ण प्रयोग, राग में निहित अलंकरणों का संतुलित प्रयोग, प्रार्थनाभाव से प्रस्तुतिकरण, युगल गायन में सुन्दर समन्वय, मधुरता एवं तैयारी का अद्भुत संगम, ख्याल में ध्रुपद–धमार, ठुमरी, टप्पा आदि की आंगिक विशेषताओं का दिग्दर्शन आदि गुणात्मक विशेषताओं के सम्मिलित होने के कारण यह आदर्श रूप में परिभाषित की जाती है। ख्याल के साथ–साथ तराना एवं टप्पा गाने में आपको विशेष सिद्धी प्राप्त हैं। टपख्याल एवं टपतराना की दुर्लभ बंदिशों का प्रस्तुतीकरण आपके घराने की विलक्षणता को दर्शाता है। भजन गायन की शैली भी आपकी अद्भुत है। आपके भजन आत्मिक शांति प्रदान करते हुए परमात्मा की दिव्य शक्ति की अनुभूति के साथ परम् आनन्द का भाव प्रतिपादित करते हैं। यद्यपि आपने ठुमरी यदा कदा ही प्रस्तुत की है लेकिन चुनिंदा रिकॉर्डिंग्स के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि बनारस की परंपरा के अनुरूप आप ठुमरी, दादरा, चैती आदि उपशास्त्रीय शैलियों के गायन में भी समान रूप से निष्णात हैं। अतः पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र जी की गायनशैली सम्बन्धी विविध पहलुओं के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आपने विद्वतापूर्ण एवं मनमोहक शास्त्रीय गायकी के बल पर देश के दिग्गज ख्याल गायकों में अपना स्थान बना देश विदेश में अपार ख्याति अर्जित की है।

पंचम अध्याय– 'गायन कार्यक्रम एवं सम्मान' शीर्षक अध्याय में निष्कर्ष रूप में यह ज्ञात हुआ कि पं. राजन साजन मिश्र को शास्त्रीय गायकी के क्षेत्र में अवसर एवं मंच प्रदान करने की दृष्टि से आकाशवाणी एवं दूरदर्शन का विशेष योगदान रहा है। सत्तर के दशक में जब आप दोनो भ्राताओं की सांगीतिक यात्रा आरम्भ हुई तब वर्ष 1973 में आपके चाचा पं. गोपाल मिश्र जी ने आपको आकाशवाणी के ऑडिशन हेतु दिल्ली बुला लिया। दिल्ली में हुए ऑडिशन में आपके युगल गायन की प्रस्तुति अत्यन्त प्रभावशाली रहने के कारण आपको न केवल ऑडिशन समिति के गुणी सदस्यों का आशीष मिला अपितु प्रथम बार में ही 'ए ग्रेड' में सूचीबद्ध किया गया। आकाशवाणी दूरदर्शन पर कार्यक्रमों का प्रसारण वर्ष 1974 से आरम्भ हो गया। वर्ष 1982–84 में आकाशवाणी द्वारा आपको 'टॉप ग्रेड' में सूचीबद्ध किया गया। आकाशवाणी के अभिलेखागार में आपकी रिकॉर्डिंग्स का विशाल संग्रह उपलब्ध है। अतः आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के माध्यम से गायकी को प्रचारित–प्रसारित करते हुए आप संगीत रसिकों के हृदय पर गायकी की अमिट छाप छोड़ते चले गये।

पं. राजन साजन मिश्र जी की युगल गायकी का सफर बनारस के संकट मोचन मंदिर से आरम्भ होकर देश–विदेश में आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से अनवरत जारी रहा

है। शोधकार्य के दौरान ज्ञात हुआ कि आपकी भावपूर्ण गायनशैली एवं साधना का प्रभाव विदेशी श्रोताओं पर भी खूब पड़ा। भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्वव्यापी पहचान दिलाने में प्रमुख भूमिका निभाने वाले कलाकारों में आपका नाम बहुत आदर से लिया जाता है। वर्ष 2017–18 में ''वर्ल्ड म्यूज़िक टूर–भैरव से भैरवी तक'' के माध्यम से 13 देशों में 54 कंसर्ट का सफल एवं प्रभावी आयोजन सम्पन्न हुआ। पं. राजन साजन मिश्र जी ने भारतीय संगीत रूपी अनमोल धरोहर की महक को सम्पूर्ण विश्व में बिखेरते हुए विश्व शांति का संदेश प्रसारित किया।

पं. राजन साजन मिश्र जी को उनके सांगीतिक योगदान हेतु अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। आपको भारत सरकार द्वारा आपके व्यक्तिगत गुणों के लिए वर्ष 2007 में पद्म भूषण सम्मान प्रदान किया गया। आपको मिलने वाले पुरस्कारों में कुमार गंधर्व सम्मान, राष्ट्रीय तानसेन सम्मान, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, यशभारती सम्मान, संस्कृति सम्मान, डी. लिट. (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) आदि प्रमुख पुरस्कार सम्मिलित हैं। अमेरिका के वाल्टीमोर शहर के लिए सम्मानसूचक नागरिकता का सम्मान भी आपको प्रदान किया गया है। शोधकार्य में देश के ख्यातनाम कलाकारों द्वारा पं. राजन साजन मिश्र जी के बारे में प्रकट किए गए विचारों को भी संकलित किया गया है।

षष्ठम अध्याय– 'सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण' शीर्षक अध्याय में मैंने पाया कि आपने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण, व्याख्यान एवं प्रदर्शन के साथ–साथ संगीत के उन्नयन हेतु संलिप्त संस्थाओं में सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर सांस्कृतिक विरासत के प्रति जनरूचि जाग्रत करते हुए संरक्षण प्रदान किया है।

बनारस घराने की सांगीतिक विरासत को भावी पीढी में हस्तांतरण हेतु आप उदार भाव से प्रतिभावान छात्र–छात्राओं एवं साधकों को गुरु–शिष्य परंपरा पर आधारित शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। इस पावन उद्देश्य को ध्यान में रखकर देहरादून में गुरुकुल का संचालन किया जा रहा है। पं. राजन साजन मिश्र जी की शिष्य परंपरा में उनके पुत्र पं. रितेश मिश्र, पं. रजनीश मिश्र एवं पं. स्वरांश मिश्र सहित देश–विदेश में साधनारत अनेक शिष्य हैं जो बनारस घराने की कीर्ति को चहुँ ओर फैला रहे हैं।

युवा पीढी को भारतीय कलाओं के सौंदर्य एवं मूलरूप से परिचय करवाने के उद्देश्य से आपने स्पिक मैके जैसी संस्थाओं के माध्यम से आयोजित ''लेक्चर एण्ड डेमोन्स्ट्रेशन'' कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाकर संगीत के प्रति जनचेतना जाग्रत की है। विदेशों में

कार्यरत 'वर्ल्ड म्यूजिक इंस्टीट्यूट' एवं 'एशियन म्यूजिक सर्किट' जैसी अनेक संस्थाओं के माध्यम से आपने भारतीय संगीत को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। देश में शास्त्रीय संगीत के उत्थान हेतु कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में आप पूर्ण निष्ठा एवं कर्तव्य बोध से पथ प्रदर्शक के रूप में सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आपने विभिन्न टी. वी. चैनल्स के द्वारा आयोजित संगीत प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका का निर्वहन कर नवोदित प्रतिभाओं का मार्गदर्शन किया है। उल्लेखनीय है कि आध्यात्मिक गुरु श्री श्रीरविशंकर जी द्वारा संचालित 'द आर्ट ऑफ लिविंग' के माध्यम से पं. राजन साजन मिश्र जी के नेतृत्व में 'अन्तर्नाद' कार्यक्रम के अन्तर्गत 2750 शास्त्रीय गायक–गायिकाओं ने राग बसंत बहार की बंदिश गाकर विश्व रिकॉर्ड रच दिया। इस उपलब्धि को 'द गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में दर्ज किया गया है।

सप्तम अध्याय– 'शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग' शीर्षक अध्याय में मौलिक चिन्तन एवं मान्यता संबंधी तथ्यों को संग्रहित करने का प्रयास किया है। पं. राजन साजन मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के आधार पर संगीत साधना, स्वर लगाव, स्वरों एवं रागों के प्रति कलाकार का दृष्टिकोण, घरानेदार परंपरा के अनुसरण में व्यापक दृष्टि, मूर्धन्य कलाकारों का सांगीतिक विकास में योगदान, संगीत का सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पक्ष, प्रकृति का सुरों की अवस्था पर पड़ने वाला प्रभाव, संगीत एवं प्रकृति का तादात्म्य, रागों में अन्तःस्थित भावों के प्रकटीकरण हेतु किए गए रचनात्मक प्रयोग एवं अवधारणा आदि विषयों पर उनके चिन्तन, विश्लेषण एवं दृष्टिकोण को व्याख्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्षतः यह कहना उचित होगा कि पं. राजन साजन मिश्र जी ने ख्याल गायन के मूल स्वरूप को अक्षुण्ण रखते हुए उसे स्वचिंतन एवं अन्वेषण द्वारा नवीन स्वरूप में ढाला है। आपने रागों के विशेष संदर्भ में स्वरों के प्रयोग, उच्चारण, वॉइस मॉड्यूलेशन, बंदिशों का साहित्य अनुरूप प्रस्तुतीकरण एवं गायन तकनीक आदि संदर्भो में नवीन एवं रचनात्मक प्रयोगों द्वारा गायनशैली को आदर्श रूप प्रदान किया है।

अष्ठम अध्याय– 'कलाकार द्वय से जुड़े रोचक एवं प्रेरक प्रसंग' शीर्षक अध्याय के अन्तर्गत मुझे रोचक संस्मरण एवं घटनाओं के माध्यम से निजी एवं सार्वजनिक जीवन से जुड़े रोचक तथ्यों को जानने का अवसर मिला। युवा अवस्था के दौरान पं. राजन मिश्र जी ने घर–घर जाकर संगीत की ट्यूशन के माध्यम से निजी आवश्यकताओं की पूर्ति की संघर्षपूर्ण दास्तां का भी उल्लेख किया। पिताजी पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र के कठोर अनुशासन एवं नियम संबंधी रोचक एवं प्रेरक संस्मरण का पं. साजन मिश्र जी ने ज़िक्र

करते हुए बड़े–बुजुर्गो की शिक्षाओं को जीवन में उतारने का संदेश दिया। जब आपकी ख्याति चहुँ ओर फैल गई तो देश–विदेश में अपने से वरिष्ठ कलाकारों के साथ भी आपके कार्यक्रम आयोजित होने लगे। आपको देश के नामचीन एवं दिग्गज कलाकारों का सिर्फ प्यार एवं आशीर्वाद ही नहीं मिला अपितु कार्यक्रमों के दौरान देश के शीर्षस्थ कलाकारों के साथ रोचक संस्मरण भी घटित हुए। कार्यक्रमों की प्रस्तुति में पं. बिरजू महाराज जी (महान् कत्थक नर्तक) और पं. किशन महाराज जी (महान् तबला वादक) के साथ आपने गायन, वादन एवं नृत्य का संयुक्त रूप में प्रस्तुतिकरण कर अपार प्रशंसा अर्जित की। व्यक्तिगत गुणों के कारण अनेक कलाकारों ने भी आपके संगीत रूपी खजाने को समृद्धि प्रदान करने में योगदान दिया।

'शास्त्रीय गायकी के संवाहक पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र–समग्र अध्ययन' शीर्षक के शोधनोत्तर मैंने दोनों कलाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी सम्पूर्ण तथ्यों को व्यक्तिगत चर्चा, साक्षात्कार, रिकॉर्डिंग्स, वृत्तचित्र, चलचित्र एवं प्रत्यक्ष अवलोकन आदि माध्यमों से उजागर करने का प्रयास किया है। यद्यपि पं. राजन साजन मिश्र जी के विराट व्यक्तित्व को शोधकार्य में समेटना एक दुष्कर कार्य था लेकिन यह सब आप दोनों के सहयोग एवं आशीष का ही प्रतिफल है। आपके द्वारा शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में की गई शोध एवं अन्वेषणात्मक तथ्यों को मेरे द्वारा प्रकट करने का प्रयास किया गया है। मेरा विश्वास है कि इस शोध कार्य के माध्यम से सम्पूर्ण संगीत जगत लाभान्वित होगा एवं हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षण प्रदान किया जा सकेगा।

***

शोध सारांश

शोध–सारांश

उत्तर भारतीय संगीत में ख्याल गायन की परंपरा को बीसवीं सदी के घरानेदार प्रतिनिधि कलाकारों ने अपनी तपोनिष्ठ साधना एवं कल्पना शक्ति द्वारा श्रेष्ठतम रूप में विकसित किया है। ख्याल गायकी की यह विशेषता है कि वह गायक को शास्त्र की परिधि में सृजनात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करती है। प्रतिभाशाली गायक बंदिश के माध्यम से राग को शिल्पी की भाँति तराशते हुए नवीन रूप में अभिव्यक्त करता है। राग के प्रस्तुतीकरण पर गायक की प्रतिभा, शिक्षा एवं रचनात्मक क्षमता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। अलग–अलग कलाकार जब एक ही राग को प्रस्तुत करते हैं तो घराने की विशिष्टता, व्यक्तिगत रचना क्षमता, साधना एवं चिन्तन के आधार पर संगीत की सौंदर्य प्रणाली में भेद स्पष्ट दिखाई देता है। यह सौन्दर्यगत भेद ही कलाकार के गुण वैशिष्ट्य को उजागर करते हुए उसे गुणी श्रोताओं में लोकप्रिय बनाता है।

भारतीय संगीत में घराने पुरानी गुरुकुल व्यवस्था के प्रतीक हैं। हिन्दुस्तानी संगीत के प्रमुख मान्य घराने हैं– ग्वालियर, आगरा, किराना, जयपुर एवं अल्लादिया खाँ घराना। इन सभी घरानों का प्रवर्तक कोई प्रमुख कलाकार रहा है लेकिन एक घराना ऐसा भी है जहाँ यह घराना पद्धति एक सामुदायिक घराने के रूप में विकसित हुई वह है बनारस घराना। बनारस की घराना पद्धति का विकास व्यक्तिवादी न होकर समुदायवादी रूप में हुआ। अत्यंत प्राचीन घराना होने के कारण एक ही घराने के कालान्तर में अनेक उपघराने विकसित हो गये। यद्यपि बनारस घराने के योगदान को विस्मृत करते हुए उसे प्रमुख घरानों में ग्रन्थों में स्थान न देना अन्यायपूर्ण प्रतीत होता है। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि द्वितीय ग्वालियर घराने के संस्थापक बनारस घराने के चिंतामणी मिश्र जी ही थे। वर्तमान में देश के लगभग सभी घरानों के प्रतिनिधि कलाकारों ने ख्याल गायकी को शैलीगत विशेषताओं से विभूषित करते हुए अपनी मौलिक एवं निजी पहचान बनाई है। इन्हीं प्रतिनिधि कलाकारों में बनारस घराने के पं. राजन साजन मिश्र जी ने विलक्षण प्रतिभा एवं गायकी के द्वारा स्वयं को स्थापित करते हुए ख्याल गायन में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करते हुए श्रोताओं के हृदयतल पर अमिट छाप अंकित की है।

बनारस घराने की गौरवमयी परंपरा के निर्वहन एवं चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने हेतु पं. राजन साजन मिश्र जी ने अपनी तपस्या एवं अटूट साधना से कला का सिंचन किया है।

आप दोनों भ्राताओं ने गायन की शिक्षा पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र और चाचा पं. गोपाल जी मिश्र से प्राप्त की। आपको बनारस के संत संगीतज्ञ गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी मिश्र का शिष्यत्व ग्रहण करने का सौभाग्य भी मिला। वाराणसी के भक्तिमय वातावरण में भगवान काशी विश्वनाथ और माँ गंगा की कृपा से विरासत में मिले उत्कृष्ट कोटि के सांगीतिक परिवेश, शिक्षा, संस्कार, लगन, परिश्रम, साधना एवं स्वचिंतन के साथ व्यापक दृष्टिकोण के फलीभूत आपकी गायकी नवीन साँचे में ढलकर प्रस्फुटित हुई। आकाशवाणी, दूरदर्शन, संगीत सम्मेलनों एवं अनगिनत ध्वन्यांकन आदि के माध्यम से धीरे–धीरे आपने गुणीजनों एवं संगीत रसिकों के हृदय पर अमिट छाप छोड़कर शीर्षस्थ ख्याल गायकों में अपना स्थान बना लिया। भारतीय संगीत की कीर्ति पताका को सम्पूर्ण विश्व में फहराकर आपने देश का गौरव बढ़ाया है।

पं. राजन साजन मिश्र जी के घराने में चारों पट की गायकी की परंपरा रही है। आप ख्याल के साथ–साथ टपख्याल, टप्पा, तराना, टपतराना, ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती एवं भजन आदि सभी शैलियों को गाने में निष्णात है। आपकी विद्वतापूर्ण गायन शैली में घरानेदार परंपरा के साथ तीनों सप्तकों में स्पष्ट एवं मधुर आवाज़, युगल गायन में समन्वय, प्रार्थना भाव, स्पष्ट उच्चारण, शब्द साहित्य के अनुरूप भावात्मक स्वर संयोजन, स्वर लय एवं ताल का विद्वतापूर्ण प्रयोग, रागों की शुद्धता एवं अन्तर्निहित सौंदर्य का प्रकटीकरण, तीनों सप्तकों में राग की विस्तृत बढ़त, सांगीतिक अवयवों का संतुलित प्रयोग, तानों में विविधता, उत्कृष्ट कोटि की बंदिशें एवं ख्याल में ही अन्य गायन शैलियों की आंगिक विशेषताओं का दिग्दर्शन आदि अनेकानेक विशेषताओं के समाहित होने के कारण यह आत्मिक आनंद की अनुभूति कराते हुए आपको देश के दिग्गज गायकों की श्रेणी में खड़ा करती है। गायन में चिन्तनशील, सृजनात्मक एवं रचनात्मक दृष्टिकोण के फलस्वरूप आपकी गायकी अभिनव रूप में विकसित हुई है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति की गई समर्पित सेवा एवं योगदान के लिए आपको पद्म भूषण, राष्ट्रीय तानसेन सम्मान, पं. कुमार गंधर्व सम्मान, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार सहित अनेक अलंकरणों से विभूषित किया गया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार, संवर्धन एवं संरक्षण हेतु आपके प्रयासों की जितनी सराहना की जाए कम है।

अतः पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र जी की विद्वतापूर्ण आदर्श गायन शैली संबंधी तथ्यात्मक अन्वेषण से संपूर्ण संगीत जगत् लाभान्वित होगा। यह शोध कार्य आपके व्यक्तित्व

एवं पांडित्यपूर्ण गायन शैली के गर्भ में छुपे अनुत्तरित प्रश्नों के समाधान खोजने में सहायक सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध के अध्ययन का विषय ''शास्त्रीय गायकी के संवाहक पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र– समग्र अध्ययन'' है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन की परंपरा के अंतर्गत ख्याल गायकी को उत्कृष्ट एवं अभिनव रूप प्रदान करने में पं. राजन साजन मिश्र जी के योगदान को उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत अध्ययन एवं शोध के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया गया है। समग्र अध्ययन हेतु जानकारी का संग्रहण कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों में उपलब्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, ध्वन्यांकन, प्रत्यक्ष चर्चा एवं साक्षात्कार आदि माध्यमों से करने का प्रयास किया है।

उद्देश्य

मेरा पुनीत उद्देश्य यही है कि मैं पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में स्थापित आयाम एवं संस्कृति के उन्नयन एवं संरक्षण में उनकी भूमिका को शोधकार्य के माध्यम से उजागर कर सकूँ। आपने प्राचीन घरानेदार गायकी के साथ शास्त्रसम्मत अभिनव प्रयोग एवं रागों के विषय में स्वयं के चिन्तन को समाविष्ट करते हुए गायन शैली को विश्व पटल पर स्थापित कर माँ शारदा द्वारा सौंपे गये सांगीतिक दायित्व का निर्वहन किया है। मेरे शोध का उद्देश्य है कि मैं आपके सम्पूर्ण कार्यों को शाब्दिक अभिव्यक्ति प्रदान कर सकूँ।

1. वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक की विविध गायन शैलियों का उल्लेख एवं उत्तर भारतीय ख्याल गायन शैली के उन्नयन में प्रतिनिधि कलाकारों के योगदान को दर्शाते हुए इस शृंखला में पं. राजन साजन मिश्र जी की भूमिका से अवगत करवाना मेरा ध्येय है।

2. पं. राजन साजन मिश्र जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से संबंधित अज्ञात तथ्यों को ज्ञात करना है।

3. पं. राजन साजन मिश्र जी के कृतित्व के अन्तर्गत रिकॉर्डिंग्स के साथ गायन शैली एवं बनारस घराने से जुड़े ज्ञात एवं अज्ञात तथ्यों को प्रकट करना।

4. शास्त्रीय गायन रूपी सांस्कृतिक धरोहर को प्रचारित प्रसारित करते हुए संरक्षण हेतु किए गए कार्यों से अवगत करवाना।

5. ख्याल गायन शैली को आदर्श रूप प्रदान करने हेतु आपके द्वारा किए गए रचनात्मक प्रयोगों, नवाचारों एवं शोधात्मक तथ्यों को उजागर करना।

6. गायन शैली संबंधी गूढ़तम तथ्यों को खोजकर संगीत रसिकों की जिज्ञासाओं को शांत करते हुए शोध कार्य के माध्यम से संगीत शिक्षार्थी एवं शोधार्थियों का मार्गदर्शन करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पद्धति विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक होने के साथ शोध कार्य के केन्द्र बिन्दु पं. राजन साजन मिश्र जी एवं परिवारजनों के साक्षात्कार पर आधारित तथ्यों के द्वारा प्रस्तुत किया गया अध्ययन है। शोध कार्य मूलतः पं. राजन साजन मिश्र जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित है। जिसमें पाठ्य योजना के अनुरूप कई सहायक पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, ध्वन्यांकन, प्रत्यक्ष साक्षात्कार एवं चर्चा आदि के माध्यम से सामग्री एकत्रित की गई है। सम्पूर्ण शोध को मुख्यतः आठ भागों में विभक्त किया गया है।

1. प्रथम अध्याय में शास्त्रीय गायन की परंपरा, विधाएँ, शैलियों का परिचयात्मक विवरण, ख्याल गायकी को विकासोन्मुखी बनाने में प्रतिनिधि कलाकारों का योगदान और उस शृंखला में पं. राजन साजन मिश्र जी की भूमिका को समाहित किया गया है।

2. द्वितीय अध्याय में पं. राजन साजन मिश्र जी के व्यक्तित्व के अंतर्गत प्रारम्भिक जीवन, पारिवारिक स्थिति, संगीतात्मक परिवेश, वंश परिचय, स्वभाव, रहन–सहन, संगीत शिक्षा, जीवन दर्शन, अध्यात्म व अन्य रूचियों से संबंधित ज्ञात व अज्ञात तथ्यों को खोजकर लिखा गया है।

3. तृतीय अध्याय में पं. राजन साजन मिश्र जी के कृतित्व के अंतर्गत देश–विदेश की प्रतिष्ठित कम्पनियों द्वारा म्यूज़िक एलबम के रूप में जारी कैसेट्स, सी.डी., वी.सी.डी. एवं इंटरनेट पर उपलब्ध ध्वन्यांकन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। परंपरागत एवं घरानेदार बंदिशों एवं प्रस्तुतीकरण की मोहक शैली पर विस्तृत विवेचन के अतिरिक्त उपशास्त्रीय गायन, भक्ति संगीत एवं फिल्म संगीत के क्षेत्र में

किए गए अविस्मरणीय कार्यों की जानकारी प्रदान की गई है। इस अध्याय में बंदिशों का लिपिबद्ध रूप भी प्रस्तुत किया गया है।

4. चतुर्थ अध्याय में बनारस की पृष्ठभूमि, संगीत परंपरा एवं संगीत जगत में बनारस के योगदान संबंधी जानकारी से अवगत करवाते हुए पं. राजन साजन मिश्र जी के घराने की वंश परंपरा का परिचय प्रस्तुत किया गया है। विद्वतापूर्ण गायन शैली संबंधी विशेषताओं को गहन शोध द्वारा प्रकट किया गया है।

5. पंचम अध्याय में आकाशवाणी, दूरदर्शन, संगीत सम्मेलन, वर्ल्ड म्यूज़िक टूर 2017–18 के माध्यम से देश–विदेश में आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की गई है। पद्म भूषण सहित आपको मिलने वाले प्रमुख राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान एवं पुरस्कारों के साथ आपके सम्मान में विश्व प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को समाहित किया गया है।

6. षष्ठम अध्याय में सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण के अन्तर्गत घरानेदार संगीत शिक्षा, शिष्य परंपरा, व्याख्यान एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों के साथ संगीत हेतु स्थापित संस्थाओं में आपकी भूमिका को समाहित किया गया है।

7. सप्तम अध्याय में गायन के क्षेत्र में मौलिक चिन्तन, मान्यताएँ, नवीन प्रयोग एवं प्रायोगिक शोध पर प्रकाश डाला गया है।

8. अष्ठम अध्याय के अन्तर्गत आपके निजी एवं सार्वजनिक जीवन से जुड़े रोचक एवं प्रेरक प्रसंगों को समाहित किया गया है।

समस्याएँ

1. संबंधित विषय पर पुस्तकों का अभाव होने के कारण अन्य शहरों के पुस्तकालयों में जाकर सामग्री का संकलन।

2. शोध कार्य में वर्णित युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र जी के घराने संबंधी पुस्तकों का अभाव जिससे जानकारी प्राप्त करने में कठिनाई।

3. पं. राजन साजन मिश्र जी के विश्व प्रसिद्ध कलाकार होने के कारण उनकी समयानुकूलता के अनुरूप कार्य का निष्पादन संभव।

4. कृतित्व के अंतर्गत पुरानी रिकॉर्डिंग्स की मूल स्वरूप में उपलब्धता कठिन।

5. विदेशों में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण जुटाना कठिन एवं दुष्कर कार्य।

सुझाव

1. ख्याल गायन के क्षेत्र में बनारस घराने को भी अन्य घरानों की भाँति यथोचित सम्मान एवं स्थान मिलना चाहिए।

2. पद्म भूषण पं. राजन साजन मिश्र जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को विश्वविद्यालयों में संगीत के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए ताकि विद्यार्थी अधिकाधिक लाभान्वित हों।

3. बनारस घराने के गायन की मौलिक विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा हेतु व्याख्यान एवं सेमीनार का आयोजन हो।

4. पं. राजन साजन मिश्र जी की गायन शैली में समाहित घरानेदार संगीत शिक्षा, स्वचिंतन, नवाचारों का प्रयोग एवं शोधात्मक तथ्यों पर व्याख्यान एवं प्रदर्शन के माध्यम से विश्लेषणात्मक चर्चा का आयोजन किया जाए।

5. संगीत के द्वारा संपूर्ण समाज में राष्ट्रीय एकता, समता, भाईचारा, शांति एवं विश्वबन्धुत्व की भावना का संचार होता है। अतः पं. राजन साजन मिश्र जी जैसे महान् कलाकारों के सहयोग एवं प्रेरणा से जनरूचि जाग्रत करते हुए अधिकाधिक प्रतिभाओं को भारतीय शास्त्रीय संगीत से जोड़ा जाए। इस कदम से सांस्कृतिक अवमूल्यन की ओर अग्रसर नई पीढ़ी को हमारी संस्कृति पर गर्व की अनुभूति होगी एवं भारतीय संगीत को संरक्षण प्रदान किया जा सकेगा।

***

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ

1	डॉ. सत्यवती शर्मा	ख्याल गायन शैली विकसित आयाम	पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर– 302–003, (1994)
2	डॉ. सुशील कुमार चौबे	संगीत के घरानों की चर्चा	उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ, (2005)
3	भगवतशरण शर्मा	भारतीय संगीत का इतिहास	संगीत कार्यालय, हाथरस, (उ.प्र.), (2001)
4	स्वतंत्र शर्मा	भारतीय संगीत का ऐतिहासिक विश्लेषण	टी.एन भार्गव एण्ड सन्स इलाहाबाद, (1988)
5	उमेश जोशी	भारतीय संगीत का इतिहास	मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फिरोजाबाद, आगरा, (उ.प्र.), (1957)
6	लक्ष्मीनारायण गर्ग (सम्पादक)	संगीत निबंधावली	संगीत कार्यालय, हाथरस, (1987)
7	डॉ. मधुबाला सक्सेना	ख्याल शैली का विकास	विशाल पब्लिकेशन्स कुरुक्षेत्र–132116, (1985)
8	रामअवतार वीर	भारतीय संगीत का इतिहास–भाग 2	राधा पब्लिकेशन्स अंसारी रोड़, गली मुरारीलाल, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, (2001)
9	प्रभुलाल गर्ग 'वसंत'	संगीत विशारद	संगीत कार्यालय, हाथरस, (2010)
10	डॉ. हरीश कुमार तिवारी	मंच प्रदर्शन में कलाकार एवं श्रोता	संजय प्रकाशन अंसारी रोड़, गली मुरारीलाल, दरियागंज, नई दिल्ली, (2005)
11	सुधा श्रीवास्तव	भारतीय संगीत के मूलाधार	कृष्णा ब्रदर्स, महात्मा गांधी मार्ग, अजमेर
12	पं. विष्णु नारायण भातखण्डे	क्रमिक पुस्तक मालिका भाग–4	संगीत कार्यालय, हाथरस, (1991)
13	प. कामेश्वर नाथ मिश्र	काशी की संगीत परंपरा	भारत बुक सेन्टर 17, अशोक मार्ग लखनऊ–226001, (1997)

14	इब्राहिम अली	भारतीय संगीतकार उस्ताद अमीर खाँ	क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, 28, शॉपिंग सेन्टर, करमपुरा, नई दिल्ली, (2000)
15	डॉ. वनमाला पर्वतकर	संगीतमय बनारस	शारदा संस्कृत संस्थान सी. 27/59, जगतगंज, वाराणसी–221002, (2012)
16	डॉ. हुकुम चन्द	आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत	ईस्टर्न बुक लिंकर्स नई दिल्ली, (1998)
17	डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू	आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय संगीत की भूमिका	कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, 4697/5–21 ए, अंसारी रोड़ दरियागंज, नई दिल्ली, (2011)
18	डॉ. मोतीचन्द्र	काशी का इतिहास	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी 221001, (2010)
19	डॉ. अशोक कुमार सिंह	उत्तरप्रदेश के प्राचीनतम् नगर	वाणी प्रकाशन, 4695, 21–ए दरियागंज, नई दिल्ली 110002, (2011)
20	डॉ. आबान इ. मिस्त्री	पखावज एवं तबले घराने एवं परंपराएं	प. केकी एस. जीजीना मुम्बई, (1984)
21	डॉ. प्रभा अत्रे	स्वरांगिनी	बी.आर. रिदम्स 425, नीमरी कॉलोनी, अशोक विहार, दिल्ली–110052
22	प. जगदीश नारायण पाठक	संगीत शास्त्र प्रवीण	पाठक पब्लिकेशन 27, महाजनी टोला, इलाहाबाद 211003, (1989)
23	डॉ. रेनू जौहरी	भारतीय सांगीतिक जगत में वाराणसी का योगदान	बी. के. तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग, कम्पनी, 28, शॉपिंग सेन्टर, करमपुरा नई दिल्ली, (2004)
24	लक्ष्मीनारायण गर्ग	हमारे संगीत रत्न	संगीत कार्यालय, हाथरस (उ. प्र.) (1984)

संगीत पत्रिकाएँ

1. संगीत मासिक पत्रिका – संगीत कार्यालय, हाथरस।
2. संगीत कला विहार – अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन, मिरज।
3. छायानट – उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी का प्रकाशन, पोस्ट बॉक्स नं. 30 विपिन खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ
4. काशी स्वर गंगा सम्मान के अवसर पर 'ग्रितमा' द्वारा प्रकाशित पत्रिका (लेख– काशी की विशिष्ट संगीत परम्परा – पं. कामेश्वर नाथ मिश्र)

Documentary Films / CD / Interview / Lec-Dem Programme

1.	DVD / Video Times Music "Adwait Sangeet" (Two Voices One Soul) A Documentary Film by Makarand Brahme.	TXCL 268P
2.	CD "Bhairav Se Bhairvi Tak" - A Journey Through Raga, Vol. 1 to 4	TDICL 294C to TDICL 297C
3.	Feature Film - "Rajan Sajan Mishra in Varanasi" (The Superb Duo Appeared in this British TV Programme)	Youtube
4.	Shakhsiyat With Pt. Rajan and Sajan Mishra (An Interview on Rajya Sabha TV)	Youtube
5.	'Phir Teri Kahani Yaad Aayi" (Story of Renowned Classical Singer Pt. Rajan Sajan Mishra by Dream Treaders Films)	Youtube
6.	Khas Mulakat - Pt. Rajan Sajan Mishra (Bansal News)	Youtube
7.	All India Radio Programme - Swar Nivesh Episode No. 7 (Radio Serial based Archival Recording - Pt. Hanuman Prasad Mishra)	Youtube
8.	Sarb Akal Baithak, Calgary - Pt. Rajan Sajan Mishra, 27 May, 2018	Youtube
9.	Vrindaban Gurukul Anubhav Baithak With Pt. Rajan & Sajan Mishra, 14 Nov. 2014	Youtube
10.	Vrindaban Gurukul Dharohar	Youtube

Websites

- allindiaradio.gov.in//profile/pagesHCMvocal07102015
- https://gaana.com
- https://m.facebook.com
- https://m.khaskhabar.com
- https://music.apple.com
- https://open.spotify.com
- https://www.discogs.com
- https://www.gettyimages.in
- https://www.google.co.in
- https://www.lyricsbogic.com>movies
- https://www.patrika.com
- https://www.timesmusic.com
- https://www.youtube.com
- www.amarujala.com
- www.amazon.com
- www.amc.org.uk
- www.bestwebsitesinindia.com
- www.firstpost.com
- www.outlookindia.com
- www.rajansajan.com
- www.rajansajan.com/gurukul.html
- www.riteshrajnishmishra.com
- www.surgyaan.com
- www.thefamouspeople.com
- www.thehindu.com
- www.timesofindia.indiatimes.com
- www.varanasi.org.in
- www.wikipedia.org

***

प्रकाशित शोध–पत्र

UGC Approved, Journal No. 49321
Impact Factor : 2.591

ISSN : 0976-6650

शोध दृष्टि
Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 9, No. 14

September, 2018

PEER REVIEWED JOURNAL

☞	एनीमेशन तकनीक, पद्धति एवं विशेषताएं **डॉ0 रामनिवास यादव**	67-70
☞	धर्म–अर्थ–काम तीन लौकिक पुरुषार्थ **पवन पाठक**	71-72
☞	द्वितीय विश्वयुद्धोपरान्त विश्व–सरकार की संकल्पना का विकास : एक राजनैतिक समीक्षा **ज्योति रानी**	73-78
☞	भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन **डॉ0 राकेश कुमार राय**	79-86
☞	Biological Control of Insect Pest **Dr. Smita Mishra**	87-88
☞	भारतीय संस्कृति एवं जैन धर्म **सुरेन्द्र प्रसाद**	89-92
☞	समकालीन परिदृश्य में मध्यकालीन किसान वर्ग : एक ऐतिहासिक विवेचन **डॉ0 यशवन्त यादव**	93-98
☞	शिक्षा का अधिकार : विस्तार की आवश्यकता **विश्वनाथ प्रताप सिंह**	99-100
☞	चकिया के काली मन्दिर से प्राप्त भित्तिचित्र **गोविंदा मालिक**	101-104
☞	उत्तर प्रदेश की राजनीति में अपराध का परिप्रेक्ष्य **डॉ0 दीपेन्द्र विक्रम सिंह**	105-107
☞	प्राचीन भारत में शिक्षा की उपादेयता **डॉ0 श्याम नारायण शुक्ल**	108-110
☞	भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की प्रस्थिति का ऐतिहासिक विश्लेषण **नेत्रपाल सिंह**	111-113
☞	भारतीय संगीत के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में पंडित राजन–साजन मिश्र का योगदान **सदाशिव गौतम**	114-116
☞	नारायण श्रीधर बेन्द्रे एवं उनकी चित्रकला **सोनी**	117-120
☞	कुमारिल और शंकराचार्य का पौराणिक विचार **डॉ0 सन्तोष कुमार सिंह**	121-123
☞	महिला पुलिस : एक विश्लेषण **डॉ0 मनोज कुमार यादव**	124-126
☞	Harmful Traditional and Cultural Practices in India Special Reference of Women's Sexual and Reproduction Health Rights **Dr. Neha Chaudhary & Prof. Rita Singh**	127-132
☞	Constitutional Protection & Jurisprudence Transgender Issues **Avi Saxena**	133-135
☞	Organic Farming **Dr. Banwari Lal Jat**	136-138

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 14, September, 2018 ISSN : 0976-6650

भारतीय संगीत के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में पंडित राजन-साजन मिश्र का योगदान

सदाशिव गौतम
शोधार्थी, संगीत विभाग, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

भारतीय संगीत का प्रवाह प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल तक सामगान, स्तुतिगान, ध्रुवागान, गीतिगान, जातिगान, प्रबन्ध गान, ध्रुपद–धमार गान से लेकर ख्याल गान के विविध आयामों से गुजरा है। संगीत प्रकृति प्रदत्त होने एवं इसमें मानवीय संवेदनाओं की भावाभिव्यक्ति की असीमित क्षमता विद्यमान होने के कारण आधुनिक युग में इसने देश ही नहीं विदेशों में भी अपना परचम फहराया है। भारतीय संगीत में शांत, गंभीर, सौंदर्यपरक, मौलिक एवं प्राचीन स्वरूप के साथ आनंद की अनंत गहराई की अनुभूति का गुण होने के कारण विदेशी भी हमारे संगीत के कायल है। वैसे शास्त्रीय संगीत तो गुणियों का संगीत है जिसे शास्त्र की दृष्टि से समझना थोड़ा क्लिष्ट है लेकिन दूसरा सुदृढ़ पक्ष है कि भाव की दृष्टि से यह अंतस्थ संगीत की सुन्दर यात्रा कराते हुए आध्यात्मिक भाव प्रवृत्त करवाता है, अतः आनन्द के लिए इसकी अनुभूति ही पर्याप्त है। यही कारण है कि विदेशों में हमारे संगीत को बहुत आदर और श्रद्धा से देखा जाता है क्योंकि यह मात्र मनोरंजक नहीं है अपितु यह आत्मिक शांति प्रदान करते हुए सर्वशक्तिमान की अनुभूति के साथ ध्यान की स्थिति में ले जाता है। गर्व की बात यह है कि इस वैश्वीकरण के दौर में हमारा संगीत देश की सीमाएँ लाँघकर विदेशों में भी खूब फूला–फला है। इस दिशा में शास्त्रीय संगीत ही नहीं लोकसंगीत ने भी हमारी संस्कृति के विविध रंगों की ख्याति सात समंदर पार पहुँचाई है।

यदि हम सम्पूर्ण विश्व पर ऐतिहासिक दृष्टि डालें तो पायेंगे कि भारत भूमि अपनी प्राचीन सभ्यता, कला, संस्कृति, आध्यात्म एवं गौरवशाली परम्पराओं के कारण सदैव आकर्षण का केन्द्र रही है। विविधतापूर्ण समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के कारण विदेशी भी भारतीय संस्कृति के विविध रंगों को करीब से देखने, समझने एवं जानने हेतु सदैव उत्सुक रहते हैं। यहाँ की परंपराओं एवं वातावरण के साथ ऐतिहासिक साक्ष्य, विविध लोक संस्कृतियाँ, तीज–त्यौहार, मेले, उत्सव, खानपान, रहन–सहन एवं हृदयस्पर्शी संगीत आदि ने विदेशियों में भारत को अधिकाधिक जानने की जिज्ञासा पैदा कर पर्यटन को निरन्तर विस्तार दिया है।

इसी क्रम में विगत 50 से 60 वर्षों में महान भारतीय कलाकारों के अथक प्रयासों से विश्व पटल पर भारतीय शास्त्रीय संगीत को अपार ख्याति मिली फलस्वरूप विश्व समुदाय भारतीय संगीत एवं कलाकारों के बहुत नज़दीक आ गया। अभारतीय श्रोता भी भारतीय संगीत में छुपी आध्यात्मिकता एवं परमात्मा की दिव्य शक्ति की अनुभूति करते हुए असीम आनन्द प्राप्त करते हुए उसमें खोने लगे हैं। विदेशो में भारतीय संगीत की प्रतिष्ठा के साथ–साथ भारतीय कलाकारों एवं वाद्यों को सुनने वालों का एक बहुत बड़ा प्रशंसक वर्ग तैयार हो गया। वैश्विक स्तर पर भारतीय संगीत ने विश्वबंधुत्व एवं मानव कल्याण के नवीन आयाम स्थापित किए। भाषा, धर्म एवं संस्कृति की दीवारों को ध्वस्त करते हुए भारतीय संगीत ने सम्पूर्ण विश्व में ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना का संचार किया। भारतीय संगीत को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करने में पं. रविशंकर, उ. अली अकबर खाँ, उ. अल्लारक्खा खाँ, उ. ज़ाकिर हुसैन खाँ, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पं. निखिल बैनर्जी, उ. अमज़दअली खाँ, पं. शिवकुमार शर्मा, पं. राजन साजन मिश्र, पं. विश्वमोहन भट्ट जैसे अनेक ख्यातनाम कलाकारों ने प्रमुख भूमिका निभाई।

वर्तमान पीढ़ी के आदर्श और इस युग के प्रसिद्ध ख्याल गायक पं. राजन मिश्र का जन्म सन् 1951 ई. में व पं. साजन मिश्र का जन्म सन् 1956 ई. में बनारस के सांगीतिक वातावरण में हुआ। भारतीय शास्त्रीय संगीत की सर्वाधिक प्रचलित विधा ख्याल गायकी के सिद्धहस्त गायक पं. राजन साजन मिश्र जी की ख्याति सम्पूर्ण विश्व में है। आप अपने घराने की लगभग 300 वर्षों से चली आ रही परंपरा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आपको गायन की शिक्षा विद्वान पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र एवं चाचा पं. गोपाल जी मिश्र से मिली। आपको सौभाग्यवश गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी मिश्र का भी शिष्यत्व मिला। सारंगी के घराने में जन्म लेने के कारण घर में मिली सांगितिक शिक्षा के साथ–साथ सदैव स्वर–लहरियों से गुंजायमान काशी के कबीर चौरा मुहल्ले के संगीतमय वातावरण के प्रभाव ने आप दोनों के महान् कलाकार बनने हेतु मज़बूत आधार तैयार कर दिया। दोनों भ्राताओं ने ख्याल के साथ–साथ टपख्याल, टप्पा, तराना आदि की दुर्लभ एवं प्राचीन बंदिशों का अपार संग्रह करते हुए निरन्तर अभ्यास, चिन्तन एवं सूझबूझ से गायन शैली को बेजोड़ एवं प्रभावशाली बना लिया। संगीत शिक्षा के साथ ही विद्यालयीनशिक्षा का क्रम भी निरन्तर जारी रहा। काशी

हिन्दू विश्वविद्यालय से पं. राजन जी मिश्र ने समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर एवं पं. साजन जी मिश्र ने बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की। इसी समय आपके चाचा जी पं. गोपाल मिश्र काशी छोड़कर दिल्ली बस गये और उन्होंने आप दोनों भ्राताओं को भी दिल्ली ही बुला लिया। चाचाजी एवं सतगुरू जगजीत सिंह जी की प्रेरणा पाकर आप दोनों उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होते गये। आकाशवाणी, दूरदर्शन, देश–विदेश में आयोजित संगीत सम्मेलनों एवं विभिन्न नामी कम्पनियों द्वारा जारी रिकार्डिंग्स के माध्यम से आपकी गायकी के स्वर सर्वत्र गुंजायमान होने लगे। धीरे–धीरे आपकी गिनती देश के स्थापित एवं उच्च श्रेणी के ख्याल गायकों में होने लगी। युगल गायन के अन्तर्गत अपने घराने की मौलिक विशेषताओं के साथ मूर्धन्य कलाकारों के गुण वैशिष्ट्य को अपने गायन में समाहित करने के व्यापक दृष्टिकोण ने आपकी गायकी को अद्भूत, चिन्ताकर्षक एवं प्रभावशाली रूप दे दिया।

पं. राजन जी मिश्र भारतीय शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में विदेशी श्रोताओं के अनुभव को इस प्रकार व्यक्त करते हैं ''देखो यहाँ अच्छे जो जगह हैं जैसे महाराष्ट्र और बंगाल, ये दो प्रान्त संगीत का प्रान्त हैं। इनमें जब गाना होता है, तो श्रोता जानकार होते हैं। वह पहले के लोगों (कलाकारों) को सुने होते हैं उनको जगह पता है तो एक–एक जगह पर वह दाद देते हैं आह, वाह, उनको जगह पता होती है। लेकिन विदेशों में एक भी शब्द हमारा उनको समझ में नहीं आ रहा हैं। अवधी या ब्रज भाषा में गा रहे हैं अर्थात हम क्या कर रहे हैं, उनको समझ नहीं आ रहा हैं। उनको सिर्फ हमारा अप्रोच समझ में आता है कि हम सुर किस अप्रोच से लगाते हैं और साथ में फीलिंग। दूसरी प्रमुख बात है कि वो जब टिकिट खरीद के आते हैं तो यह सोचकर आते हैं कि मुझे कुछ प्राप्त होना चाहिए। हमारे यहाँ क्या है कि इतना सुन चुके हैं लोग कि बायस्ड हो गये। उनको ऐसा लगता है कि हमारे घराने जैसा कोई नहीं है। अच्छाई तुम्हारे सामने से ऐसे निकल जा रही है वह तुमको दिख ही नहीं रही है क्योंकि तुम्हारा दिमाग बंद है।''[1]

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार यूनिवर्सल लेंग्वेज कहा गया है संगीत को, वो इसलिए कहा गया है कि संगीत को किसी भाषा, जाति और क्षेत्र से नहीं बांधा जा सकता है, आत्मा की वाणी हैं। हम लोग यूरोप में, जर्मनी में, आस्ट्रिया में, इटली में, हर जगह गाये हैं। वह हमारी भाषा नहीं समझते लेकिन मनोभावों को समझते हैं, वह सुर को समझते हैं।''[2]

विदेशों के कार्यक्रमों के एक अन्य अनुभव में पं. राजन जी मिश्र बताते हैं ''एक बार हॉलैण्ड में एक जगह है मैस्ट्रिच, वहाँ हम लोगों ने गाया। इससे पहले यूरोप में या अमेरिका में जहाँ भी गाया तो कार्यक्रम के बाद बहुत क्लेपिंग होती हैं लेकिन मैस्ट्रिच शहर में कोई क्लेपिंग नहीं हुआ, एकदम साइलेंस हो गया। हम लोग थोड़े डिसअप्वाइंट भी हुए कि आज क्लेपिंग क्यों नहीं हुआ? सैकण्ड़ हॉफ के लिए ग्रीम रूम चले गये फिर वहाँ के कुछ स्थानीय लोग आकर बोले कि ऐसा लगता है कि क्लेपिंग नहीं होने से आप डिसअप्वाइंटेड हैं। हमने कहा हाँ हमेशा ही क्लेपिंग होता हैं, आज हुआ नहीं। उन्होंने कहा कि आप लोगों को अनाउंस करना चाहिए कि कार्यक्रम में कोई क्लेप नहीं करे क्योंकि ''द वे यू मेकस हारमनी बाय योअर मेलोड़ी'' वो जो मेलोडी है ''लेट्स गो विद देट मेलोड़ी'' अर्थात् क्लेपिंग की आवाज से वह मेलोडी टूट जाती है, तो आपको अनाउंस करना चाहिए कि हमारे कार्यक्रम में कोई भी क्लेप ना करे। इसका हमने बहुत जगह प्रयोग किया।''[3]

यहाँ हॉलेण्ड में श्रोताओं का कहने का तात्पर्य यह है कि दो से तीन घण्टे के शास्त्रीय गायन के पश्चात् श्रोता भावविहल हो राग–रागिनियों के वातावरण में डूब जाता है और वह उस वातावरण को अपने मन मस्तिष्क में साथ लेकर जाना चाहता है। कार्यक्रम के पश्चात कलाकार के उत्साहवर्धन हेतु बजने वाली तालियाँ उसके स्वयं के द्वारा निर्मित संगीतमय वातावरण अथवा मैलोडी को भंग कर देती है। इसीलिए हॉलैण्ड में श्रोताओं द्वारा पंडित जी से तालियाँ न बजवाने हेतु आग्रह किया गया ताकि वह उस संगीतमय वातावरण को अपने साथ लेकर जा सकें।

भारतीय संगीत मौलिकता, रचनात्मकता, सौंदर्यपरकता, रसात्मकता एवं गंभीरता आदि गुणों से परिपूर्ण है। आध्यात्म एवं दर्शन से ओतप्रोत होने के कारण यह मानवीय संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति करता हैं। अतः जो मानसिक शांति मनुष्य को प्रकृति की गोद में नैसर्गिक आनंद लेकर प्राप्त होती है वही परमानन्द, शांति और सुख की अनुभूति उसे भारतीय संगीत की राग रागिनियों द्वारा उत्पन्न स्वर लहरियों से प्राप्त होती है। अतः पश्चिमी देशों में व्याप्त भौतिकीकरण के कारण आत्मशांति की खोज में भारतीय संगीत के प्रति उनका आकर्षण लाजिमी है। इस दिशा में भारतीय कलाकारों ने देश के गौरव में अभिवृद्धि करते हुए सम्पूर्ण विश्व को सांस्कृतिक दृष्टि से एक मंच पर लाने का अनूठा एवं अभिनव कार्य किया है।

विश्व स्तर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रतिष्ठित करने में बनारस घराने के ख्यातनाम शास्त्रीय गायक पद्मभूषण पं. राजन साजन मिश्र ने भारतीय सांस्कृतिक दूत के रूप में अविस्मरणीय भूमिका निभाई है। सांगीतिक पर्यटन की अभिवृद्धि हेतु पंडित राजन साजन मिश्र ने शास्त्रीय गायक के रूप में एक ऐसे श्रोता वर्ग के सामने कला का प्रदर्शन किया जो हमारी संस्कृति, भाषा, संगीत एवं मान्यताओं आदि से अनभिज्ञ है। पं. राजन साजन मिश्रजी का विदेशों में प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों में पहला कार्यक्रम वर्ष 1978 में श्रीलंका में हुआ। श्रीलंका से आरंभ हुई सांस्कृतिक यात्रा विदेशों में आज तक निरन्तर जारी है। आपने विश्व के अनेक प्रमुख देशों जैसे अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड, स्विट्जरलैण्ड, इटली, हॉलैण्ड, आस्ट्रिया, नीदरलैण्ड, सिंगापुर, कतर और मस्कट जैसे विभिन्न देशों में मंच प्रदर्शन, शिक्षा–दीक्षा एवं कार्यशालाओं के आयोजन के माध्यम से भारतीय संगीत एवं ख्याल गायकी का रसास्वादन संगीत रसिकों को करवाकर विश्व स्तर पर ख्याति अर्जित करते हुए भारतीय संस्कृति की पताका सम्पूर्ण विश्व में फहराई है। विदेशों में स्थापित अमेरिका का वर्ल्ड म्यूजिक इंस्टीट्यूट और लंदन के एशियन म्यूजिक सर्किट जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं के माध्यम से शास्त्रीय गायन के प्रभावपूर्ण एवं मंत्रमुग्ध करने वाले प्रस्तुतिकरण एवं प्रशिक्षण द्वारा विदेशियों को भारतीय संगीत के प्रशंसक एवं श्रोता वर्ग में सम्मिलित कर देश की महती सेवा की है। अभी हाल ही में "वर्ल्ड म्यूजिक टूर" के माध्यम से आपके द्वारा विश्व शांति का संदेश संपूर्ण विश्व को दिया गया।

वर्ल्ड म्यूजिक टूर 2017–18 के अन्तर्गत "भैरव से भैरवी तक" शीर्षक के प्रथम चरण में आयोजित हुए कार्यक्रमों का शुभारम्भ देश की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी बनारस से हुआ। तदुपरान्त क्रमशः अहमदाबाद, कलकत्ता, बैंगलोर, दिल्ली, गोआ, पुणे, मुम्बई आदि देश के प्रमुख शहरों में पं. राजन साजन मिश्र की भावविभोर करने वाली प्रस्तुतियाँ हुई।

द्वितीय चरण में एशिया, तृतीय चरण के प्रथम भाग में उत्तरी अमेरिका, द्वितीय भाग में दक्षिण अमेरिका, चतुर्थ चरण में युनाइटेड किंगडम, पंचम चरण में यूरोप और छठे चरण में न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया के प्रमुख शहरों में भारतीय संगीत द्वारा भाईचारे एवं शांति का संदेश देकर भारतीय संगीत की अस्मिता एवं आध्यात्मिक शक्ति से सम्पूर्ण विश्व को रूबरू करवाया। भारतीय शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाते हुए प्रतिष्ठित करने में पण्डित जी के भागीरथी प्रयासों की जितनी सराहना की जाए कम है।

हमारे देश के सांगीतिक पर्यटन को बढ़ावा देने में पं. राजन साजन मिश्र ने विशेष योगदान प्रदान किया। आपके जैसे महान कलाकारों के आकर्षण के कारण विदेशी मेहमानों का संगीत प्रशिक्षण, वाद्य यंत्रों की खरीद, कार्यशालाओं में भाग लेने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति, कलाकारों एवं उनसे संबंधित विरासत के बारे में जानकारी जुटाने हेतु संगीत संबंधी पर्यटन का दौर जारी रहता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लगभग 50 वर्षों से अनवरत सेवा करते हुए पं. राजन साजन मिश्र हमारी संस्कृति के संवाहक बन भारतीय संगीत को प्रचारित प्रसारित करने का पुनीत कार्य कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति की मौलिकता को समझने के लिए आवश्यक है कि भारतीय संस्कृति में निहित सभी पक्षों का गुणात्मक एवं तथ्यात्मक अध्ययन किया जाए। इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी का सहारा लेते हुए यहाँ के परिवेश में कला का प्रत्यक्ष अवलोकन आवश्यक है।

भारतीय संगीत एवं परिवेश को समझने हेतु उत्सुक लोगों के लिए यह आवश्यक है कि विदेशी लोग भारत में आकर प्रत्यक्ष रूप से यहाँ के वातावरण में ही संगीत के आनंद एवं प्रभाव को महसूस करें। इसी अवधारणा ने सांगीतिक पर्यटन के द्वार खोलते हुए उसमें निरन्तर वृद्धि के मार्ग को प्रशस्त किया है।

संदर्भ :

1. पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरुपूर्णिमा, दिनांक 12.07.2014, नई दिल्ली
2. पं. साजन जी मिश्र (Story of Renowned Classical Singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)
3. पं. राजन जी मिश्र (Story of Renowned Classical Singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)

Peer Reviewed
ISSN (P) : 2321-290X (E) 2349-980X
VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
RNI No. : UPBIL/2013/55327

Srinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

Peer Reviewed / Refereed Journal

The Research Series

द्विभाषीय - मासिक

Shrinkhala

शृंखला

A Multi-Disciplinary International Journal

Indexed with Google scholar

Impact Factor
SJIF = 5.921 (2018)
GIF = 0.543 (2015)
IIJIF = 6.038 (2018)

UGC S.NO. 40880 Shrinkhla UGC approved listed

35	**सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण में पद्मभूषण पं. राजन साजन मिश्र का योगदान** सदाशिव गौतम, कोटा	संगीत विभाग	H-138	H-143
36	**भारतीय सेकुलरिज्म और पश्चिमी सेकुलरिज्म : एक विश्लेषण** एम. आरिफ खान दिल्ली	राजनीति विज्ञान विभाग	H-144	H-149

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण में पद्मभूषण पं. राजन साजन मिश्र का योगदान

सदाशिव गौतम
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत का वर्तमान परिष्कृत स्वरूप सदियों से चली आ रही समृद्ध परम्पराओं की परिणति है। सांगीतिक विकास की यात्रा में इसे प्रतिष्ठित करने में संगीत साधकों, तपस्वियों एवं प्रतिनिधि कलाकारों ने अपरिमित योगदान दिया है। विश्वविख्यात शास्त्रीय गायक पद्मभूषण पं. राजन–साजन मिश्र को मूर्धन्य एवं पथप्रदर्शक कलाकारों की श्रेणी में प्रमुख स्थान दिया जाता है। आप दोनों भ्राताओं ने ख्याल गायकी में परंपरागत दृष्टिकोण के साथ स्वचिन्तन का समन्वय कर गायन शैली को अभिनव, आकर्षक एवं हृदयग्राही स्वरूप प्रदान कर भारतीय संगीत को देश विदेश में लोकप्रिय बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई है।

आपने दुर्लभ एवं प्राचीन राग–रागिनियों के साथ नवीन रागों को भी घरानेदार गायकी के साथ सृजनात्मक एवं प्रयोगात्मक चिंतन से सुसज्जित कर अभिनव रूप प्रदान किया। सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संगीत के प्रशंसक वर्ग में अभिवृद्धि करने में आपका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। बनारस घराने की लगभग 300 वर्षों से चली आ रही परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन में उल्लेखनीय भूमिका के साथ–साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत को संपूर्ण विश्व में लोकप्रिय बनाने एवं कला की नई पीढ़ी में हस्तांतरण कर आप सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखने का भागीरथी कार्य कर रहे हैं। संगीत सम्मेलनों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, कैसेट सी.डी., डी.वी.डी. आदि माध्यमों द्वारा संग्रहित आपकी गायकी सुधी श्रोताओं के साथ–साथ साधनारत शिष्यों एवं कलाकारों का सदैव मार्गदर्शन करती रहेगी। असाधारण व्यक्तित्व की धनी यह आदर्श युगल जोड़ी निश्चित रूप से संगीत रसिकों, साधनारत विद्यार्थियों एवं कलाकारों के लिए सदैव प्रेरणापुंज बनी रहेगी।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक धरोहर, गायन शैली, नवोदित प्रतिभा, प्रचार–प्रसार, परम्परा, संरक्षण, शास्त्रीय संगीत।

प्रस्तावना

हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के अविरल प्रवाहमान बने रहने और संगीतरूपी महक को कायम रखने में सदियों से संगीत के मनीषियों, तपस्वियों एवं साधक–कलाकारों का सतत् योगदान रहा है। शास्त्रीय गायकी हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इसके फलने–फूलने, सजने–सँवरने एवं उत्कृष्टता के शिखर पर पहुँचने में अनेकानेक संगीतज्ञों ने अमूल्य योगदान दिया है। महान् एवं गुणी कलाकारों के रचनात्मक, प्रयोगात्मक एवं अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण के फलस्वरूप शैलीगत विशेषताओं से आबद्ध संगीत मौलिक स्वरूप में रहते हुए भारतीय जनमानस को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को आनन्द रूपी परब्रह्म की अनुभूति करा रहा है। इसी शृंखला में पं. राजन साजन मिश्र जी की गणना उन मूर्धन्य गायकों में होती है जिनकी चित्ताकर्षक गायन शैली की विशेषताओं से प्रेरणा लेकर अनेक शिष्य व साधक साधनारत् हैं।

बनारस में जन्मे पं. राजन साजन मिश्र अपने घराने की लगभग 300 वर्षों से चली आ रही परंपरा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आपको गायन की शिक्षा विद्वान पिता पं. हनुमान प्रसाद जी मिश्र (ख्यातनाम सारंगीवादक एवं गायक) एवं चाचा पं. गोपाल जी मिश्र (ख्यातनाम सारंगीवादक) से मिली। आपको सौभाग्यवश गायनाचार्य पं. बड़े रामदास जी मिश्र का भी शिष्यत्व एवं आशीर्वाद मिला। बनारस के कबीरचौरा मोहल्ले के संगीतमय वातावरण में रहते हुए आपने ख्याल के साथ–साथ टपख्याल, टप्पा, तराना आदि की दुर्लभ एवं प्राचीन बंदिशों का अपार संग्रह करते हुए साधना एवं चिन्तन से गायन शैली को बेजोड़ एवं प्रभावशाली बना लिया। आपने स्वयं ने भी विविध रागों में सैंकड़ों बंदिशों की रचना कर भारतीय संगीत को समृद्ध बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण

कार्य किया है। आकाशवाणी दूरदर्शन, देश विदेश में आयोजित संगीत सम्मेलनों एवं विभिन्न नामी कम्पनियों द्वारा जारी रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से आपकी गायकी के स्वर सर्वत्र गुंजायमान हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए आपके द्वारा की गई सेवा एवं योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कुमार गंधर्व एवं तानसेन सम्मान जैसे पुरस्कारों से विभूषित किया गया। रागों के प्रति व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ उनमें दर्शन एवं आध्यात्मिक चिंतन की सोच आपके विराट व्यक्तित्व को दर्शाती है। बनारस घराने की परंपरा के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर पंडित राजन साजन मिश्र जी शास्त्रीय गायकी का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण देश–विदेश में आयोजित कार्यक्रमों के अतिरिक्त विद्यार्थियों को प्रशिक्षण, व्याख्यान एवं प्रदर्शन और संगीत हेतु स्थापित संस्थाओं में भूमिका आदि माध्यमों से कर रहे हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के माध्यम से जनमानस का ध्यान भारतीय संगीत के परम्परागत आध्यात्मिक स्वरूप के प्रचार–प्रसार, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु पद्मभूषण पं0 राजन साजन मिश्र द्वारा दिये गए अप्रतिम योगदान की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत रूपी सांस्कृतिक धरोहर के उत्तरोत्तर विकास एवं संरक्षण में प्रतिनिधि कलाकारों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस श्रृंखला में युगल गायक पं0 राजन साजन मिश्र ने संगीत सम्मेलनों, प्रदर्शन–व्याख्यान, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं रिकार्डिंग कम्पनियों के माध्यम से देश–विदेश में भारतीय संगीत का परचम फहराया है।

बनारस घराने की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने एवं गुरू शिष्य परम्परा के अन्तर्गत नवोदित प्रतिभाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु भ्रताद्वय द्वारा किये जा रहे कार्यों से संगीत जगत को मार्गदर्शन एवं प्रेरणा मिलेगी। मेरा मत है कि शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने एवं जनरूचि जाग्रत करने हेतु आपके द्वारा किये जा रहे सत्प्रयासों की जानकारी जन सामान्य को मिल सकेगी।

विद्यार्थी (शिष्य परंपरा)

पूरे देश में पं. राजन साजन मिश्र जी की विस्तृत शिष्य परंपरा है। पंडित जी बनारस घराने की परंपरा रूपी विरासत को सहेजने एवं नई पीढ़ी को हस्तांतरण हेतु विगत 4 से 5 दशकों से प्रयासरत हैं। गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत पारिवारिक सदस्यों के अतिरिक्त संगीत सीखने हेतु इच्छुक प्रतिभावान बच्चों को आप समर्पित एवं उदार भाव से शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। पं. राजन मिश्र जी के अनुसार ''हमारी अपनी ही गुरुकुल परंपरा चलती है देहरादून में, वहाँ हम बच्चों को सिखाते हैं और एडवांस ट्रेनिंग देते हैं।''[1]

गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत संगीत की शिक्षा प्रदान करने हेतु आपके द्वारा देहरादून में लगभग 20 वर्ष पूर्व गुरुकुल की स्थापना की गई है। सुरम्य एवं प्राकृतिक वातावरण के बीच पहाड़ियों पर स्थित गुरुकुल, संगीत शिक्षण हेतु पंड़ित जी द्वारा संजोयी गई कल्पना का साकार रूप है। पं. रजनीश जी मिश्र (पं. राजन जी मिश्र के कनिष्ठ पुत्र) यहाँ की सभी व्यवस्थाओं को सुनियोजित ढंग से संभालते हैं। उनके अनुसार ''देहरादून में बहुत खूबसूरत गुरुकुल बनाया पिताजी लोगों ने, उसमें हम सभी स्टूडेन्ट्स जाते हैं। वहाँ पिताजी के कहने पर हम लोगों ने हर महीने एक बैठक भी शुरू कर दी जिसमें कि बड़े–बड़े कलाकार भी आते हैं। साल में हम दो बड़े इवेंट करते हैं जो कि शहर के लोगों के लिए होते हैं। इनकी यह सोच थी कि देहरादून एक ऐसी सुकून वाली जगह है जहाँ हम म्यूजिक को बहुत अच्छे से संरक्षित कर सकते हैं और अच्छी सोच उसमें डाल सकते हैं, क्रिएटिवीटी वहाँ अच्छी हो सकती है। उसी सोच से गुरुकुल बना और सफल रूप से चल रहा है।''[2]

नवोदित प्रतिभाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने एवं कला के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु स्थापित संस्थाओं का संचालन पं. रितेश मिश्र, पं. रजनीश मिश्र एवं पं. स्वरांश मिश्र द्वारा बखूबी किया जा रहा है। इन संस्थाओं में देहरादून स्थित गुरुकुल के अलावा रसिपा (पं. राजन एण्ड साजन मिश्र इंस्टीट्यूट ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स) संस्था द्वारा महान् संगीतकारों के प्रदर्शन, व्याख्यान एवं कार्यशालाओं के आयोजन आदि उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं।

अपनी गुरु शिष्य परंपरा और घराने की परंपरा के विषय में पं. राजन जी मिश्र कहते हैं ''देखिये हमारा संगीत परंपरा से ही जुड़ा हुआ है इसलिए शास्त्रीय संगीत कहा जाता है और यदि हम परंपरा छोड़ते जायेंगे तो इसकी शास्त्रीयता नहीं रहेगी। यह वेदों से चला आ रहा है इसीलिए इसे हम शास्त्रीय संगीत कहते हैं क्योंकि आज के युग में परिस्थितियाँ बदल रही हैं, परिवर्तन हो रहे हैं, समाज में हर तरह से परिवर्तन हो रहा है तो उसमें गुरु शिष्य परंपरा को कायम रखना बहुत ही मुश्किल सा हो गया है। फिर भी आज के जितने कलाकार हैं उनमें जो गुरु शिष्य परंपरा पर ही आधारित शिक्षा जो लोग ले रहे हैं वही लोग आगे की स्टेज पर आ पा रहे हैं।[3]

ऐसा क्यों हो रहा है इस पर पंडित जी आगे कहते हैं कि ''क्लास रूम में एक साथ बहुत सारे शिष्यों के साथ गुरु का वह कम्यूनिकेशन नहीं हो सकता है। गुरु शिष्य परंपरा में गुरु के साथ शिष्य रहता है। उनकी जीवन शैली का अध्ययन करता है, गुरु कैसे सोते हैं, गुरु कैसे उठते हैं, गुरु कैसे रियाज़ करते हैं, गुरु कैसे खाना खाते हैं इन सारी बातों का समावेश एक शिष्य को बनाने के लिए जरूरी है। कौनसा सुर किस मूड से लगाते हैं, कौनसी बंदिश कैसे गाते हैं, तो इसका आभास जब शिष्य गुरु के साथ रहता है तभी हो पाता है। इसलिए गुरु शिष्य परंपरा बहुत जरूरी है।''[4]

रियाज़ करते वक्त ध्यान रखने योग्य बातों एवं वॉइस कल्चर पर गुरु एवं शिष्य की भूमिका के बारे में पंडित जी का कहना है कि ''रियाज़ करते समय एक तो भगवान के प्रति आस्था होनी चाहिए। सरस्वती की आराधना कर रहे हैं, गुरु के चरणों के प्रति आस्था होनी चाहिए और ये गुरु का कर्तव्य है कि शिष्य का कान ऐसा तैयार करें जो खुद की कमजोरी को पहचान ले। उसका

जो वॉइस कल्चर बनता है वो खुद का एक तजुर्बा है, खुद का एक्स्पीरियेंस है। उस एक्स्पीरियेंस से जो वॉइस उसको खुद को अच्छा लगे वही उसके वॉइस कल्चर का हिस्सा है। इसलिए हम लोगों को हमारे गुरु लोगों ने ऐसी तालीम दी, ऐसी शिक्षा दी कि संगीत की ऐसी साधना करो जो तुम्हारे मन को खुद भाये। तुम खुद उस संगीत का आनंद ले सको ऐसा अपने आपको बनाओ तो हम लोग वैसा ही प्रयास करते हैं। अपने संगीत को हम खुद ही एन्जॉय कर सकें, अपने श्रोता खुद बन सकें यह हमारी कोशिश है।''[5]

पं. राजन साजन मिश्र जी की शिष्य परंपरा में अनेक वरिष्ठ, उदीयमान कलाकार एवं साधक सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ कलाकार तो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। पं. साजन जी मिश्र, पं. रितेश जी एवं पं. रजनीश जी मिश्र द्वारा गुरुपूर्णिमा 2017 के आयोजन के दौरान आपकी शिष्य परंपरा की जानकारी प्रदान की गई।

पं. राजन साजन मिश्र जी की शिष्य परंपरा में पं. रितेश मिश्र (ज्येष्ठ पुत्र पं. राजन मिश्र), पं. रजनीश मिश्र, (कनिष्ठ पुत्र पं. राजन मिश्र), पं. स्वरांश मिश्र, (पुत्र पं. साजन मिश्र) सहित अनेक कलाकार एवं साधकों की श्रृंखला में सर्व श्री भारत भूषण गोस्वामी, पंकज सदाफल, सारथी चटर्जी, रितु भारद्वाज, मोहन सिंह, सुखदेव सिंह, उमेश कम्पूवाले, रूपान्दे शाह, भोलानाथ मिश्र, सदाशिव गौतम, विराज अमर, कणिका पाण्डेय, प्रणव विश्वास, जसमीत कौर, सोनाली सिन्हा, शालिनी सिन्हा, तनु श्री, साजन सिंह नामधारी, अनुराग मिश्रा, दिवाकर प्रभाकर कश्यप, विवेक सचदेवा, मैत्री सान्याल, अमरीश मिश्रा, दीपक प्रकाश मिश्रा, दिव्या शर्मा, अभिश्रुति बेजबरुआ, शेष कुमार तिवारी, गरुण मिश्रा, अनूप मिश्रा, इन्दु भारद्वाज, सागर मिश्रा, डॉ. नुपूर सिंह, पूनम सहाय, सीमा अग्रवाल, महुआ चटर्जी, मंदाकिनी लाहिड़ी आदि बनारस घराने की गायकी को आत्मसात् कर रहे हैं।

गुरु पूर्णिमा का अनूठा आयोजन

संगीत के क्षेत्र में गुरु शिष्य परंपरा का सर्वाधिक महत्त्व है। यही वह क्षेत्र है जिसमें आज भी गुरु की शिष्य के प्रति सहृदयता एवं उदारता और शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण एवं कृतज्ञता का भाव दिखाई देता है। सच्चे पथ प्रदर्शक होने के साथ–साथ आपके स्वभाव में विद्यमान प्रेम, सहृदयता, उदारता, करुणा आदि गुणों के साथ कर्तव्य एवं दायित्व बोध के कारण शिष्यों से आपके आत्मीय संबंध स्थापित हो जाते हैं। आप दोनों के व्यक्तित्व में सहनशीलता का गुण है। गुरु पूर्णिमा उत्सव 2017 के दौरान यह देखने में आया कि कोई विद्यार्थी चाहे कितना ही सुरीला गा रहा है अथवा सामान्य गा रहा है आप सभी को समान दृष्टि से देख रहे हैं। इस सम्बन्ध में पं. राजन जी मिश्र ने चर्चा के दौरान प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बताया कि ''जो विद्यार्थी संगीत में लगे हुए हैं उनको सबको प्रोत्साहन देना है। उनका कोई पेशन है, उनकी कोई चाह है तभी तो लगे हुए हैं।''[6]

प्रतिवर्ष पद्मभूषण पं. राजन साजन मिश्र जी के नई दिल्ली में रमेशनगर स्थित आवास पर गुरुपूर्णिमा के दिन बहुत ही सुन्दर एवं अनूठा आयोजन होता है। इस आयोजन का शुभारंभ सुबह आप दोनों एवं परिवारजनों द्वारा माँ सरस्वती एवं सभी गुरुजनों के चित्रों पर माल्यार्पण एवं पूजा–अर्चना के साथ होता है। प्रातः काल से रात के 10–11 बजे तक देश–विदेश में साधनारत शिष्यों एवं कलाकारों का घर पर आना–जाना लगा रहता है। इस दिन दोनों गुरुजी (पं. राजन मिश्र एवं पं. साजन मिश्र) की शिष्यों द्वारा पूजा एवं माल्यार्पण के पश्चात् सभी शिष्यों द्वारा बारी–बारी से हाजरी लगाने की परंपरा है। हाजरी लगाने के दौरान ही गुरुजी द्वारा शिष्यों को आशीर्वाद स्वरूप गायन को श्रेष्ठ बनाने हेतु उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श दिया जाता है। इस दिन बड़े व छोटे गुरुजी और दोनों गुरुआनी जी का आशीर्वाद पाकर सभी शिष्य अभिभूत हो उठते हैं। गुरुपूर्णिमा के दिन आप दोनों का बनारसी अंदाज में लोगों से आत्मीयता से बतियाना, सभी शिष्यों का गुरुजी के समक्ष गाना बजाना सांगीतिक संस्मरण, अनुभव, आध्यात्मिक वार्ता, जीवन दर्शन आदि विषयों पर रोचक वार्ता के साथ–साथ गुरुजी के घर पर प्रसाद (भोजन) ग्रहण करने की अनिवार्यता इस उत्सव को अनूठा एवं अविस्मरणीय बना देती है।

कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ (व्याख्यान एवं प्रदर्शन द्वारा)

आधुनिक युग में व्याख्यान एवं प्रदर्शन पर आधारित संगीत कार्यक्रमों के दौरान कलाकार को दो प्रकार के श्रोताओं से रूबरू होना पड़ता है। प्रथम वर्ग में हम उन श्रोताओं को रख सकते हैं जिन्हें शास्त्रीय संगीत की कोई जानकारी नहीं है अथवा जो किसी विद्यालय या कॉलेज में अध्ययनरत हैं और वह प्रायः शास्त्रीय संगीत से अनभिज्ञ हैं। दूसरे वर्ग में वह श्रोता आते हैं जो प्रायः संगीत के विद्यार्थी, रसिक श्रोता, विद्वतजन एवं कलाकार और समीक्षक या आलोचक भी हो सकते हैं। दोनों ही वर्ग के श्रोताओं की जिज्ञासाओं को शान्त करना कलाकार का नैतिक दायित्व है।

पं. राजन साजन मिश्र जी की गायकी का प्रभाव यह है कि आप मंच प्रदर्शन के दौरान कला कुशलता के माध्यम से दोनों प्रकार के श्रोताओं के हृदय में सहजता से अपना स्थान बना लेते हैं। आपके द्वारा व्याख्यान एवं प्रदर्शन के द्वारा दी गई प्रस्तुतियों ने सभी वर्ग के श्रोताओं में सांगीतिक उन्नयन की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस दिशा में भारत की वैभवशाली समृद्ध कला–संस्कृति की महिमा को युवा पीढ़ी में प्रसारित करने के उद्देश्य से ''स्पिक मैके'' द्वारा किए गए प्रयासों में महान् युगल गायक जोड़ी ने भरपूर योगदान दिया। पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''स्पिक मैके ने तो एक बहुत रिवोल्यूशनरी काम किया है, लोगों को भारतीय वाद्ययंत्रों, संगीत एवं संस्कृति से परिचय करवाने का। स्पिक मैके शुरू हुआ था 1977 में और हम लोग 1978 से जुड़ गये और अभी तक जुड़े हुए हैं।''[7]

डॉ. हुकुम चन्द के अनुसार ''स्पिक मैके का मूल उद्देश्य भारतीय पारम्परिक संस्कृति से उनके मूल रूप से परिचय कराना है, ताकि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति के गरिमापूर्ण सौंदर्य एवं वैभवशाली समृद्ध कलाओं की महिमा को केवल जाने ही नहीं, आत्मसात् भी करे। उसके प्रति संवेदनशील रह कर समन्वयवादी मानवीयता के मूल चिन्तन का आधार पा सके। भारतीय शास्त्रीय संगीत

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

हज़ारों हज़ार साल से मानवीय अभिव्यक्ति का मुख्य साधन रहा है। आज भी अपनी क्षमता से यह कलाएँ युवाओं की मृतप्राय मानसिकताओं को जीवन्त करने में पूर्णरूपेण सक्षम हैं।"[8] पं. राजन साजन मिश्र जी ने स्पिक मैके द्वारा श्रृंखलाबद्ध तरीके से आयोजित "लेक्चर एण्ड डेमोस्ट्रेशन" के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाकर समाज में सांस्कृतिक चेतना जागृत करने का पुनीत कार्य किया।

डॉ. हुकुम चन्द "सव्याख्या प्रस्तुति" के बारे में लिखते हैं कि यह "स्पिक मैके" की कार्यशैली का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसे दर्शक वर्ग का विकास करना है जो शास्त्रीय सांस्कृतिक कलाओं का रसास्वादन कर सके। इस प्रकार के कार्यक्रमों की श्रृंखला शैक्षिक सत्र के आरम्भ में ही सम्पन्न होती है अर्थात् अगस्त, सितम्बर में इसमें कलाकार अपनी कला की मूलभूत बारीकियों को गहराई से तथा मार्मिक ढंग से समझाते हैं तथा अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इसी श्रृंखला के अतिरिक्त भी सव्याख्या प्रस्तुतियाँ नियमित अन्तराल में समय–समय पर स्कूलों कॉलेजों में सम्पन्न की जाती है। इनमें प्रदर्शन नितान्त औपचारिक होता है।"[9]

अतः हम कह सकते हैं कि सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत से अपरिचित श्रोताओं को विशेषकर नई पीढ़ी को, दर्शक एवं श्रोता वर्ग में सम्मिलित करने व संस्कृति से जोड़ने में पं. राजन साजन मिश्र जी ने अतुलनीय योगदान देकर हमारे संगीत को आमजन में प्रतिष्ठित करने का प्रमुख कार्य किया है।

व्याख्यान एवं प्रदर्शन से संबंधित दूसरा श्रोता वर्ग वह है जिसमें संगीत के जानकार लोग होते हैं। इसके अन्तर्गत संगीत शिक्षा से जुड़े विद्यार्थी, कलाकार, विद्वान, समीक्षक एवं आलोचकों के साथ रसिक श्रोता भी सम्मिलित रहते हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन प्रायः संगीत के विद्यार्थियों एवं गुणी श्रोताओं के बीच होता है। ये कार्यक्रम कलाकार की साधना के लिए एक चुनौती होते हैं। शास्त्रीय गायकी के अंतर्गत आपने परंपरागत शैली के साथ सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पहलुओं का संतुलन बिठाकर गायन शैली के सृजन में रचनात्मक, एवं प्रयोगात्मक नवाचारों को शास्त्रीय मर्यादा के अंतर्गत उचित स्थान दिया है। यही कारण है कि आपका गायन विद्वानों व गुणीजनों के चहुँ और एक सुरमयी आवरण बनाकर गुणी श्रोताओं को उसमें निमग्न रखते हुए आनन्द एवं आत्मसुख की अनुभूति कराता है।

पं. राजन साजन मिश्र जी ने देश–विदेश के महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, सांगीतिक संस्थाओं एवं संगीत गोष्ठियों के माध्यम से प्रदर्शन–व्याख्यान कार्यक्रमों द्वारा अपने अनुभव एवं ज्ञान से गुणी श्रोताओं कलाकारों एवं विद्वतजनों की जिज्ञासाओं का समाधान कर उन्हें लाभान्वित किया है।

प्रचार एवं संरक्षण हेतु स्थापित संस्थाओं में भूमिका

विदेशों में भारतीय संगीत के प्रचार प्रसार, प्रोत्साहन, शिक्षण एवं प्रदर्शन हेतु अनेक संस्थाएँ, विद्यालय और विश्वविद्यालय कार्य कर रहे हैं। पं. राजन साजन मिश्र उन प्रमुख भारतीय कलाकारों में सम्मिलित हैं जिनके अथक प्रयासों से भारतीय संगीत की पहचान विश्व पटल पर बनी। आपने विदेशों में भारतीय संगीत हेतु स्थापित सांस्कृतिक केंद्रों के माध्यम से संगीत के प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

विदेशों में स्थापित प्रमुख केन्द्र "एशियन म्यूज़िक सर्किट" के बारे में डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू लिखती हैं "आर्ट्स काउंसिल ऑफ ग्रेट ब्रिटेन ने 1989 ई. में एशिया के संगीत के प्रदर्शन, संरक्षण, ध्वन्यांकन, शिक्षण, शोध आदि पल्लवन कार्यों के उद्देश्य से एशियन म्यूज़िक सर्किट की स्थापना की। 1991 ई. से इसका संचालन कार्य आर्टस काउंसिल ऑफ इंग्लैंड के द्वारा दी गई अनुदान राशि से नियमित एवं स्वतंत्र रूप से होता चला आ रहा है और इंग्लैण्ड में एशिया के संगीत के प्रोत्साहन का कार्य करने के लिए ही इस संस्था का लगातार विकास होता चला आ रहा है। यूरोप की इस महत्त्वपूर्ण म्यूज़िक कम्पनी की पहुँच एशिया के संगीत को प्रोत्साहन देने, संगीत उत्पादन के कार्यों और उच्च दर्जे के सांगीतिक शिक्षणात्मक पर्यटनों के प्रबन्ध करने में हैं। इस काम को परिपूर्ण करने में कम्पनी के निजी एशियन म्यूज़िक सेन्टर का अत्यधिक योगदान हैं, जहाँ संगीत वाद्य, दृश्य और श्रव्य संगीत संग्रहालय हैं और दूरदराज के लोगों के सांगीतिक आदान प्रदान के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऑन लाईन और ऑफ लाईन सुविधा प्राप्त करवाने का प्रयोजन है।"[10] "इसके अलावा प्रपत्र पढ़ने का आयोजन, कार्यशालाओं का आयोजन, एशियन वाद्यों का परिरक्षण, अलग–अलग क्षेत्रों से संबंधित महान् संगीतकारों को बुलवाकर योजनाबद्ध तरीके से शिक्षार्थियों को हर सम्भव सहायता उपलब्ध करवाना आदि महत्त्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं।"[11]

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि एशियन म्यूज़िक सर्किट की तरफ से प्रदर्शन कर चुके कुछ मुख्य कलाकारों में पं. राजन साजन मिश्र जी का नाम अग्रणी कलाकारों में सम्मिलित है। "आप एशियन म्यूज़िक सर्किट से वर्ष 1989 से अभी तक निरन्तर जुड़े हुए हैं। इस संस्था के माध्यम से लंदन के रॉयल अलबर्ट हाल सहित यूनाइटेड किंगडम के सभी बड़े शहरों में आप कार्यक्रमों का आयोजन कर भारतीय संगीत को प्रचारित प्रसारित करते रहे हैं।"[12]

"अमेरिका में रह रहे देशवासियों को विश्व की सभी संगीत शैलियों की समृद्धता से परिचित करवाने के लिए और सीखने सिखाने के उद्देश्य से वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई। यह संस्था व्यवसायिकता को ध्यान में लेकर विश्व के हर कोने से पारम्परिक और समकालीन संगीत प्रदर्शन, संगीत में शिक्षण और शोध कार्य के प्रोत्साहन के लिए संगीत समारोहों (कंसर्टों) का आयोजन करवाती है। एशिया के देश भारत के संगीत को विश्व में परिचित करवाने और योग्य स्थान दिलवाने में इस संस्था के द्वारा करवाए गए कार्यक्रमों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।"[13]

1986 से 2006 तक भारतीय कलाकार, जो वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट के माध्यम से प्रस्तुत किए जा चुके हैं उनमें पं. राजन साजन मिश्र जी का नाम प्रमुख कलाकारों में सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त आपको इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक सर्किट ऑफ ऑस्टिन (ICMCA), द

सेन्टर ऑफ परफोर्मिंग आर्टस ऑफ इण्डिया (यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग) जैसे अनेकानेक शिक्षण संस्थानों द्वारा कंसर्ट और संगीत संभाषणों के पर्यटनों के लिए आमंत्रित किया जाता रहा है।

भारतीय संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने में योग साधक महर्षि महेश योगी ने अद्वितीय कार्य किया है। ''भारतीय वेदान्त दर्शन की महत् शाखा योग पद्धति और उसके साथ–साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत का विश्व भर में प्रचार कर क्रांति पैदा करने में महर्षि महेश योगी का नाम समूचे विश्व में प्रसिद्ध हुआ।''[14] महर्षि महेश योगी जी द्वारा भारतीय संस्कृति एवं विश्व शांति हेतु किए गए प्रयासों में पं. राजन साजन मिश्र जी द्वारा भारतीय संगीत के प्रति विदेशों में सम्मान, निष्ठा और आस्था विकसित करने के क्रम में एवं आध्यात्मिक भाव जाग्रत करने हेतु विशेष योगदान दिया गया। उनके माध्यम से आयोजित कार्यक्रमों के साथ–साथ उनके द्वारा जारी किए गए सी. डी. एवं एलबम हमारी सांगीतिक धरोहर है। पं. साजन जी मिश्र के अनुसार ''एक रिकॉर्डिंग हॉलेण्ड से निकली महर्षि महेश योगी जी के लिए, 24 सी. डी. का वह रिकॉर्ड पैक था और वह बहुत पॉपुलर है यूरोप में, खासकर अमेरिका में, हर घर में वह मिल जाता है।''[15]

अतः राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों एवं शिक्षण संस्थानों के माध्यम से पं. राजन साजन जी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रतिष्ठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संगीत की राष्ट्र एवं विश्वव्यापी पहचान बनाने में आपने जिन सरकारी व गैर सरकारी संगठनों एवं संस्थाओं के माध्यम से अनथक प्रयास किए उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं :–

1. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली (ICCR)
2. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली।
3. इंदिरा गाँधी नेशनल सेन्टर फॉर द आर्टस एण्ड मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, नई दिल्ली।
4. स्पिक मैके (Society for the Promotion of Indian Classical Music and Culture Among Youth)
5. एशियन म्यूज़िक सर्किट
6. वर्ल्ड म्यूज़िक इंस्टीट्यूट

भारत सरकार के प्रमुख सांस्कृतिक संगठनों में पं. राजन साजन मिश्र अपनी भूमिका निभा रहे हैं। पं. रितेश जी मिश्र के अनुसार ''सांस्कृतिक मंत्रालय में सलाहकार के रूप में, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली (ICCR) द्वारा निर्णायक के रूप में एवं संगीत नाटक अकादमी में भी सलाहकार के रूप में पिताजी व चाचाजी को आमंत्रित किया जाता है।''[16]

अतः पं. राजन साजन मिश्र जी कला जगत में विविध भूमिकाओं का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, दायित्व व कर्तव्य बोध के साथ करते हुए कला जगत के सच्चे पथ प्रदर्शक बन न केवल देश अपितु सम्पूर्ण विश्व की सेवा कर रहे हैं।

अन्य (वेबसाइट, सी. डी. विडियो, कैसेट्स एवं साहित्य)

आपने घरानेदार गौरवशाली परंपरायुक्त समृद्ध गायन शैली का प्रचार–प्रसार संचार के विविध माध्यमों से जैसे कैसेट, सी डी, डी वी डी एवं अनेकानेक वेबसाइट्स के द्वारा किया है। आपके गायन की रिकॉर्डिंग्स लगभग सभी प्रतिष्ठित कम्पनियों जैसे सी बी एस, एच एम वी, मेगनासाउण्ड, म्यूज़िक टुडे, टी–सीरीज़, बी एम जी, वीनस, सोनी, टाइम्स म्यूज़िक, आदि से जारी हुई हैं। इनके साथ–साथ अनेक विदेशी कम्पनियों द्वारा भी आपके गायन के रिकॉर्ड्स जारी हुए हैं। विस्तृत अध्ययन से ज्ञात होता है कि बहुत–बड़ी संख्या में आपके गायन के रिकार्ड्स जारी हो चुके हैं। यह सभी रिकार्ड्स हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं और ऑडियो–विडियो के वर्तमान में प्रचलित विविध माध्यमों के द्वारा शास्त्रीय संगीत का निरन्तर प्रचार–प्रसार हो रहा है।

इनके अतिरिक्त आपने देश में आयोजित विभिन्न संगीत प्रतियोगिताओं एवं टीवी शो जैसे टीवीएस सा रे गा मा, बिग बाल कलाकार एवं नवोदित प्रतिभाओं हेतु आयोजित आइडिया जलसा जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से निर्णायक एवं मार्गदर्शक कलाकार की प्रमुख भूमिका निभाकर नई पीढ़ी में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिरुचि जाग्रत करने हेतु महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं।

सच्चे कलाकार, सहृदयी होने के साथ–साथ संगीत के माध्यम से समाज में जनकल्याण, शांति, भ्रातृत्व, समता एवं विश्वबंधुत्व आदि मूल्यों की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसी महान् उद्देश्य की पूर्ति हेतु पं. राजन साजन मिश्र जी ने विश्वविख्यात संत एवं धर्मगुरु श्री श्रीरविशंकर जी द्वारा स्थापित संस्था 'द आर्ट ऑफ लिविंग'' के अन्तर्गत दिनांक 12 जनवरी 2010 को आयोजित कार्यक्रम 'अन्तर्नाद' के माध्यम से 2750 शास्त्रीय गायक गायिकाओं के साथ शास्त्रीय गायन प्रस्तुत कर संगीत एवं आध्यात्म के समन्वय का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत कर विश्व इतिहास रच दिया। अन्तर्नाद शीर्षक के अन्तर्गत आपने दो कार्यक्रमों में भाग लिया। एक कार्यक्रम 'वन्दे मातरम्' में पार्श्वगायक शंकर महादेवन के साथ आध्यात्मिक गुरु श्री श्रीरविशंकर एवं पं. राजन साजन मिश्र ने गायन में भागीदार बनकर कार्यक्रम को अविस्मरणीय बना दिया। दूसरा प्रमुख कार्यक्रम 'माँ बसंत आयो रे' में राग बसन्त बहार में पं. बड़े रामदास जी द्वारा रचित तीनताल में निबद्ध बंदिश को 2750 शास्त्रीय गायक–गायिकाओं ने पं. राजन साजन मिश्र जी के नेतृत्व में प्रस्तुत कर विश्व रिकार्ड कायम किया।

पं. राजन जी मिश्र के अनुसार ''अन्तर्नाद कार्यक्रम श्री श्रीरविशंकर जी ने आयोजित किया था। इसमें हमारी बंदिश (माँ बसन्त आयो रे) को 2750 लोगों ने गाया और 'गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में दर्ज हुआ। बसन्त बहार की इस बंदिश को पहले हमने सी डी में गाकर भेज दिया था तो जितने भी गायक–गायिकाएँ थे ग्रुप में, सबको वह भेज दिया गया। उन्होंने रियाज़ किया फिर एक दिन पहले हम वहाँ पहुँचे तो एक दिन रिहर्सल हुआ उसके बाद वो कार्यक्रम हुआ।''[17]

उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम के लिए जहाँ इतनी बड़ी संख्या में शास्त्रीय गायक–गायिकाओं को एक प्लेटफार्म पर लाया गया उसी के अनुरूप 27000 स्क्वायर फीट का स्टेज बनाया गया। लगभग 8:30 मिनट की इस भाव विभोर कर देने वाली प्रस्तुति में पंडित जी द्वारा बसंत ऋतु का बहुत सुंदर साक्षात्कार करवाया गया है। यह

ध्वन्यांकन सचमुच में केवल एक विश्व रिकॉर्ड ही नहीं अपितु विश्व धरोहर बन पड़ा है।

निष्कर्ष

प्रकृति एवं अध्यात्म से अनुप्रेरित एवं उद्भूत भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार हेतु युगल गायक पं. राजन साजन मिश्र द्वारा किए गए कार्य भावी पीढ़ी को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं। सामाजिक विकास के प्रवाह के साथ कला के क्षेत्र में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर आपने परंपरा के साथ नवाचारों का प्रयोग कर गायकी को अद्भुत स्वरूप प्रदान किया है। कला मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का सुंदर माध्यम है और महान कलाकार उसे मूर्त रूप प्रदान कर चिंतन एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति से नया आकार प्रदान करते हैं। हाल ही में वर्ल्ड म्यूजिक टूर 2018–19 के माध्यम से पंडित जी की युगल गायकी के सुर विश्व के लगभग सभी प्रमुख शहरों में गुंजायमान हुए। भारत की सांस्कृतिक अस्मिता से सम्पूर्ण विश्व को रूबरू करवाते हुए आपने सम्पूर्ण विश्व को विश्वबंधुत्व एवं शांति का संदेश दिया है। निश्चित रूप से पं. राजन साजन मिश्र हमारे देश की सांस्कृतिक निधि हैं।

संदर्भ

1. *पं. राजन जी मिश्र (Story of Renowned classical singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)*
2. *पं. रजनीश मिश्र (Story of Renowned classical singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)*
3. *पं. राजन जी मिश्र (वृंदावन गुरुकुल धरोहर) www.youtube.com*
4. *पं. राजन जी मिश्र (वृंदावन गुरुकुल धरोहर) www.youtube.com*
5. *पं. राजन जी मिश्र (वृंदावन गुरुकुल धरोहर) www.youtube.com*
6. *पं. राजन जी मिश्र : वार्ता–गुरु पूर्णिमा, दिनांक 10.07.2017, नई दिल्ली*
7. *पं. राजन जी मिश्र : वही, 12.07.2014, नई दिल्ली*
8. *डॉ. हुकुम चन्द : आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, पृ. सं. 102*
9. *डॉ. हुकुम चन्द : आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, पृ. सं. 103*
10. *डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ. सं. 181*
11. *डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ. सं. 183*
12. *www.amc.org.uk*
13. *डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अंतर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ.सं. 185–186*
14. *डॉ. नीलम बाला महेन्द्रू : आधुनिक अंतर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ. सं. 296*
15. *पं. साजन जी मिश्र (Story of Renowned elessical singer Pt. Rajan Sajan Mishra) (https://www.youtube.com)*
16. *पं. रितेश जी मिश्र – वार्ता, गुरुपूर्णिमा 2017*
17. *पं. राजन जी मिश्र : वार्ता– गुरुपूर्णिमा, दिनांक 10.07.2017, नई दिल्ली*

BANASTHALI VIDYAPITH

Department of Performing Arts, Faculty of Fine Arts

बनस्थली विद्यापीठ 19 35 सा विद्या या विमुक्तये

International Conference on

संगीत प्रवाह : स्वर, काव्य तथा चिंतन

Streams of Music : Note, Poetry & Meditation

21-22 August 2017

Certificate

This is to certify that Sadashiv Gautam

has participated/ attended/ presented सुविज्ञों का संगीत - सांगीतिक तकनीक का प्रयोग

Date 22.08.2017

Ina Shastri
Convener & Dean
Faculty of Fine Arts

DAYANAND COLLEGE, AJMER

International Conference

On

Exploring Contexts of Tourism, Culture and Heritage in South Asia

Organised By

Centre for Tourism and Heritage Research

&

Supported by: Dept. of Tourism, Govt. of Rajasthan

27th & 28th September, 2018

Certificate

This is to certify that SADASHIV GAUTAM (Research Scholar) of Kota University, Kota has participated in the Inter-disciplinary International Conference on **"Exploring Contexts of Tourism, Culture and Heritage on South Asia"** organized by Centre for Tourism and Heritage Research; Department of Commerce and Economics, Dayanand College, Ajmer during September 27-28, 2018 and presented a paper on the topic titled भारतीय संगीत के अन्तर्राष्ट्रीयकरण में पंडित राजन-साजन मिश्र का योगदान

Bharat B. Sharma	Dr A.K. Raina	Dr. Laxmikant
Conference Secretary	Conference Chair	Conference Director

JAI NARAIN VYAS UNIVERSITY, JODHPUR (RAJ.)

NATIONAL CONFERENCE

ON

EMERGING ISSUES IN RESEARCH AND DEVELOPMENT

(AN INTERDISCIPLINARY APPROACH)

FEBRUARY, 03, 2019

ORGANIZED BY

RESEARCH UNION 2018-19

JAI NARAIN VYAS UNIVERSITY, JODHPUR

IN COLLABORATION WITH UGC APPROVED JOURNAL

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (E-ISSN 2348-1269, P-ISSN 23495138)

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms Sadashiv Gautam

Designation Research scholar University/College/Institution Dept- of Music Kota University, Kota has participated in the National Conference organized by Research Union 2018-19, Jai Narain Vyas University, Jodhpur, Rajasthan (India) held on February, 03,2019.

He / She has presented a Paper / Poster entitled "सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण में पद्मभूषण पं. राजन साजन मिश्रा का योगदान in national conference

SHRAVAN KUMAR
ORGANIZING SECRETARY

PROF. RAJENDRA PARIHAR
CONVENER